ख़ुत्बाते हिंद

(जिल्द अव्वल)

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी
मुजद्दिदी दामत बरकातुहुम

के दौरा-ए-हिंद अप्रैल 2011 ई० के बयानात का मजमूआ

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ.

ख़ुत्बाते हिंद

(जिल्द अव्वल)

हज़रत मौलाना हाफ़िज़ ज़ुलफ़िक़ार अहमद नक्शबंदी मुजद्दिदी दामत बरकातुहुमुल आलिया के दौरए हिंद अप्रैल 2011 ई० के बयानात का मजमूआ

मुरत्तिब

बिलाल सज्जाद नोमानी

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

NEW DELHI-110002

खुत्बाते हिंद (जिल्द अव्वल)

अज़: हज़रत मौलाना हाफ़िज़ ज़ुलफ़िक़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दिदी दामत बरकातुहुम

मुरत्तिब: बिलाल सज्जाद नोमानी

बाएहतिमाम: मुहम्मद नासिर ख़ान

फ़रीद बुक डिपो प्राईवेट लिमिटेड

FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Phones: 23247075, 23289786, 23289159, Fax:23279998, Res: 23262486

KHUTBAAT-E-HIND (Part I)

By: **Hazrat Maulana Hafiz Zulfaqar Ahmad Naqshbandi Mujaddidi**

Compiled by: **Bilal Sajjad Nomani**

Hindi Edition: 2011 Pages: 449

Rs.

Our Branches:

Delhi: FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.:23265406, 23256590

Mumbai :FARID BOOK DEPOT (PVT.) Ltd
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan.
Dongri, Mumbai-400009, Ph.:022-23731786, 23774786

Printed at: Farid Enterprises, Delhi

फ़ेहरिस्ते ख़ुत्बात

मज़ामीन **सफ़्हा नम्बर**

मुहब्बते इलाही और उसके हुसूल का तरीक़ा

सिफ़ाते हमीदा से खुद को मुज़य्यन करें

नामे ख़ुदा में हज़ारों बरकतें

कुर्बे इलाही के साथ ज़ीने

इस्लामी शरीअत की खूबसूरती

अकाबिरे देवबंद और यक़ीं मुहकम

बारगाहे खुदावंदी में क़ाबिलियत से ज़्यादा क़बूलियत का एतिबार

आमाल की क़बूलियत की चंद अलामतें

आमाल की क़बूलियत के चंद अस्बाब

उलमाए देवबंद की जलालते शान

इश्क़े नबी सल्ल0 और उसके तक़ाज़े

कुर्बे इलाही कैसे हासिल होता है?

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 की चंद अहम सिफ़ात

अल्लाह कितना मेहरबान है!

अल्लाह का हर दम इस्तिहज़ार

इल्म व उलमा का मक़ाम और हमारे अकाबिरे देवबंद

तालीमी मैदान में उम्मते मुस्लिमा की फ़िदा बानियां

अर्ज़े नाशिर

अह्क़र के लिये यह अम्र बाइसे सआदत व इफ़्तिख़ार है कि दुनियाए इस्लाम की बरगुज़ीदा इल्मी व रूहानी शख़्सियत हज़रत मौलाना पीर जुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मद्दज़िल्लुहुल आली से अप्रैल 2011 में बिलमुशाफ़ा ज़ियारत और बैअ़त का शर्फ़ हासिल हुआ। अलहम्दु लिल्लाह! तक़रीबन एक घंटा तक क़िब्ला मुहतरम ने गिरांक़द्र नसाइह और अपनी दुआओं से नवाज़ा जिसके लिये तहे दिल से हज़रत का मम्नून व मशकूर हूं।

अह्क़र की यह ख़ुश क़िस्मती है कि हिंद व पाक के जलीलुल क़द्र उलमा व दीनी शख़्सियात से बराहे रास्त सरपरस्ती व रहनुमाई हासिल रही है। मुहतरम पीर साहब के शाहकार ख़ुत्बात के मुतालए के बाद उनसे मुलाक़ात की शदीद ख़्वाहिश दिल में पैदा हुई, इस इरादे से पाकिस्तान के सफ़र का भी इरादा किया लेकिन बमिस्दाक़।

दिल से जो बात निकलती है असर रखती है

मेरी पाकिस्तान रवानगी से पहले ही हज़रत हिंदुस्तान तशरीफ़ ले आए। और न सिर्फ़ मुझे उनसे मुलाक़ात का मौक़ा और उनके दस्ते हक़ परस्त पर बैअ़त की सआदत नसीब हुई। बल्कि इदारा **"फ़रीद बुक डिपो"** की क़ुर्आनी व दीनी इशाअती ख़िदमात की पसंदीदगी के तौर पर अपनी तमाम मत्बूआत को हिंदुस्तान में शाए करने के हुक़ूक़ व इख़्तियारात अता फ़रमा दिये। यह मेरे और इदारा **"फ़रीद बुक डिपो"** के लिये बहुत बड़ा एज़ाज़ है।

इरादतमंद

(अलहाज) ***मुहम्मद नासिर ख़ान***

(मैनेजिंग डाइरेक्टर)

कुछ साहिबे ख़ुत्बात के बारे में

बड़ी मुद्दत से साक़ी भेजता है ऐसा मस्ताना
बदल देता है जो बिगड़ा हुआ दस्तूरे मैख़ाना

पंद्रहवीं सदी हिज्री के इब्तिदाई दो अशरों तक बर्रे सग़ीर में अकाबिर अह्ले इल्म व फ़िक्र और मुस्लिहीन की एक तादाद मौजूद थी, 1402 हि0 में शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करिया कांधलवी मुहाजिर मदनी रह0 की वफ़ात के बाद भी, आरिफ़ बिल्लाह हज़रत मौलाना मुहम्मद अहमद साहब परताब गढ़ी रह0, हज़रत मौलाना इन्आमुल हसन साहब रह0, हज़रत मौलाना मुहम्मद मंजूर नोमानी रह0, हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0, हज़रत मौलाना मसीहुल्लाह ख़ां साहब रह0, हज़रत मौलाना अबरारुल हक़ साहब रह0, हज़रत मौलाना सय्यद सिद्दीक़ अहमद बांदवी रह0, हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपूरी रह0, हज़रत मौलाना फ़क़ीर मुहम्मद थानवी रह0, हज़रत मौलाना मुहममद अशरफ़ ख़ां साहब रह0 पिशावर, हज़रत डाक्टर अब्दुल हयी आरिफ़ी रह0, और इनके अलावा और भी रब्बानी उलमा मौजूद थे, जिन से लाखों लोगों को फ़ैज़ मिल रहा था, फिर अचानक तेज़ रफ़्तारी के साथ यके बाद दीगरे यह सब अपने अपने वक़्त पर राहिये मुल्क बक़ा हो गये, और यह हाल हो गया कि ऐसे पुर नूर चेहरे देखने को आंखें तरस गईं, और अह्ले तलब रंज व ग़म की कैफ़ियत में डूब कर कहने लगे कि

वह जो बेचते थे दवाए दिल वह दूकान अपनी बढ़ा गए

लेकिन अल्लाह का वादा है कि वह अपने महबूब सल्ल0 की

इस उम्मत को कभी भी बेसहारा नहीं छोड़ेगा, यह तो वही जाने कि किस टूटे दिल वाले की आह उसे पसंद आई? और किसके ज़ौक़े जुस्तजू पर उसको रहम आया? हम कोताह बीनों ने तो बस यही देखा कि अचानक मग़रिबी पंजाब के एक मक़ाम "झंग" से एक शख़्सियत बर्रे सग़ीर के उफ़ुक़ पर हलाल रुश्द व हिदायत बन कर उभरी, और देखते ही देखते उसकी रौशनी से पूरा मतलअ़ रौशन होने लगा, दिलों की ज़मीन इस अब्रे रहमत से सैराब होने लगी और यास आस में बदलने लगी। आप ख़ुद ही समझ गए होंगे कि मेरा इशारा साहिबे ख़ुत्बात रैहानतुल अस्र हज़रत मौलाना हाफ़िज़ ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दिदी दामत बरकातुहुम से है।

इस ज़रूरत के एहसास के तहत कि वह हज़ारों बल्कि लाखों लोग जिन के दिल में साहिबे ख़ुत्बात की तरफ़ ग़ैर मामूली मुहब्बत व इंजिज़ाब दिन ब दिन बढ़ता ही जा रहा है, मगर वह अपने इस "अंजाने" महबूब के बारे में बहुत कुछ जानने का इश्तियाक़ रखते हैं, यह आजिज़ राक़िम सुतूर मोतबर व मुस्तनद ज़राए से जो कुछ जानता है--और उसे एतिराफ़ है कि वह बहुत कम जानता है--सुतूरे ज़ेल में अपने मुहतरम और बाज़ौक़ क़ारईन की ख़िदमत में पेश करने की सआदत हासिल करता है।

विलादत और अय्यामे तुफ़ूलियतः

साहिबे ख़ुत्बात (متعنا اللہ بطول بقائہ) की विलादत यकुम अप्रैल 1953 ई० को झंग (पंजाब, पाकिस्तान) में हुई। उनके वालिद बच्चों को, लिवजहिल्लाह, नाज़िरए क़ुर्आन पढ़ाया करते थे, निहायत नेक सालेह और इबादत गुज़ार थे, रोज़ाना तहज्जुद के बाद तीन से पांच पारे क़ुर्आन मजीद की तिलावत का मामूल था, वालिदए माजिदा भी नेक सालेह ख़ातून थीं--ख़ुद साहिबे ख़ुत्बात ने उनका तज़किरा

करते हुए लिखा हैः

"राक़िम जब तीन बरस की उम्र का था और वालिदा साहिबा के हमराह एक बिस्तर पर सोता था तो रात के आख़िरी पहर में वालिदा साहिबा को बिस्तर पर मौजूद न पाकर उठ बैठता, देखता था कि वह सिरहाने की तरफ़ मुसल्ला बिछाकर नमाज़े तहज्जुद पढ़ने में मशगूल हैं, राक़िम मुंतज़िर रहता कि नमाज़ कब ख़त्म होगी? वालिदा साहिबा नमाज़ के बाद दामन फैलाकर ऊंची आवाज़ से रो रोकर दुआएं मांगतीं, राक़िम ने अपनी ज़िंदगी में तहज्जुद के वक़्त जिस क़दर अपनी वालिदा साहिबा को रोते देखा है किसी और को इस क़दर रोते नहीं देखा। बअज़ औक़ात वालिदा साहिबा राक़िम का नाम लेकर दुआएं करतीं तो राक़िम ख़ुशी से फिर बिस्तर पर सो जाता।"

हज़रत की इब्तिदाई तालीम व तरबियत और निगरानी में उनके बड़े भाई जनाब मलिक अहमद अली साहब का भी नुमायां हिस्सा रहा--हज़रत को ख़ुद एतिराफ़ है कि उनकी मुश्फ़िक़ाना मगर सख़्त निगरानी की बदौलत वह ग़लत लड़कों की दोस्ती और सोहबत से बिल्कुल महफ़ूज़ रहे।

तबलीग़ी जमाअत से तअल्लुक़ः

हज़रत जब पांचवीं क्लास के तालिबे इल्म थे, तब ही से अपने बड़े भाई के साथ तबलीग़ी जमाअत में निकलने का मअ़मूल शुरू हो गया, यह तअल्लुक़ आगे चलकर और ज़्यादा मुस्तहकम हो गया--दूसरी तरफ़ स्कूल और कालिज की तअ़लीम के साथ फ़ारसी और अरबी की किताबें और सर्फ़ व नह्व की तअ़लीम भी जारी रही, बी० एस० सी० के बाद हदीस की कुछ किताबें भी पढ़ीं। इसी दौरान

तज़किरतुल औलिया, गुन्यतुत्तालिबीन और कशफुल महजूब जैसी किताबों का मुतालआ किया, और इन्ही किताबों के मुतालआ के असर से मअरिफ़ते इलाही के हुसूल का वह जज़्बा जो फ़ितरत में पहले ही से वदीअत कर दिया गया था, जाग उठा, और फिर मुख़्तलिफ़ ख़ानक़ाहों में जाने का सिलसिला शुरू हो गया, लेकिन खुद हज़रत के अल्फ़ाज़ में:

"हर जगह इत्तिबाए सुन्नत में कोताही और बिद्आत की पाबंदी देखकर राक़िम नामुराद वापस आ जाता"

(हयाते हबीब स0547)

मुहब्बते इलाही की चिंगारी:

इसी दौरान शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह0 की किताब "फ़ज़ाइले ज़िक्र" में जब यह वाक़िआ इस सालेह नौजवान की नज़र से गुज़रा कि:

"हज़रत सरी सक़्ती रह0 फ़रमाते हैं कि मैंने जरजानी को देखा कि सत्तू फांक रहे हैं, मैंने पूछा, यह ख़ुश्क ही फांक रहे हो, कहने लगे, मैंने रोटी चबाने और सत्तू फांकने का जब हिसाब लगाया तो चबाने में इतना वक़्त ज़्यादा ख़र्च होता है कि उसमें आदमी सत्तर मर्तबा सुब्हानल्लाह कह सकता है, इसलिये मैंने चालीस बरस से रोटी खाना छोड़ दी, सत्तू फांक कर गुज़ारा कर लेता हूं।"

तो इस वाक़िआ का असर उसकी हस्सास और जोयाये हक़ तबीअत पर ऐसा पड़ा कि सुब्ह व शाम लेटे चलते फिरते हर वक़्त सुब्हानल्लाह, सुब्हानल्लाह का ज़िक्र उसकी ज़बान पर जारी हो गया, और इसका फ़ाइदा यह हुआ कि क़िल्लते कलाम, क़िल्लते तआम और क़िल्लते मनाम की आदत पड़ गई। (अयज़न स0746)

ढाई साल तक यह नौजवान बस सुब्हानल्लाह! सुब्हानल्लाह का विर्द करता रहा। मगर अब तबीअत किसी रहबर व मुरब्बी के पाने के लिये बेक़रार होती जा रही थी, यह एहसास हर दम बेचैन किये रहता किः

"कोई एक मुत्तबअ़ सुन्नत, सैक़ल शख़्सियत सामने न थी, जिसे पीर व मुर्शिद की हैसियत से दिल में समाया जाता, आंखों में बसाया जाता और मन की दुनिया में सजाया जाता"

पूरे दो साल तक रोज़ाना सलातुल हाजत पढ़कर यह तड़पती हुई तमन्ना दुआ बन कर उनकी ज़बान पर आती रही किः

"बारे इलाहा किसी सच्चे और कामिल मुर्शिद की सुहबत व इरादत नसीब फ़रमा!"

रहमते ख़ुदावंदी की एक नज़र

यह कैसे हो सकता था कि अल्लाह का एक बंदा, और वह भी बिल्कुल नौजवान, सालहा साल से अल्लाह की मुहब्बत के लिये तड़पता रहे और बारगाहे अहदियत व समिदियत से कोई इल्तिफ़ात न हो, वह इल्तिफ़ात हुआ, और ख़ूब हुआ, आइये उसकी दासतान खुद उन्ही की ज़बानी सुनिये! हज़रत लिखते हैंः

"1791 में तबलीग़ी जमाअत मुहल्ले की मस्जिद में ठहरी हुई थी, राक़िम ने सोचा कि एतिकाफ़ की नियत से मस्जिद में ही सो जाइये, हस्बे आदत रात तहज्जुद की नमाज़ के लिये उठने की तौफ़ीक़ हुई, नमाज़ के बाद तसबीहात वग़ैरा से फ़ारिग़ हुआ तो, अभी सुब्ह सादिक़ में एक घंटा बाक़ी था, राक़िम मुसल्ले पर ही लेट गया, ख़्वाब में देखा कि कोई बुज़ुर्ग आए और राक़िम के क़ल्ब पर

उंगली रखकर कहने लगे अल्लाह......अल्लाह......अचानक आंख खुली तो राक़िम के बदन पर रेशा तारी था, सीने में क़ल्ब की तेज़ और नर्म हरकत ऐसी वाज़ेह महसूस हो रही थी कि गोया सीने में गुदगुदी हो रही हो। राक़िम के लिये इस कैफ़ियत को बर्दाश्त करना मुश्किल हो गया, हत्ताकि सीने पर रूमाल कस के बांध लिया, जब वह रूमाल खोला जाता वही गुदगुदी महसूस होती, कई दिन कपड़ों के नीचे रूमाल बांधकर गुज़ारे। (अब) नमाज़......ज़िक्र......तिलावत का मज़ा ही निराला था, हर चीज़ में लज़्ज़त......हर बात में लज़्ज़त......'' (हयाते हबीब स0746-47)

याद रहे कि यह ज़माना वह था जब यह खुशनसीब व खुश ख़िसाल नौजवान इंजीनियरिंग यूनीवर्सिटी में ज़ेरे तालीम था, इस अजीब व ग़रीब तजरबे के बाद इस बंदए खुदा ने इसी यूनीवर्सिटी में ज़ेरे तालीम अपने एक सालेह दोस्त जनाब मुहम्मद अमीन साहब से अपने इन हालात का तज़किरा किया, उन्होंने एक और मर्दे सालेह से अपने दोस्त के यह हालात सुनाए, उन्होंने मुआमले की अहमियत महसूस कर के एक और ख़िज़्र सिफ़त बुज़ुर्ग को इन हालात की इत्तिला देकर रहनुमाई लेने का मशवरा दिया।

यहां आगे बढ़ने से पहले यह मुनासिब मालूम होता है कि उन दोनों बुज़ुर्गों का भी तआरुफ़ करा दिया जाए, जिनका हमारे मम्दूह (हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दिदी) की शख़्सियत साज़ी में मशियते खुदावंदी ने अपना अपना हिस्सा लगवाया।

वह पहले बुज़ुर्ग जिनसे साहिबे खुत्बात के दोस्त ने उनके मज़कूरा बाला ख़्वाब और उसके बाद के अहवाल का तज़किरा किया था वह थे हज़रत शैख़ वजीहुद्दीन साहब, यह थे तो इंजीनियर, और

वह भी इंडियाना यूनीवर्सिटी, अमरीका के सनद याफ़ता, लेकिन फ़ित्री तौर पर उनको तक़्वा और एहतियात वाली ज़िंदगी का ग़ैर मामूली इहतिमाम नसीब था, उनका तअल्लुक़ भी तबलीग़ी जमाअत से था, और इसी की बदौलत उनके दिल में अल्लाह की मुहब्बत व कुर्ब के हुसूल की तलब व जुस्तजू पैदा हुई। उन्होंने हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब कांधलवी से बैअ़त का राबता भी क़ाइम किया--और मीरपूर ख़ास के एक साहिबे दिल और साहिबे मक़ाम बुज़ुर्ग बाबू जी अब्दुल्लाह से भी वालिहाना मुहबबत के रिश्ते में मुंसलिक हो गए, यह एक अजीब व ग़रीब और पुर इस्रार शख़्सियत थी, नीज़ इस बात की वाज़ेह निशानी कि अल्लाह जिसको चाहे नवाज़ दे, देखने में तो वह एक ईमानदार सरकारी मुलाज़िम और स्टेशन मास्टर थे, लेकिन दरहक़ीक़त वह एक मख़्फ़ी शख़्सियत थी, उनकी मक़ाम का अंदाज़ा करने के लिये साहिबे ख़ुत्बात की यह गवाही ग़ौर से पढ़ें किः

"हज़रत बाबू जी रह0 को बारगाहे रिसालत में ऐसी क़बूलियत नसीब हुई थी कि आप जिस शख़्स के बारे में दुआ फ़रमा देते कि उसे नबी सल्ल0 की ज़ियारत नसीब हो, उमूमन उसे तीन दिन के अंदर ज़ियारत हो जाती। तबलीग़ी जमाअत झंग के अमीर जनाब सूफ़ी मुहम्मद दीन साहब ने राक़िमुल हुरूफ़ से राएवंड के इज्तिमा पर कहाः "अपनी तरफ़ से तो आमाले सालिहा की बहुत कोशिश करता हूं, लेकिन अजीब बात है कि अभी तक नबी सल्ल0 की ख़्वाब में ज़ियारत नसीब नहीं हुई, राक़िमुल हुरूफ़ ने मौक़ा ग़नीमत समझते हुए उनकी मुलाक़ात हज़रत बाबू जी रह0 से करा दी और हज़रत बाबू जी रह0 से दुआ की

दरख़्वास्त की। आपने अज़राहे करम दुआ के लिये हाथ उठाए।

जनाब सूफ़ी मुहम्मद दीन साहब को तीन दिन के अंदर हुज़ूरे अक्रम सल्ल0 की ज़ियारत नसीब हुई तो उन्होंने शुक्रिया का ख़त लिखा।

(हयाते हबीब स0682-83)

हम लोगों ने मुतअद्दद बार हज़रत से बाबू जी का ज़िक्रे ख़ैर सुना है, हज़रत ने हयाते हबीब में भी उनका ख़ासा तफ़सीली तज़किरा किया है। वहीं से एक वाक़िआ और नक़्ल करता हूं:

"एक मर्तबा हज़रत बाबू जी रह0 को ख़्वाब में ताजदारे मदीना सल्ल0 की ज़ियारत हुई, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 भी साथ थे, हुज़ूरे अक्रम सल्ल0 ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 से फ़रमाया कि "यह अब्दुल्लाह मुझ तक आना चाहता है मगर उसमें इतनी हिम्मत नहीं कि आ सके आप उसे मुझ तक पहुंचा दें, चुनांचे हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने आप के क़ल्ब पर उंगली रख कर फ़रमायाः "कहो अल्लाह......अल्लाह......अल्लाह, एक दम आप की आंख खुल गई। आपके रग व रेशे में अल्लाह का ज़िक्र सरायत कर चुका था। सिद्दीक़े अक्बर रज़ि0 की एक तवज्जोह ही ने वासिल कर दिया-

इश्क़ की एक जुस्त ने तै कर दिया क़िस्सा तमाम
इस ज़मीन व आसमां को बे करां समझा था मैं

तो यह थे वह बुज़ुर्ग जिनसे मुहब्बत का रिश्ता जोड़ रखा था शैख़ वजीहुद्दीन साहब ने जो एक साहिबे दिल साहिबे बातिन बुज़ुर्ग थे, वह इन्ही के ज़ेरे निगरानी सुलूक के मामूलात पूरे करते

रहे---आगे चलकर शैख़ वजीहुद्दीन, सिलसिलए आलिया नक़्शबंदिया के अज़ीम बुज़ुर्ग और मुसल्लम फ़क़ीह हज़रत मौलाना सय्यद ज़वार हुसैन शाह साहब रह0 से बैअ़त हो गए, उनके भी अह्वाल जो हज़रत ने "हयाते हबीब" में बयान किये हैं वह भी निहायत बुलंद और पाकीज़ा हैं।

अब हम वापस आते हैं अपने असल मौज़ू की तरफ़, तज़किरा चल रहा था कि हज़रत ने अपनी जवानी में एक ख़्वाब देखा जिसके बाद क़ल्ब की अजीब व ग़रीब कैफ़ियत महसूस होने लगी। इस ख़्वाब का तज़किरा आपने अपने एक दोस्त से किया, जिन्होंने इन्ही बुज़ुर्ग यअ़नी हज़रत शैख़ वजीहुद्दीन से इसका तज़किरा किया तो उन्होंने यह राए दी किः

"बेहतर है कि बाबूजी को ख़त लिख दिया जाए,"

चुनांचे हज़रत ने बाबूजी रह0 को एक ख़त लिखा, जिसके जवाब में उन्होंने हज़रत को लिखाः

"मालूम होता है कि आपका क़ल्ब जारी हो चुका है, आप फ़ौरन किसी शैख़ से बैअ़त हो जाएं, वर्ना शैतान मर्दूद फ़ित्ने में न डाल दे।"

यह ख़त पढ़ कर हज़रत ने अपने इन ही दोस्त के मशवरा से यह तै किया कि उन ही बुज़ुर्ग से जिनसे हज़रत शैख़ वजीहुद्दीन साहब का तअल्लुक़ है, उन ही से बैअ़त हो जाएं, यअ़नी हज़रत मौलाना सय्यद ज़वार हुसैन शाह साहब रह0 से, और इसी इरादे से लाहौर आकर शैख़ वजीहुद्दीन साहब से मुलाक़ात की, और उनके मशवरा से हज़रत मौलाना सय्यद ज़वार हुसैन शाह साहब रह0 की ख़िदमत में बैअ़त की दरख़्वास्त के लिये ख़त भेजा, (यह ज़माना हिंद व पाक की जंग का ज़माना था, शायद इसलिये लाहौर से कराची का

सफ़र मुश्किल था) वहां से जवाब आया कि "आप को ग़ाइबाना बैअ़त कर लिया गया है"। और बक़ौल हज़रतः "यह मुज़दये जां फ़ज़ा उनके लिये एक नई ज़िंदगी की ख़ुशख़बरी लाया"।

शैख़ वजीहुद्दीन से तरबियती राबता

इसके बाद तक़्दीरे इलाही ने एक करम और यह किया कि हमारे मम्दूह को ख़ुद लाहौर की उसी इंजीनियरिंग यूनीवर्सिटी में दाख़िला मिल गया जहां यह शैख़ वजीहुद्दीन इंजीनियरिंग के प्रोफ़ेसर थे--वैसे तो यह उनके पीर भाई ही थे, मगर राहे सुलूक में वह बहुत अगले मराहिल पर थे--माद्दी और रूहानी दोनों क़िस्म की इंजीनियरिंग के इस हौसलामंद नौजवान तालिबे इल्म ने उनकी शार्गिदगी सिर्फ़ इंजीनियरिंग ही में नहीं, बल्कि सुलूक में भी इख़्तियार कर ली--शैख़ वजीहुद्दीन की तरबियत का रंग उनके शार्गिदों पर किस तरह चढ़ा करता था इसका अंदाज़ा इससे कीजिये कि हज़रत ने उनके बारे में लिखा हैः

> "इंजीनियरिंग यूनीवर्सिटी लाहौर में आपने ऐसे मुत्तबेअ़ सुन्नत नौजवान ज़ाकिरीन की जमाअत तैयार की कि शायद मिन हैसुल जमाअत पूरी दुनिया में उसकी नज़ीर नहीं मिलती"।

हमारे हज़रत ने अपने उन उस्ताज़ व मुरब्बी का तफ़सीली तज़किरा किया है, चंद बातें नमूने के तौर पर नक़्ल की जा रही हैं ताकि उनकी शख़्सियत के मक़ाम और ज़ौक़ व मिज़ाज का कुछ अंदाज़ा किया जा सकेः

☆ "आप बैअ़ फ़ासिद के फलों से परहेज़ फ़रमाते हैं, सिवाए केला, गाजर, मूली यअ़नी वह सब्ज़ियां और फल जो बैअ़ बातिल के ज़ुम्रे से ख़ारिज हैं, उन्हें इस्तिमाल फ़रमाते।

☆ आप बाज़ार की तैयारकर्दा खाने पीने की अशया मसलन बिस्किट, इम्पोर्टिड दूध, डबल रोटी, जाम, कोल्ड ड्रिंक, आइस क्रीम, रोस्ट बरोस्ट, और मिठाइयों वग़ैरा से मुकम्मल परहेज़ करते हैं।

☆ आप में आजिज़ी व इंकिसारी कूट कूट कर भरी हुई है, गुमनाम रहकर ज़िंदगी बसर करना आप का मामूल है।

☆ अपने आपको शैख़ साहब के अलफ़ाज़ से पुकारने की इजाज़त देते हैं, अगर कोई साहब "हज़रत" का लफ़्ज़ इस्तेमाल करें तो फ़ौरन टोक देते हैं।

☆ एक मर्तबा आप साईकिल पर यूनीवर्सिटी में जा रहे थे, एक नौ वारिद तालिबे इल्म ने आपको रोक कर पूछाः आप का क्या नाम है? आपने फ़रमायाः वजीहुद्दीन, उसने कहा कि मुझे आप फ़लां जगह छोड़ देंगे? आपने उस तालिबे इल्म को पीछे साईकिल पर बैठा लिया और मतलूबा जगह पर छोड़ आए, उसको एहसास तक न होने दिया कि आप यूनीवर्सिटी के टीचर हैं।

☆ राक़िम ने पांच साल सफ़र व हिज़्र में दिन रात आप की सोहबत में रहकर यह नतीजा निकाला कि "आसमान की ज़ीनत सितारों से है, ज़मीन की ज़ीनत परहेज़गार इंसानों से है......पांच साल के अर्से में राक़िमुल हुरूफ़ ने आप से एक अमल भी ख़िलाफ़े सुन्नत सरज़द होते हुए नहीं देखा, जो शख़्स भी चंद दिन आपकी सोहबत में रहता है, वह दोरंगी छोड़कर यकरंगी इख़्तियार कर लेता है" (हयाते हबीब स0689 ता 695)

इस्लाह व तक्मील की मुसलसल कोशिश और असफ़ार

इंजीनियरिंग के आख़िरी साल का इम्तिहान देने के बाद हमारे मम्दूह ने जो उन दिनों एक नौजवान थे, सिलसिलए आलिया नक़्शबंदिया के अज़ीम बुज़ुर्ग हज़रत ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह0

की ख़ानक़ाह में चार माह का अर्सा गुज़ारा, जहां रोज़ाना सात घंटे मुराक़बा करने का मामूल था, इसके बाद सिर्फ़ इस मक़्सद से कराची का रख़्ते सफ़र बांधा कि वहां एक दोस्त के यहां क़याम करके अपने शैख़ हज़रत मौलाना ज़वार हुसैन शाह साहब रह० की ख़िदमत में हाज़िरी होती रहेगी, उस ज़माने में वह अपनी मशहूर व मोतबर किताब "उम्दतुल फ़िक़ह" की तालीफ़ फ़रमाते रहे थे, कराची के क़याम के दौराने मामूल यह रहा कि साहिबे ख़ुत्बात अपनी रिहाइशगाह पर सारा दिन ज़िक्र व मुराक़बा में लगे रहते और अस्र के बाद हज़रत शाह साहब के यहां हाज़िरी होती, हज़रत शाह साहब मुजद्दिदी उलूम व मआरिफ़ के ज़बरदस्त माहिर थे, उन्होंने हज़रत मुजद्दिद साहब के मक्तूबात का तर्जुमा भी किया है, चुनांचे इस मौक़ा को ग़नीमत जानकर हज़रत ने यह मामूल बना लिया कि दिन में मक्तूबात का मुतालआ करते और अस्र के बाद की मजलिस में हज़रत शाह साहब से मुश्किल मक़ामात के बारे में सवालात करते। कुछ अर्सा इस तरह अपने शैख़ की सोहबत में गुज़ारने के बाद हज़रत कराची से अपने वतन वापस पहुंचे और वहां मुलाज़िमत के साथ साथ हिफ़्ज़े क़ुर्आन और अरबी व दीनी तालीम की तकमील में लग गए।

बैअ़त सानी

हज़रत सय्यद ज़वार हुसैन शाह साहब रह० के विसाल के बाद अपनी इस्लाह की फ़िक्र व तलब ने हज़रत को हज़रत मौलाना शाह गुलाम हबीब रह० के क़दमों तक पहुंचा दिया, जो चकवाल को अपना मुस्तक़र बना कर क़ुर्ब व जवार और दूर दराज़ के इलाक़ों तक बल्कि दुनिया के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में दीन की तबलीग़ व इशाअत और अह्ले तलब की तालीम व तरबियत के नबवी काम में

दिन रात मसरूफ़ रहते थे—हमारे हज़रत ने इस बैअ़त का तज़किरा इन लफ़्ज़ों में किया हैः

"राक़िम ने हज़रत शाह साहब रह० की वफ़ात हसरते आयात के बाद इस्तिख़ारा किया तो तजदीदे बैअ़त के लिये हज़रत मुर्शिदि आलिम (मौलाना शाह ग़ुलाम हबीब रह०) की तरफ़ तवज्जोह माइल हुई, राक़िम ने हज़रत मुर्शिदि आलिम को दस साल पहले मिसकीन पूर शरीफ़ के इज्तिमा पर देखा था और बयान भी सुना था, चुनांचे राक़िम दिल गिरिफ़्ता प्यूसतए मंज़िल हाने की आरज़ू में चकवाल पहंचा, उस वक़्त मस्जिद की तौसीअ़ का काम जारी था और नई बुनियाद खोदी जा रही थी, इस्तिफ़सार करने पर मालूम हुआ कि हज़रत मुर्शिदे आलिम तो मरी गए हुए हैं, कल वापस आयेंगे। हज़रत मुर्शिदि आलिम अगले दिन अस्र के बाद तशरीफ़ लाए, अह्ले ख़ाना ने इत्तिला दी तो राक़िम को बुलवाया और पूछा कैसे आना हुआ? अर्ज़ किया "हज़रत! मैं यतीम हो गया हूं, और यह कह कर ज़ार व क़तार रोना शुरू कर दिया, राक़िम इस दर्द से रोया कि हज़रत मुर्शिदे आलिम भी आबदीदा हो गए, फ़रमाया बैअ़त किन से थी? अर्ज़ किया हज़रत सय्यद ज़वार हुसैन शाह साहब रह० से, फ़रमाया उनकी निस्बत क़वी और सही थी। फिर पूछा खुद आए हो या किसी ने भेजा है? अर्ज़ किया खुद आया हूं, इस्तिख़ारा किया था, दस साल पहले आपकी ज़ियारत भी की थी, बयान भी सुना था, बहुत मुतास्सिर भी हुआ था, फ़रमाया अगर मुतास्सिर हुए थे तो फिर मिले क्यों नहीं? अर्ज़ किया

हज़रत तवज्जोह का क़िब्ला एक ही था, दूसरी तरफ़ आंख उठा के भी न देखता था, फ़रमाया माशा अल्लाह ऐसे ही होना चाहिये......चुनांचे हज़रत मुर्शिदे आलिम ने बैअ़त फ़रमाया। (हयाते हबीब स0750-51)

हज़रत शाह ग़ुलाम हबीब रह0 के कुछ अह्वाल

जी तो चाहता है कि इस मौक़ा पर मुर्शिदे आलिम हज़रत मौलाना शाह ग़ुलाम हबीब साहब क़द्दसल्लाह सर्रुहू के तफ़सीली अह्वाल ज़िक्र किये जाएं, मगर सफ़हात की गुंजाइश महदूद है।

अह्ले ज़ौक़ हज़रात "हयाते हबीब" का मुतालआ कर लें, ताहम इसी किताब से मुख़्तसरन कुछ इक़्तिबासात पेश किये जाते हैं।

सिलसिलए नसबः

हमारे साहिबे ख़ुत्बात के बयान के मुताबिक़ हज़रत शाह ग़ुलाम हबीब साहब का सिलसिलए नसब 34 वास्तों से सय्यदना अली बिन अबी तालिब रज़ि0 से मिलता है।

तालीमी सिलसिलाः

आप के वालिद माजिद बचपन ही से आपको हाफ़िज़ कहकर मुख़ातिब करते, जबकि आपकी वालिदा माजिदा रह0 के दिल में भी यही शौक़ अंगड़ाइयां लेता था..........आपने अपने लड़कपन ही में इलाक़े के मअ़रूफ़ उस्ताज़ हज़रत क़ारी क़मरुद्दीन रह0 से क़ुर्आन पाक हिफ़्ज़ किया......आपने इल्मी किताबें अपने चचाज़ाद भाई शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना सय्यद अमीर रह0 से पढ़ीं, जो दारुल उलूम देवबंद से फ़ारिग़ुल तह्सील होने के साथ साथ "दरजवानी तौबा कर दिन शैवए पैग़म्बरी" का मिस्दाक़ भी थे, आप का इल्मी ज़ौक़ व शौक़ देखकर उन्होंने मुरव्वजा निसाब के बजाए चीदा चीदा किताबें ऐसे अंदाज़ से आपको पढ़ाईं कि आप का सीना इल्मे नाफ़ेअ़ का ख़ज़ीना बन गया।"

हज़रत मौलाना हुसैन अली शाह साहब और हज़रत मौलाना अहमद अली लाहौरी रह० अलैहिमा से तलम्मुज़ का शर्फ़

हमारे अह्ले इल्म उन दोनों हज़रात के इल्मी व रूहानी मक़ामे बुलंद से बख़ूबी वाक़िफ़ हैं, ख़ुसूसन फ़ह्मे कुर्आन में और अक़ीदए तौहीद में सलाबत के साथ कामिल इत्तिबाए रसूल में इन दोनों हज़रात का मक़ाम बहुत बुलंद बताया जाता है। हज़रत मौलाना शाह गुलाम हबीब साहब रह० ने पहले तो मुद्दतों हज़रत मौलाना हुसैन अली शाह[1] साहब रह० की सोहबत में रहकर तफ़सीरे कुर्आन का दर्स लिया, जो बराहे रास्त हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० के शार्गिद थे और अक़ीदए तौहीद में सलाबत और तफ़सीरे कुर्आन में मुम्ताज़ मक़ाम रखते थे, फिर उनकी वफ़ात के बाद हज़रत मौलाना अहमद अली लाहौरी रह० से रुजूअ़ किया, इन दोनों हज़रात की मुहब्बत और तवज्जूहात ने उनके सीने में इल्म और इश्क़ की जामिइयत, अक़ीदए तौहीद पर पुख़्तगी नीज़ दीन की इशाअत व इक़ामत का बेपनाह जज़्बा भर दिया और अकाबिर दारुल उलूम देवबंद के मसलक व मशरब से गहरी और मब्नी बर बसीरत वाबस्तगी की दौलत बख़्शी।

---

1. हज़रत मौलाना हुसैन अली शाह साहब के इंतिक़ाल की ख़बर सुन कर हज़रत मौलाना मुहम्मद मंज़ूर नोमानी रह० ने जो तअ़ज़ियती नोट अलफ़ुर्क़ानः शव्वाल 1360 हि० में लिखा था, उसके चंद जुम्ले यहां नक़्ल किये जा रहे हैं:
"मैंने सबसे पहले हज़रत उस्ताज़ मौलाना सय्यद मुहम्मद अनवर शाह कशमीरी क़द्दसा सर्रुहू से हज़रत मम्दूह का तज़किरा बहुत बुलंद कलिमात में सुना था, अवाख़िर 1355 हि० में क़ज़ा व क़द्र ने एक अजीब व ग़रीब इत्तिफ़ाक़ से मुझे दो तीन दिन के लिये ख़िदमत बाबरकत में पहुंचा दिया, इख़्लास, तौहीद और उसकी दावत व तबलीग़ के साथ इतना शग़फ़, शिर्क व शवाइबे शिर्क से इतनी बेज़ारी बल्कि ऐसी अदावत और इत्तिबाए सुन्नत के साथ इस क़दर एहतिमाम मुझे कहीं और देखना याद नहीं......उस ज़माने में मुजद्दिदी तरीक़ सुलूक के वह सबसे बड़े साहब इर्शाद शैख़ और उन दयार में मुजद्दिदी निस्बत के वाहिद हामिल व अमीन थे......

बैअ़त व इरादतः

हज़रत शाह गुलाम हबीब रह0 को शुरू ही से अपने चचाज़ाद भाई मौलाना सय्यद अमीर रह0 की शक्ल में एक साहिबे नज़र और इंतिहाई ख़ैरख़्वाह मुरब्बी मिल गए थे, उन्होंने अपने इस भाई और शार्गिद के दिल में मुहब्बते इलाही और सोहबते सालिहीन के जज़्बात के बीज बचपन ही में डाल दिये थे। फिर वक़्त आने पर वह ख़ुद हज़रत ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह0 की ख़िदमत में उन्हें लेकर हाज़िर हुए और बैअ़त कराया--इसके बाद से हज़रत शाह गुलाम हबीब रह0 ने पूरे ज़ौक़ व शौक़, वालिहाना जज़्बे और शदीद मेहनत के साथ सुलूक के मअ़मूलात पूरे करने शुरू कर दिये, और बहुत जल्द वह अपने शैख़ के इंतिहाई मंज़ूरे नज़र हो गए और फिर वह वक़्त आया कि हज़रत ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह0 ने उन्हें "तकमील व तसदीक़" के लिये अपने शैख़ हज़रत ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह0 की ख़िदमत में भेजा, जिन्होंने इशारा पाकर उन्हें सिलसिलए आलिया की इजाज़त व ख़िलाफ़त मरहमत फ़रमाई। इसी मौक़ा पर एक और साहब को भी इजाज़त व ख़िलाफ़त दी गई थी, उनका नाम था जनाब गुलाम हैदर मअ़रूफ़ बं हाफ़िज़ बुड्ढन ख़ां--जिन्होंने बाद में अपना एक ख़्वाब हज़रत ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह0 को सुनाया, उन्होंने कहा हज़रत! मैंने चंद दिल पहले यह ख़्वाब देखा कि आप मुझे भी ख़िलाफ़त दे रहे हैं और एक शख़्स को भी जिस का नाम "बाग़े अली" है......यह सुनकर हज़रत क़ुरैशी रह0 मुस्कुराए और अपना दाहिना हाथ शाह गुलाम हबीब रह0 के कंधे पर रखकर फ़रमायाः "यही अली का बाग़ है, यही अली का बाग़ है......"

हज़रत शाह गुलाम हबीब रह0 की शख़्सियत के चंद अहम पहलू

1. दीनी हमियत और मुजाहिदाना मिज़ाजः

हज़रत शाह गुलाम हबीब रह0 ने शुरू से जिन उलमा से इस्तिफ़ादा किया था, उनकी सोहबत व तलम्मुज़ की बरकत से उनके अंदर अक़ीदए तौहीद में सलाबत, बिद्आत से नुफ़ूर और उम्मत की इस्लाह की फ़िक्रे सरायत आम लोगों के अक़ाइद व आमाल की इस्लाह ही के मक़्सद से जगह जगह दर्से क़ुर्आन का सिलसिला जारी किया, और एक मदरसा अरबिया हबीबिया की दाग़ बैल डाली---इसके बाद एक वक़्त आया कि चकवाल के बिद्आत के रद्द में बोलना शुरू किया तो सामिईन में से कुछ लोगों ने आप के हाथों से क़ुर्आन मजीद छीन लिया, आपको मिंबर से उतार दिया और तूफ़ाने बदतमीज़ी बपा किया---इसके बाद आपने फ़ैसला कर लिया कि अब चकवाल में ही काम करना है कि यहां ज़रूरत ज़्यादा है, चुनांचे आने चकवाल में एक साहब के यहां क़्याम किया जो आप से मानूस थे, चंद रोज़ा क़्याम के बाद पता चला कि सरकारी कालिज के क़रीब एक मस्जिद वीरान पड़ी है, बस आप वहां गए, ख़ुद सफ़ाई की और नमाज़ क़ाइम की। वहां आहिस्ता आहिस्ता कालिज के कुछ नौजवान आने लगे, जिनके दर्मियान आपने क़ुर्आन का दर्स देना शुरू किया। जिसके ज़रीआ एक छोटी सी जमाअत बन गई। मगर यह मस्जिद शहर से दूर थी, और अह्ले शहर की इस्लाह का काम यहां बैठ कर हस्बे मंशा नहीं हो पा रहा था, इसी दौरान आप को पता चला कि शहर में एक और छोटी सी मस्जिद है है जो ग़ैर आबाद है, आप ने इस मस्जिद में नमाज़ का सिलसिला शुरू कर दिया, बक़ौल साहिबे ख़ुत्बातः

"आपने बनफ़्स नफ़ीस उस मस्जिद को गंदगी व नजासत

से पाक साफ़ किया और नमाज़ बाजमाअत का इज्रा किया, मस्जिद का नया नाम "मस्जिद दारुल हन्फ़िया" रखा, इब्तिदा में आप ही मुअज़्ज़िन, आप ही मुकब्बिर, आप ही मुक़्तदी, आप ही इमाम होते, आप फ़रमाया करते थे कि मैं अज़ान देकर नमाज़ियों के इंतिज़ार में बैठ जाता, जब काफ़ी देर गुज़रने के बाद भी कोई न आता तो मैं अपनी नमाज़ पढ़ लेता और ज़िक्र व मुराक़बा का एहतिमाम करता---आपकी दुआएं रंग लाईं और एक दो नमाज़ियों ने मस्जिद में आना शुरू कर दिया, आपने दर्से कुर्आन पाक का सिलसिला जारी कर दिया तो नमाज़ियों की तादाद में ख़ातिर ख़्वाह इज़ाफ़ा हो गया......"

(हयाते हबीब स0112)

उमूमी इस्लाह के लिये मुसलसल अस्फ़ार:

दूर दूर से तमाशा देखने और तब्सिरा करने वाले कुछ लोग यह समझते हैं कि तसव्वुफ़ व सुलूक के मिज़ाज में उम्मत की उमूमी इस्लाह की फ़िक्र व सई नहीं है---पूरी तारीख़ दावत व इस्लाह गवाह है यह बात सरासर ग़लत है और सिर्फ़ जिहालत पर मब्नी है---हज़रत शाह गुलाम हबीब रह0 का जिस सिलसिला से तअल्लुक़ था, इस सिलसिला के तमाम मशाइख़ भी अपने अपने दौर में गांव गांव, क़र्या क़र्या उमूमी इस्लाह के लिये मुसलसल सफ़र करते थे। और अपने खुलफ़ा को भी उमूमी इस्लाह के काम की सख़्त ताकीद करते थे। यही ज़ौक व मिज़ाज हज़रत शाह गुलाम हबीब रह0 का भी था। साहिबे खुत्बात गवाह हैं कि:

"आपने "اِنِّىْ دَعَوْتُ قَوْمِىْ لَيْلًا وَّنَهَارًا" (बेशक मैं बुलाता रहा अपनी क़ौम को रात और दिन) की यादें ताज़ा कर

दीं। दीन के कामों में थकना आप को आता ही न था, जहां कहीं से तक़ाज़ा आता तो आप अपने ज़ाती तक़ाज़ों को क़ुर्बान करके (اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا निकलो हल्के और बोझल) पर अमल पैरा होते हुए وَجَاهِدُوْا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ (और मेहनत करो अल्लाह के वासते जैसे कि चाहिये उसके वासते मेहनत) की बुलंदियों को छू लेते। आपके सीमाबे सिफ़त क़ल्ब का इहयाए दीन का ग़म चैन व आराम न लेने देता था......" (हयाते हबीब स0226)

क़ुर्आन से वालिहाना शग़फ़ और ग़ैर मामूली मुनासिबत

हज़रत शाह गुलाम हबीब रह0 ने ऐसे माहिरे फ़न और आशिक़े क़ुर्आन असातिज़ए किराम से तफ़सीरे क़ुर्आन का इल्म हासिल किया था, कि खुद उनकी रग व पै के अंदर क़ुर्आन का इल्म व फ़ह्म और उसके इश्क़ का नूर भी सरायत कर गया था, उनका हर बयान बेशुमार आयाते क़ुर्आनी से मुज़य्यन होता था, एक आयत पढ़ते थे, फिर उसकी तशरीह के लिये दूसरी आयत पढ़ते थे, फिर तीसरी, चौथी......इस तरह पूरा बयान तफ़सीरे क़ुर्आन बिल क़ुर्आन का शानदार नमूना होता था। साहिबे खुत्बात ने अपने शैख़ व मुर्शिद के इस कमाल को इन लफ़्ज़ों में बयान किया है:

"दौराने बयान आप क़ुर्आन पाक की आयात दलील के तौर पर इस रवानी से पेश फ़रमाते जैसे कि मोतियों की माला टूट पड़ी हो और मोती तवातुर से गिर रहे हों।

तफ़सीर क़ुर्आन बिल क़ुर्आन के मुआमले में आप की नज़र नहीं मिलती थी। आप फ़रमाते थे "जैसे टीवी चलता है और लोग सामने बैठे तसवीरें देखते रहते हैं, इसी तरह दौराने तक़रीर मेरे सामने क़ुर्आन पाक का टीवी चल पड़ता

है और मैं आयतें देखता रहता हूं" (हयाते हबीब स039)

आप का अपनी ज़िंदगी के ज़्यादा तर अय्याम में रोज़ाना बाद नमाज़े फ़जर दर्से कुर्आन का मामूल रहा। एक मर्तबा आप को दरबारे नुबूवत से भी यह इशारा मिला कि "हमें तुम्हारा कुर्आन बहुत पसंद है" इसके बाद तो आपने और ज़्यादा पाबंदी और एहतिमाम बढ़ाया। आपके दर्से कुर्आन से बिला मुबालिग़ा लाखों लोगों की इस्लाह हुई साहिबे ख़ुत्बात रावी हैं किः

> "हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ बनौरी रह0 "आपका दर्से कुर्आन सुनते तो अश अश कर उठते और फ़रमातेः इस दौर में अगर किसी ने कुर्आन को समझा है तो हज़रत मौलाना पीर गुलाम हबीब साहब ने समझा है"। (हयाते हबीब स0446)

मुआसिरे अकाबिर व मशाइख़ से तअल्लुक़

हज़रत मौलाना शाह गुलाम हबीब साहब रह0 का मुहब्बत व एहतिराम पर मब्नी राबता हमारे अकाबिर में हज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास साहब रह0 से बहुत क़रीबी था, उनके साथ हज भी किया था, फिर उनकी वफ़ात पर तअज़ियत की नियत से वह सफ़र करके मरकज़े निज़ामुद्दीन तशरीफ़ लाए, और वहां से एक जमाअत के साथ कलकत्ता का सफ़र किया। हज़रत मौलाना अब्दुल गुफ़ूर नक़्शबंदी मुहाजिर मदनी रह0 जो हज़रत ख़्वाजा फ़ज़ल अली कुरैशी रह0 के अजल ख़ुलफ़ा में थे, उनसे भी बहुत गहरा तअल्लुक़ था। शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह0 से बारहा आपकी मुलाक़ातें मदीना मुनव्वरा में हुई थीं। बल्कि कई बार तो ऐसा भी हुआ कि हज़रत शैख़ रह0 जिस मदरसतुल उलूमुल शरइया में क़्याम फ़रमाते थे, उसी के बालाई मंज़िल वाले कमरे में आप हज़रत शाह

गुलाम हबीब रह0 के क़याम का बंदोबस्त करवा देते थे, साहिबे खुत्बात ने लिखा हैः

"आप को हज़रत शैखुल हदीस रह0 से इतनी मुहब्बत थी कि मजालिस में तज़किरा करते हुए वफ़ूरे मुहब्बत में आबदीदा हो जाते थे, जब हज़रत शैखुल हदीस की वफ़ात हसरते आयात की जानकाह ख़बर मिली तो आप बहुत देर तक इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ते रहे, और आप पर ऐसी कैफ़ियत तारी थी जैसा कि अफ़रादख़ाना में से किसी ने दाई अजल को लब्बैक कहा हो।" (हयाते हबीब स0180)

मशहूर मुहद्दिस हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ बनौरी रह0 को भी आप से बेहद मुहब्बत व अक़ीदत थी, जब भी आप कराची में होते तो हज़रत बनौरी रह0 आप से अपने मदरसा के लिये प्रोग्राम तलब फ़रमाते थे, तलबा को बार बार ताकीद फ़रमाते कि वह आप से बातिनी रिश्ता उस्तुवार करके अपने आप को अल्लाह के रंग में रंगने की कोशिश करें। हकीमुल इस्लाम हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तय्यब साहब रह0 से भी आप को शदीद मुहब्बत थी। और हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह0 की ज़ियारत के लिये आप एक बार थाना भवन भी तशरीफ़ ले गए थे।

साहिबे खुत्बात की शख़्सियत का एक अहम पहलूः

इल्म, अक़्ल और इश्क़ की जामिइयतः

हज़रत बाबा फ़रीद शकर गंज रह0 ने जब हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया रह0 को इजाज़त व ख़िलाफ़त दी थी, उस वक़्त उनसे कहा थाः

"बारी तआला तिरा इल्म व अक़्ल व इश्क़ अता फ़रमूदा अस्त"

(बारी तआला ने तुमको इल्म, अक़्ल और इश्क़ अता फ़रमा दिया है।)

हमारे साहिबे ख़ुत्बात की शख़्सियत का क़रीब से मुतालआ करने पर साफ़ नज़र आता है कि बिला शुब्हा उनकी ज़ात में भी तौफ़ीक़े इलाही ने मज़कूर बाला तीनों सिफ़ात जमा फ़रमा दी हैं—इल्म का हाल यह है कि वह्बी और कसबी दोनों तरह के उलूम उनके पास जमा हैं। उनकी रातों का बेशतर हिस्सा किताबों के मुतालआ में गुज़रता है। उनका हर बयान सैकड़ों सफ़हात के मुतालए का निचौड़ होता है—वह तलबा और तालिबात के कई कई मदारिस दुनिया के मुख़्तलिफ़ मुल्कों में चला रहे हैं। ऐसे प्रोफ़ेशनल नौजवानों की तादाद अल्लाह ही जानता है जो उनसे वाबस्ता होने के बाद पूरे दर्से निज़ामी से फ़ारिग़ हुए, वह ज़िक्र के साथ साथ इल्म पर बेहद ज़ोर देते हैं। ख़ुद हदीस की मशहूर किताब शमाइले तिर्मिज़ी का दर्स देते हैं जो तलबा ही में नहीं उलमा व असातिज़ा में बेहद मक़्बूल है। मुख़्तलिफ़ व क़ती ज़रूरत के मौज़ूआत पर भी उनके इल्मी दुरूस का सिलसिला भी चलता है, मसलन इंकारे तक़्लीद के राइजुल वक़्त फ़ित्ने के सद्देबाब के लिये उन्होंने दर्स के हल्क़े मुन्अक़िद किये हैं।

जहां तक वह्बी इल्म का सवाल है तो इसके बारे में कुछ अर्ज़ करना मुझे अपनी हुदूद से तजाविज़ मालूम होता है और उनके अफ़कार व ताबीरात उसके शाहिदे अद्ल हैं।

हज़रत बाबा फ़रीद रह0 ने दूसरी सिफ़ते अक़्ल बयान की है। तो इसका गवाह हर वह शख़्स है जिसने उनसे निजी मुआमलात में रहनुमाई तलब की हो या इज्तिमाई मुआमलात में, कि अक़्ले मआद और अक़्ले मआश दोनों से अल्लाह ने उनको ख़ूब ख़ूब नवाज़ा है, और बक़ौल हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0 इन अल्लाह वालों को सिर्फ़ दिमाग़ की ज़हानत नहीं मिलती, क़ल्ब और

रूह की ज़हानत भी इनको मिलती है।

और रह गया इश्क़ तो उसकी बाबत यह हैच मदां कुछ भी अर्ज़ करने की ज़रूरत नहीं समझता, इसलिये कि पूरा ज़माना इस बात का गवाह है कि इस दौर में मश्रिक़ व मग़रिब, शिमाल व जुनूब और अरब व अजम हर तरफ़ "दवाए दिल" की तक़्सीम का काम शायद सबसे ज़्यादा इन ही से लिया जा रहा है।

وذٰلک فضل اللّٰہ یؤتیہ من یشاء

مبارکاھادیاللناس محتسباً علی الانام بلامنٍ ولائمٍ

یلقی الیہ رفاق الناس کلھم علی المحامل والاقتاب والسفن

یظل منعفراًللّٰہ مبتھلا یدعوالالٰہ بقلب دائم الحزن

कितने आलम हैं जो गुंचे पे गुज़र जाते हैं

तब कहीं जाके वह रंगीन कुबा होता है

बस अब मैं क़लम रोकता हूं, साहिबे ख़ुत्बात की शख़्सियत का तआरुफ़ करना मेरे बस की बात कहां है क्योंकि

यह रम्ज़ी बे बेसीरत है तेरे रुत्बे को क्या जाने

जो हम रुत्बा हो तेरा वही तेरे औसाफ़ पहचाने

और

गुलचीने बहार तोज़तंगी दामां गिला दारद

और क्या ख़ूब हो कि अह्ले ज़ौक़ हमा शमा की बातों पर भरोसा करने के बजाए ख़ुद क़रीब से देखें

न पूछ उन ख़िर्क़ा पोशों की इरादत हो तो देख इनको

बस अब मुझे दर्मियान से हट जाना चाहिये अब आप हैं और

हज़रत के इर्शादात, पढ़िये और फ़ाइदा उठाइये! और अपनी दुआओं में हम सबको याद रखिये।

आप सबकी दुआओं का मुहताज व तालिब
ख़लीलुर्रहमान सज्जाद नोमानी नक़्शबंदी
ख़ानक़ाह नक़्शबंदिया मुजद्दिदिया नोमानी
मम्दापूर नीरल (गिरजत)
ज़िला राएगढ़ (महाराष्ट्र)
28 शाबान 1432 हि0/ 31 जुलाई 2011 ई0

नोअपरा हवाए बुलबुल कि हो तेरे तरन्नुम से
कबूतर के तने नाजुक में शाहीं का जिगर पैदा

अगले सफ्हा पर आप जो ख़िताब मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, व मुम्बई के इलाक़े, गोवंटी के एक वसीअ़ मैदान "चहीडा ग्राउंड" में, 3/अप्रैल 2011 ई0 बरोज़ इतवार बअद नमाज़े मग़रिब हुआ था, मज्लिस में उलमा, ख़्वास व अवाम के अलावा एक अलग जगह पर मस्तूरात भी कसीर तादाद में हाज़िर थीं, शुरकाए मज्लिस की कुल तादाद का मुहतात तख़मीना 80 हज़ार बताया गया

एहतिरामे इंसानियत

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد

اعوذ بالله من الشيطان الرجيم، بسم الله الرحمٰن الرحيم

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ

سبحان ربك العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العٰلمين

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارك وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارك وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارك وسلم

इंसान की चंद ख़ुसूसियात:

وَلَقَدْ كَرَّمْنَابَنِي آدَمَ और तहक़ीक़ हमने औलादे आदम को इज़्ज़त बख़्शी, इक्राम और एहतिराम क़रीबुल मअ़नी अलफ़ाज़ हैं, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस आयते मुबारक में यह पैग़ाम दिया है कि हम ने आदम अलै0 की औलाद को इज़्ज़त बख़्शी। उसकी चंद सूरते हैं, सबसे पहली सूरत الصُّورَةُ الحَسَنَةُ इंसान को बेहतरीन सूरत में पैदा किया। दूसरी "منحه الْعَقْلَ" उसको अक़्ल की नेअ़मत से नवाज़ा, यह वह नेअ़मत है जो इंसान को बाक़ी जानदारों से मुम्ताज़ करती है, इस अक़्ल की नेअ़मत के सदक़े आज इंसान Most modern scientific world (साइंसी तरक़्क़ी याफ़्ता दुनिया) में ज़िंदगी गुज़ार रहा है। तीसरी "منحه النُطق" अल्लाह तआला ने उसे बोलने की सिफ़त से नवाज़ा, आप देखिये कि बाक़ी जानदार भी एक दूसरे से Communicate (राबता करना) करते

हैं, मगर इशारात में, और जिस फ़साहत और बलाग़त के साथ इंसान अपने माफ़िज़ ज़मीर को बयान करता है, दूसरे जानदार को यह नसीब नहीं है। चौथी "اَكْرَمَهٗ بِالنِّعَمِ" अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इंसान को लातादाद नेअ्मतों से नवाज़ा। पांचवीं "خَلَقَهٗ بِيَدَيْهِ" अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इंसान को अपने हाथों से पैदा फ़रमाया। छटी "فَضَّلَهٗ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ" बाक़ी जानदारों से ज़्यादा उसको फ़ज़ीलत बख़्शी, चुनांचे इंसान अपने दोनों हाथों को इस्तेमाल करके अपने काम करता है, दूसरा कोई जानवर या जानदार अपने हाथों को इस तरह इस्तेमाल नहीं कर पाता। सातवीं "بِاِرْسَالِ الرُّسُلِ" अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने बंदों को सीधा रास्ता दिखाने के लिये मासूम हस्तियों को भेजा, अपने अंबिया को दुनिया में भेजा, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बंदों से मुहब्बत की वाज़ेह दलील है। आठवीं अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इंसान के सीने में दिल रखा है जो एहसास और जज़्बात का मक़ाम है, चुनांचे फ़ित्री तौर पर हर इंसान में हमदर्दी और ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा पाया जाता है अगर किसी जगह चंद लोग हों और कोई बच्चा रोने लग जाए तो हर बंदा फ़ौरन मुतवज्जेह होगा कि बच्चा क्यों रो रहा है? हालांकि वह उसका बेटा नहीं, रिशतेदार नहीं, लेकिन इंसान का बच्चा तो है। मालूम हुआ कि हस्सास दिल का नसीब होना यह एक इंसान के लिये कमाल का दर्जा है। हम लोग कालिज के ज़माने में पढ़ा करते थे एक अंग्रेज़ी ज़बान में मज़मून था, किसी Writer (मुसन्निफ़) ने अपना Section (मक़ाला) लिखा उसने Forecast (पेशनगोई) किया कि आने वाले वक़्त में साइंसी तरक़्क़ी कितनी हो जाएगी, उसने तम्हीद बांधने के बाद यह लिखा कि इंसान Robot (साइंसी दुनिया की इंसान नुमा मशीन) बनाएगा और वह इंतना अच्छा होगा कि हर एतिबार से

इंसान से बेहतर होगा, मिसाल के तौर पर इंसान रात में नहीं देख पाया, दिन में देखता है, रोबोट दिन में भी देखेगा और Night vision instruments (रात में देखने वाले आलात) होंगे तो रात में भी देखेगा, फिर इंसान एक Limited frequency (महदूद सौती सतह) की आवाज़ को सुन सकता है, न इससे ऊपर सुनता है, न इससे नीचे, लेकिन रोबोट की Frequency Band (आवाज़ को क़बूल करने का इरादा) बहुत वसीअ़ होगा, फिर इंसान दो से तीन ज़बानें बोलता है वह रोबोट दुनिया की सारी ज़बानें बोलेगा, फिर इंसान के पास एक टेक्नालोजी होगी या इंजीनियरिंग होगी या मेडिकल हागी या मैनेजमेंट पढ़ी होगी, उस रोबोट के अंदर Hard disc फ़िट हागी जो Thousand tera byte power की डिस्क होगी और दुनिया जहां के उलूम उसमें होंगे, कोई Question (सवाल) पूछो तो फ़ौरन जवाब देगा। फिर उसको खाने पीने की ज़रूरत नहीं होगी, इंसान बीमार भी होता है, वह Stainless steel (ज़ंग लगने से महफ़ूज़ स्टील) का बना होगा, न ख़राब होगा न कुछ होगा, Production (पैदावार) निकालेगा, Non stop 24 hours (मुसलसल शब व रोज़) काम करेगा, हत्ता कि वह एक Model (नमूना) क़िस्म का रोबोट होगा। फिर आगे उस Author (मुसन्निफ़) ने कहा कि यह बंदा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामने दावा करेगा कि ऐ परवरदिगारे आलम! आपने भी बंदे बनाये, इंसान बनाये, और मैंने उसके मुक़ाबले में रोबोट बनाया, मेरा रोबोट उस बंदे से तो कई दर्जे बेहतर था, अल्लाह फ़रमाएंगे कैसे? तो उसके बने हुए चंदी रोबोट होंगे वह उनको कोई Command (हिदायत) देगा, सारे रोबोट एक लाइन में चलने लगेंगे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपनी क़ुदरत से उनमें एक में Fault

(ख़राबी) डालेंगे और कड़क करके उसका कोई Part (पुर्ज़ा) टूट जाएगा, जब पुर्ज़ा टूट जाएगा तो वह रोबोट वहीं खड़ा हो जाएगा, और बाक़ी रोबोट उसी तरह बेपरवाह लाइन में चलते रहेंगे। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाएगा देख लिया तुमने अपने मशीनों को कि एक मशीन में Fault (ख़राबी) हुआ। बाक़ी Function (काम) कर रही हैं, उनको परवाह ही नहीं है, फिर अल्लाह तआला अपने चंद बंदों को खड़ा करेंगे और अपनी कुदरत से उनमें से एक के पेट में दर्द कर देंगे तो जैसे ही उसे दर्द होगा तो बाक़ी सारे लोग अपना काम छोड़ के क़रीब आ जाएंगे, उसे लिटाएंगे, कोई पांव दबाएगा, कोई हाथ दबाएगा, कोई पूछेगा कि क्या हुआ, दर्द उसको हो रहा होगा और आंसू दूसरे बंदे के गिर रहे होंगे, जब दूसरे की आंख से आंसू गिरेंगे तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि मेरे बंदे! देखो तुम्हारे रोबोट के अंदर यह एहसास है? या यह बेहिस चीज़ है, वह कहेगाः बेहिस चीज़ है, अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि मेरे बंदे का कमाल यह है कि मैंने उसे हस्सास दिल अता किया है। तो बंदे की अज़मत यह है कि उसके सीने में हस्सास दिल होना चाहिये, जो बेहिस इंसान हो उसमें और जानवर में फिर क्या फ़र्क़ होता है।

इंसानी हमदर्दी के दो बुन्यादी उसूल

चुनांचे शरीअत की खूबसूरती देखिये कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने कुर्आन मजीद में इंसानी हमदर्दी और उखुवुत के दो बुन्यादी Fundamental law बनाए वह यह हैं, कि जब हम किसी से बात करने लगते हैं तो दूसरा बंदा सबसे पहले हमारे Facial expressions (चेहरे के तास्सुरात) को देखता है, अगर अपनाइयत हो, मुहबबत हो, मुस्कुराहट हो तो दूसरा बंदा दोस्त समझता है और अगर चेहरे के ऊपर अजनबियत हो और संजीदगी

हो और गुस्से के आसार हों तो दूसरा बंदा बिदक जाता है, तो मालूम हुआ कि सबसे पहला Message (पैग़ाम) जो मिलता है वह इंसान के चेहरे के आसार से मिलता है, इसलिये शरीअत ने हमें हुक्म दिया "وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ" इस आयत में सिर्फ़ ईमान वालों का तज़किरा नहीं है "لِلنَّاسِ" कहा कि तुम इंसानों से गुफ़्तगू करते हुए अपने चेहरे को मत फुलाओ, खिले चेहरे से बात करो, शगुफ़्ता चेहरे से बात करो, अब देखिये क्या खूबसूरत Message (पैग़ाम) है जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने दिया कि जिस से भी बात कर रहे वह अल्लाह का बंदा तो है, लिहाज़ा बात करते हुए सबसे पहली चीज़ कि तुम्हारे चेहरे पर मुस्कुराहट हो अपनाइयत हो, मुहब्बत हो, जब तुम्हारे चेहरे के असरात को वह देखेगा और क़रीब हो जाएगा।

दूसरी चीज़ इंसान की गुफ़्तुगू होती है, अगर अलफ़ाज़ का चुनाव अच्छा हो तो बंदा मुहब्बत करने लग जाता है और अगर Rough & Tough (ग़ैर मुहज़्ज़ब और सख़्त) अलफ़ाज़ वाले बंदे हों तो वह आदमी परेशान हो जाता है, इस बारे में शरीअत ने एक Ruling (ज़ाबिता) दी फ़रमाया "قُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا" तमाम इंसानों के साथ तुम अच्छे अंदाज़ से गुफ़्तगू करो, यह दो उसूल ऐसे हैं कि जिन को पढ़कर इंसान दीने इस्लाम की खूबसूरती पर हैरान होता है, हम किसी से भी गुफ़्तगू कर रहे हों, उसका कोई मज़हब हो, कोई ज़ह्न हो, जो भी हो अल्लाह का बंदा तो है। लिहाज़ा दो बातें हमें सामने रखनी हैं, एक तो हम शगुफ़्ता चेहरे से बात करें और दूसरे अलफ़ाज़ का चुनाव ऐसा हो कि दूसरे के दिल में खुशी हो।

नबी सल्ल० ने इन चीज़ों को और Explain और Elaborate (वाज़ेह और मुफ़स्सल) कर दिया। मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत है फ़रमायाः "تَكُفُّ شَرَّكَ عَنِ النَّاسِ" इंसानों को अपने शर

से बचाओ, हम में से हर बंदे के अंदर ख़ैर भी है शर भी है, ख़ुश मूड में होंगे तो ख़ैर निकलेगा और अगर गुस्सा आ जाएगा तो फिर शर निकलेगा, चेहरा बदल जाएगा, अलफ़ाज़ Different (मुख़्तलिफ़) होंगे, ऐसे लगेगा जैसे कोई ख़ूंख़्वार जानवर होता है तो शर तो होता ही है, लेकिन शरीअत ने कहा कि "تَكُفَّ شَرَّكَ عَنِ النَّاسِ" इंसानों से तुम अपने शर को अलग रखो अपने शर से लोगों को बचाओ।

शरीअत का एक मसला सुन लीजिये कि अगर मजलिस में बैठे हैं और आप के दिल में एक बात पैदा हुई कि मैं फ़लां का मज़ाक़ उड़ाऊं लेकिन आप उसका मज़ाक़ नहीं उड़ाते तो चूंकि आपने अपने आप को रोका, लिहाज़ा इस रोकने पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त नेकियां अता फ़रमाएंगे, किया तो कुछ नहीं है लेकिन जो एक Bad temptation हो रही थी (बुरा ख़्याल आ रहा था) कि फ़लां की Kid लगाओ, उसका मज़ाक़ उड़ाओ लेकिन मैंने अपने जज़्बात को रोका, कि नहीं मुझे किसी को Humiliate (बेइज़्ज़त) नहीं करना है, किसी की Public insult (इज़्ज़त उछालना) नहीं करनी है, अब अगर मैंने अपने इस जज़्बा पे क़ाबू पा लिया तो इस क़ाबू पाने पर मुझे सद्क़े को सवाब अता किया जाएगा। तो पहला उसूल बताया "تَكُفَّ شَرَّكَ عَنِ النَّاسِ" इंसानों से अपने शर को तुम एक तरफ़ रखो।

और दूसरी बात फ़रमाईः "اَحَبُّ النَّاسِ اِلَى اللّٰهِ اَنْفَعُهُمْ لِلنَّاسِ" कि इंसानों में सबसे ज़्यादा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को वह शख़्स महबूब और प्यारा होता है जो इंसानों को ज़्यादा नफ़ा पहुंचाता है, एक Litmus test (ज़बरदस्त कसौटी या पैमाना) बता दिया कि किसी बंदे के बारे में मालूम करना चाहो कि यह अल्लाह का प्यारा

है कि नहीं, तो यह देखो कि बह बंदों को कितना नफ़ा पहुंचाता है, जो अल्लाह के बंदों को जितना नफ़ा पहुंचाएगा वह अल्लाह तआला का उतना ही प्यारा होगा और जो अल्लाह तआला के बंदों के लिये वबाले जान बना फिरता होगा तो फिर वह अपना मक़ाम भी अल्लाह की नज़र में देख ले।

इस्लाम में मसावाते इंसानी

फिर तालीमाते इस्लामी में दो बातें हैं, फ़रमाया एक तो जितंने भी इंसान हैं सब बराबर हैं, नबी सल्ल0 ने हुज्जतुल विदा के मौक़ा पर फ़रमायाः "لا فضلَ لِعربيٍ على عَجميٍّ ولالِعجميٍّ على عرَبيٍّ ولا لِاَبيضَ على اَسُودَو لا لِاَسُودَعلى اَبيضَ اِلّا بِالتَقوٰى" गोरे को काले पर फ़ज़ीलत नहीं, अरबी को अजमी पर फ़ज़ीलत नहीं, गोया रंग, नस्ल और ज़बान की वजह से कोई किसी से बेहतर नहीं है, आज चौदह सौ साल गुज़रने के बाद जो Progressive nations (तरक़्क़ी याफ़्ता मुमालिक) हैं वह कहती हैं (No discrimination of colour and race) हमें यह पैग़ाम जो चौदह सौ साल पहले दे दिया गया कि देखो रंग की वजह से, ज़बान की वजह से किसी को किसी पर कोई फ़ज़ीलत नहीं, हां! जो तुम में से बेहतर तक़्वे वाला इंसान होगा उसको दूसरे के ऊपर फ़ज़ीलत हासिल होगी।

अब इसके बारे में एक अजीब वाक़िआ सुन लीजिये, अबू ज़र रज़ि0 का एक ख़ादिम था, एक मर्तबा उससे कोई ग़लती हो गई, ग़लती पर जब अबू ज़र को गुस्सा आया तो उन्होंने फ़रमायाः "يا ابنِ السوداءِ" ओ काली के बेटे, वह हबशन के बेटे थे, उसकी मां हबशन थी, तो उन्होंने यह अलफ़ाज़ कह दिये, इस पर देखिये नबी सल्ल0 ने क्या बात समझाई, बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है अबू ज़र

रज़ि0 फ़रमाते हैं कि: "اِنِّی سَابَبْتُ رجُلًا فعَيَّرْتُهُ بِاُمِّه" मैंने एक आदमी पर ग़ुस्सा किया और मैंने मां के बारे में उसको आर दिलाई कि तेरी मां काली है, "فَقَالَ لِی النبیُّ" मुझे नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया: "يا اَبَاذرٍّ" ऐ अबू ज़र! "اَعيَّرْتَهُ بِاُمِّه" तुमने इसको मां की वजह से आर दिलाई? "اِنَّكَ امْرَأفِيكَ جاهِلِيَّة" तू ऐसा बंदा है कि अभी तेरे अंदर जाहिलियत की बातें मौजूद हैं, "اِخوانُكُم" यह जो तुम्हारे ख़ादिम और ग़ुलाम हैं यह तुम्हारे भाई हैं, "جَعَلَهُمُ اللّٰهُ تَحْتَ اَيدِيكُم" अल्लाह ने उनको तुम्हारे मातिहत बना दिया है "فَمَنْ كَانَ اَخوه تحتَ يدِه" जिस बंदा का भाई उसका मातिहत हो "فَلْيُطْعِمْهُ مِمَّا يَاْكُلُ" उसको चाहिये कि उसको वह खाना खिलाए जो ख़ुद खाए "وَلْيُلْبِسْهُ مِمَّا يَلْبَسُ" जो ख़ुद पहनता है वह कपड़े पहनाए "وَلَا تُكَلِّفُوهُمْ مَا يَغْلِبُهُمْ" उन पर तुम काम का इतना बोझ न डालो कि वह कर न सकें "فَاِنْ كَلَّفْتُمُوهُمْ" और अगर काम का बोझ डालो "فَاَعِينُوهُم" तो फिर तुम भी उनका साथ दे कर काम में उनकी मदद किया करो। अब जब यह बात अबू ज़र रज़ि0 ने सुनी तो उन्होंने नबी सल्ल0 के सहाबी होने का हक़ अदा कर दिया। अल्लामा किर्मानी रह0 अपनी शरह में लिखते हैं कि अबू ज़र रज़ि0 ने जब यह बात सुनी तो अपने उस ग़ुलाम के पास गए और उसके पास जाकर ज़मीन पर लेट गए और कहा कि जब तक तुम मेरे रुख़्सार पर अपना पांव नहीं रखोगे मैं ज़मीन से ऊपर नहीं उठूंगा, ग़ुलाम ने रुख़्सार पर पांव रखा तब वह उठे कि अब मेरी ग़लती मुआफ़ हो गई, नबी सल्ल0 के सहाबी होने का हक़ अदा कर दिया। तो एक तो इंसान सब अल्लाह के बंदे हैं यह तो मसावाते इंसानी एतिबार से है और एक यह कि सब औलादे आदम के बेटे हैं, लिहाज़ा इंसान होने के नाते सब एक दूसरे के भाई हैं। नबी सल्ल0

ने इर्शाद फ़रमायाः "لا تجسسوا ولا تحسسوا ولا تباغضوا ولا تدابروا" न तुम दूसरे के अंदर ऐब ढूंढो, न उसकी टोह में लगो, न दूसरों के साथ बुग़्ज़ रखो, न दूसरों से पीठ फेरो "وكونوا عباد الله اخوانا" अल्लाह के बंदो! आपस में भाई भाई बन कर रहो, अब यह नबी सल्ल० का उम्मत के लिये एक पैग़ाम है कि हम आपस में भाई भाई बन कर ज़िंदगी गुज़ारें।

सिला रहमी की अहमियत

हम अगर अपनी ज़िंदगी को देखें तो हमारे गिर्द मुख़्तलिफ़ रिशतों के चार दाइरे हैं, यूं समझें कि चार Concentric circle हैं जिनका सेंटर एक है, पहला छोटा दाइरा, फिर ज़रा बड़ा, दूसरा उससे भी बड़ा, तीसरा उससे भी बड़ा, और चौथा उससे भी बड़ा, हर इंसान की ज़िंदगी में यह चार दाइरे मौजूद हैं, सबसे पहला दाइरा, यह घर के लोगों का दाइरा है, उसको कहते हैं "Blood relative" यअ़नी नसब का दाइरा Same blood आपस में रिशतेदार Relative हैं, चुनांचे शरीअत ने कहा कि जो आपस में नसब का रिशतेदार हो वह एक दूसरे से रिशतेदारी को जोड़े, अल्लाह तआला उसको पसंद फ़रमाते हैं, शरीअत ने घर के सब लोगों को एक दूसरे के साथ मुहब्बत व प्यार की ज़िंदगी गुज़ारने की तालीम दी है, औलाद को मां बाप के हुक़ूक़ सिखाए, मां बाप को औलाद पर शफ़क़त सिखाई, एक एक individual (फ़र्द) के बारे में शरीअत ने फ़ज़ीलत बताई।

मां का दर्जा

ज़रा सुनिये! मां के बारे में फ़रमायाः "الجنة تحت اقدام امهاتكم" जन्नत तुम्हारे लिये मां के क़दमों के नीचे है। अब बताइये कि जिस शख़्स को यह तालीम दी गई कि जन्नत मां के

क़दमों के नीचे है वह अपनी मां की कितनी Respect (इज़्ज़त) करेगा, उसको कितना Obey (फ़रमांबरदारी) करेगा और फिर साथ यह भी कहा कि जिस तरह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त औलिया अल्लाह की दुआओं को क़बूल फ़रमाते हैं, मां अगर्चे बेअमल हो, औलाद के बारे में उसकी दुआओं को उसी तरह क़बूल फ़रमाते हैं। इसलिये कहते हैं कि एक बुज़ुर्ग थे जिनकी वालिदा फ़ौत हो गई, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उन्हें इलहाम फ़रमाया "मेरे बंदे! ज़रा संभल के रहना, जिसकी दुआएं तेरी हिफ़ाज़त करती थीं वह हस्ती अब दुनिया से चली गई"। और इसी लिये कहते हैं कि "मां की दुआ जन्नत की हवा"

वालिद का दर्जा

फिर इसके बाद वालिद का दर्जा है, हदीस मुबारक है: "رِضَى الرَّبِّ فِى رِضَى الوالِدِ" कि बाप की खुशी में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की खुशी मौजूद है, जिसने अपने वालिद को राज़ी कर लिया गोया उसने अपने परवरदिगार को राज़ी कर लिया, क्या मक़ाम दिया है वालिद का शरीअत में।

मियां बीवी का तअल्लुक़

फिर मियां बीवी का तअल्लुक़ है तो ख़ाविंद के बारे में नबी सल्ल० ने फ़रमाया: "لَو اَمَرْتُ اَحَدًا اَنْ يَسْجُدَ لِاَحَدٍ لَاَمَرْتُ الْمَرْأَةَ اَنْ تَسْجُدَ لِزَوْجِهَا" अगर मैं किसी को किसी के सामने सज्दा करने की इजाज़त देता तो मैं बीवी को हुक्म देता कि अपने ख़ाविंद को सज्दा करे, तो ख़ाविंद का इतना ऊंचा मकाम बताया।

फिर बीवी का मुआमला आया शरीअत ने कहा: "خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِاَهْلِه" तुम में से सबसे बेहतर वह है जो तुम में से अपने बीवी बच्चों के लिये बेहतर है। लिहाज़ा इंसान की अच्छाई का

अंदाज़ा कारोबार से नहीं लगाएंगे, दोस्तों से नहीं लगाएंगे, बाहर के कामों से नहीं लगाएंगे, उसके लिये Yardstic (मीज़ान) बता दी कि देखो अगर तुम्हें किसी बंदे को देखना है कि यह कैसा है, कितने पानी में है? तो देखो कि उसका घर वालों के साथ interaction (मेल मिलाप, बरताव) कैसा है, अगर मुहब्बत प्यार के साथ रहता है तो यह अच्छा इंसान है, और अगर नहीं तो यह बुरा इंसान। चुनांचे हदीस मुबारक है कि जब ख़ाविंद अपनी बीवी को देखकर मुस्कुराता है और बीवी अपने ख़ाविंद को देखकर मुस्कुराती है तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उन दिनों को देखकर मुस्कुराते हैं। शरीअत ने यहां तक कहा कि जितना मुहब्बत व प्यार की ज़िंदगी गुज़ारोगे उतना ही तुम्हें उस पर अज्र व रुत्बा मिलेगा।

औलाद का दर्जा

फिर इसके बाद बेटा और बेटी का रिशता, तो शरीअत ने बेटे के बारे में बताया, तबरानी शरीफ़ की रिवायत है नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः "رِيْحُ الْوَلَدِمِنْ رِيْحِ الْجَنَّةِ" कि बाप अपने बेटे को मुहब्बत से अगर बोसा दे तो बोसा देते हुए जो उसको बेटे की महक महसूस होती है फ़रमाया कि बेटे के जिस्म की ख़ूशबू जन्नत की ख़ुशबूओं में से है, अगर यह समझ लिया जाए तो इंसान बच्चा से कितनी मुहब्बत का इज़हार करेगा। फिर बेटी के बारे में फ़रमायाः "مَنْ كَانَتْ لَهُ اُنْثٰى فَلَمْ يَئِدْها وَلَمْ يُوثِرْ وَلَدَهٗ عليها اَدْخَلَهُ الْجَنَّةَ" जिसको अल्लाह बेटी अता फ़रमाए, वह उसकी अच्छी तरबियत करे और बेटे को उसके ऊपर तरजीह न दे, बेटी से भी इसी तरह मुहब्बत करे, उस बेटी का फ़र्ज़ अदा करेगा तो फ़रमाया कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस बेटी के बदले उस बंदे को जन्नत अता फ़रमाएगा।

बहन भाई का तअल्लुक़

बहन और भाई का भी रुत्बा बताया, चुनांचे भाई को कहा कि देखो! बहन तुम्हारे लिये नामूस है, उसका बोझ ज़िंदगी भर तुम को उठाना है और बहन को कहा कि देखो तुम को भाई से मुहब्बत रखनी है। यह मुहब्बतें ऐसी हैं कि एक मर्तबा एक हाकिमे वक़्त नाराज़ होकर एक औरत के ख़ाविंद को, उसके बेटे को और भाई को तीनों को गिरफ़्तार करवा लिया और उसने हुक्म दे दिया कि इन तीनों को क़त्ल कर दिया जाए, वह औरत बेचारी रोती हुई वहां पहुंची, उसने कहा कि मेरे तो तीन ही महरम हैं, तीनों को क़त्ल कर देंगे तो मेरा क्या बनेगा? तो हाकिमे वक़्त ने कहा अच्छा तुम इन तीन में से एक को select (मुंतख़ब) कर लो, मैं उसको छोड़ दूंगा, वह उम्मीद कर रहा था कि यह ख़ाविंद को चुनेगी और अगर ख़ाविंद को न चुना तो बेटे को चुनेगी क्योंकि मां है, औरत ने तीनों पर नज़र डाली और अपने भाई को चुना, तो हाकिमे वक़्त बड़ा हैरान हुआ, उसने पूछा कि तुम बेटे और ख़ाविंद को छोड़ दिया? तो औरत ने जवाब दिया कि मेरा ख़ाविंद अगर मुझसे जुदा हो गया, अल्लाह मेरे लिये नसीब बनाएंगे तो कोई दूसरे निकाह की सूरत निकल आएगी, बेटा मुझसे जुदा हो गया अगर मेरा दूसरा निक़ाह होगा अल्लाह मुझसे फिर कोई दूसरा बेटा अता फ़रमाएंगे, मगर चूंकि मेरे वालिदैन दुनिया से जा चुके हैं इसलिये अब मेरा कोई दूसरा भाई दुनिया में नहीं हो सकता, उस औरत का जवाब उसको इतना पसंद आया कि उसने उन तीनों मर्दों को छोड़ने का हुक्म दे दिया। इसलिये शरीअत ने कहा कि बहन भाई जो सगे हैं वह भी एक दूसरे के साथ मुहब्बत की ज़िंदगी गुज़ारें।

फिर भाइयों में आपस का तअल्लुक़ कैसा हो, तो शरीअत ने

कहाः "حَقُّ كَبِيرِ الاخوةِ على الصغير كحقِّ الوالدِ على الولدِ" जिस तरह बाप का हक़ बेटे पर होता है बड़े भाई का हक़ भी छोटे के ऊपर ऐसे ही हुआ करता है। अब अगर आपस में भाई इस तरह मुहब्बत और प्यार से रहें तो हमारे घर तो जन्नत के नमूने बन जाएंगे।

तो शरीअत ने हर हर फ़र्द की अहमियत भी बताई और कहा कि तुम एक दूसरे से मुहब्बत और प्यार की ज़िंदगी गुज़ारो, यह ज़िंदगी का सबसे Closed circle (क़रीबी दाइरा) है, इसको कहते हैं नसब का दाइरा और आपस में उनका तअल्लुक़ रखना उसको सिला रहमी कहते हैं, हदीस मुबारक में है कि जो बंदा सिला रहमी करता है यअ़नी अपने Blood relative (नसबी रिश्तेदार) के साथ अच्छा और मुहब्बत का सुलूक रखता है अल्लाह तआला उस बंदे के रिज़्क़ में और उसकी उम्र में बरकत अता फ़रमाएंगे। एक हदीस मुबारक में है कि जो बंदा रिशतों को जोड़ता है अल्लाह तआला उस बंदे से अपना रिशता जोड़ते हैं, तो देखिये इन रिशते नातों को जोड़ना अल्लाह को कितना पसंद है।

पड़ोसी

इसके बाद एक दूसरा दाइरा है उसको कहते हैं "जीरान" यअ़नी पड़ोस का दाइरा, शरीअत ने कहा कि जहां तुम्हारा घर है उससे 40 घर दाएं बाएं पीछे यह जो एक मुहल्ला बन जाता है यह तुम्हारे पड़ोसी हैं, इन पड़ोसियों के साथ भी पड़ोस में होने की वजह से तुम्हारा एक तअल्लुक़ है, इसको कहते हैं Neighbourhood (पड़ोस) का रिशता। एक हदीसे मुबारक सुन लीजिये नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "واللّٰه لَا يُؤمِنُ، واللّٰه لَا يُؤمِنُ، واللّٰه لَا يُؤمِنُ" अल्लाह की क़सम वह ईमान वाला नहीं, अल्लाह की क़सम

वह ईमान वाला नहीं, अल्लाह की क़सम वह ईमान वाला नहीं, "مَنْ لَا يَأْمَنُ جَارُهُ بَوَائِقَهُ" जिस बंदे की ईज़ा से उसका पड़ोसी बचा हुआ न हो। इसका मतलब यह कि जो अपने पड़ोसी का ईज़ा पहुंचाए तो नबी सल्ल0 ने क़सम खा के तीन मर्तबा कहा कि वह ईमान वाला बंदा नहीं हो सकता। तो शरीअत हमें हुक्म देती है कि हम एक अच्छा पड़ोसी बन के ज़िंदगी गुज़ारें। हदीसे मुबारक है नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया: "مَا زَالَ جِبْرَئِيلُ يُوصِينِي بِالْجَارِ حَتَّى ظَنَنْتُ أَنَّهُ سَيُوَرِّثُهُ" कि जिब्रील अलै0 पड़ोसी के हक़ के बारे में इतनी बार मेरे पास आए कि मुझे यह गुमान होने लगा कि शायद मरने के बाद इंसान की विरासत में पड़ोसी को भी हक़ दिया जाएगा। अब इस से अंदाज़ा लगाइये कि शरीअत ने हमें एक अच्छा पड़ोसी बन कर रहने की कैसी तलक़ीन की। हदीसे मुबारक में है: "إِنَّ الْجِيرَانَ ثَلَاثَةٌ" पड़ोसी तीन तरह के होते हैं "جَارٌ لَهُ حَقٌّ وَاحِدٌ" एक वह पड़ोसी जिसका एक हक़ होता है। "وَجَارٌ لَهُ حَقَّانِ" एक वह पड़ोसी जिसके दो हक़ होते हैं। "وَجَارٌ لَهُ ثَلَاثَةُ حُقُوقٍ" एक वह पड़ोसी जिसके तीन हक़ होते हैं। "فَالْجَارُ الَّذِي لَهُ ثَلَاثَةُ حُقُوقٍ: الْجَارُ الْمُسْلِمُ ذُو الرَّحِمِ" वह पड़ोसी जिसके दो हक़ हैं "فَالْجَارُ الْمُسْلِمُ" मुसलमान पड़ोसी, जिससे रिशतेदारी नहीं है, लेकिन मुसलमान भी है, पड़ोसी भी है। उसका एक मुसलमान होने के नाते हक़ है और एक पड़ोसी के होने की वजह से। "وَأَمَّا الَّذِي لَهُ حَقٌّ وَاحِدٌ" और वह बंदा जिसका एक हक़ है "فَالْجَارُ الْمُشْرِكُ" वह काफ़िर और मुश्रिक पड़ोसी है किसी और दीन मज़हब का है, फ़रमाया उसका भी तुम्हारे ऊपर हक़ है।

इसलिये हमारे अकाबिर अपने पड़ोस के लोगों का बहुत लिहाज़ व ख़्याल किया करते थे, इमाम अहमद बिन हंबल रज़ि0 का एक

पड़ोसी था और वह यहूदी था, अपनी ज़रूरियात की वजह से कहीं Move (मुंतक़िल) करना चाह रहा था, एक आदमी उस जगह मकान ख़रीदने में Interested (ख़्वाहां) था, वह आया और उसने आकर कहा कि भाई आप इस मकान की मुझसे कितनी क़ीमत लेंगे? उसने कहा दो हज़ार दीनार, वह बंदा बड़ा हैरान हुआ, उसने कहा यार! Neighbourhood (आस पड़ोस) में ऐसे मकानात एक हज़ार दीनार में मिल जाता है, तुम मुझ से दो गुनी क़ीमत मांग रहे हो तो, यहूदी ने जवाब दिया कि तुम्हारी बात ठीक है, मकान की क़ीमत एक हज़ार दीनार है और दूसरा एक हज़ार दीनार इमाम अहमद बिन हंबल रह0 के पड़ोस की क़ीमत है। जब हम सही मअ़नों में Practicing (अमलन) मुस्लिम थे तो हमारे पड़ोस के घरों की क़ीमतें बढ़ जाया करती थीं, क़रीब रहने से लोग इतना ख़ुश होते थे तो मालूम हुआ कि एक अच्छा मुसलमान हमेशा अच्छा पड़ोसी हुआ करता है, यह दूसरा दाइरा हुआ।

ईमान वालों का आपसी तअल्लुक़

एक तीसरा दाइरा है ईमान का दाइरा कि जहां भी कोई ईमान वाला है हमारा उसके साथ एक रिशता है, मश्रिक़ में हो, मग़रिब में हो, जुनूब में हो, शिमाल में हो, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "اَلْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ" अल्लाह तआला फ़रमाते हैं "اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ" ईमान वाले आपस में भाई भाई हैं। लिहाज़ा हमारे दिल में एक मोमिन के साथ हमदर्दी, मुहब्बत और ग़म ख़्वारी होनी चाहिये। हदीसे मुबारक है नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः जिसके दिल में मोमिन का ग़म नहीं वह मेरी उम्मत में से नहीं। अबू दाऊद शरीफ़ की रिवायत है नबी सल्ल0 तवाफ़ फ़रमा चुके, बैतुल्लाह पर नज़र पड़ी तो फ़रमायाः बैतुल्लाह! तेरा मक़ाम अल्लाह के यहां बहुत है मगर "حُرْمَةُ الْمُؤْمِنِ

"أرجح من حرمة الكعبة" अल्लाह के यहां मोमिन की हुर्मत बैतुल्लाह की हुर्मत से भी ज़्यादा है, अब बैतुल्लाह का तो गिलाफ़ पकड़कर हम आंसू बहाते हैं और मोमिन का गिरेबान पकड़ने के लिये हाथ बढ़ाते हैं तो मालूम हुआ कि हमें यह ईमान का रिशता भी निभाना है।

मोमिन का इकराम

नबी सल्ल0 ईमान वाले का इतना इकराम फ़रमाते थे कि कोई अगर साइल आ जाता तो नबी सल्ल0 उसको रद्द नहीं फ़रमाते थे। क्या ख़ूबसूरत बात है कि अगर कभी कोई सहाबी नबी सल्ल0 को दूर से आवाज़ देते तो नबी उसके जवाब में لَبَّيْكَ फ़रमाया करते थे। नबी सल्ल0 सफ़र में हैं, आपने दो मिसवाक बनाए, एक मिसवाक बड़ा सीधा ख़ूबसूरत था, दूसरा ज़रा टेढ़ा सा था इतना ख़ूबसूरत नहीं था तो नबी सल्ल0 ने टेढ़ा मिसवाक अपने पास रख लिया और ख़ूबसूरत मिसवाक सहाबी को दे दिया, उन्होंने अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0! मेरा जी चाहता है यह ज़्यादा अच्छा ख़ूबसूरत मिसवाक आप इस्तेमाल करें, नबी सल्ल0 ने जवाब में फ़रमाया: मेरा भी जी चाहता है तुम मेरे रफ़ीके सफ़र हो, मैं तुम्हें इस्तेमाल करने के लिये अच्छी चीज़ें दूं, नबी सल्ल0 का सीना बेकीना था, दिल में किसी के बारे में रंजिश नहीं होती थी। नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया: जब मैं रात में सोता हूं तो मेरा सीना कीना से ख़ाली होता है, यह मेरी सुन्नत है और जो मेरी सुन्नत पर अमल करेगा वह शख़्स जन्नत में मेरे साथ इकट्ठा होगा, लिहाज़ा हम भी दिल से कीने को ख़त्म कर दें, नफ़रतें, अदावतें और दुशमनियां दिलों के अंदर रखना, गुस्से रखना, यह मोमिन का शेवा नहीं होता, मोमिन का सीना कीने से ख़ाली होता है। फिर फ़रमाया कि तुम अपने भाई के ऐबों की पर्दा

पोशी करो, जिस बंदा ने मुसलमान के ऐब की पर्दापोशी की "سَتَرَهُ اللّٰهُ يومَ القِيٰمة" अल्लाह तआला क़्यामत के दिन उस बंदे के ऐबों की सतर पोशी फ़रमाएंगे।

इससे भी आगे की बात सुनिये! बुख़ारी शरीफ़ के उन अलफ़ाज़ को पढ़ कर तबीअत में अजीब सुरूर आता है कि दीन हमें क्या सिखाता है, सुब्हानल्लाह! नबी सल्ल० ने एक दुआ मांगी जिसको इमाम बुख़ारी रह० ने बुख़ारी शरीफ़ में "بابُ قولِ النبيِّ صلى الله عَليه والهٖ وسلم: مَنْ اٰذَيْتُهٗ فا جْعَلْهُ لهٗ زكاةً ورحمةً" के तहत नक़्ल किया: "عن اَبِي هُرَيرَةَ" अबू हुरैरा रज़ि० इसको रिवायत करते हैं कि "اَنَّهٗ سَمِعَ النبيَّ صلى الله عَليه والهٖ وسلم يقولُ" वह कहते हैं कि मैंने नबी सल्ल० को यह दुआ मांगते सुना नबी सल्ल० अल्लाह से यह दुआ कर रहे थे: "اَللّٰهُمَّ" ऐ मेरे अल्लाह! "فَاَيُّمَا مُؤمِنٍ سَبَبْتُهٗ" अगर मैंने किसी ईमान वाले को कभी डांटा है---चूंकि तरबियत करनी थी, समझाना था, मुअल्लिम बन कर रहना था तो बअज़ मर्तबा इंसान सख़्ती से बात कर देता है---तो ज़रा सुनिये अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल० दुआ कर रहे हैं ऐ अल्लाह! अगर मैंने ज़िंदगी में किसी ईमान वाले को डांटा है "فَاجْعَلْ ذٰلِكَ لهٗ قُربةً اِليكَ يومَ القِيٰمةِ" मेरी इस डांट को क़्यामत के दिन अपने कुर्ब का ज़रीआ बना दे, क्या रहमत और क्या शफ़क़त है कि अव्वल तो अल्लाह के हबीब सल्ल० रहीम व करीम थे और अगर कभी किसी को डांटा भी तो उसके लिये भी दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! मेरी इस डांट को भी अपने इस बंदे के लिये कुर्ब का ज़रीआ बना दे। आज अगर ख़ाविंद किसी बीवी को डांटता है तो कभी नमाज़ के बाद दुआ भी मांगी कि अल्लाह मैं बेजा डांट के आया हूं, मेरी इस डांट को अपने कुर्ब का ज़रीआ बना ले? हमारा तो हाल यह है कि हम दूसरे को ईज़ा

पहुंचाने के लिये डांटते हैं।

एक और बात बुख़ारी शरीफ़ में "بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ صلى الله عَلَيهِ وآلِهِ وسلم: مَنْ تَرَكَ مَا لًا فَلِأَهْلِه" के तहत यह रिवायत भी अबू हुरैरा रज़ि0 से है, वह फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः "أَنَا أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ" मैं मोमिनों को उनकी जान से भी ज़्यादा महबूब हूं "فَمَنْ مَاتَ" जो कोई ईमान वाला मरा "وَعَلَيْهِ دَيْنٌ" और उसके ऊपर क़र्ज़ा हो "وَلَمْ يَتْرُكْ وَفَاءً" और उसने विरासत में कोई माल नहीं छोड़ा "فَعَلَيْنَا قَضَائُهُ" नबी सल्ल0 ने फ़रमाया उसका क़र्ज़ा हम अदा करेंगे, सुब्हानल्लाह! आज कोई बंदा फ़ौत होता है, लोग यतीमों का हक़ खा जाते हैं, जाइदाद से महरूम कर देते हैं, आपस में एक दूसरे के साथ झगड़े होते हैं, अल्लाह के हबीब सल्ल0 का मुआमला देखो, फ़रमायाः जो मोमिन फ़ौत हो जाए और उसके ज़िम्मा क़र्ज़ा है मगर उसकी विरासत उतनी नहीं फ़रमाया "فَعَلَيْنَا قَضَائُهُ" उस बंदे का क़ज़ा मेरे ज़िम्मा है, मैं अदा करूंगा, "وَمَنْ تَرَكَ مَالًا" और जो बंदा इस तरह मरा कि उसने माल को छोड़ा "فَلِوَرَثَتِه" उसके माल को उसके वरसा में तक़सीम कर दिया जाएगा, तो माल उसके वारिसों मे तक़सीम करेंगे, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया क़र्ज़ा मैं अदा करूंगा, है कोई मज्मा में नियत करने वाला कि मैं अपने मुसलमान भाइयों के साथ ऐसी मुहब्बत का तअल्लुक़ रखूंगा? यह आसान काम नहीं है, इसके लिये बड़ा दिल चाहिये, बड़ा हौसला चाहिये, हम तो ज़रा सी बात पे उसको ऐसे देखते हैं जैसे पता नहीं कैसी दुशमनी हो, अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने राफ़त व रहमत का सबक़ दे दिया कि देखो जो इंसान है और उसने कलिमा पढ़ा वह तुम्हारा भाई है, अब तुम्हारी उसके साथ इतनी हमदर्दी होनी चाहिये कि क़र्ज़ा छोड़ के अगर वह चला गया तो

उसका क़र्ज़ा भी तुम अदा करोगे, अल्लाह के यहां तुम्हें इसका अज्र मिलेगा, इसको कहते हैं "अल्लाह के बंदों के साथ अल्लाह के लिये मुहब्बत करना"

नशा पिला के गिराना तो सबको आता है
मज़ा तो तब है कि गिरतों को थाम ले साक़ी

नबी सल्ल0 की यह शाने मुबारक थी:

वह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला
मुरादे ग़रीबों की बर लाने वाला

ग़रीबों का मलजा यतीमों का मावा
ख़ताकार से दरगुज़र करने वाला

आज नबी सल्ल0 के उम्मती होने के नाते हमें चाहिये कि हम भी ऐसी हस्सास दिल पैदा करें कि जो दूसरों को मुहब्बतें देने वाला हो, प्यार देने वाला हो, ख़ुशियां देने वाला हो

सलाम उस पर जिस के घर में चांदी थी न सोना था
सलाम उस पर कि टूटा बोरिया जिसका बिछौना था

सलाम उस पर कि जिसने ख़ूं के प्यासों को क़बाएं दीं
सलाम उस पर कि जिसने गालियां सुन कर दुआएं दीं

सलाम उस पर कि जिसने फ़ज़्ल के मोती बिखेरे हैं
सलाम उस पर बुरों को जिसने फ़रमाया कि मेरे हैं

अच्छों से हर कोई मुहब्बत करता है, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया तुम बुरों से भी मुहब्बत करो, आख़िर वह हैं तो अल्लाह ही के बंदे, अल्लाह के बंदे होने की निस्बत से उनसे मुहबबत करो।

एक सबक़ आमोज़ वाक़िआ

एक वाक़िआ सुन लीजिये, अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 एक बड़े मुहद्दिस गुज़रे हैं, इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह0 के नुमायां शार्गिदों में उनका नाम आता है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनको दुनिया का माल भी बहुत दिया था, एक दफ़ा एक मुसलमान उनके पास आया, कहने लगा हज़रत! मेरे ऊपर किसी के सात सौ दीनार देने हैं और मुझे हर वक़्त उसकी फ़िक्र सवार रहती है, अगर आप मेरी मदद करें और मैं क़र्ज़ा अदा कर दूं तो मैं यक्सूई से इबादत करूंगा, अल्लाह अल्लाह करूंगा, तो हज़रत ने एक चिठ ली और चिठ के ऊपर अपने क़लम से लिख दिया कि इस बंदे को Seven hundred (सात सौ) दीनार के बजाए Seven thousand (सात हज़ार) दीनार दिये जाएं, मांगने वाले ने सात सौ दीनार मांगे थे और उन्होंने Seven thousand (सात हज़ार) की चिठ बना कर दे दी, वह बंदा खुशी खुशी वह चिठ लेके उनके Cashier (मुहासिब) के पास गया कि मेरे ऊपर सात सौ दीनार का क़र्ज़ा है और अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने क़र्ज़ा अदा करने के लिये मुझे चिठ बना दी है, बराए मेहरबानी मुझे दे दें, अब Cashier (मुहासिब) ने जब चिठ देखी तो उस पर लिखा हुआ था Seven thousand (सात हज़ार) वह Confuse (शश व पंज में पड़ जाना) हो गया, यह कहता है कि Seven hundred (सात सौ) मैंने मांगे और हज़रत ने सात हज़ार लिखे, एक Zero (सिफ़र) की ग़लती हो गई होगी, उसने कहा मैं ज़रा Clarify (वज़ाहत) कर लूं, वह खुद हज़रत के पास आया कि हज़रत! यह कहता है कि Seven hundred (सात सौ) की ज़रूरत है, आपने Seven thousand (सात हज़ार) लिख दिये तो मैं उसको कितने Pay

(अदा) करूं, फ़रमाया कि चिठ लाओ चिठ ली और सात हज़ार को काट के उसके ऊपर Fourteen thousand (चौदह हज़ार) लिख दिये, वह Accountant (मुंशी) बहुत हैरान हुआ, ख़ैर उसने Fourteen thousand (चौदह हज़ार) दिये तो दिये, वह बंदा बड़ा खुश चूंकि उस को Unexpected (अचानक, ग़ैर मुतवक़्क़े) खुशी मिली थी और वह दुआएं देता हुआ चला गया, यह Accountant (मुंशी) वापस हज़रत के पास आया, हज़रत! मुझे समझ में नहीं आया, उसने सात सौ मांगे तो आप ने सात हज़ार लिखे, मैं Clarify (वज़ाहत) करने आया तो उसके Fourteen thousand (चौदह हज़ार) कर दिया, यह क्या मसला है? हज़रत ने फ़रमायाः कि भाई देखो उसने सात सौ ही मांगे थे, मैंने यह सोच कर intentionally (इरादतन) Seven thousand (सात हज़ार) ही लिख कर भेजा था कि उसको Expectation (तवक़्क़ो) से ज़्यादा मिले, तुमने काम ख़राब किया कि उसके सामने आके पूछने लगे कि सात हज़ार लिखा है, अब सात हज़ार दे देता तो उतनी खुशी न होती, तो मैंने चौदह हज़ार कर दिया, हज़रत! ऐसा क्यों? कहने लगे कि मैंने नबी सल्ल0 की हदीस सुनी है, इर्शाद फ़रमायाः जो शख़्स किसी मोमिन को ऐसी खुशी पहुंचाए जिसकी वह तवक़्क़ो न करता हो तो उस खुशी के पहुंचाने पर अल्लाह उस बंदे की ज़िदगी के सब गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देंगे, सुब्हानल्लाह! कितना खूबसूरत यह दीन है और नबी सल्ल0 ने क्या मुहब्बतों वाली ज़िंदगी गुज़ारने की हमें तालीमात दीं। तो यह एक तीसरा दाइरा है जिसको कहते हैं ईमान का दाइरा।

इंसानियत का एहतिराम

और एक चौथा दाइरा है उसको कहते हैं इंसान होने का नाता,

हम सब आदम अलै0 की औलाद हैं, लिहाज़ा जो भी कोई इंसान है हमारा उसके साथ एक रिशता है, कि हम अल्लाह के बंदे हैं, इसको कहते हैं Respect of humanity इंसानियत का एहतिरामे दिल में होना, इकराम दिल में होना, अब ज़रा हदीसे मुबारक सुनियेगा, बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है: "كَانَ سَهْلُ ابْنُ حُنَيْف وَقَيْسُ ابْنُ سَعْدٍ قَاعِدَيْنِ بِالْقَادِسِيَه" सह्ल बिन हनीफ़ और क़ैस इब्ने सअद दो सहाबी हैं यह क़ादसिया में बैठे हुए थे "فَمَرُّوا عَلَيْهِمَا بِجَنَازَةٍ" उनके क़रीब से एक जनाज़ा ले जाया गया "فَقَامَا" दोनों खड़े हो गए "فَقِيلَ لَهُمَا" उन्हें बताया गया "إِنَّهَا مِنْ أَهْلِ الْأَرْضِ أَىْ مِنْ أَهْلِ الذِّمَةِ" कि यह तो ज़िम्मी है, यह ग़ैर मुस्लिम जनाज़ा है, "فَقَالَا" उन्होंने बताया "إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ مَرَّتْ بِهِ جَنَازَةٌ" कि नबी सल्ल0 के क़रीब से जनाज़ा ले जाया गया "فَقَامَ" नबी सल्ल0 खड़े हो गए "فَقِيلَ" सहाबा ने अर्ज़ किया "إِنَّهَا جَنَازَةُ يَهُودِيّ" यह तो एक यहूदी का जनाज़ा है "فَقَالَ: أَلَيْسَتْ نَفْسًا" नबी सल्ल0 ने फ़रमाया, क्या यह इंसान नहीं है? नबी सल्ल0 ने यह अलफ़ाज़ फ़रमाए कि क्या यह इंसान नहीं है इसका मतलब यह है कि इंसान होने के नाते भी एक एहतिराम है, जो हर इंसान को मिलना चाहिये, यह भी हमारा एक रिशता है।

चुनांचे नबी सल्ल0 की मुबारक ज़िंदगी को देखें तो एहतिरामे इंसानियत की मिसालों से भरी पड़ी मिलेगी, वह मक्का के क़ुरैश जिन्होंने नबी सल्ल0 को ईज़ा पहुंचाई, 13 साल उनको मशक़्क़तों में डाले रखा, एक मर्तबा उनके ऊपर क़हत आ गया, बारिश नहीं हो रही थी, खाने को नहीं मिलता था, भूक थी "فَأَتَاهُ أَبُو سُفْيَان" तो अबू सूफ़यान नबी सल्ल0 के पास आए "فَقَالَ" कहने लगे "يَا مُحَمَّدُ" ऐ मुहम्मद! "إِنَّكَ تَأْمُرُ بِطَاعَةِ اللّٰهِ وَبِصِلَةِ الرَّحِمِ" आप

अल्लाह की इताअत का हुक्म देते हैं, रिशता नाता जोड़ने का हुक्म देते हैं "وَإِنَّ قَوْمَكَ قَدْ هَلَكُوا" आप की क़ौम हलाक हो गई, "فَادْعُ اللَّهَ لَهُمْ" इनके लिये दुआ कीजिये, हदीसे पाक में आता है, नबी सल्ल0 ने क़ुरैशे मक्का के लिये दुआ की, अल्लाह ने क़हत ख़त्म करके उनको गंदुम अता फ़रमाया, तो देखिये दुश्मनों के लिये दुआ की, क्योंकि इंसान तो थे।

सुमामा बिन असाल रज़ि0 जब मुसलमान हुए तो उन्होंने फ़ैसला किया कि हम यमामा से मक्का में गंदुम नहीं जाने देंगे, क़ुरैशे मक्का बड़े परेशान हुए, नबी सल्ल0 की ख़िदमत में बंदा भेजा कि हमें तो गंदुम नहीं मिल रहा है, हम तो भूके मर जाएंगे, नबी सल्ल0 ने सुमामा बिन असाल रज़ि0 को ख़त लिखा, फ़रमाया कि इन लोगों का गंदुम मत रोको, वह अल्लाह के बंदे हैं, उनको खाने के लिये चीज़ें मिलनी ज़रूरी हैं। हातिम ताई की बेटी का नाम था सफ़ाना, वह एक मर्तबा गिरफ़्तार होके आई, किसी ने बताया कि उसका वालिद बड़ा सख़ी है तो नबी सल्ल0 यह बात सुन कर बड़े ख़ुश हुए, वह कहने लगी कि आप मुझे आज़ाद कर दें, फ़रमायाः हां मैं तुम्हें आज़ाद कर दूंगा, वह कहने लगी कि मैं अकेली जाऊंगी तो लोग तअ़ना देंगे कि सख़ी बाप की बेटी थी, अकेली आ गई, लिहाज़ा मेरे गांव वालों को भी आज़ाद कर दें, नबी सल्ल0 ने उसके कहने पर गांव वालों को भी आज़ाद कर दिया, फिर जब वह जाने लगी तो नबी सल्ल0 ने पहनने के लिये नए कपड़े भिजवाए, फिर नबी सल्ल0 ने उसके लिये सवारी भेजी और तीसरी बात कि नबी सल्ल0 ने उसको सफ़र का ख़र्चा भेजा, यह सब चीज़ें देकर नबी सल्ल0 ने बतला दिया कि देखो! बेटी किसी की हो उसका यह इकराम हुआ करता है, अब यह सफ़ाना जब गई तो अंदर से तो दिल उसका बदल चुका था, यह अपने भाई

अदी बिन हातिम से मिली तो अदी ने पूछा: "قالَ عدی: مَا تَرَيْن فِیْ أَمْرِ هٰذا الرَّجُلِ" सफ़ाना तुमने देखा है, ज़रा बताओ उस बंदे के बारे में तुम्हारे Comments (तब्सिरे) क्या हैं? इसलिये कि औरत को अल्लाह ने एक Intuition (छटी हिस) दिया होता है, दूसरे मर्द की नज़र से पहचान लेती है कि यह कैसा इंसान है? तो भाई ने अपनी बहन से पूछा कि तुम देख के आई हो तो उसके बारे में तुम्हारे Comments क्या हैं? "قـالـت" उसने जवाब दिया "أَنْ تَـلْحَقُ بِه" मेरी राए यह है कि तुम जाओ और हमेशा के लिये उनके गुलाम बन जाओ। चुनांचे यह अदी बिन हातिम आए, नबी सल्ल0 को बताया गया कि अदी बिन हातिम आए हैं, नबी सल्ल0 जहां बैठे थे आप उस नशिस्त से उठ गए और अदी बिन हातिम को अपने तकिया पर बैठाया, सुनिये ज़रा "فـقـــالَ عَـدى" अदी कहते हैं "جـلَسْـتُ عَليْها" मैं उस तकिये पर बैठा जिसके ऊपर नबी सल्ल0 बैठे थे "وجـلَـسَ رسـولُ اللّٰـهِ ﷺ على الأَرضِ" और अल्लाह के नबी सल्ल0 ज़मीन के ऊपर बैठे, अल्लाहु अक्बर कबीरा, "فـقـلـت" उस वक़्त मैंने कहा "أَشْهدُ أَنَّك لَا تَبغِیْ عُلوًّا فی الارضِ ولا فساداً" "وأَسـلَمَ عدیٌّ بنُ حـاتِم" यह अलफ़ाज़ कहे और अदी बन हातिम ने कलिमा पढ़ा और मुसलमान हो गए, मेरे आक़ा सल्ल0 के अख़लाक़ और बरताव कुफ़्फ़ार के साथ देखो कैसे हुआ करते थे।

एक मर्तबा एक औरत का बेटा गुम हो गया, अब वह बेचारी पागल बनी घूम रही थी, उसको यह भी पता नहीं था कि मेरे सर पे चादर भी है कि नहीं और इसी हालत में वह नबी सल्ल0 के सामने से गुज़री, अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने देखा, एक सहाबी रज़ि0 को बुलाया और अपनी चादर अता फ़रमाई और फ़रमाया कि ले जाओ और उस बच्ची के सर पर चादर डाल दो, उन्होंने हैरान होकर पूछा:

ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0 यह आप की चादर, वह तो काफ़िर लड़की है? तो नबी सल्ल0 ने जवाब में फ़रमायाः अगर्चे काफ़िर है मगर किसी की तो वह बेटी है। आज तू इसके सर पर चादर डालेगा कल क़यामत के दिन अल्लाह तेरे गुनाहों पर अपनी रहमत की चादर अता फ़रमाएंगे।

अब ज़रा अगली बात सुनिये, अबू दाऊद शरीफ़ की रिवायत हैः "عَنْ عِدةٍ مِنْ أَبْنَاءِ أَصحابِ رسولِ اللّٰهِ ﷺ قال" सहाबा की बअज़ औलादें नबी सल्ल0 से यह रिवायत नक़्ल करती हैं "ألا! مَـنْ ظَـلَـمَ مُعاهِداً" कोई गुलाम हो जिसके साथ बंदा का मुआहिदा हो जाए या कोई ज़िम्मी हो तो फ़रमाया कि जो अपने मातहत के ऊपर ज़ुल्म करे "أَوِ انْتَقَصَهُ" या उसके हक़ में कमी करे "أَوْ كَـلَّفَهُ فَوقَ طاقتِهِ" या उसकी ताक़त से ज़्यादा उसके ऊपर बोझ डाले "أَوْأَخَذَمِنه شَيْئًا بِغيرِ طِيبِ نَفْسٍ" या उसके दिल की ख़ुशी के बग़ैर उससे कोई चीज़ छीन ले "فَأَنَا حَجِيجُهُ يومَ القِيٰمةِ" मैं क़यामत के दिन उस गुलाम का वकील बन कर खड़ा हुंगा और मैं तुम में से उसका हक़ लेकर उसे दूंगा, اللّٰه اكبر كبيراً देखिये यह काफ़िर के बारे में अल्लाह के हबीब सल्ल0 फ़रमाते हैं कि अगर तुम उनके हुक़ूक़ में भी कमी करोगे आप सल्ल0 फ़रमाते हैं उनका Attorney (वकील) मैं बनूंगा, अब ज़रा सोचने की बात है कि जिनकी शफ़ाअत की हम दिल में तमन्ना रखते हैं, कल वह अल्लाह के हबीब सल्ल0 हमारे मातहतों के वकील बन गए कि हां तुमने बीवी को यूं सताया था, तुमने अपने भाई का दिल यूं दुखाया था, तुमने अपने नौकरों और ख़ादिमों के साथ यह काम किया था, तो सोचिये अगर अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने हम से हक़ मांगा तो हमारा उस दिन क्या ठिकाना होगा, हम समझें कि अल्लाह के हबीब सल्ल0 हमें किस मुहब्बत व

प्यार की ज़िंदगी गुज़ारने की तालीम दे रहे हैं, इसलिये नबी सल्ल० ने फ़रमायाः "المؤمن من أمنه الناس على دمائهم وأموالهم" मोमिन की Definition (तारीफ़) सुन लीजिये, जैसे आप किसी चीज़ को Define करते हैं कि यह उसकी तारीफ़ है, नबी सल्ल० एक मोमिन मुसलमान की Definition (तारीफ़) फ़रमाते हैं कि मोमिन वह होता है कि जिससे बाक़ी सारे इंसानों की जानें और उनके माल अमन में आ जाएं। अगर हम दूसरों की जानों के दर पै हैं और दूसरों के माल के दर पै हैं तो हम तो मोमिन की Definition (तारीफ़) पर ही पूरे नहीं उतरते, अल्लाह के हबीब सल्ल० की नज़र में तो हम मोमिन ही नहीं बने, इसलिये हम ज़रा ग़ौर करें कि हमें किस क़दर उल्फ़त व मुहब्बत की और प्यार की ज़िंदगी गुज़ारने की ज़रूरत है। हदीसे पाक में है "الخلق عيال الله" सारी मख़्लूक़, गोरे काले, अरबी अजमी, छोटे बड़े, अमीर ग़रीब सारे के सारे यह अल्लाह के अयाल हैं, अल्लाह का कुंबा हैं, "وأحب الخلق إلى الله من أحسن إلى عياله" अल्लाह को सबसे ज़्यादा पसंद वह बंदा है जो अल्लाह के उस अयाल के साथ मुहब्बत करने वाला हो, लिहाज़ा हम अल्लाह के बंदों से अल्लाह की वजह से मुहब्बत करें। एक हदीस है, इस हदीसे मुबारक को हदीसे मुसलसल बिल अव्वलियत कहते हैं, यअ़नी मुहद्दिसीन जब अपने शागिर्दों को हदीस का दर्स शुरू करवाते थे तो सब से पहले यह हदीसे मुबारक पढ़ाते थे, पहले इस हदीस की तालीम देते थे, अब सोचिये वह कितनी अहम हदीस होगी कि मुहद्दिसीन सबसे पहले इस हदीसे मुबारक को पढ़ा रहे हैं और तसलसुल के साथ यह अमल चला आ रहा है, वह अम्र बिन आस रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने फ़रमायाः "الراحمون يرحمهم الرحمان" जो रहम करने वाले होते हैं उनके ऊपर रहमान

रहम फ़रमाता है "اِرْحَمُوْا مَنْ فِى الْأَرْضِ يَرْحَمُكم مَن فِى السَّماء" तुम ज़मीन वालों पर रहम करोगे आसमान वाला तुम पर रहम फ़रमाएगा।

करो मेहरबानी तुम अहले ज़मीं पर
खुदा मेहरबां होगा अर्शे बरीं पर

यह पहला सबक़ था किताबे हुदा का
कि है सारी मख़्लूक़ कुंबा खुदा का

चुनांचे अबू मूसा रज़ि0 एक हदीसे पाक रिवायत फ़रमाते हैं ज़रा तवज्जोह से सुनिये! वह कहते हैं कि बनी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया "لَنْ تُؤمِنُوْا حتّى تَراحَمُوا" तुम ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक तुम्हारे अंदर रहम न हो "قَالُوا" जवाब में अर्ज़ किया "يَا رَسولَ اللّٰه" ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! "كُلُّنا رَحِيم" हम सब के सब रहम करने वाले हैं, "قَالَ" नबी सल्ल0 ने इस बात को साफ़ कर दिया, फ़रमाया "اِنَّهٗ لَيْسَ بِرَحمةِ أحدِ كُم صاحِبهٗ" इससे मुराद यह नहीं है कि तुम अपने साथी के साथ रहमत से पेश आओ "ولٰكِنْ رَحمةُ عامَّةٌ" इससे मुराद उमूमी रहमत है कि तुम्हारे दिल में हर एक के साथ रहमत होनी चाहिये, जब दिल में रहमत होगी इंसान किसी को तकलीफ़ नहीं देगा, नुक़्सान नहीं पहुंचाएगा, बुरा नहीं सोचेगा, उसके साथ अदावत का मुआमला नहीं करेगा, आज हम ज़रा Analysis (मुहासबा) करें कि हमारे दिलों में दूसरों के साथ मुहब्बत, हमदर्दी और रहमत कितनी है, अगर नहीं है तो इसका मतलब है कि अल्लाह की नज़र में वह मक़ाम नहीं जो होना चाहिये था, आज की इस मजलिस में हमें अपने दिल में यह अहद करना है

कि हम अल्लाह के बंदों से अल्लाह की निस्बत से मुहब्बत करेंगे

नबी आते रहे आख़िर में नबियों के इमाम आए
वह दुनिया में ख़ुदा का आख़िरी लेकर पयाम आए

झुकाने आए बंदों की जबीं अल्लाह के दर पर
सिखाने आदमी को आदमी का एहतिराम आए

वह आए जब, तो अज़मत बढ़ गई दुनिया में इंसां की
वह आए जब, तो इंसां को फ़रिशतों के सलाम आए

जो इंसान मुहब्बत भरा दिल रखता है तो फिर फ़रिशतों के सलाम आते हैं, लिहाज़ा आज हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रह0 की इस सर ज़मीन पर हम अपने दिलों में यह अहद करें कि हम अल्लाह के बंदों से अल्लाह की निस्बत से मुहब्बत करेंगे, अगर काफ़िर के साथ भी इंसान होने के नाते तअल्लुक़ है तो फिर वह बंदा जो कलिमा गो हो और घर का फ़र्द हो, जिस के तीन रिशते हों उसके साथ कितना मुहब्बत से पेश आना चाहिये, आज के बाद अपनी बीवियों से हुस्ने सुलूक, अपने भाइयों से मुहब्बतें, बहनों के साथ अच्छा तअल्लुक़, मां बाप के साथ अच्छा तअल्लुक़ बनाएं, हम घर के एक अच्छे फ़र्द बन जाएंगे, हमारे घर जन्नत का नमूना बन जाएंगे, एक वाक़िआ सुन लीजिये इब्राहीम बिन अदहम रह0 ख़्वाब देखते हैं एक फ़रिशता है जो बैठा हुआ कुछ लिख रहा है, पूछते हैं भाई क्या लिख रहे हो? वह जवाब में कहता है कि मैं उन लोगों के नाम लिख रहा हूं, जो अल्लाह से मुहब्बत करते हैं, तो इब्राहीम बिन अदहम रह0 ने पूछा मेरा नाम इस फ़ेहरिस्त में शामिल है, उन्होंने देख के कहा तेरा नाम तो नहीं है तू तो दुनिया से मुहब्बत करने

वाला दुनिया का बादशाह, तेरा नाम अल्लाह से मुहब्बत करने वालों में कहां से शामिल होगा। तो इब्राहीम बिन अदहम रह० ने कहा अच्छा फिर ऐसा करो कि मेरा नाम अल्लाह के बंदों से मुहब्बत करने वालों की फ़ेहरिस्त में लिख दो, मैं अगर अल्लाह से मुहब्बत नहीं करता तो अल्लाह के बंदों से तो मुहब्बत करता हूं, उसमें मेरा नाम लिख दो, वह फ़रिशता ग़ाइब हो गया, ख़्वाब ख़त्म, कुछ अर्से के बाद फिर वही ख़्वाब देखा कि फ़रिशता लिख रहा है, पूछा क्या लिख रहे हो? कहने लगाः उन बंदों के नाम लिख रहा हूं जिन से अल्लाह मुहब्बत करते हैं, पूछा मेरा नाम? फ़रिशते ने काग़ज़ सामने कर दिया, देखा कि सबसे पहले उनका नाम है, फ़रिशता कहने लगा जो अल्लाह के बंदों से मुहब्बत करते हैं अल्लाह उनसे मुहब्बत करता है, इस फ़ेहरिस्त में उनका पहला नाम हुआ करता है

खुदा के बंदे तो हैं हज़ारों, बनों में फिरते हैं मारे मारे
मैं उसका ख़ादिम बनूंगा जिसको खुदा के बंदों से प्यार होगा

अल्लाह तआला हमें मुहब्बत व प्यार और अच्छे अख़्लाक़ के साथ ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

अगले सफ्हा पर आप जो ख़िताब मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, यह मुख़्तसर ख़िताब 4/अप्रेल 2011 ई0 बरोज़ दो शंबा बअ़द नमाज़े अस्र "ख़ानक़ाहे नक़्शबंदिया मुजद्दिदया नोमानिया" और "मअ़हदुल इमाम वली अल्लाहु अद्देहलवी" की मस्जिद के संगे बुन्याद रखने के मौक़ा पर किया गया था, संगे बुन्याद पर दर्जे ज़ेल दुआइया कलिमात तहरीर हैं:

या अल्लाह! एक आजिज़ व मिसकीन बंदा, आप के बंदों के जम्मे ग़फ़ीर के साथ आप के हुज़ूर दस्ते बदुआ है कि अपने इस घर/को भी दुनिया के बुतकदे में अपने उस पहले घर से राबता व निस्बत अता फ़रमा दे, जो सारे जहानों के लिये दीन और दुनिया की नेअ़मतों की तक़सीम का मर्कज़ और पूरी इंसानी बिरादरी की बक़ा व सलामती का सबब है, और इसकी तामीर और आबादी में हिस्सा लेने वालों को अपने मक़्बूल और पसंदीदा बंदों और बंदियों में शामिल फ़रमा ले और इसके हक़ में भी यह दुआ क़बूल फ़रमा ले।

तेरे दर व बाम पर वादिये ऐमन का नूर
तेरा मिनारे बुलंद जलवा गह जिब्रईल

29/रबीउस्सानी 1432 हि0। 4/अप्रेल 2011 ई0
बरोज़ दो शंबा (बअ़द नमाज़े अस्र)
दुआ गो व दुआ जौ
(फ़क़ीर) ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दिदी
वारिदे हाल ख़ानक़ाहे नोमानिया मुजद्दिदिया, मम्दापूर नीरल, राएगढ़, महाराष्ट्र

मस्जिद के संगे बुन्याद के मौक़ा पर कुछ क़ीमती हिदायात

اعوذ باللّٰه من الشيطان الرجيم

بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرَاهِيْمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا

سبحان ربک رَبِّ العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد للّٰه رب العلمين

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

سبحان ربک رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد للّٰه رب العلمين

अल्लाह के घर की बुन्याद, क़बूलियते दुआ व ज़िक्रे ख़ुदा का वक़्त होता है

क़ुर्आने मजीद फ़ुर्क़ाने हमीद में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने घर के बनाने का वाक़िआ बयान फ़रमाया और उसकी इब्तिदा यूं फ़रमाई "وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرَاهِيْمُ الْقَوَاعِدَ" और याद करो उस वक़्त को जब इब्राहीम और इस्माईल अलै0 मेरे घर की बुन्यादों को खड़ा कर रहे थे। यहां से यह बात समझ में आई कि जहां कहीं भी अल्लाह के घर की बुन्यादें खड़ी की जाती हैं वह याद करने का वक़्त होता है, वह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां क़बूलियते दुआ का वक़्त होता है, क्योंकि "وَاِذْ" का मतलब कि याद करो उस वक़्त को, क़्यामत तक पढ़ा जाता रहेगा कि याद करो उस वक़्त को, यह याद का वक़्त है।

बड़ों को हमेशा मुक़द्दम करना चाहिये

यहां पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने घर की तफ़सीलात नहीं बताईं कि कहां था, कैसा था, कितना बड़ा था, मगर बनाने वालों का तज़्किरा किया कि वह मेरे इब्राहीम ख़लीलुल्लाह थे और उनके साथ उनके बेटे इस्माईल ज़बीहुल्लाह थे, पहले इब्राहीम अलै० का तज़्किरा किया, इससे एक बात समझ में आई कि जब भी इदारे बनें, मस्जिदें बनें, तो अगर्चे कि छोटे लोग काम ज़्यादा करते हैं, उनका जिस्म ज़्यादा इस्तेमाल होता है, अन्थक मेहनतें करते हैं, लेकिन फिर भी मुक़द्दम बड़ों को करेंगे, हमेशा अपने सर पर बड़ों को साया रखें, यह तवक़्क़ो न रखें कि हमारा नाम आ जाए, इसलिये कि बड़ों के साया के सर पर होने से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से काम में बरकत आ जाती है, इसलिये कि रिवायत है "اَلْبَرَكَةُ مَعَ أَكَابِرِكُم" तुम्हारे लिये बरकत बड़ों के साथ रहने में है, ज़िंदगी में कभी भी ऐसा वक़्त न आए कि इंसान यह सोचे कि बस मैं बड़ा हूं, हमेशा यह तवक़्क़ो और तमन्ना रखें कि मौत तक मेरे सर पर मेरे बड़ों का साया रहे।

मसाजिद व मदारिस में इख़्तिलाफ़ात की बुन्यादी वजह

आजकल मदारिस के अंदर जो फ़ित्ने होते हैं, मस्जिद की कमेटियों में जो फ़ित्ने होते हैं, उनकी बुन्यादी वजह यही होती है कि नौजवान कहते हैं कि काम तो हम करते हैं, नाम दूसरों का होता है, तो क़ुर्आन मजीद ने इसका पत्ता ही साफ़ कर दिया, फ़रमाया कि याद करो उस वक़्त को जब मेरे इब्राहीम मेरे घर की बुन्यादों को खड़ा कर रहे थे और इस्माईल भी उनका साथ दे रहे थे।

औलाद का होना एक ख़ुशी, औलाद का नेक होना उससे बड़ी ख़ुशी

सुब्हानल्लाह! क्या ख़ुशनसीब बेटे थे, जिन्होंने अल्लाह रब्बुल

इज़्ज़त का घर बनाने में अपने वालिद का तआवुन किया, मदद की, अल्लाह ऐसे नेक बेटे हर एक को अता फ़रमाए जो दीन के काम में मुआविन बन जाएं। औलाद का होना एक ख़ुशी, और औलाद का नेक होना उससे बढ़ कर ख़ुशी, वालिद जो दीन के काम में लगा हुआ है, उसमें अगर औलाद भी साथ साथ तआवुन करे तो यह उससे भी बढ़कर ख़ुशी है।

मस्जिद व मदरसा बनाने वालों को एक अहम हिदायत

इसके बाद एक और बात कही गई "رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا" यह इसका लब्बे लुबाब है कि मस्जिद बनाने से उनका मक़्सूद यह था कि ऐ अल्लाह! उसे हम से क़बूल कर लीजिये। इसका मतलब यह कि मदरसा बनाने वाले और मस्जिद बनाने वाले हमेशा मक़्सूद इसको बनाएं कि यह इदारा अल्लाह की नज़र में क़बूल हो जाए। बड़े इदारे बन जाना आसान है, ज़्यादा लोगों का मुतवज्जो हो जाना भी आसान है, दुनिया के कालिजों यूनीवर्सिटियों में हज़ारों लोग पढ़ते हैं, यह कोई अनोखी बात नहीं है, अनोखी बात तो यह है कि वह इदारा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां क़बूल हो जाए। यह चीज़ सामने रहे, इसलिये फ़रमाया कि याद करो उसे वक़्त को जब मेरे इब्राहीम और इस्माईल मेरे घर की बुन्यादों को खड़ा कर रहे थे, और वह उस वक़्त यह दुआ मांग रहे थे "رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا" अल्लाह! इसको क़बूल फ़रमा लीजिये।

जब भी कोई मज़दूर मज़दूरी करता है तो दस्तूर है कि उसे उजरत मिलती है, इन्आम मिलता है, उन अंबिया ने भी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का घर बनाया तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने भी इन्आम दिया कि इब्राहीम मेरे ख़लील! मांगो जो मांगना है, तो उन्होंने पहली बात यह मांगी "رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ" कि हम दोनों को

मुसलमान बंदा बना दीजिये, अपनी ज़ात से बात शुरू की कि हम दोनों तसलीम करने वाले और मानने वाले बन जाएं, यह तो अपने लिये दुआ मांगी। फिर इसके बाद कहा "وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ" और हमारी आगे आने वाली क्यामत तक जो नसलें हैं उनमें भी तसलीम करने वाली एक उम्मत पैदा फ़रमा दीजिये। तो अपने लिये भी दुआ मांगी और औलाद के लिये भी दुआ मांगी।

अब यहां तक तो बात समझ में आती है कि पहले क़बूलियत की दुआ मांगी, फिर अपनी ज़ात के लिये दुआ मांगी और औलाद के लिये दुआ मांगी, लेकिन इसके बाद इदारे चलाने वाले बंदों की ज़रूरत तो थी ही, इसलिये नेक, मुत्तक़ी, परहेज़गार लोगों का मुआविन बन जाना, यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का बड़ा इन्आम होता है, चुनांचे इब्राहीम अलै० ने एक और दुआ मांगी, मक़्सूद यह था कि ऐ अल्लाह! मस्जिद तो मैंने बना दी, अब इबादत सिखाने वाले को भेज दीजिये, मदरसा मैंने बना दिया, इल्म सिखाने वाले को भेज दीजिये, मेरे ख़लील किसको मांग रहे हैं? अल्लाह! जब आपने मुआविनीन का इशारा फ़रमा दिया तो फिर मैं भी वह मांगूगा जो अनोखी चीज़ होगी, मेरे इब्राहीम क्या मांगते हो? अल्लाह मुझे वह नेअ़मत चाहिये जो तेरे ख़ज़ाने में भी एक है, मुझे दुनिया का फ़ज़्ल व कमाल नहीं चाहियें, मुझे दुनिया का माल व मनाल नहीं चाहिये, अल्लाह! मुझे तो फ़क़त आमिना का लाल चाहिये "رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا" अल्लाह! इनमें अपने रसूल को भेज दीजिये, नबी सल्ल० ने इर्शाद फ़रमायाः मैं सय्यदुना इब्राहीम अलै० की दुआ की क़बूलियत बन कर दुनिया में आया हूं, सुब्हानल्लाह! क्या दुआ मांगी, चूंकि आज मस्जिद की बुन्याद का मौक़ा है तो हम भी इन क़ुर्आनी आयात को ज़हन में रखते हुए सबसे पहले तो अपने को अल्लाह के

सामने पेश करें कि अल्लाह! सर के बालों से लेकर पैर के नाख़ुनों तक हमें मुसलमान बना दीजिये, फिर इसके बाद अपनी औलादों को भी अल्लाह के सामने पेश करें, फिर इसके बाद अल्लाह के मक़्बूल बंदों की जमाअत मांगें कि अल्लाह मुत्तबए सुन्नत बंदों की जमाअत, मुआविनीन की जमाअत अता फ़रमा दे, फिर अल्लाह के फ़ज़्ल और मदद से इदारे चलते रहते हैं, अल्लाह तआला इस मौक़ा पर मांगी हुई हमारी दुआओं को क़बूल फ़रमाए।

سُبحانَ رَبِّی الاَعْلیٰ الْوهَّاب

اللّٰهمَّ صلِّ علیٰ سیدنا محمدٍ وعلیٰ آل سیدِنا محمدٍ وبارِک وسلِّمْ

ऐ करीम आक़ा! हम आपके आजिज़ व मिसकीन बंदे हैं, हमारे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा, ख़ताओं से दरगुज़र फ़रमा, ऐबों की पर्दा पोशी फ़रमा, अल्लाह! हमारी निगाहों को पाक फ़रमा, दिलों को साफ़ फ़रमा, सीनों को अपनी मुहब्बत से लबरेज़ फ़रमा, अपने इश्क़ की आतिश हमारे सीनों में पैदा फ़रमा, हमारे अंग अंग से अपने ज़िक्र को जारी फ़रमा, रूएं रूएं से अपने ज़िक्र को जारी फ़रमा, हड्डी हड्डी बोटी में अपनी मुहब्बत फ़रमा, ऐ करीम आक़ा! मस्जिद का जो संगे बुन्याद रखा गया अपनी रहमत से उसे शर्फ़े क़बूलियत अता फ़रमा, ऐ करीम आक़ा! इस घर को मक़बूल घरों में शामिल फ़रमा, अपने मक़बूल बंदों की जमाअत यहां से खड़ी फ़रमा, ऐ करीम आक़ा! इस घर को अपने मक़बूल घरों में शामिल फ़रमा, अपने मक़बूल बंदों की जमाअत यहां से खड़ी फ़रमा, इसको मिनारए नूर बना, इसकी रौशनी दुनिया के कोने कोने के अंदर पहुंचा, काम करने वाले जो भी हों, इख़्लास के साथ काम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, मेरे मौला! दाईं बाईं आगे पीछे हर तरफ़ से हिफ़ाज़त फ़रमा,

नफ़्स व शैतान के मकर व फ़रेब से महफ़ूज़ फ़रमा, फ़ित्नों से महफ़ूज़ फ़रमा, ऐ मेरे मालिक! हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमा, ऐ अल्लाह! हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमा, आपके प्यारे हबीब सल्ल० ने फ़रमाया कि कुर्बे क़्यामत में वक़्त आएगा कि सुब्ह इंसान ईमान वाला होगा, शाम को सोने के लिये बिस्तर पर जाएगा तो ईमान से ख़ाली होगा, अल्लाह! हम ऐसे फ़ित्नों के ज़माने में ज़िंदा हैं, हम पर रहमत फ़रमा दीजिये, हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमा दीजिये, अल्लाह! हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमा दीजिये, हमें अपने रास्ता में क़बूल कर लीजिये, अल्लाह! पूरी उम्मत को क़बूल कर लीजिये, अल्लाह! रहमत का मुआमला फ़रमा दीजिये, अल्लाह! क़्यामत तक आने वाली हमारी नसलों को भी भी दीन के लिये क़बूल फ़रमा लीजिये, ऐ अल्लाह! जो इस इदारे के मुआविनीन हैं या आईदा बनेंगे, सबको अपने मक़बूल बंदों में शामिल फ़रमा लीजिये, मेरे मौला! अपनी याद वाली ज़िंदगी अता फ़रमा दीजिये, अल्लाह! रहमतों का मुआमला फ़रमा दीजिये, करम के फ़ैसले फ़रमा दीजिये, मेरे मौला! ज़िंदगी में कभी भी बेसहारा न फ़रमा, कभी भी बे आसराना फ़रमाख कभी भी अपने दर से दूर न फ़रमा, कभी भी नफ़्स व शैतान के हवाले न फ़रमा, हमेशा अपनी रहमतों की पुश्त पनाही नसीब फ़रमा, ऐ मालिक! इन दुआओं को अपनी रहमत से क़बूल फ़रमा, ऐ अल्लाह! जिस तरह आपने इब्राहीम अलै० को इमामुल अंबिया बनाया, ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से हमें भी इमामुल औलिया बना दीजिये, इमामुल मुत्तक़ीन बना दीजिये, अल्लाह! जैसी इब्राहीम अलै० की औलाद को उनके काम में मुआविन बनाया, हमारी औलाद को भी दीन के कामों में हमारा मुआविन बना दीजिये, मेरे मौला! क़बूल फ़रमा लीजिये, ऐ अल्लाह! जिस तरह इब्राहीम अलै० ने पत्थरों के

बुतों को तोड़ा, अल्लाह अपनी रहमत से हमें वह तौहीदे ख़ालिस का मक़ाम अता फ़रमा दीजिये, उनके हक़ में आप ने दुनिया की आग को ठंडा फ़रमा दिया, अल्लाह! हमारे हक़ में जहन्नम की आग को ठंडा फ़रमा दीजिये, रब्बे करीम! आपने इब्राहीम अलै0 को क़ल्बे सलीम अता फ़रमाया, हमें भी क़ल्बे सलीम अता फ़रमा दीजिये, ऐ अल्लाह! उनको اَوّاہ और مُنِيب बनाया, हमें भी क़ल्बे मुनीब अता फ़रमा दीजिये, ऐ अल्लाह! जिस तरह आपने उनको मेहमान नवाज़ी का ख़ुल्क़ अता फ़रमाया, हमें भी वह ख़ुल्क़ अता फ़रमा दीजिये, रब्बे करीम! रहमतों का मुआमला फ़रमा, ऐ अल्लाह! मेहरबानी का मुआमला फ़रमा, ऐ अल्लाह! आपने इब्राहीम अलै0 की औलाद में सय्यदुना रसूलुल्लाह सल्ल0 को पैदा फ़रमाया, अल्लाह! हमारी आने वाली औलादों में कोई वक़्त का मुजद्दिद पैदा फ़रमा दीजिये, कोई अपना आशिक़ पैदा फ़रमा दीजिये, अल्लाह! मेहरबानी फ़रमा दीजिये, ऐ अल्लाह! तक़्वे वाले पैदा फ़रमा दीजिये, मुख़्लिस बंदे पैदा कर दीजिये, ऐ अल्लाह! तक़्वे वाले पैदा कर दीजिये, रब्बे करीम! मेहरबानी का मुआमला फ़रमा दीजिये, अल्लाह! हम साइल हैं, आपके सामने हाथ फैलाए बैठे हैं, आप की रहमतों के मुंतज़िर हैं, अल्लाह! दामन भर दीजिये, मांगना नहीं आता हमें बिन मांगे अता फ़रमाइये, इस इदारा को बुरी नज़र से महफ़ूज़ फ़रमा, बुरे असर से महफ़ूज़ फ़रमा, जादू टोने से महफ़ूज़ फ़रमा, हासिदों के हसद से भी महफ़ूज़ फ़रमा, अल्लाह! अपनी हिफ़ाज़त अता फ़रमा, रब्बे करीम! वक़्त के साथ जो ज़रूरियात हों सब को अपने ग़ैबी ख़ज़ानों से पूरी फ़रमा, इस्तिग़ना के साथ काम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, और इसको अपने क़ुर्ब का ज़रीआ बना, मेरे अल्लाह! जो क़रीब से तलबा व तालिबात यहां आए हैं, अल्लाह! उनको अपने मक़बूल बंदों और

बंदियों में शामिल फ़रमा, ऐ करीम आक़ाफ हमारी इन दुआओं को अपनी रहमत से क़बूल फ़रमा, मज्मा में जितने अहबाब जितनी नेक मुरादें लेकर बैठे हैं, अल्लाह! सबके दिलों की नेक मुरादों को पूरी फ़रमा, जो लोग इदारे चला रहे हैं या बना रहे हैं, अल्लाह! सबकी मेहनतों को क़बूल फ़रमा, ऐ अल्लाह! सबको अपने मक़बूल बंदों और बंदियों में शामिल फ़रमा, ऐ करीम आक़ा! हिदायत की हवाओं को आम फ़रमा, पूरी दुनिया में जहां भी कोई मुसलमान है, अल्लाह! सबकी नेक मुरादों को पूरी फ़रमा, रब्बे करीम! हमारी इन दुआओं को अपनी रहमत से क़बूल फ़रमा।

ربنا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّک انت السمیع العلیم و تُبْ علینا اِنَّک انت التوّابُ الرحیُم

وصلّى اللّٰهُ تعالىٰ عَلى خَيرِ خَلقِهٖ سيدِنا محمدٍ وعلى آلِهٖ وأصحابِهٖ أجْمعين بِرحمتِک يا أرحَمَ الرَّاحِمِين

☆☆☆

अगले सफ्हा पर आप जो ख़िताब मिला ख़ुत्बा फ़रमाएंगे, यह ख़िताब 4/अप्रेल 2011 ई0 बरोज़ दो शंबा बअ़द नमाज़े मग़रिब, मम्मदा पूर, नीरल, (महाराष्ट्र) मीर वाक़ेअ़ "ख़ानक़ाहे नक़्शबंदिया मुजद्दिदिया नोमानिया" में हुआ था, शुरका की तादाद का अंदाज़ा पौने दो लाख बताया जाता है।

मुहब्बते इलाही

और

उसके हुसूल का तरीक़ा

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد

اعوذ بالله من الشيطان الرجيم، بسم الله الرحمن الرحيم

وَالَّذِيْنَ آمَنُوْ أَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰه

سبحان ربک رَبِّ العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العلمين

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارک وسلم

سبحان ربک رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العلمين

मक़सदे ज़िंदगी अल्लाह की बंदगी

यह वसीअ़ व अरीज़ काइनात जो हमारे इर्दगिर्द फैली हुई है, यह एक सजे हुए महल के मानिंद है, ज़मीन के बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمَاهِدُوْنَ" गोया ज़मीन को अल्लाह तआला ने फ़र्श बनाया, और आसमान के बारे में फ़रमाया: "وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا" और आसमान को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने छत बनाया "بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا" बग़ैर Pillar (सुतून) के छत को हमने खड़ा कर दिया, "إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا" फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने आसमान पर लाइटें लगाईं,

सूरज चांद और सितारों से उसको मुज़य्यन किया, इंसान की ज़रूरत की जो भी चीज़ है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस दुनिया में अता फ़रमाए, तो मालूम हुआ कि यह महल अल्लाह ने इंसान के लिये बनाया और इंसान को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपनी इबादत के लिये बनाया है, इसको किसी शाइर ने यूं कहाः

खेतियां सरसब्ज़ हैं तेरी गिज़ा के वास्ते
चांद सूरज और सितारे हैं ज़िया के वास्ते

बह्र व बर्रे शम्स व क़मर व शमा के वास्ते
यह जहां तेरे लिये है तू ख़ुदा के वास्ते

और फ़रमायाः "اِنَّ الدُّنْيَا خُلِقَتْ لَكُمْ وَاَنْتُمْ خُلِقْتُمْ لِلْاٰخِرَةِ"
यह दुनिया तुम्हारे लिये पैदा की गई और तुम्हें अल्लाह ने आख़िरत के लिये पैदा किया तो गोया इंसान की पैदाइश का मक़सद अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मअरिफ़त का हासिल करना, अल्लाह तआला से मुहब्बत करना और अल्लाह तआला की इबादत करना है।

जमादात की ख़ासियत

अगर हम ग़ौर करें तो इस दुनिया और इस धरती में चार तरह की मख़्लूक़ हैं, एक जमादात, फिर इसके बाद नबातात, फिर इसके बाद हैवानात, फिर इसके बाद इंसान, यह चार तरह की मख़्लूक़ हमें अपने इर्दगिर्द नज़र आती है, हर एक के नाम का पहला हुरुफ़ उसकी खुसूसियत का इशारा देता है। मिसाल के तौर पर जमादात पत्थरों को कहते हैं तो जमादात का पहला हुरुफ़ जीम बनता है, और जीम से लफ़्ज़ "जसामत" बना, तो जमादात की खुसूसियत यह है कि इनमें जसामत होती है, पत्थरों में पहाड़ों में ज़मीन में जसामत मौजूद है।

नबातात की ख़ासियत

फिर इसके बाद नबातात का पहला हुरुफ़ नून बनता है, और नून से लफ़्ज़ बना "नश्व व नुमा", चुनांचे नबातात के अंदर जसामत भी है और इसके साथ नश्व व नुमा पाता है, पत्थर को रखें तो कई सालों के बाद वही पत्थर रहेगा, उसका वज़न नहीं बढ़ेगा तो जमादात में फ़क़त जसामत है, इससे नबातात अफ़ज़ल हैं, क्योंकि इनमें जसामत भी है, एक मज़ीद खूबी भी है, जिसको नश्व व नुमा कहते हैं।

हैवानात की ख़ासियत

फिर हैवानात को देखें तो हैवानात के अंदर एक मज़ीद खूबी है जो इसके पहले हुरुफ़ से मालूम हुई, पहला हुरुफ़ है हा और हा से लफ़्ज़ "हरकत" बना, तो हैवानात के अंदर जसामत भी है, नश्व व नुमा भी है और हरकत भी है, चुनांचे बकरी के बच्चे को यहां खड़ा करें तो थोड़ी देर में भाग के दूसरी जगह चला जाएगा तो उसमें तीन खूबियां हुईं, जसामत भी हुई, नश्व व नुमा भी हुई और हरकत भी हुई।

इंसान की ख़ासियत

फिर इसके बाद इंसान को देखें, अब इस इंसान के अंदर नीचे की तीनों खूबियां भी मौजूद हैं, इसके अंदर जसामत भी है, नश्व व नुमा भी पाता है, हरकत भी करता है, मगर एक इज़ाफ़ी सिफ़त होनी चाहिये जिसकी वजह से यह दूसरों से आला हो, वह इसके पहले हुरुफ़ से मालूम होगी, पहला हुरुफ़ अलिफ़ है और अलिफ़ से "उन्स" बना, जिसका मअ़नी होता है मुहब्बत करना, तो इंसान के अंदर जो इज़ाफ़ी सिफ़त है, जो उसे बाक़ी मख़्लूक़ से जुदा करती है वह है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से मुहब्बत करना, यह ऐसी सिफ़त है

जो उसको फ़रिश्तों से भी मुम्ताज़ कर देती है, इस ख़ाक के पुतले में अल्लाह ने इश्क़ का ऐसा माद्दा रख दिया कि अगर यह इससे अपने दिल को भर ले तो यह अल्लाह का महबूब बन जाता है, तो पहले जमादात, उसके ऊपर नबातात, उसके ऊपर हैवानात और उसके ऊपर इंसान।

अद्ना चीज़ आला पर कुर्बान होती है

एक और बात है कि अल्लाह तआला का बनाया हुआ उसूल है कि अद्ना आला पे कुर्बान होता है, जमादात नबातात पे कुर्बान होते हैं, आपको ज़मीन के अंदर अगर बीज डालना है, तो आप गहरा हल चलाएंगे, ज़मीन के सीने को चीर देंगे, कोई यह नहीं कहेगा कि इतना क्यों जुल्म कर रहे हैं, ज़मीन पे इतना गहरा हल क्यों चला रहे हैं, सब कहेंगे कि मक़सद अज़ीम है, यहां खेती करनी है, यहां बीज डालना है, इसलिये ज़मीन को तैयार करना ठीक है, तो जमादात नबातात पे कुर्बान होते हैं, अब वह बीज जो हमने डाला है, वह ज़मीन से Nutrition (ग़िज़ा) लेता है, तो ज़मीन की Nutrition कुर्बान हो रही है इसके ऊपर, तो जमादात नबातात के लिये कुर्बान। और इतनी अच्छी और खूबसूरत फ़सल आ जाती है, आपको अपने घर में जानवरों के लिये चारे की ज़रूरत होती है तो आप उस फ़सल को काट देते हैं, कोई यह नहीं कहता कि आप ने इतनी खूबसरत फ़सल को क्यों काट दिया, इसलिये कि इसको ग़िज़ा बनना था, इसका मक़्सद यही था, लिहाज़ा आप वह सब्ज़ा अपने जानवरों पे ले जाकर डाल देते हैं, अब जानवरों ने वह चारा खा लिया, यह हुआ नबातात का हैवान यअ़नी अपने आला पर कुर्बान होना, अब इंसान को ज़रूरत पड़ी तो बकरी को ज़ब्ह कर दिया, मुर्ग़ी को ज़ब्ह कर दिया, तो यह जानवर इंसान के लिये कुर्बान हो रहे हैं

कि मक़्सद उनका यही था कि अपने आला पे कुर्बान हो, तो जमादात नबातात पे कुर्बान, और नबातात हैवानात पे कुर्बान, और हैवानात इंसान पर कुर्बान, और इंसान रब्बे रहमान पे कुर्बान, तो मक़्सदे ज़िंदगी ही यही है कि "اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُکِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ" हमारा उठना बैठना चलना फिरना सब अल्लाह के लिये हो, सही मअ़नी में इंसान वही है जिसकी ज़िंदगी अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के लिये गुज़र रही हो, उसकी हर बात अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के हुक्म के मुताबिक़ हो।

इंसान इश्क़ व मुहब्बत का पुतला है

इसलिये दुनिया के फ़लासफ़रों ने इंसान के बारे में कहा कि "الانسان حیوان ناطق" कि इंसान एक बोलने वाला जानदार है, लेकिन चूंकि वह माद्दी उलूम के फ़्लासफ़र थे, खुद मंज़िल का पता नहीं था तो उन्होंने इंसान की यह तारीफ़ की, लेकिन मौलाना रूम रह0 एक जगह इंसान की तारीफ़ करते हैं कि "اِلانسانُ عاشِق" कि इंसान की सिफ़त यह है कि वह अपने रब का आशिक़ है, अपने रब से मुहब्बत करने वाला है, और यही चीज़ इंसान को अशरफ़ुल मख़्लूक़ात बना देती है।

दिमाग़ इल्म का बर्तन और दिल इश्क़ का बर्तन

चुनांचे हर इंसान को अल्लाह तआला ने दो नेअ़मतों से नवाज़ा है, एक धड़कने वाला दिल और एक फड़कने वाला दिमाग़, फड़कने वाला दिमाग़ इल्म का बर्तन है, और धड़कने वाला दिल इश्क़ का बर्तन है, बर्तन मिले और उसको भरे न, यह बात मुनासिब नहीं नज़र आती, इसलिये फ़रमाया कि मेरे बंदो! बर्तन तो हमने तुम्हारे बना दिये हैं, अब तुमको अपनी ज़िंदगी में इन बर्तनों को भरना है, अपनी अक़्ल को और ज़हन को इल्मे नबवी से भर लो और अपने दिलों को

मुहब्बते इलाही से भर लो, अपनी अक़्ल को इल्मे इलाही से भर लो और अपने दिलों को मुहब्बते इलाही से भर लो, जो बंदा इन दोनों बर्तनों को खूब भरेगा, ज़िंदगी की सही हक़ीक़त को वही पहचानेगा।

दिल का काम मुहब्बत करना है

आप ग़ौर करें, इंसान मुख़्तलिफ़ आज़ा से मिल कर बना है, आंख, कान, दिल, दिमाग़, हाथ, पैर, हर एक का अपना एक Function (अमल) है, मसलन आंख का अमल है देखना, कान का काम है सुनना, ज़बान का काम बोलना, दिमाग़ का काम सोचना और दिल का काम मुहब्बत करना, यह दिल का मक़्सद है, इसलिये दुनिया का कोई भी इंसान हो वह यह नहीं कह सकता कि मुझे किसी से मुहब्बत नहीं, लाज़िमन मुहब्बत होगी

दिल बह्रे मुहब्बत है मुहब्बत यह करेगा
लाख इसको बचा तू यह किसी पर तो मरेगा

पत्थर से हो खुदा से हो या पत्थर किसी से हो
आता नहीं है चैन मुहब्बत किये बग़ैर

यह अलग बात है कि अल्लाह से मुहब्बत करे या किसी मख़्लूक़ से करे, बंदा मुहब्बत के बग़ैर तो रह ही नहीं सकता, जिस तरह कमरे के अंदर या तो उजाला होगा, वर्ना अंधेरा होगा, बिल्कुल इसी तरह इंसान के दिल में या तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत का उजाला होगा, वर्ना मख़्लूक़ की मुहब्बत का अंधेरा ज़रूर होगा, यह नहीं कर सकते कि इसमें न अंधेरा हो न उजाला, कुछ भी नहीं, कुछ न कुछ तो होगा।

मुहब्बत की दो किस्म

हां इतनी बात है कि अगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत

है, तो यह जाइज़ चीज़ है और मख़्लूक़ की नफ़सानी, शैतानी और शह्वानी मुहब्बत है तो यह हराम चीज़ है। इसकी मिसाल यह है कि दूध तो दूध ही होता है, मगर बकरी का हो, गाए का हो तो हलाल होता है, और अगर दूध कुतिया का हो तो हराम होता है, ऐसे ही अगर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की मुहब्बत से दिल भरा होगा तो यह मुहब्बत बाइसे अज्र बन जाएगी और अगर नफ़सानी शैतानी मुहब्बतों से दिल भरा होगा तो यह मुहब्बत इंसान के लिये बुर्दबारी का सबब बन जाएगी।

एक ग़लतफ़ह्मी का इज़ाला

अब यहां यह मुग़ालता दिल में न रहे कि मख़्लूक़ की मुहब्बत में बरबादी कैसे? जब भी मख़्लूक़ की मुहब्बत का नाम लेते हैं तो उससे मुराद दाइरए शरीअत के अलावा की मुहब्बतें होती हैं, इन मुहब्बतों को तो ख़ुद अल्लाह ने हुक्म दिया है, मियां बीवी की मुहब्बत, मां बाप की मुहब्बत, मुसलमान भाई की आपस में मुहब्बत, यह मुहब्बतें तो नूर हैं, यह तो अल्लाह का हुक्म है, इसलिये यह इबादत हैं, लेकिन जो मुहब्बतें नफ़सानी ख़्वाहिशात की वजह से अपने नफ़्स की तक़ाज़ों को पूरा करने के लिये हम करते हैं, इन मुहब्बतों का नाम मख़्लूक़ की मुहब्बत होता है।

दिल, अल्लाह की मुहब्बत का बर्तन है

लिहाज़ा यह दिल अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की मुहब्बत का बर्तन है, हम भी उसे अल्लाह तआला की मुहब्बत से भर लें, जो बंदा अपने दिल को मुहब्बते इलाही से भर लेता है, वह इश्क़ के घोड़े पे सवार हो जाता है अब उसकी मंज़िल बहुत हो गई

राह बरसों की तय हुई पल में   इश्क़ का है बहुत बड़ा एहसां

इश्क़ की एक जुस्त ने कर दिया क़िस्सा तमाम

इस ज़मीन व आसमां को बेकरां समझा था मैं

मैं समझा था कि ज़मीन व आसमान का फ़ासिला बहुत ज़्यादा है, लेकिन इश्क़ ने एक छलांग लगाई और मुझे मेरे महबूब से वासिल कर दिया, तो मुहब्बत दिल में पैदा करनी पड़ती है, इसके बग़ैर यह मुहब्बते इलाही का सफ़र तय नहीं होता, इसलिये किसी ने कहा कि

लौट आए जितने फ़रज़ाने गए   ताबए मंज़िल सिर्फ़ दीवाने गए

जो बंदा अक़्ल की बुन्याद पे रास्ता तय कर रहा हो उसको फ़र्ज़ाना कहते हैं, यअ़नी जिनके दिलों में मुहब्बत होती है वह मंज़िलों तक हमेशा पहुंचा करते हैं, चुनांचे

अक़्ल व दिल व निगाह का मुर्शिद अव्वलीं है इश्क़

इश्क़ न हो तो शरअ़ व दीन बुतकदए तसव्वुरात

अगर मुहब्बते इलाही निकाल दो तो बीच में चंद तसव्वुरात ही रह जाते हैं, उनके सिवा क्या रह जाता है, इसलिये यह एक नेअ़मत है जो बंदा को नसीब हो जाए तो उसे दुनिया में सरदारी नसीब हो जाती है, शाइर ने कहाः

हर कि आशिक़ शद् जमाल ज़ात रा   ओसत सय्यद जुम्ला मौजूदात रा

हर वह बंदा जो अल्लाह तआला के जमाल का आशिक़ बन जाता है, वह तमाम मख़्लूक़ात का सरदार बन जाता है, लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अपने दिल को मुहब्बते इलाही से भर लें।

मुहब्बत मुश्किलें आसान कर देती है

मुहब्बत का एक नतीजा यह होता है कि इंसान महबूब की ख़िदमत बे इख़्तियार होकर करता है "اِنَّ الْمُحِبَّ لِمَنْ يُحِبُّ مُطِيْعٌ" मुहिब्ब जिससे मुहब्बत करता है उसका मुतीअ़ होता है। आपने घरों में देखा होगा कि छोटा बेटा है, तो मां कैसे 24 घंटे उसकी ख़िदमत में लगी होती है, न अपने सोने की परवाह, न खाने की परवाह, तो

मां कैसे 24 घंटे उसकी ख़िदमत में लगी होती है, न अपने सोने की परवाह, न खाने की परवाह, न आराम की परवाह, ज़रा बच्चे ने कुछ इशारा किया, भागी फिरती है, यह 24 घंटे की मुलाज़िमा क्यों बनी फिरती है? बच्चे से मुहब्बत की वजह से, जितनी भी थकी हुई होगी, भूकी प्यासी होगी वह बैठेगी, एक लुक़्मा तोड़ेगी कि मैं खाना खा लूं और सोया हुआ बच्चा थोड़ी सी आवाज़ कर देगा सब छोड़ के चली जाएगी, क्योंकि मुहब्बत है, जो मर्ज़ी हो जाए वह बच्चा का रोना बर्दाश्त नहीं कर पाती। इसी तरह जब इंसान के दिल में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत आ जाती है तो फिर उसके लिये नेकी करना, इबादत करना, दीन पर चलना, यह मुश्किल नज़र नहीं आता, वह मुहब्बत के साथ चल रहा होता है। इसकी मिसाल यूं समझिये कि एक मां बहुत थकी हुई है, कहती है कि आज मैंने सारा दिन सफ़ाईयां करवाईं, घर को साफ़ किया, कपड़े धोए, मैं बहुत थक गई हूं, बस मुझे इशा पढ़ के सो जाना है, वह इशा की नमाज़ पढ़ रही थी कि इतने में परदेस में गया हुआ जो उसका जवान बेटा था, वह अचानक Surprise (ग़ैर मुतवक़्क़ो खुशी) देने के लिये घर आ गया, अब जैसे ही जवान बेटे की आवाज़ सुनी, सब थकावटें ख़त्म, अब बेटे के साथ बैठी है, खाना खिला भी रही है, खा भी रही है, तबीअत पूछ रही है, हाल पूछ रही है, घंटों जाग रही है, बेटी कहती है: अम्मी! आप तो कह रही थीं कि बहुत थकी हुई हूं, मुझे कोई आज तंग न करे, मुझे सोना है, नींद कहां चली गई? मां कहेगी: बेटी! तेरे भाई की आवाज़ सुन कर तो नींद ख़त्म हो गई। जिस तरह मुहब्बत की बिना पर थकी हुई मां बेटे से मुलाक़ात करती है तो सब थकावटें ख़त्म हो जाती हैं, उसी तरह बंदा सारा दिन काम काज करके थका होता है, रात का अंधेरा होता है, मुसल्ले पे क़दम रखता

है तो सब थकावटें ख़त्म हो जाती हैं।

हमारे बुज़ुर्गों के बारे में लिखा है कि दिल में इतनी रियाज़त करते थे कि रात को सोने के लिये जब बिस्तर पर जाते थे तो थके हुए ऊंट की तरह पांव घसीट के रखते थे, लेकिन वहीं थके हुए लोग जब मुसल्ले पे खड़े होते थे तो सब थकावटें ख़त्म हो जाती थीं, उनको रात गुज़रने का पता ही नहीं चलता था, इसलिये कि दिल के अंदर मुहब्बत है। आपने देखा होगा कि जिन बच्चों को वीडियों गेम खेलने का शौक़ होता है, उनसे कहो कि एक घंटा खेल लो और एक घंटे के बाद कहो कि बस करो, तो कहेंगे कि अम्मी! अभी तो 15 मिनट हुए हैं, एक घंटा का पता नहीं चलता, जिस तरह बच्चे का दिल वीडियो गेम में अटका हुआ है, कि एक घंटा गुज़रने से भी पता नहीं चलता, हमारे अकाबिर का यही हाल था, अल्लाह की मुहब्बत में उनका दिल इस तरह अटका होता था कि रात के गुज़रने का पता भी नहीं होता था।

इश्क़ व मुहब्बत वाली इबादत के चंद नमूने

सय्यदा फ़ातिमा रज़ि0 का वाक़िआ है कि सर्दियों की लम्बी रात में दो रकअत की नियत बांधी, तबीअत में कुछ ऐसा सोज़ था, मुहब्बत थी, कि तिलावत करती रहीं, करती रहीं, जब सलाम फेरा तो देखा कि सुब्हे सादिक़ का वक़्त क़रीब है, तो दुआ के लिये हाथ उठाए और दुआ मांगने लगीं कि अल्लाह! मैंने तो दो ही रकअत की नियत बांधी थी, तेरी रातें कितनी छोटी हैं कि मेरी दो रकअत में तेरी सारी रात ख़त्म हो गई। उनको रातों के छोटे होने का शिक्वा रहा करता था, दिल चाहता था कि और ज़्यादा अल्लाह की इबादत करें, चुनांचे अगर कहीं किसी का दिल अटका हुआ हो और उधर से फ़ोन आ जाए और उस वक़्त दूसरा बंदा कहे कि मुझे आप से बात करनी

है तो बोझ लगता है कि मुझे यह कॉल Call क्यों बंद करनी पड़ी।

सहाबा रज़िअल्लाहु अन्हुम अजमईन का हाल बिल्कुल ऐसा ही था, चुनांचे दो सहाबी रज़ि0 थे, नबी सल्ल0 ने उनके ज़िम्मा कुछ काम लगाया, अब उनमें से एक ने कहा कि सारी रात जागना है, मैं सो जाता हूं, आधी रात आप जागें, फिर आप सो जाना मैं जागूंगा, अब जो जाग रहे थे उनको महसूस हुआ कि जो काम मेरे ज़िम्मा लगाया है, उसके करने का वक़्त आ गया, चुनांचे उन्होंने अपने साथी को जगा दिया और कहा कि मैं सूरए कह्फ़ पढ़ रहा था, अगर मुझे अपने फ़र्ज़े मन्सबी में कोताही का डर न होता तो मैं आज सूरह कह्फ़ को मुकम्मल पढ़े बग़ैर सलाम न फेरता। यह मुहब्बत ऐसी अजीब चीज़ है कि इंसान मुसल्ले पे खड़ा होता है, उसका दिल सलाम फेरने का नहीं चाहता।

मौलाना यहया रह0 लम्बा सज्दा किया करते थे, किसी ने कहा कि हज़रत! इतना लम्बा सज्दा करते हैं? कहने लगे कि हां, जब मैं सज्दा करता हूं तो मुझे यूं महसूस होता है कि जैसे मैंने अपने आक़ा के क़दमों पे सर रख दिया, सर उठाने का जी नहीं चाहता, इंसान की यह कैफ़ियत होती है, तो दिल में अगर मुहब्बत हो तो फिर इंसान को इन इबादात में लज़्ज़त ही अजीब मिलती है, इसको एक शाइर ने ज़रा अजीब अंदाज़ से बयान किया, आप अपने घर किसी मज़दूर को लाएं और उससे कहें कि यह पत्थर तोड़ना है, तो वह मज़दूर फावड़ा मारता रहेगा, पत्थर तोड़ता रहेगा, लेकिन उसको Interest (दिलचस्पी) नहीं है, तो वह बेदिली के साथ काम करेगा कि जल्दी से आठ घंटे ख़त्म हों और मेरी जान छूटे, उसकी कैफ़ियत यह होती है। और एक आदमी था जिसका नाम फ़रहाद था, उसका दिल कहीं अटक गया था तो लोगों ने कहा कि मियां! इस पहाड़ को खोदोगे

तो हम तुम्हारा उससे निकाह कर देंगे, उसने तीशा लिया और पहाड़ को खोदना शुरू कर दिया, लेकिन यह जो तीशा मारता था उसका जज़्बा ही कुछ और था, चुनांचे अल्लामा इक़बाल ने लिखा:

हर ज़र्ब तीशा सागिर कैफ़ विसाले दोस्त
फ़रहाद में जो बात है मज़दूर में नहीं

कि हर तीशा की जो ज़र्ब लगाता था उसको यूं लगता था कि मैं महबूब के वस्ल का जाम पी रहा हूं, फ़रहाद तो कुछ और ही मुहब्बत से तीशा मारता था मज़दूर किसी और जज़्बे से। आज सच्ची बात यह है कि हम मज़दूर की नमाज़ पढ़ते हैं कि कब चार रक्अत ख़त्म होगी, कब 20 रक्अत तरावीह ख़त्म होगी, और हमारे अकाबिर फ़रहाद की नमाज़ें पढ़ते थे, एक एक रक्अत में मज़ा आता था, तो यह मुहब्बते इलाही के कमी की वजह से है, इसलिये हमें चाहिये कि हम अपने दिल में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत बढ़ाएं, पैदा करें, अगर यह मुहब्बत नसीब हो गई तो सब काम हमारे लिये आसान हो जाएंगे-

नाला है बुलबुल शोरीदा तेरा ख़ाम अभी
अपने सीने में ज़रा और इसे थाम अभी
पुख़्ता होती है अगर मस्लिहते अंदेश हो अक़्ल
इश्क़ हो मस्लिहत अंदेश तो है ख़ाम अभी
इश्क़ फ़रमूदए क़ासिद से सुबुक गाम अमल
अक़्ल समझी ही नहीं मअनये पैग़ाम अभी
बेख़तर कूद पड़ा आतिशे नमरूद में इश्क़
अक़्ल है महव तमाशाए लब बाम अभी

अक़्ल खड़ी सोचती रह जाती है और इश्क़ महबूब के इशारे पर फ़ौरन सज्दा कर देता है।

इबलीस में इश्क़ की कमी का अंजाम

यही तो मसला था कि शैतान ने अल्लाह की इबादत तो की, इल्म भी उसके पास था, लेकिन इश्क़ की नेअ़मत से महरूम था, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का हुक्म हुआ, "اُسْجُدُوْا لِاٰدَمَ" तो सब फ़रिशतों ने सज्दा कर दिया सिवाए उस शैतान बदबख़्त के कि उसने सज्दा न किया, अगर उसके अंदर मुहब्बत का माद्दा होता तो यह फ़ौरन महबूब के हुक्म को सुनते ही सज्दा में चला जाता।

मुहब्बत के साथ अल्लाह का नाम लेने की हलावत

यह मुहब्बते इलाही अगर हो तो सुब्हानल्लाह! इंसान के वजूद के अंदर बरकत आ जाती है, चुनांचे फ़ारसी का एक शेअर हैः

अल्लाह अल्लाह ईंचा शीरीं हस्ते नाम   शेर व शकर मी शवद जानम तमाम

कि जब मैं अल्लाह अल्लाह का नाम लेता हूं तो मेरे पूरे जिस्म में इस तरह मिठास आ जाती है जैसे चीनी को दूध में मिलाएं तो दूध के क़त्रे क़त्रे में मिठास आ जाती है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का नाम कितना मीठा नाम है, कितने लुत्फ़ और मज़े का नाम है। इसलिये किसी आरिफ़ ने अजीब बात कही कि जिसने अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को पहचाना, वह अल्लाह से मुहब्बत किये बग़ैर रह नहीं सकता, और जिस ने दुनिया की हक़ीक़त को पहचाना वह दुनिया से नफ़रत के बग़ैर रह नहीं सकता, लिहाज़ा हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत अपने दिल में पैदा करें, यह मुहब्बत दाइमी और पाएदार चीज़ है।

नफ़सानी मुहब्बत फ़ानी, अल्लाह की मुहब्बत दाइमी

इस मुहब्बत का हाल सुनिये कि दुनिया में जितनी मुहब्बतें करने वाले लोग हैं, एक दिन उनमें जुदाई होनी है, जिब्रईल अलै0 हाज़िरे ख़िदमत हुए कि ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! "عِشْ مَاشِئْتَ اِنَّكَ

"مَيِّتٌ" जितना चाहें आप दुनिया में ज़िंदा रहें, एक दिन आप को पर्दा फ़रमाना है, "وَاَحْبِبْ مَنْ شِئْتَ فَاِنَّكَ مُفَارِق" जिससे चाहें मुहब्बत करें एक दिन जुदा होना है, दुनिया में जितनी भी मुहब्बतें हैं सबका अंजाम जुदाई है, हत्ता कि मियां बीवी की मुहब्बत भी जितनी सच्ची जितनी पक्की हो बिल आख़िर मौत जुदाई कर देती है, एक दूसरे से जुदा हो जाता है, तो दुनिया की मुहब्बतों का अंजाम बिल आख़िर जुदाई है। लिहाज़ा जो मख़्लूक़ से मुहब्बत करेगा, एक न एक दिन मख़्लूक़ से जुदा कर दिया जाएगा, और जो अल्लाह से मुहब्बत करेगा, एक न एक दिन अल्लाह से मिला दिया जाएगा, लिहाज़ा इंसान मुहब्बत करे तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से मुहब्बत करे, फिर अल्लाह की निस्बत से मख़्लूक़ से मुहब्बत करे, मख़्लूक़ से जो मुहब्बतें हों वह नफ़्स की वजह से न हों, वह अल्लाह की रज़ा के लिये हों, इसलिये मुहब्बतें तो अल्लाह के लिये हुईं, इस मुहब्बत को दिल में पैदा कर लीजिये फिर देखिये कि इस मुहब्बत का इंसान की ज़िंदगी पे क्या असर पड़ता है।

मुहब्बते इलाही की करिश्मा साज़ी

यह मुहब्बत इंसान को सही मअनों में इंसान बना देती है, ज़िंदगी में एक जज़्बा बेदार कर देती है Motivated Person (मुतहर्रिक व फ़अआले इंसान) बना देती है, वह थकना नहीं जानता। चुनांचे हिरन की एक क़िस्म है उसको नाफ़ा कहते हैं, साल में एक ऐसा Period (वक़्त) आता है कि जब उसकी नाफ़ के अंदर मुश्क पैदा होता है, यह जो मुश्क की ख़ुशबू है यह उस जानवर की नाफ़ के अंदर अल्लाह बनाते हैं, यह हिरन की एक ख़ास क़िस्म है, हमने एक मर्तबा सऊदी अरब में चाहा कि मालूम करें कि यह बात सच्ची है या नहीं, हम एक दूकान पर गए जो मुश्क का कारोबार करते थे,

हमने कहा भाई! हमने एक बात यह सुनी हुई है, उन्होंने वह नाफ़ निकाल के रख दी, कहने लगे कि हमारे पास यह Raw material (मुकम्मल तैयार होने से पहले) हमारे पास इस तरह से आता है, हमने देखा वाक़ई उसकी नाफ़ के अंदर मुश्क की ख़ुशबू थी। हमारे हज़रत रह0 फ़रमाया करते थे कि जिस वक़्त वह ख़ुशबू उस हिरन की नाफ़ में पैदा होती है, वह उसके ऊपर एक मस्ती का वक़्त होता है, वह ख़ुशबू को सूंघता है तो जैसे Hypnotized (मदहोश सा हो जाना) हो जाता है, न उसको खाने की परवाह, न उसको पीने की परवाह, न उसको सोना याद, छलांगें लगाता है, दौड़ता है, भागता है, अजीब मस्ती की कैफ़ियत होती है। वाक़ई इसी तरह जिन अल्लाह वालों के दिलों में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत का मुश्क बह रहा होता है तो फिर उन अल्लाह वालों को खाने पीने की परवाह नहीं रहती, उनकी नज़र में दिन और रात बराबर हो जाते हैं, वह सारा दिन अल्लाह की इबादत में गुज़ारते हैं और उनकी रातें उनके दिन के मानिंद हुआ करती हैं।

सत्तर साल की उम्र में रोज़ाना सत्तर मर्तबा बैतुल्लाह का तवाफ़

कुर्ज़ रह0 एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, सत्तर साल की उम्र थी, सत्तर साल में सत्तर मर्तबा बैतुल्लाह का तवाफ़ रोज़ाना किया करते थे, 70 मर्तबा रोज़ाना तवाफ़ का मतलब कि एक तवाफ़ के 7 चक्कर तो कुल 490 चक्कर लगाते, उलमा ने लिखा है कि क़रीब तरीन का हिसाब लगाओ तब भी 12 किलोमीटर का सफ़र बनता है, फिर हर तवाफ़ की दो रक्अत वाजिबुल तवाफ़ अलग तो 70 को 2 में ज़र्ब दो तो 140 रक्अत होती हैं, अब ज़रा अंदाज़ा लगाइये कि 140 रक्अत नफ़िल पढ़ना किया आसान काम है? अगर रमज़ान की किसी रात हम हिम्मत भी करें तो मुश्किल से दस रक्अत पढ़ते हैं तो घुटने

जवाब देने लग जाते हैं, कमर में दर्द होने लग जाती है, मैं अपने दोस्तों से कहा करता हूं कि दस रकअत के बअद फिर रुकू से उठते हुए "سَمِعَ اللّٰہ" के बजाए "اوئی اللّٰہ" निकल रही होती है, तो दस रकअत पढ़ के हमारा यह हाल, वह तवाफ़ के 140 रकअत नवाफ़िल पढ़ते थे, बाक़ी सारे दिन की इबादत इसके अलावा थी, 70 साल की उम्र में इतनी इबादत कैसे करते थे?

एक क़ुर्आन मजीद रोज़ पढ़ने का मामूल

हमने ज़िंदगी में ऐसे बुज़ुर्गों को देखा है जिनका मामूल था कि वह एक क़ुर्आन मजीद रोज़ाना पढ़ा करते थे, मुझे अपनी ज़िंदगी में दो असातिज़ा ऐसे मिले हैं अलहम्दु लिल्लाह, हम उनको देखते थे कि हर वक़्त उनकी ज़बान पे क़ुर्आन मजीद होता, उनके होंट हर वक़्त हरकत कर रहे होते थे, और किसी तनाव के बग़ैर किसी इज़हार के बग़ैर, बड़े पुरसुकून तरीक़े से वह घर के काम भी करते थे, वह शागिर्दों को पढ़ाते भी थे, खाते भी थे, पीते भी थे, अस्र की नमाज़ के वक़्त रोज़ाना उनका क़ुर्आन मजीद मुकम्मल हो जाता था। आज के दौर में किसी से पूछें कि आप कलिमा का कितना ज़िक्र करते हैं? कोई कहेगा दो सौ मर्तबा, कोई कहेगा 500 मर्तबा, कोई हज़ार मर्तबा करे तो बड़ी छलांग लगाई। आज के दौर में भी ऐसे लोग हैं जो अपने अह्वाल लिखते हैं तो लिखते हैं कि चालीस हज़ार मर्तबा रोज़ाना कलिमा का ज़िक्र करते हैं, ऐसे भी नौजवान हैं जो रमज़ानुल मुबारक के तीस दिनों में 30 मर्तबा क़ुर्आन मजीद मुकम्मल करते हैं, इन नौजवानों में यह जज़्बा कैसे आ जाता है? असल में यह मुहब्बते इलाही है जो इनको बरअंगेख़्ता कर देती है और इनको थकन याद ही नहीं होती, फिर वह अल्लाह की इबादत में हर वक़्त लगे होते हैं।

राबिआ बसरिया रह० और ज़ौक़े इबादत

राबिआ बसरिया रह० अल्लाह की एक नेक बंदी थीं, उनके बारे

में आता है कि एक शख़्स फ़ज्र की नमाज़ और इशराक़ पढ़ के उनको मिलने के लिये आए, देखा कि वह चाश्त की नमाज़ पढ़ रही हैं, कहने लगा कि अच्छा फ़ारिग़ हो जाएंगी तब मिल लूंगा, फिर उन्होंने ज़ुहर की नमाज़ शुरू कर दी, तो कहा फ़ारिग़ होंगी तब तो मिल लूंगा, फिर उन्होंने अस्र की नमाज़ शुरू कर दी, फिर अस्र के बाद औराद व वज़ाइफ़ शुरू कर दिये, फिर मग़रिब शुरू कर दी, इसके बाद फिर इशा शुरू कर दी, सोचा कि इशा के बाद बात कर लूंगा, फिर उन्होंने नफ़िलों की नियत बांध ली हत्ता कि फ़ज्र हो गई, फिर इशराक़ पढ़ी, इशराक़ पढ़ कर बैठे बैठे उनको नींद आ गई, ऊंघ आ गई, थोड़ी देर के लिये आंखें बंद हुईं, घबरा के उठीं और कहने लगीं: "اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَيْنٍ لَا تَشْبَعُ مِنَ النَّوْمِ" अल्लाह! मैं ऐसी आंखों से तेरी पनाह मांगती हूं जो नींद से भरती ही नहीं हैं, सोचिये! बैठे बैठे ऊंघ आ गई इस पर अल्लाह से पनाह मांगती हैं, यह अल्लाह वालों का हाल होता है, क्योंकि उनके दिल में मुहब्बत होती है, वह मुहब्बत उनको पीछे नहीं रहने देती। जिस तरह एक आदमी का निकाह हो, शादी हो, तो वह रात का मुंतज़िर होता है कि मैं कब अपने घर वाली से मुलाक़ात करूंगा, जिस तरह दुल्हा दुल्हन से मुलाक़ात के लिये रात के अंधेरे का मुंतज़िर रहता है, अल्लाह वाले अपने अल्लाह की इबादत के लिये रात के अंधेरे के मुंतज़िर हुआ करते हैं, इस मुहब्बत को अपने अंदर पैदा करने की ज़रूरत है।

मुहब्बते इलाही और मुहब्बते नफ़सानी में फ़र्क़

जो मख़्लूक़ की नफ़सानी मुहब्बतें हैं, उनसे इंसान के दिल में ज़ुल्मत आती है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत से इंसान के दिल में नूर आता है, मख़्लूक़ की मुहब्बत से चेहरों पे वीरानी आती है,

अल्लाह की मुहब्बत से चेहरों पे ताज़गी आती है, मख़्लूक़ की मुहब्बत से दिलों में बेचैनी आती है, अल्लाह की मुहब्बत से दिलों में सुकून आता है, मख़्लूक़ की मुहब्बतों का बिलआख़िर अंजाम बुरा, और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत का हमेशा अंजाम अच्छा, मख़्लूक़ की मुहब्बत में बिलआख़िर बदनामी, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत में बिलआख़िर नेकनामी, फिर मख़्लूक़ की मुहब्बत में हासिद भी होते हैं कि एक ही बंदे से कई मुहब्बत करने वाले आपस में हासिद होते हैं और यहां मुआमला कुछ और है कि एक ही अल्लाह से जितने मुहब्बत करने वाले हों, उनके दिलों में आपस में भी मुहब्बत होती है

यूं तो होती है रक़ाबत लाज़िमन उश्शाक़ में
इश्क़ मौला है मगर इस तोहमते बद से बरी

अल्लाह के इश्क़ में यह तोहमत नहीं है कि दो आशिक़ों में हसद हो, यहां तो आपस में मुहब्बत होती है, इसलिये हमें चाहिये कि मरने वालों और ढलने वालों से मुहब्बत क्या करनी, मुहब्बत उस ज़ात से करें जो "حیّ قیوم" ज़ात है, इसलिये मौलाना रूम रह0 फ़रमाते हैं, जो नौजवान फंसे हुए होते हैं, Involve होते हैं, वह इस शेअर को याद कर लें:

इश्क़ बामुर्दा न बाशद पाइदार इश्क़ रा बाहय्यू व बा क़य्यूम दार

दुनिया में जब भी मुहब्बत करें तो उस ज़ात से करें जो हमेशा ज़िंदा रहने वाली ज़ात है, यह नफ़सानी मुहब्बतें बिल आख़िर ख़त्म हो जाएंगी, इसी लिये किसी आरिफ़ ने कहा:

मीर! मत मरना किसी गुलफ़ाम पर ख़ाक डालोगे उन्हें अजसाम पर

एक वक़्त आएगा कि उसके ऊपर ख़ाक डालोगे, लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत हासिल करें, जिस

शख़्स के दिल में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत नहीं, वह अल्लाह की नज़र में लकड़ी पत्थर से ज़्यादा कोई वक़अत नहीं रखता।

मुहब्बते इलाही, अल्लाह से कुर्ब का आसान रास्ता

इसी लिये शैख़ अबू अलमवाहिब शाज़ली रह0 फ़रमाते थे कि इश्क़ कुतुब है, Nucleus (मर्कज़, मह्वर) है इंसान की सारी नेकियां उसी के गिर्द घूमती हैं, जब मुहब्बत होती है तो इंसान अपनी मुहब्बत का इज़्हार करता है। आपने देखा होगा कि अगर किसी की मंगनी हो किसी जगह और उनके घर फलों की टोकरी भेजवानी हो तो Gift (हदया) पैक करते हैं, फलों की टोकरी पर भी कुछ चढ़ाया जा रहा है, क्यों? इस लिये कि हमें उधर ज़रा कुछ Gift (हदया) भेजना है, जिस तरह दुनिया का इंसान अपने महबूब के लिये फलों की टोकरी को भी Gift (हदया) पैक करके भेज रहा होता है, अल्लाह वाले अपने नमाज़ों को भी मुहब्बत के गिफ़्ट पैक में अल्लाह के हुज़ूर भेज रहे होते हैं कि यह मेरे महबूब के पास मेरी तरफ़ से हदया और तोहफ़ा जा रहा होता है। आज किसी का अहम फ़ोन आ जाए कि अहम बात करनी है, फ़लां वक़्त पे आप को फ़ोन करेंगे, तो बार बार घड़ी देख रहे होते हैं, भाई! घड़ी क्यों देख रहे हैं? कि घर से एक अहम फ़ोन आना है, जिस तरह फ़ोन पे बात करने के लिये इंतिज़ार रहता है, अल्लाह वालों को नमाज़ के वक़्त अपने परवरदिगार से हमकलामी के लिये इसी तरह नमाज़ का इंतिज़ार रहता है, वह ज़ुहर पढ़ते हैं तो फिर अस्र का इंतिज़ार रहता है, वक़्त देखते हैं कि कब अस्र का वक़्त आएगा, अस्र पढ़ते हैं तो मग़रिब का इंतिज़ार, मग़रिब पढ़ते हैं तो इशा का, इशा पढ़ते हैं तो फ़ज्र का, और फिर 5 नमाज़ों से उनका दिल नहीं भरता, दिल चाहता है कि

महबूब से फिर कुछ हमकलामी हो, जैसे बहाने बहाने से सेल फ़ोन फ़ौरन मिला देते हैं कि मैंने इसलिये फ़ोन किया था, फिर कोई बहाना मिला तो मैंने उस लिये फ़ोन किया, असल में तो आवाज़ सुननी होती है, इसलिये फ़ोन किया होता है। बिल्कुल उसी तरह अल्लाह वालों का भी हाल होता है कि 5 नमाज़ों से दिल का जज़्बा ठंडा नहीं होता, वह नफ़िलों को अल्लाह तआला से हमकलामी का बहाना बना लेते हैं, वज़ू किया तो चाहा कि मैं तहय्यतुल वज़ूअ पढ़ लूं, मस्जिद में क़दम रखा तो सोचा कि मैं तहय्यतुलज मस्जिद पढ़ लूं, फिर मैं इशराक़ पढ़ता हूं, फिर चाश्त पढ़ता हूं, फिर अव्वाबीन पढ़ता हूं, मैं सलातुत्तस्बीह पढ़ लेता हूं, वह अल्लाह तआला से हमकलामी के लिये बहाने ढूंढते हैं, इस नमाज़ पढ़ने से उसको लुत्फ़ और मज़ा आता है, लेकिन एक नाबालिग़ बच्चा जिस तरह बलूग़ की लज़्ज़तों से वाक़िफ़ नहीं, वह हैरान होगा अगर उसको कोई कहे कि मुझे घर जाने का बहुत इंतिज़ार रहता है, बिल्कुल उसी तरह हम रूहानी तौर पर नाबालिग़ हैं, हमें उन बलूग़ की लज़्ज़तों का पता नहीं चलता कि यह कैसे होता है।

40 साल इशा के वज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ना

चुनांचे अगर किसी को कहें कि इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह० ने 40 साल इशा के वज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी, यह उनका मामूल था, तो हैरान होते हैं कि 40 साल? जी हां! बिल्कुल 40 साल इशा के वज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने का मामूल था, अब अगर एक बंदा इल्म हासिल करे और उसके बाद मदरसा में सारी ज़िंदगी पढ़ाता रहे, उनके बारे में कहते हैं कि उन्होंने सारी ज़िंदगी हदीस पढ़ाने में गुज़ार दी, इसका क्या मतलब कि दर्मियान में कभी छुट्टी भी नहीं हुई?

नहीं! उर्फ़ में ऐसे ही कहते, इसी तरह उनका मामूल था कि इशा की नमाज़ के वज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी, यह मामूल 40 साल रहा, लोग हैरान होते हैं, हमें इस पर कोई हैरानी नहीं होती।

90 साल की उम्र में इशा के वज़ू से इशराक़ की नमाज़ पढ़ना

एक मर्तबा हज़रत मुर्शिद आलम ख़्वाजा गुलाम हबीब रह० के साथ हमें एक जगह जाने का मौक़ा मिला, मरी Tourist place (सियाहती मक़ाम) है एक बहुत ठंडा पहाड़ी इलाक़ा है, रमज़ानुल मुबारक में वहां पर एक रात ऐसी होती है कि मुख़्तलिफ़ क़ुर्रा को पूरे मुल्क से बुलाते हैं, और वह आके दो रक्अत तरावीह पढ़ाते हैं, वह चुने हुए क़ुर्रा होते हैं। उस जगह की एक अजीब ख़ूबी है कि उस वक़्त तक़रीबन 42 साल उस जगह पर तरावीह पढ़ाते गुज़र गए, आज तक उस मुसल्ले पर किसी को तशाबुह नहीं लगा, वह खड़े ही ऐसे को करते हैं जिस को पूरा क़ुर्आन ऐसे याद होता है जैसे आम लोगों को सूरए फ़ातिहा याद होती है, जो पढ़ते हैं रवानी से पढ़ रहे होते हैं, वहां हमें एक मर्तबा अल्लाह ने मौक़ा दे दिया, अब सुनियेगा! हमारे हज़रत की उम्र तक़रीबन 90 साल थी, 90 साल बुढ़ापे की उम्र और फिर शूगर की बीमारी भी थी, इसलिये और भी ज़्यादा मसला था, हज़रत ने रोज़ा इफ़तार किया और इसके बाद हज़रत ने ताज़ा वज़ू फ़रमाया और ताज़ा वज़ू फ़रमाने के बाद हज़रत ने कहा कि मुझे मस्जिद ले चलो ताकि मैं अगली सफ़ में पहुंच जाऊं, बाद में भीड़ हो जाएगी, चुनांचे अगली सफ़ में तशरीफ़ ले आए, इशा की नमाज़ हुई, फिर तरावीह शुरू हुई, तरावीह बहुत लम्बी चली, हत्ता कि जब वित्र ख़त्म हुई तो सहरी के वक़्त के ख़त्म होने में एक घंटा बाक़ी था, तो मस्जिद वालों ने एलान कर दिया कि सब लोगों की सहरी का इंतिज़ाम है, फ़ौरन दस्तरख़्वान पे पहुंचे और

फ़ौरन सहरी खाएं, चुनांचे इतना वसीअ़ इंतिज़ाम था कि सब लोगों ने आधे पौने घंटे के अंदर सहरी मुकम्मल कर ली, अब आप को पता ही है कि इशा का वज़ू किया हुआ है और इधर सहरी का वक़्त भी था तो यह आजिज़ हज़रत के क़रीब आया और पूछा कि हज़रत! आप वज़ू के लिये तशरीफ़ ले जाएंगे? फ़रमाया कि नहीं, इधर ही सहरी खाऊंगा, हज़रत ने सहरी खा ली, सहरी खाने के बाद तो अच्छे भले नौजवानों को भी Wash room (तहारत ख़ाना) की ज़रूरत पड़ती है, मैंने फिर क़रीब आकर पूछा कि हज़रत! अब आप ने सहरी कर ली, वज़ू के लिये तशरीफ़ ले जाएंगे? तो मेरी तरफ़ देख कर फ़रमाने लगे कि मेरा वज़ू कोई कच्चा धागा है? यह अलफ़ाज़ फ़रमाए, सोचें ज़रा कि मग़रिब के वक़्त का वज़ू किया हुआ है, रात गुज़र गई और फिर सुब्ह सहरी भी कर ली, और सहरी के बाद यह फ़रमाया, फिर मैंने दिल में सोचा कि अब हज़रत फ़ज्र पढ़ के जाएंगे तो हज़रत ने फ़ज्र का सलाम फेरा तो क़ुर्रा हज़रात को लेकर बैठ गए और फिर क़ुर्रा हज़रात को फ़रमाने लगे कि सारी रात तुमने मुझे क़ुर्आन सुनाया, अब मैं तुम को क़ुर्आन सुनाऊंगा, हमारे हज़रत तो क़ुर्आन के आशिक़ थे और उनका दर्स क़ुर्आन महबूब तरीन दर्स था, वह जब क़ुर्आन का दर्स देते थे तो यक़ीन जानिये कि चिड़िया को भी पर मारने की इजाज़त नहीं होती थी, ऐसे लोगों के ऊपर नूर होता था, तासीर होती थी, जब हज़रत दर्स देने बैठ गए तो हमने सोचा कि जैसे मस्जिदों में दस मिनट की लोग तालीम करते हैं कि रमज़ान में लोग थके हुए हैं, जल्दी फ़ारिग़ कर दो तो आज हज़रत भी दस मिनट का दर्स देंगे, लेकिन नहीं, क़ुर्आन मजीद का Full (मुकम्मल) दर्स दिया, हत्ता कि इशराक़ का वक़्त हो गया, इसके बाद हज़रत ने सबको कहा कि अच्छा भाई! इशराक़ पढ़ लीजिये, इशराक़

पढ़ने के बाद हमारे हज़रत वापस आए और उन्होंने आकर उस वक़्त वज़ू किया, लोग इशा के वज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पे हैरान होते हैं, हमने अल्लाह वाले को 90 साल की उम्र में शूगर की बीमारी के साथ इशा के वज़ू से इशराक़ की नमाज़ पढ़ते देखा है।

मुहब्बते इलाही की कमी की वजह से इबादात मुश्किल

जिनके दिल में मुहब्बत हुई है वह एक Different (मुख़्तलिफ़) इंसान हो जाता है, उसको इबादात में ऐसा मज़ा मिलने लगता है जैसे मछली पानी के अंदर पुरसुकून हो जाती है, अल्लाह वाले मुसल्ले पे आके इस तरह पुरसुकून हो जाते हैं, "المومنُ فِی المَسْجِدِ كَالسَّمَكِ فِی المَاء" आज़ इस मुहब्बते इलाही के दिलों में कम होने की वजह से इबादत मुश्किल, तिलावत मुश्किल, मुराक़बा मुश्किल, तहज्जुद में उठना मुश्किल, यह सब मुश्किलात उस मुहब्बते इलाही की कमी की वजह से हैं।

देखिये एक पौदे के अंदर Dehydration (नमी ख़त्म होना, ख़ुश्क हो जाना) हो जाए तो उसके फल भी मुर्झा जाएंगे, पत्ते भी, वह ख़ुद भी, और एक पौदा बिल्कुल तरो ताज़ा है, क्योंकि उसको पानी सहीह मिल रहा है, आज मुहब्बते इलाही की Dehydration हुई है, नमाज़ को जी नहीं चाहता, सुब्ह उठना चाहते हैं, लेकिन फ़ज्र में आंख नहीं खुलती, चुनांचे वह अहबाब जो कहते हैं कि हज़रत! मेरी कमर में दर्द है, फ़ज्र की नमाज़ में मुझ से नहीं उठा जाता, जो लोग यह कहते हैं ठीक फ़ज्र के एक घंटे के बाद जब कारोबार के लिये उनके जाने का वक़्त होता है, उस वक़्त नहा के नाशता करके वह ऐसे भागे जा रहे होते हैं जैसे उनके अंदर किसी ने जापानी सैल फ़िट कर दिया, अब कमर का दर्द किधर गया? यह तो मुहब्बत की बात है, दिल कारोबार में अटका हुआ है, रोज़े के

लाखों कमाते हैं, भागे जा रहे हैं, अगर अल्लाह की मुहब्बत दिल में होती तो तहज्जुद के वक़्त जागने से कोई रोक नहीं सकता था।

तहज्जुद न पढ़ने वालों को लरज़ा देने वाली एक हदीस

इसलिये हदीसे पाक में आता है कि जब रात का आख़िरी वक़्त होता है तो तीन तरह के फ़रिशतों की जमाअत होती है, अल्लाह तआला उस जमाअत को फ़रमाते हैं कि जाओ फ़लां फ़लां हमारे नापसंदीदा बंदे हैं, मैं नहीं चाहता कि यह उस वक़्त मेरे सामने खड़े हों, उनको थपकी दे के सुलाओ, ताकि यह न जाग सकें, यह मेरे प्यारों के जागने का वक़्त है, चुनांचे फ़रिशते आते हैं, और थपकी देके सुला देते हैं कि इस मौक़ा पे उठने की आप को इजाज़त नहीं है, वह मालिकुल मुल्क तुम्हारी शक्ल नहीं देखना चाहते, इसलिये जब तहज्जुद क़ज़ा हो तो यह न सोचिये कि मैंने तहज्जुद नहीं पढ़ी, यूं सोचें कि शायद मेरी शक्ल देखना उसने पसंद नहीं किया, तभी तो खड़ा होने नहीं दिया।

फ़रिशतों की एक दूसरी जमाअत को फ़रमाते हैं कि जाओ फ़लां फ़लां मेरे बड़े मक़्बूल व महबूब बंदे हैं, उनको जगाओ, ताकि वह उठें, मेरे सामने सज्दे करें, हाथ उठाएं, मैं उनकी मुरादों को पूरा करूं, उनको फ़रिशते जगा देते हैं, थके हुए होते हैं, लेकिन तहज्जुद के वक़्त एकदम आंख खुल जाती है जैसे उनके अंदर कोई अलार्म फ़िट होता है, वह फ़रिशते जगा देते हैं तहज्जुद पढ़ने के लिये।

और फिर तीसरी जमाअत के बारे में हदीसे पाक में फ़रमाया कि बीमारियों वाले, बुढ़ापे वाले वह अल्लाह के मुक़र्रब बंदे होते हैं जिन्होंने ज़िंदगी दीन की दावत में और इबादत में गुज़ारी होती है, अल्लाह फ़रमाते हैं कि यह मेरा बंदा इबादत करते करते अब बुढ़ापे की इस उम्र को पहुंच गया, फ़रिशतो जाओ, जाकर उनकी करवट

बदल दो, यह चाहेंगे तो लेटे रहेंगे, चाहेंगे तो जाग जाएंगे, मैं उनके जागने पे भी राज़ी हूं, उनके सोने पे भी राज़ी हूं, तो जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत दिल में हो तो तहज्जुद में उठना कोई मुश्किल काम नहीं होता।

इश्क़े इलाही, मोमिन की पहचान

इसलिये शैख़ अबुल मवाहिब शाज़ली रह0 फ़रमाते हैं कि इश्क़े कुतुब है यअ़नी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत यह Nucleus (मर्कज़ी नुक़्ता) है, इसके गिर्द इबादतें घूमती हैं, जितनी यह मुहब्बत मज़बूत होगी, हर चीज़ अपनी अपनी जगह पे काम करती रहेगी, लिहाज़ा यह मुहब्बत न हो तो इंसान नमाज़ को हाकिम की बेगार समझ कर पढ़ता है और जब यह मुहब्बत हो तो इंसान नमाज़ को सबबे लिक़ाए यार समझ के पढ़ता है, आज इस मुहब्बत को पढ़ाने और पैदा करने की ज़रूरत है, इसलिये हज़रत मज्ज़ूब रह0 ने अजीब शेअ़र फ़रमाः

बंदगी से हमें तो मतलब है हम सवाब व अज़ाब क्या जानें
किस में कितना सवाब मिलता है इश्क़ वाले हिसाब क्या जानें

इश्क़ वाले तो मुहब्बत में नमाज़ पढ़ रहे होते हैं, क्योंकि यह मुहब्बत अजीब है।

अ़ल्लामा सुयूती रह0 ने अलइतक़ान में अजीब बात लिखी है, वह फ़रमाते हैं कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने आदम अलै0 को 20 मर्तबा Message (पैग़ाम) भेजा, जिब्राईल अलै0 के ज़रीआ वह्य भेजी, इदरीस अलै0 की तरफ़ जिब्राईल 4 मर्तबा नाज़िल हुए, नूह अलै0 की तरफ़ 50 मर्तबा आए, इब्राहीम अलै0 के पास 42 मर्तबा आए, मूसा अलै0 के पास 400 मर्तबा, ईसा अलै0 के पास 13 मर्तबा और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने पैग़म्बर को अपने हबीब

सल्ल0 के पास 24 हज़ार मर्तबा भेजा, यअ़नी 24 हज़ार Messages, और फिर नबी सल्ल0 की मुहब्बत का यह हाल था कि जिब्राईल के आने का इंतिज़ार रहता था और आसमान की तरफ़ देखते थे कि जिब्राईल मेरे आक़ा का पैग़ाम लेके कब आ रहे हैं, अल्लाह ने फ़रमायाः मेरे महबूब! आप मुहब्बत में ऊपर की तरफ़ देखते हैं, "قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِى السَّمَآءِ" आप आसमान की तरफ़ देखते हैं, हम मुहब्बत से आपके प्यारे चेहरे की तरफ़ देख रहे होते हैं, यह मुहब्बत का तअल्लुक़ ही अजीब होता है, 24 हज़ार मर्तबा पैग़ाम आया फिर भी दिल नहीं भरा, तो इंसान जितनी इबादतें करता है, उसको कुछ नज़र नहीं आतीं, वह चाहता है कि काश मैं और ज़्यादा इबादत करता। इसलिये क़ुर्आन मजीद में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं "وَالَّذِيْنَ آمَنُوْا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ" कि ईमान वालों को अल्लाह तआला से शदीद मुहब्बत होती है, अब यहां हुक्म नहीं दिया गया, अम्र का सेग़ा कहीं नज़र नहीं आता कि अल्लाह तआला ने हुक्म दिया हो कि ईमान वालो! मुझसे मुहब्बत करो, नहीं, यह तो ख़बर है, ख़बर दी गई कि ईमान वालों को अल्लाह से मुहब्बत होती है। मुफ़स्सिरीन ने लिखा कि इसमें मसला क्या है? तो उन्होंने नुक्ता यह लिखा कि देखो! जो हसीन होते हैं वह किसी से कहते नहीं हैं कि हम से मुहब्बत करो, वह इतना कहते हैं कि किसी को पता होना चाहिये कि हम कितने हसीन हैं, वह हम से मुहब्बत किये बग़ैर रह ही नहीं सकता, यही बात अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने फ़रमाईः "وَالَّذِيْنَ آمَنُوْا" वह लोग जो ईमान ले आए, जिन को हमारे हुस्न व जमाल का पता चल गया "اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ" हम से मुहब्बत किये बग़ैर रह ही नहीं सकता।

इश्क़े इलाही की हरारत

दुनिया की आग जहन्नम की आग से 70 मर्तबा डरती है और

जहन्नम की आग इश्क़ की आग से डरती है, हज़रत अक़्दस थानवी रह0 ने लिखा कि जब मोमिन पुल सिरात पे गुज़रने लगेगा तो नीचे जो जहन्नम के शोला होंगे वह ठंडे हो जाएं, तो कहेंगे "أسرع يا مؤمن" मोमिन! जल्दी चल, चल तेरे, दिल की मुहब्बत की आग ने मेरे जहन्नम की आग को बुझा डाला, यह इश्क़े इलाही की आग ऐसी होती है, मुहब्बते इलाही का नूर ऐसा होता है कि जहन्नम की आग को भी बुझा देता है।

मुहब्बते इलाही को हासिल करने का तरीक़ा

अब ज़ह्न में एक बात आती है कि इंसान उस आग को, और उस मुहब्बते इलाही नेअ़मत को कैसे हासिल करे? तो भाई! हर चीज़ की दूकानें होती हैं, कपड़े की दूकान से कपड़ा मिलता है, जूते की दूकान से जूते मिलते हैं, लोहे की दूकान से लोहा मिलता है, इत्र की दूकान से इत्र मिलता है। एक मर्तबा हज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रह0 ने पूछाः मौलाना! कभी कोई इश्क़ की दूकान देखी है? तो मौलाना थोड़ी देर सोचते रहे और कहने लगे हज़रत मैंने दो इश्क़ की दूकानें देखी हैं, पूछा कौनसी? कहने लगे एक तो शाह गुलाम अली देहलवी रह0 की और दूसरी शाह आफ़ाक़ रह0 की, यह दोनों अपने ज़माने में हमारे सिलसिला के अल्लाह के बड़े औलिया व उश्शाक़ में से थे, उनकी जगह का नाम लिया कि हज़रत वह इश्क़ की दूकानें थीं, उनको मैंने देखा है। जहां कोई साहिबे निस्बत बुज़ुर्ग होता है, वह जगह इश्क़ की दूकान बन जाती है, लोग आते हैं इश्क़ की तलाश में और अपनी अपनी पुड़यां ले ले के जा रहे होते हैं, किसी को छोटी पुड़या, किसी को बड़ी, अपनी तलब के मुताबिक़ हर एक को मिलती है, जैसे मक़्नातीस के क़रीब लोहा आ जाए तो उसमें मक़्नातीसियत आ जाती है, अल्लाह वालों का भी यही हाल है

कि उनकी सोहबत में आके जो इंसान थोड़ा वक़्त भी गुज़ार लेता है, अल्लाह उसके दिल में मुहब्बते इलाही की मक़्नातीसियत डाल दी जाती है, वह बंदा तड़प जाता है, जिस पर पांच फ़र्ज़ नमाज़ें पढ़नी मुश्किल होती हैं वह चंद दिनों के अंदर तहज्जुद का पाबंद बन जाया करता है, व मुत्तबए सुन्नत नज़र आने लगता है, उसके अंदर असल में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत की मक़्नातीसियत आ जाती है।

इसी लिये किताबों में लिखा है कि हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० के यहां धोबी आते थे और बैअ़त होते थे और उस ज़माने में धोने के लिये कपड़े को पटख़ा लगाते थे, वह जब बैअ़त होके जाते थे तो पटख़ा लगाते हुए "اِلَّا اللّٰہ" की ज़र्बें लगाते थे, उन धोबियों के क़ुर्ब से कोई गुज़रता तो "اِلَّا اللّٰہ" की ज़र्बों की आवाज़ आ रही होती थी।

हमारे यहां मुल्तान एक शहर है, उसमें एक नौजवान बैअ़त हुआ, वह Black belt[1] था, बाद में पता चला कि उसने Training centre (तरबियती मर्कज़ इस फ़न का) बनाया हुआ था, वह वापस गया और अपने शार्गिदों से कहा कि भाई! हम जो यह कराटे खेलते हैं और इसमें एक ख़ास क़िस्म की आवाज़ निकालते हैं, वह बेफ़ाइदा आवाज़ है, लिहाज़ा हम उसको निकालने के बजाए अल्लाह की आवाज़ निकालेंगे, अल्लाह की शान कहने लगा कि बाहर से दरवाज़े पे इतना मज्मा हो गया कि हम भी महफ़िले ज़िक्र में आना चाहते हैं, दिल बदल जाता है तो यूं इंसान की ज़िंदगी बदल जाती है।

हम ने अपनी ज़िंदगी में इश्क़ की दो दूकानें देखी हैं, एक दूकान देखी हज़रत ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह० की, अगर्चे वह वफ़ात पा चुके थे, मगर उनके हालात हमने अपने हज़रत से सुने, दीहाती

1- जिस्मानी लड़ाई के एक फ़न "जूडो कराटे" के आला दर्जा का हामिल

इलाक़ा था, वहां खाने के लिये कुछ भी नहीं होता था, दस्तरख़्वान बिछाने के लिये नहीं होता था जो लोग आते थे उनको हज़रत लाइन में बिठा देते थे और उनको कहते थे कि सुन्नत के मुताबिक़ बैठ जाओ और उनकी रान के ऊपर रोटी रख देते थे और गुड़ की डली दे देते थे, गुड़ के साथ ख़ुश्क रोटी यह वहां रोज़ का खाना होता था, सुब्ह शाम ख़ुश्क रोटी गुड़ के साथ, यही कुछ दे सकते थे और कई दिन गुड़ भी नहीं होता था। वहां रहने वाले लोग क़ज़ाए हाजत के लिये वीराने में जाते हैं, आपने एक झाड़ी तो देखी होगी जो कांटेदार झाड़ी होती है, उसके ऊपर एक वक़्त में बहुत फूल लगते हैं, फूलों से भर जाती है, कुछ नौजवान वह फूल चुन के ले आते और ला के लंगर में दे देते तो लंगर वाला उन फूलों को पानी में उबाल देता था, नमक होता तो डाल देता, घी होता तो डाल देता, कुछ न होता तो कुछ भी न डालता, जिस दिन वह फूल उबलते थे और सालन बनता था तो ख़ानक़ाह के जो लोग थे उनके चेहरों पे ख़ुशी होती थी और वह एक दूसरे को बता रहे होते थे कि आज खाने में भत्ता बना है, यअ़नी आज रोटी के साथ गुड़ नहीं, बल्कि रोटी के साथ सालन मिलेगा, यह हालत होती, यह खाने को मिलता, और यह लोग वहां अल्लाह आल्लाह करते थे। कैफ़ियत यह थी कि रात के वक़्त मस्जिद में यह लोग लेट जाते, हज़रत फ़रमाते थे कि थोड़ी ही देर गुज़रती और किसी एक के ऊपर जज़्बा तारी होता और वह ज़ोर से अल्लाह अल्लाह कहता, सबकी आंख खुल जाती, फिर थोड़ी देर के बाद आंख लगती, फिर वही हाल, फ़रमाते थे कि वहां हमारी सारी रात इसी तरह सोते जागते गुज़र जाती थी, मगर जिसको देखते थे उस पर ज़िक्र की अजीब कैफ़ियत होती थी।

एक मर्तबा मस्जिद में दो बूढ़े बैठे थे और एक बूढ़ा दूसरे को

पकड़ के यूं झंझोड़ता है और दूसरा बूढ़ा उसको पकड़ के झंझोड़ता है, अब देखने वाले बड़े हैरान कि दोनों नेक हैं, तहज्जुद गुज़ार, मुत्तक़ी, सालेह,क हर एतिबार से उम्र दीन पे गुज़र गई, यह मस्जिद में बैठे क्यों ऐसा कर रहे हैं? वह बंदा ज़रा क़रीब हुआ, जब क़रीब हुआ तो मंज़र अजीब था, हुआ यह कि उनमें से एक बैठा था, उसने दूसरे को कह दिया कि अल्लाह मेरा है, तो जब उसने कहा कि अल्लाह मेरा है तो दूसरा भी तो मुहब्बत वाला था, वह उसको झंझोड़ता है कहता है कि अल्लाह मेरा है, वह उसको झंझोड़ता है कि अल्लाह मेरा है, यह इसको झंझोड़ता है कि नहीं, अल्लाह मेरा है, सुब्हानल्लाह! दिलों में क्या मुहब्बत होगी कि जो इस बात पे एक दूसरे को झंझोड़ते हैं कि अल्लाह मेरा है।

यह इश्क़ की दूकाने होती हैं जहां से मुहब्बते इलाही की पुड़या मिलती है और फिर इंसान की ज़िंदगी की तरतीब बदल जाती है, फिर इंसान का उठना बैठना सोना जागना सबका सब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के लिये हो जाता है, यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत अजीब नेअ्मत है। चुनांचे हज़रत गंगोही रह0 ने यह बात लिखी है कि जिस बंद की ज़बान से पूरी ज़िंदगी में एक मर्तबा मुहब्बत के साथ अल्लाह का लफ़्ज़ निकला, फ़रमाते हैं कि कभी न कभी उस अमल की वजह से अल्लाह उसको जहन्नम से ज़रूर बरी फ़रमा देंगे, और यह बात तो सच्ची है कि जो बंदा दुनिया में अल्लाह से मुहब्बत करने की कोशिश में लगा रहेगा, क्या अल्लाह की रहमत से यह उम्मीद जा सकती है कि वह क़्यामत के दिन उसको दुशमनों की क़तार में खड़ा फ़रमा देंगे, और यह बात तो सच्ची है कि जो बंदा दुनिया में अल्लाह से मुहब्बत करने की कोशिश में लगा रहेगा, क्या अल्लाह की रहमत से यह उम्मीद जा सकती है कि वह क़्यामत के

दिन उसको दुश्मनों की क़तार में खड़ा फ़रमा दे? यह कैसे हो सकता है? इसलिये ज़िंदगी में यह कोशिश कीजिये कि हम अल्लाह की मुहब्बत को दिल में भरें और पूरी ज़िंदगी अल्लाह के दीन के लिये गुज़ारें, उसी में हमारी पूरी ज़िंदगी गुज़र जाए, यही हमारी ज़िंदगी का मक़्सूद और मंशा बन जाए, आप सब हज़रात यहां उसी मुहब्बत को लेने के लिये आए हैं, अल्लाह तआला चाहते हैं कि मेरे बंदे मुझ से मुहब्बत करें, उसको पसंद फ़रमाते हैं, और याद रखें! आज कारोबार के लिये, घरबार के लिये, रिशतादारों के लिये, दुनिया के कामों के लिये सफ़र करने वाले बहुत हैं, फ़ैक्ट्रियों में सारी सारी रात लोग जागते हैं, हां मुहब्बते इलाही के लिये कोई सफ़र करे, मुहब्बते इलाही के लिये कोई रात को जागे तो यह नेअ़मत आज के दौर में बहुत थोड़ी है और जो अपने घर से इसलिये निकला होगा कि अल्लाह मैं तुझे पाने के लिये और तेरा बनने के लिये अपने घर से निकल रहा हूं तो उसका एक एक क़दम अल्लाह के यहां क़बूल होगा, कि यह बंदा मेरी मुहब्बत पाने के लिये अपने घर से निकला है

शाद बादाए इश्क़ ख़ुश सौदाए मा ऐ दवाए जुम्ला अलतहाए मा
ऐ दवाए नुख़ूवत व नामूसे मा ऐ कि अफ़लातून व जालिनूसे मा

इश्क़े इलाही की बरकात

इश्क़े इलाही की आग दिल में आती है तो तमाम बातिनी बीमारियों को दिल से निकाल देती है, शह्वत, गुस्सा, कीना, हसद, अजब, यह जितनी बीमारियां हैं Automatically (ख़ुद ब ख़ुद) सब का इलाज हो जाता है, दिल मुहब्बते इलाही से जब भर जाता है तो इंसान सही मअनों में इंसान बन जाता है, फिर इंसान बना संवार के एक एक काम कर रहा होता है।

सय्यदा आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 कुछ दिरहम धो रही थीं, नबी

सल्ल0 ने पूछाः जुमैरा! यह क्या कर रही हो? कहाः ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! मुझ को यह अल्लाह के रास्ते में सद्क़ा देना है, इसलिये मैं इनको धो रही हूं, साफ़ कर रही हूं, पूछाः जुमैरा! क्यों? कहाः ऐ अल्लाह के हबीबी सल्ल0 मैंने आपकी ज़बान से सुना है कि जब देने वाला अल्लाह के रास्ते में माल देता है तो वह माल साइल के हाथ में पहुंचने से पहले अल्लाह के हाथ में पहुंचता है, जब से मैंने ह सुना, मैं अपने पैसों को धोक सद्क़ा देती हूं, ताकि मेरे मालिक के हाथों में साफ़ सुथरा माल पहुंचे, तो बना संवार के इंसान आमाल को करता है, ताकि मालिक को पसंद आ जाए।

हज़रत इब्राहीम अलै0 का अल्लाह से इश्क़

सय्यदुना इब्राहीम अलै0 बकरियों का रेवड़ लेकर जा रहे हैं, क़रीब से एक शख़्स गुज़रा और उसने गुज़रते हुए यह अलफ़ाज़ कहेः "سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ سُبْحَانَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْجَبَرُوْتِ" जब उसने अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तारीफ़ इतने प्यारे लफ़्ज़ों में की तो इब्राहीम अलै0 का दिल तो तड़प उठा, खड़े हो गए, कहाः ऐ भाईः जो कहा एक मर्तबा फिर कह दे, उसने पूछा कि इसके बदले क्या देंगे? फ़रमाया यह मेरा जितना रेवड़ है आधा आपको दे दूंगा, उसने फिर वही अलफ़ाज़ कह दिये, जब फिर अल्लाह की तारीफ़ इन अलफ़ाज़ में सुनी तो फिर दिल तड़प उठा, फिर कहाः ऐ भाई! एक मर्तबा और कह दे, पूछा अब क्या देंगे? कहाः भाई! बाक़ी बकरियां भी आप की, उसने फिर एक मर्तबा कहा, अब जब सुना तो क़ंदे मुकर्रर का मज़ा आया दिल ने कहा -

होती रहे सना तेरे हुस्न व जमाल की

ऐ अल्लाह! यह तेरी तारीफ़ें करता हे, और तेरा इब्राहीम सुनता रहे, फिर कहाः ऐ भाई! ज़रा एक मर्तबा और कह देना, उसने कहाः

जनाब! अब तो आपके पास बकरियां भी नहीं, अब क्या देंगे? फ़रमाने लगेः तुझे बकरियां चराने के लिये किसी की ज़रूरत होगी, मैं तेरी बकरियां चरा दिया करूंगा, यह अलफ़ाज़ मुझे और सुना दो, उसने कहा इब्राहीम ख़लीलुल्लाह! तुझे मुबारक हो, मैं तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का फ़रिशता हूं, मेरे मालिक ने भेजा कि जाओ इब्राहीम के सामने मेरा नाम लो और देखो कि मेरे नाम के क्या दाम लगाता है, जिनके दिल में मुहब्बत होती है, वह अल्लाह के नाम पे ऐसे कुर्बान हो जाया करते हैं, माल व दौलत अल्लाह के नाम पे कुर्बान कर देते।

इश्क़े इलाही से सरशार एक मअ़ज़ूर का सबक़ आमोज़ वाक़िआ

मालिक इब्ने दीनार रह0 फ़रमाते हैं, मैं अपने घर से बाहर निकला, गर्मी का मौसम था, इतनी सख़्त गर्मी थी कि लोग भी घरों में, जानवर भी दरख़्तों के साए के नीचे, परिंदे भी अपने घौंसलों में, बाहर सूरज आग बरसा रहा था, मुझे ज़रूरी काम था तो मुझे निकलना पड़ा, मैं जब गली में निकला तो देखा कि एक अपाहिज बंदा है, टांगों से मअ़ज़ूर है और वह ज़मीन के ऊपर अपने हाथों से घिसटता घिसटता आ रहा था, कहने लगे कि जब मैं क़रीब आया तो देखा कि पूरा पसीना में नहाया हुआ है और उसकी जिल्द धूप की तपिश की वजह से लाल हो चुकी थी, जैसे सूरज ने उसकी जिल्द जला दी हो, और वह आगे आगे बढ़ रहा है, मैंने सलाम किया, और पूछा कि नौजवान! इस गर्मी में तू कहां जा रहा है? उसने कहा कि मैंने हज का इरादा किया है, अल्लाह के घर की तरफ़ जा रहा हूं, इसलिये सफ़र में हूं, मैंने कहा कि थोड़ी देर मेरे यहां आराम कर लो, उसने कहा कि जनाब! मुझे तो सफ़र करने में वक़्त लगता है, आप तो पांव से आराम से चलते हो, मैं तो इंच इंच के हिसाब से चल

रहा हूं, मुझे डर है कि ऐसा न हो कि मैं रास्ता में रह जाऊं और अय्यामे हज आ जाएं और मेरा हज निकल जाए तो मैं रुकूंगा नहीं फ़रमाते हैं कि मैं उसे एक Suggestion (राए) दी, मैंने कहा कि मेरे घर में आराम कर लो, मैं सवारी का बंदोबस्त कर देता हूं, तुम शाम को सवार होके अपना सफ़र सुहूलत से तय कर लो, कहने लगे कि जब मैंने यह अलफ़ाज़ कहे तो उस नौजवान ने मेरी तरफ़ देखा, और कहने लगाः मालिक बिन दीनार! मैं तो तुम्हें बहुत अक़्लमंद समझता था, तुमने कैसी बात की? कहते हैं कि मैं हैरान हुआ कि क्या ग़लती मुझ से हो गई, कहने लगाः मालिक बिन दीनार! ज़रा सोचो अगर कोई गुलाम अपने नाराज़ मालिक को मनाने के लिये जाए तो बताओ उसे पैदल या धिसट कर जाना अच्छा लगता है या सवारी पे सवार होके शान से जाना अच्छा लगता है? कहने लगे कि मैं हैरान हो गया कि यह नौजवान कितनी आजिज़ी के साथ अपने मालिक को मनाने के लिये जा रहा है, कहने लगे कि उसने मेरी कुछ परवाह न की और वह चलता गया, अल्लाह की शान कि उसी साल अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मुझे भी हज की तौफ़ीक़ दे दी, वह फ़रमाते हैं कि मिना के मैदान में जब हमने कंकरियां मार लीं, इसके बाद जब मैं ज़रा पीछे हटा तो एक मज्मा देखा, पूछाः क्या हुआ? लोगों ने कहाः एक नौजवान है और वह यहां बस अल्लाह से बातें कर रहा है और सब सुन रहे हैं, मैंने कहा कि अच्छा ज़रा मुझे भी मौक़ा दो कि शक्ल देखूं, फ़रमाते हैं कि जब मुझे मौक़ा मिला और मैं आगे बढ़ता तो मैंने देखा कि वही नौजवान अहराम बांधा हुआ है और अल्लाह से दुआ मांग रहा है और दुआ में यह कह रहा है कि अल्लाह! आप की दी हुई तौफ़ीक़ से मेरा सफ़र मुकम्मल हुआ, मैंने मैदाने अरफ़ात का वक़ूफ़ भी कर लिया, मुज़दल्फ़ा का वक़ूफ़ भी कर लिया, और मैंने

शैतान को कंकरियां मार के अपनी नफ़रत का इज़हार भी कर लिया, ऐ अल्लाह! अब क़ुर्बानी का वक़्त है, सब लोग जाएंगे और अपनी अपनी तरफ़ से क़ुर्बानी का जानवर ज़ब्ह करेंगे, मेरे मौला! तू मुझे जानता है मैं तो फ़क़ीर हूं, एहराम के सिवा मेरे पास कुछ भी नहीं, ऐ अल्लाह! मैं अपनी जान का नज़राना पेश करना चाहता हूं, इसलिये मेरी जान क़बूल फ़रमा लीजिये, उसने यह अलफ़ाज़ कहकर कलिमा पढ़ा और अपनी जान अपने अल्लाह के सिपुर्द कर दी। जब अल्लाह की मुहब्बत होती है तो इंसान अल्लाह के नाम पे अपनी जान देना भी अपने लिये सआदत समझता है, फिर रातों की इबादतें, सच बोलना, अमानत का ख़्याल रखना, अच्छे अख़्लाक़ का ख़्याल रखना, यह सब छोटी चीज़ें बन जाती हैं, अल्लाह हम सब के दिलों को अपनी मुहब्बत से भर दे, किसी ने क्या अजीब बात कही:

وَاللّٰهِ مَا طَلَعَتْ شَمْسٌ وَّلَاغَرَبَتْ ۔ اِلَّاوَاَنْتَ فِیْ قَلْبِیْ وَوَسْوَاسِیْ

अल्लाह की क़सम! कभी सूरज तुलूअ़ नहीं हुआ और कभी ग़ुरूब नहीं हुआ, मगर ऐ महबूब! मेरे दिल में और मेरे ध्यान में तेरी ही तो याद रहती है।

وَلَا جَلَسْتُ عَلٰی قَوْمٍ اُحَدِّثُهُمْ ۔ اِلَّا وَاَنْتَ حَدِيْثِیْ بَيْنَ جُلَّاسِیْ

और अल्लाह की क़सम! मैं कभी अपने दोस्तों की महफ़िल में नहीं बैठा मगर ऐ महबूब! उन दोस्तों की महफ़िल में मेरी ज़बान पर गुफ़्तगू तो तेरी ही हुआ करती है।

وَلَا هَمَمْتُ بِشُرْبِ الْمَاءِ مِنْ عَطَشٍ ۔ اِلَّا رَأَيْتُ خَيَالًا مِنْکَ فِی الْکَاْسِ

और ऐ महबूब! मैंने कभी प्यास की शिद्दत के आलम में पानी का प्याला नहीं पिया, मगर उस पानी में तेरी तसवीर ही तो ढूंढ रहा होता हूं।

وَلَاذَكَرْتُكَ مَحْزُوْنًا وَّلَاكَرْبًا   اِلَّا وَحُبُّكَ مَقْرُوْنٌ بِاَنْفَاسِيْ

ऐ मेरे महबूब! मैंने कभी ख़ुशी में या ग़मी में तुझे याद नहीं किया, मगर मेरे सांस तेरी मुहब्बत में लिपटे हुए होते हैं, ऐसी अल्लाह की मुहब्बत आ जाए कि हम अल्लाह को याद करें और अल्लाह का नाम अल्लाह की मुहब्बत में लिपटा हुआ हमारी ज़बान से निकल रहा हो, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें अपनी ऐसी सच्ची मुहब्बत अता फ़रमाए, यह वह नेअ़मत है जिसको मांगने के लिये नबी अलैहिस्सलाम ने उम्मत को यह दुआ सिखाई कि हम दुआ मांगें: "اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُّحِبُّكَ وَحُبَّ عَمَلٍ يُّبَلِّغُنَا اِلٰى حُبِّكَ" एक और हदीसे पाक में नबी सल्ल0 ने फ़रमाया: "اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ اَحَبَّ اِلَىَّ مِنَ الْبَارِدِ" हम अल्लाह तआला से अल्लाह की मुहब्बत को मांगते हैं, किसी ने कहा:

तेरे इश्क़ की इंतिहा चाहता हूं | मेरी सादगी देख क्या चाहता हूं
कोई दम का मेहमां हूं ऐ अह्ले महफ़िल | चिराग़े सह्र हूं बुझा चाहता हूं

وآخِرُ دَعْوَانَا أَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

☆☆☆

अगले सफ्हा पर आप जो ख़ुत्बात मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, यह ख़िताब 5/अप्रेल 2011 ई0 बरोज़ सह शंबा, बअ़द नमाज़े मग़रिब, मम्दापूर, नीरल (महाराष्ट्र) मीर वाक़ेअ "ख़ानक़ाहे नक़्शबंदिया मुजद्दिदिया नोमानिया" में हुआ था, शुरका की तादाद का अंदाज़ा ढाई लाख से पौने तीन लाख तक बताई जाती है।

सिफ़ाते हमीदा से खुद को मुज़य्यन करें

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد

اعوذ بالله من الشيطان الرجيم، بسم الله الرحمن الرحيم

تَبَارَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْکُ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

سبحان ربك رَبِّ العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العلمين

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

आज के दौर में क्वालिटी Quality की अहमियत

आज के Scientific (साइंसी) दौर में हर लिखा पढ़ा इंसान Quality concious (उम्दा से उम्दा तरक्की की तलाश में रहने वाला) बन गया है, हर चीज़ में उसे Quality (मेअ़यार) आला से आला चाहिये, लिबास हों, जूते हों, गाड़ी हो, घर की चीज़ें हों, कोई भी चीज़ हो जब वह लेने लगता है तो क्वालिटी को देखता है, बल्कि अच्छी क्वालिटी के पीछे वह अच्छी क़ीमत देने के लिये तैयार होता है, वह सोचता है कि जब मुझे Pay (ख़र्च) करना है तो क्यों न मैं Best quality (सबसे उम्दा) वाली चीज़ को हासिल करूं, इसका नतीजा यह निकला कि फ़ैक्ट्री वालों ने अपनी फ़ैक्ट्रियों में एक Department (शोबा) Quality Control Department (क्वालीटी की जांच का शोबा) बनाया, मालिक अपने मैनेजर को बताता है कि मुझे चीज़ की क्वालिटी में किसी भी क़ीमत पर कोई Compromise (समझौता,) नहीं करना है, मेरे Customers (ख़रीदार) टूट जाएंगे, अब सोचिये कि हम को चंद

टकों के ऐवज़ जो चीज़ ख़रीदनी है उसमें भी बेहतरीन क्वालिटी की तमन्ना रखते हैं, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त, जिनको अपनी रज़ा, अपनी लिक़ा, अपनी जन्नतें हमें हमारे अमलों के बदले देनी हैं, वह बंदे से अमल की बेहतरीन क्वालीटी मांगते हैं कि ऐ मेरे बंदे! तू बेहतरीन अमल करके दिखा, इसलिये फ़रमाया "خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ" हमने मौत और हयात को पैदा किया "لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا" यह देखने के लिये कि तुम में से कौन बेहतरीन अमल करता है, तो एक होती Quantity (मिक़्दार), एक होती है Quality (मेअ़यार), अल्लाह तआला को दोनों मतलूब हैं, कि तुम पांच नमाज़ें भी पढ़ो, मगर मेरी याद के साथ पढ़ो, इसलिये हदीसे मुबारक में आता है कि जिस नमाज़ में इंसान दुनिया की सोचों में गुम हो, वह नमाज़ फटे कपड़े की तरह उस बंदे के मुंह पे वापस मार दी जाती है। हदीसे मुबारक में हैः कितने रोज़ा रखने वाले ऐसे हैं कि जिन को भूका प्यासा रहने के सिवा कुछ नहीं मिलता, इसलिये कि उसमें रूह नहीं होती, अमल की क्वालीटी नहीं होती।

एक दिलचस्प मिसाल

इसको यूं समझिये कि अगर एक मन्न सोना हो तो एक मन्न वज़न होगा, एक मन्न चांदी भी एक मन्न, एक मन्न तांबा भी एक मन्न, एक मन्न लोहा भी एक मन्न और एक मन्न मिट्टी भी एक मन्न वज़न में सब बराबर हैं, लेकिन एक मन्न सोने की क़ीमत कुछ और है, चांदी की क़ीमत कुछ और है, लोहे की क़ीमत कुछ और है, और मिट्टी की क़ीमत कुछ और है। अभी हम ने मग़रिब में तीन रक्अत पढ़ीं तो इबादत तो सबने एक जैसी की, मगर किसी की नमाज़ पर अल्लाह तआला सोने का भाव लगाएंगे, किसी पर चांदी का भाव लगाएंगे, किसी पर लोहे का, और किसी की नमाज़ मिट्टी

के भाव भी कबूल नहीं फ़रमाएंगे, इसलिये हमें अपने अमलों को बेहतर से बेहतर क्वालिटी के बनाने के लिये बेह्तरीन कोशिश करनी चाहिये।

सात चीज़ों की ज़ीनत सात चीज़ों में है

सय्यदुना सिद्दीके अक्बर रज़ि0 ने फ़रमाया कि सात चीज़ों की क्वालीटी सात चीज़ों में है, अगर हम उन कामों को करें तो उन अमलों की क्वालिटी बेहतरीन हो जाएगी, वह अमल पालिश हो जाएंगे, इसकी मिसाल आप यूं समझें कि आपने लकड़ी का फ़र्नीचर बनवाया, वह बन के तैयार हो गया, आप जा के देखते हैं तो भद्दी सी लकड़ी है, फ़र्नीचर देखने को दिल नहीं करता, मगर बनाने वाला कहता है कि फ़र्नीचर तो बन गया, लेकिन पालिश बाक़ी है, वह उसी लकड़ी को पालिश करता है Varnish (चिकना बनाना) करता है, उस पर Nickel (एक क़िस्म का रोग़न) चढ़ा देता है, तो वह आईना की तरह चमकना शुरू कर देती है, फिर उस फ़र्नीचर को देख के दिल ख़ुश हो जाता है। अपने यहां एक मर्तबा हमने मस्जिद के लिये पत्थर मंगवाया तो हमारे एक साथी देख कर कहने लगेः यह पत्थर लगेगा? हमने कहाः जी, कहने लगे, यह तो बहुत भद्दा सा पत्थर है, तो हमने बताया कि अभी यह पालिश नहीं हुआ है, इसलिये आप को ऐसा लग रहा है, उसी पत्थर को जब पालिश किया गया तो वह इतना ख़ूबसूरत हो गया कि देखने वालों को चेहरा नज़र आता था, तो मालूम हुआ कि अगर हम अपने अमलों को पालिश करें, ज़ीनत दें, तो यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां जल्दी कुबूल हो जाएंगे।

नेअ़मत की ज़ीनत शुक्र अदा करने में है

इसलिये फ़रमाया कि सात आमाल की ज़ीनत सात चीज़ों में है,

उनमें से सबसे पहली बात कि नेअ़मत की ज़ीनत शुक्र अदा करने में है। अगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त किसी बंदे को नेअ़मत अता फ़रमाएं तो चाहिये कि वह उस नेअ़मत का शुक्र अदा करे, हम में से हर बंदा अल्लाह तआला की अनगिनत नेअ़मतों में ज़िंदगी गुज़ारता है, ज़रा ग़ौर कीजिये अगर अल्लाह तआला बीनाई न देते तो हम अंधे होते, गोयाई न देते तो हम गूंगे होते, समाअत न देते तो हम बहरे होते, सिहत न देते तो बीमार होते, कपड़े न देते तो हम नंगे होते, खाना न देते तो भूके होते, पानी न देते तो प्यासे होते, माल न देते तो हम फ़क़ीर होते, घर न देते तो बेघर होते, औलाद न देते तो लावलद होते, अक़्ल न देते तो हम पागल होते, अगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इज़्ज़त न देते तो हम ज़लील होते, आज, जो दुनिया में हम इज़्ज़तों भरी ज़िंदगी गुज़ारते फिर रहे हैं, यह सब उस मौला का एहसान और करम है हमें चाहिये कि हम अल्लाह का शुक्र अदा करें कि रब्बे करीम! आपने बिन मांगे हमें कितनी नेअ़मतों से नवाज़ा।

इंसान में नाशुक्री का मिज़ाज

मगर देखा यह गया है कि इंसान लेना तो चाहता है, देना कुछ नहीं चाहता, अंग्रज़ी में कहते Man gets and forgets कि "बंदा लेता भी है फिर भूल भी जाता है" Allah gives and forgives "अल्लाह देता भी है फिर मुआफ़ भी कर देता है" हम लेना तो चाहते हैं लेकिन भाई इस लेने का हक़ भी तो है, लिहाज़ा जितनी नेअ़मतें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अता फ़रमाई हैं हम उनका शुक्र अदा करें। मगर मालूम नहीं क्यों शुक्र अदा करना मुश्किल काम है, इसलिये रब्बे करीम ने क़ुर्आन मजीद में इर्शाद फ़रमाया "وَقَلِيلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ" मेरे बंदों में से थोड़े मेरे शुक्रगुज़ार बंदे हैं। और शैतान ने भी यही बात कही थी कि अल्लाह! यह तेरी

नेअ़मतों को लेंगे फिर तुझे भूलेंगे "وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ" तो देखियेगा कि इनमें से अक्सर तेरे नाशुक्रे होंगे, लिहाज़ा हमें नेअ़मतों का शुक्र अदा करना ज़रूरी है।

लेकिन हमने देखा कि जिस पर अल्लाह की बहुत नेअ़मतें हैं, वह भी शुक्र अदा नहीं कर पाया, उसकी मिसाल यूं समझें कि अगर कोई आपको एक कोक, पेप्सी की बोतल पेश करे, तो आप उसको भी कुछ रूपये देते हैं, जिस परवरदिगार ने सिहत दी, भूक जैसी नेअ़मत दी, और दस्तरख़्वान के ऊपर तरह तरह के खाने सजवाए, हम खाना खाके उठ जाते हैं, न शुरू में दुआ पढ़नी याद, न आख़िर में दुआ पढ़नी याद, तो हमने अल्लाह का तो शुक्र अदा न किया, जिस परवरदिगार ने इतनी नेअ़मतें खिलाईं, उसका तो शुक्र अदा न किया, हम नेअ़मतें लेने की तमन्ना तो रखते हैं मगर नेअ़मतें देने की या नेअ़मतों का शुक्र अदा करने का शौक़ हमें नहीं रहता।

नाशुक्री के चंद नमूने

एक आदमी को यह आजिज़ जानता है, अल्लाह ने उसका काम और कारोबार इतना वसीअ़ किया कि अगर वह अपने इलावा चालीस और Families (ख़ानदान) को Support (ख़र्च उठाना) करना चाहे तो आराम से कर सकता है, एक मर्तबा बातचीत में इस आजिज़ ने पूछाः काम कैसा चल रहा है? कहने लगाः बस गुज़ारा है, यह अलफ़ाज़ सुन कर इतनी हैरत हुई कि या अल्लाह! जिस बंदे को इतना मिला कि वह अपने सिवा चालीस Families का ख़र्च चला सकता है, जब उससे पूछा तो उसको तो यूं कहना चाहिये था कि मैं अल्लाह पे कुर्बान जाऊं जिसने मुझे मेरी औक़ात से बहुत बढ़ के अता किया, उसको तो यूं कहना चाहिये था कि भाई! मैं तो ज़िंदगी भर सज्दे में पड़ा रहूं तो भी मैं अल्लाह का शुक्र अदा नहीं कर

सकता, मगर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने में ज़बान छोटी हो जाती है, यह बंदे की फ़ितरत है।

चुनांचे एक नौजवान इन्टरव्यू के लिये गया और उसको Job (मुलाज़मत) मिल गई, आप वापसी में पूछें भाई! इन्टरव्यू कैसा रहा? कहेगाः अजी! उसने यह पूछा तो मैंने सोच के यह जवाब दिया, फिर उसने यह पूछा मैंने यह कहा, अब "मैं" की गर्दान जारी है, फिर अख़ीर में कहेगा कि मुझे Job मिल गई। उसी आदमी को अगर फ़र्ज़ करो Job नहीं मिलती और आप पूछते कि सुनाएं भाई! आप का इन्टरव्यू कैसा रहा? कहेगाः बस Job नहीं मिली, अल्लाह की मर्ज़ी, भाई! जब Job मिली थी तब भी तो अल्लाह की मर्ज़ी थी, मगर नेअ़मत मिलते हुए ख़ुदा याद नहीं होता, यह बंदे की फ़ितरत है। हमें चाहिये कि हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की इन नेअ़मतों का एहसास करें कि परवरदिगार ने कितनी नेअ़मतें हमें दीं हैं और उनका ख़ूब शुक्र अदा करें, बअज़ लोगों ने तवक़्क़ो कर ली होती है कि यह चीज़ें तो हमें मिलनी ही हैं, जो परवरदिगार देना जानता है वह परवरदिगार लेना भी जानता है, हमें चाहिये कि नेअ़मतों की मौजूदगी में नेअ़मतों का शुक्र अदा करें।

एक नौजवान जिसको अल्लाह छोटी उम्र में अपने गुरूप का चेयरमैन बना दिया, उसकी 15-20 फ़ैक्ट्रीज़ थीं, 27, 28 साल की उम्र थी, और वह चेयरमैन बन गया, बहुत समझदार अक़्लमंद इंसान था, अल्लाह ने उस पर ख़ूब दुनिया खोल दी, एक दिन बीमार हो गया, एक दिन में बुख़ार नहीं उतरा, दो दिन में भी बुख़ार नहीं उतरा, तो उसने तीसरे दिन अपने डाक्टर दोस्त को फ़ोन किया कि भाई! ज़रा आएं मुझे चैक करें कि बुख़ार उतर क्यों नहीं रहा है, डाक्टर साहब दीनदार इंसान थे, वह आए, उन्होंने देखा, और बताया कि

आप यह यह Medicine (दवाएं) इस्तेमाल कर लें, इस पर वह कहने लगाः डाक्टर साहब! तीन दिन हो गए, बुख़ार उतर नहीं रहा है, मेरी Meetings (मुलाक़ातें) थीं, मेरा फ़लां काम था मेरा फ़लां काम था--ऐसे लोग कामों में भी तो खूब फंसे होते हैं—तो मेरा तो बहुत सारा काम रह रहा है, पता नहीं क्यों बुख़ार उतर नहीं रहा है, डाक्टर साहब! Why me? (मैं ही क्यों?) जब उसने यह अलफ़ाज़ कहे कि मेरे साथ ही ऐसा क्यों है? वह कहते हैं कि मैंने Stethoscope (डाक्टरी आला) एक तरफ़ रख दी और कुर्सी पे बैठ कर मैंने उससे कहा Why not you? (आख़िर तुम्हारे साथ क्यों नहीं हो सकता?) फिर कहते हैं कि मैंने उसकी आंखें खोलीं, मैंने कहा कि देखो! इतनी छोटी उम्र में अल्लाह ने तुम्हें इतनी इज़्ज़तों से नवाज़ा, इतना माल, घर को देखो तो महल के मानिंद है, तुमने इसके लिये Sentliar स्विटज़रलैंड से ख़रीदे, तुमने फ़र्नीचर इटली से मंगाया, तुमने अपने Rugs (क़ालीन) फ़लां मुल्क से मंगाए, मन पसंद की बीवी से शादी की, अल्लाह ने बेटे भी दिये, बेटियां भी दी, दिल में सुकून भी दिया, इतमीनान भी दिया, जब तुम्हें अल्लाह ने यह सब नेअ़मतें दीं, अगर छोटी सी बीमारी कोई आ गई तो यह क्यों कह रहे हो कि why not you? Why me? आप को क्यों बीमारी नहीं आनी चाहिये? फिर मैंने कहा भला सोचो! वह नौजवान जिन्होंने मास्टर्डगिरी की होती है और तुम्हारी फ़ैक्ट्री के दरवाज़ा पर पूरा पूरा दिन Job (मुलाज़मत) के लिये इंटरव्यू के इंतेज़ार में बैठे रहते हैं कि हमारा इंटरव्यू होगा, और तुम उनको Job के लिये इंकार करते हो कि मेरे पास कोई Job (मुलाज़मत) नहीं है, वह भी तो किसी मां के बेटे हैं, उनको भी तो अल्लाह ने ही पैदा किया है, उनको अल्लाह ने वहां बैठाया और तुम्हें अल्लाह ने

यहां चेयरमैन की कुर्सी पे बिठाया, तो तुम्हें अल्लाह का शुक्र अदा करना नहीं आता, कहने लगे फिर उसकी आंखों में आंसू आ गए और वह कहने लगाः वाक़ई मैं नाशुक्रा इंसान हूं, मैं आज के बाद अपने मालिक का शुक्रगुज़ार बंदा बनूंगा। हम सोचें तो कितनी अल्लाह की नेअ़मतें हैं जो अल्लाह ने हमें दी हैं, मगर हम उन नेअ़मतों का शुक्र अदा नहीं करते।

नाशुक्री से नेअ़मत छीन ली जाती है

एक उसूल है कि जो बंदा अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की नेअ़मतों का शुक्र अदा नहीं करता तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त उससे नेअ़मतें वापस ले लेते हैं। इब्ने अता इस्कंदरी रह0 इस उम्मत में एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, मिस्र के रहने वाले थे, उनकी किताब "اَلْحِكَم" बहुत मशहूर है, शायद इस उम्मत के लुक़माने हकीम वह कहलाएं, वह फ़रमाते हैं "مَنْ لَمْ يَشْكُرِ النِّعْمَةَ فَقَدْ تَعَرَّضَ لِزَوَالِهَا" कि जो इंसान नेअ़मतों का शुक्र अदा नहीं करता वह नेअ़मत अल्लाह तआला को वापस होने के लिये पेश कर देता है, "وَمَنْ شَكَرَهَا فَقَدْ قَيَّدَهَا بِقَالِهَا" और जो नेअ़मत का शुक्र अदा करता है वह नेअ़मत को नकील बांध के अपने पास रख लेता है। चुनांचे जो इंसान नेअ़मत का शुक्र अदा करेगा नेअ़मत उसके पास रहेगी, बल्कि और ज़्यादा नेअ़मतें मिलेंगी, इर्शाद फ़रमायाः "لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيْدَنَّكُمْ" कि एक मेरे प्यारे बंदो! अगर तुम मेरी नेअ़मतों का शुक्र अदा करोगे तो हम अपनी नेअ़मतें तुम्हें और ज़्यादा अता करेंगे।

शुक्र अदा करने की बरकात

कहते हैं कि एक बड़े मियां थे हर वक़्त उनको फ़िक्र लगी रहती थी कि यह जो मेरे ऊपर दुनिया की रेल पेल है, कहीं ऐसा न हो कि मेरे अमलों का बदला दुनिया में ही न मिल रहा हो, और ऐसा न हो

कि मैं क़यामत के दिन अल्लाह के सामने पेश हूं और वह फ़रमाएं "أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا" कि हमने तो तुम्हारे सब अमलों का बदला दुनिया में दे दिया, अब आख़िरत में कुछ नहीं, उनको फ़िक्र लगी रहती थी, अब जब कुछ और नेअ़मत मिलती तो वह कहते कि अल्लाह! बस मुझे और नहीं चाहिये, वह जितना कहते और नहीं चाहिये उतनी और मिलती, वह जितना दुआएं मांगते कि और नहीं चाहिये उतनी और मिलती, एक दिन वह बड़े हैरान हुए कि या अल्लाह! जब मैं अर्ज़ कर रहा हूं कि मुझे और नहीं चाहिये, आप क्यों मुझे और दे रहे हैं? रब्बे करीम ने इल्हाम फ़रमायाः मेरे बंदे! हक़ीक़त यह है कि तुझे नेअ़मतों का शुक्र अदा करना आता है, जब तक तू नेअ़मतों का शुक्र अदा करने से नहीं रुकेगा हम अपनी नेअ़मतें अता करने से नहीं रुकेंगे, तू शुक्र अदा करता रहेगा हम नेअ़मतें और अता करते रहेंगे, लिहाज़ा हम नेअ़मतों का शुक्र अदा करेंगे तो हमारे पास यह नेअ़मतें सलामत रहेंगी। अक्सर देखा है कि जब नेअ़मत इंसान से छिन जाती है तो नेअ़मत की क़द्र आती है, नेअ़मतों की क़द्र दानी के लिये नेअ़मतों के छिन जाने का इंतेज़ार नहीं करना चाहिये, जो परवरदिगार नेअ़मतें देना जानता है वह परवरदिगार नेअ़मतें लेना भी जानता है, नेअ़मतों की मौजूदगी में शुक्र अदा करना यह एक अक़्लमंद इंसान का काम होता है, अल्लाह ने आज हमें देने वाला बनाया और सामने वाले को लेने वाला बनाया, अल्लाह तआला हमें इसका उल्टा भी बना सकते थे। कितने लोगों को देखा कि कारोबार बहुत अच्छा चल रहा था, नाक़द्री हुई है, नतीजा क्या निकलता है कि हर चीज़ गई, फिर कहते हैं कि हज़रत! एक वक़्त था कि मिट्टी का हाथ लगाते थे सोना बन जाती थी, आज तो सोने को हाथ लगाते हैं मिट्टी बन जाता है, दिन

बदलते देर नहीं लगा करती, इसलिये अगर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने नेअ़मतें दी हों तो बंदा को चाहिये कि ख़ूब अल्लाह का शुक्र अदा करे, जी भर के अल्लाह की तारीफ़ें करे, जितना कर सकता है उतना अल्लाह की तारीफ़ें करे।

देखिये! अगर कोई बंदा आपके बेटे को Job (मुलाज़मत) दिलवाए तो आप उसका तज़किरा करते ही कहेंगे कि बड़ा अच्छा इंसान है, बड़े अच्छे अख़्लाक़ वाला है, उसने मेरे साथ बड़ा भला किया, जिसने बेटे को Job दिलवाई उसकी इतनी तारीफ़ें, और जिस परवरदिगार ने बेटा अता किया, क्या उस पर हम ने अल्लाह की तारीफ़ें कीं? लिहाज़ा हमें नेअ़मतों का शुक्र और ज़्यादा अदा करने की ज़रूरत है। एहसास करें कि कितनी नेअ़मतें अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अता की हैं हम नेअ़मतों को गिनना चाहें तो हम नेअ़मतों को गिन भी नहीं सकते।

एक सबक़ आमोज़ वाक़िआ

हमारे यहां एक मर्तबा एक डाक्टर मेहमान आए, हमने उनको खाना खिलाया और फिर कहा कि अब आप आराम कीजिये, वह बेड के ऊपर पीछे ओट लगाकर बैठ गए, कहने लगे कि मैं सो जाऊंगा, हम समझे कि ज़ाकिर शाग़िल आदमी हैं, थोड़ी देर बैठ के तसबीह पढ़ेंगे, ज़िक्र करेंगे, फिर सो जाएंगे, सुब्ह जब उनको फ़ज्र के लिये मिलने आए तो देखा कि वह उसी तरह बैठे बैठे सो रहे हैं, पूछा कि आप लेट के नहीं सोए? वह कहने लगे कि असल में मुझे कुछ अर्सा से एक Problem (बीमारी, परेशानी) है, इंसान जब खाना खाता है तो उसका जो खाने का पाइप है, उसके अंदर एक Valve (वाल्व) होता है, जो Non return valve (सिर्फ़ अंदर जाने का वाल्व) कहलाता है, वह खाना अंदर तो जाने देता है लेकिन वापस

नहीं आने देता, तभी तो खाना खाके कोई सर के बल उल्टा खड़ा हो जाए तो खाना मुंह से नहीं निकलता उसको रोक लेता है, मेरा वह वाल्व leak (ख़राब) हो गया, अब मैं जब बैठता हूं तब तो ठीक और अगर लेट जाऊं तो मेरे पेट में जो होता है वह मेरे मुंह के रास्ते से बाहर निकल आता है, पिछले आठ साल से मैं लेट कर सोने की नेअ़मत से महरूम हूं। उसको बताने के बाद हमें एहसास हुआ कि या अल्लाह! हम नींद को तो नेअ़मत समझते थे, यह लेट के सोना भी तो नेअ़मत है, फिर हमने ग़ौर करना शुरू किया कि कितने जानवर ऐसे हैं जो लेट के नहीं सोते, चुनांचे ज़िराफ़ के बारे में हम ने किसी किताब में पढ़ा कि उसको जब सोना होता है तो वह एक दरख़्त के क़रीब आके अपनी गर्दन किसी टहनी या बड़े तने के अंदर डाल देता है और खड़े खड़े सोता है। बंदर बैठ के सोते हैं, कितने जानदार हैं जो लेट के नहीं सोते, इंसान को अल्लाह रब्बुल ने नींद की नेअ़मत भी दी और लेट के सोने के लुत्फ़ और मज़े भी अता किये, यह भी तो अल्लाह की नेअ़मत है, इतनी नेअ़मतें अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने दी हैं कि हम तो नेअ़मतों को गिन भी नहीं सकते, लेकिन हर नेअ़मत का एक हक़ है कि हम शुक्र अदा करें, हमें शुक्र ज़्यादा अदा करना चाहिये, लेकिन अदा नहीं करते, न बंदों को शुक्र अदा कर पाते हैं, न अल्लाह का शुक्र अदा कर पाते हैं।

बच्चों को भी शुक्र अदा करना सिखाएं

चुनांचे आप इसका तजुर्बा करें, 7, 8 बच्चे हों, उनको आप कोई खाने की चीज़ दें तो मुश्किल से किसी एक की ज़बान से "جَزَاكَ اللّٰه" का लफ़्ज़ सुनेंगे, कोई "جَزَاكَ اللّٰه" भी नहीं कहेगा, इसका मतलब कि उनकी मां ने उनको शुक्र अदा करना सिखाया ही नहीं। हमने अपने ज़िंदगी में एक ऐसी मां को भी देखा कि जिसने एक

खाने के दौरान 36 मर्तबा अपने बच्चे से Thank you कहलवाया और आजकल की मुसलमान मां एक मर्तबा भी शुक्रिया अदा करना नहीं सिखातीं, बच्चे को सिखाएं कि "جَزَاكَ اللّٰه" मर्द को कहते हैं "جَزَاكِ اللّٰه" औरत को कहते हैं, उसकी तालीम ही नहीं।

इंसानों का शुक्रिया अदा करना भी ज़रूरी है

हमें हुक्म है कि "مَنْ لَمْ يَشْكُرِ النَّاسَ لَمْ يَشْكُرِ اللّٰه" कि जो इंसानों का शुक्र अदा नहीं करता वह अल्लाह का भी शुक्र अदा नहीं करता। लेकिन होता क्या है कि बड़ा भाई छोटे के लिये जितनी भी कुर्बानी दे, छोटे की ज़बान से शुक्रिया का लफ़्ज़ ही नहीं निकलता, ज़रा सा भी कोई काम ख़राब हो जाए तो मालूम नहीं इल्ज़ाम कितने बड़े बड़े लगा देता है, हमें अपने अंदर इस सिफ़त को मज़ीद बढ़ाने और पैदा करने की ज़रूरत है।

हमारे बुज़ुर्गों ने फ़रमाया "اَلشُّكْرُ قَيْدُ الْمَوْجُوْدِ وَصَيْدُ الْمَفْقُوْدِ" कि शुक्र जो मौजूद होता है उसको कै़द करने वाली बात है, और जो मफ़कूद होता है उसको शिकार करने वाली बात है, जो नहीं होता अल्लाह वह भी अता फ़रमाते हैं, जो होता है अल्लाह उसे बाक़ी और सलामत रखते हैं।

शुक्र अदा करने का पहला तरीक़ा

शुक्र अदा करने के दो तरीक़े हैं, एक तो यह कि इंसान अपनी ज़बान से भी अल्लाह की तारीफ़ें करे, अलहम्दु लिल्लाह कहे, अपनी गुफ़्तगू में अलहम्दु लिल्लाह का लफ़्ज़ हमें ज़्यादा इस्तेमाल करना चाहिये, अलहम्दु लिल्लाह में सुब्ह इतने बजे उठ गया, यह भी तो नेअ़मत है कि अल्लाह ने आंख खोल दी, अलहम्दु लिल्लाह मैं इतने बजे दफ़्तर गया, यह भी तो अल्लाह की नेअ़मत है, अगर कोई प्राबलम होता तो दफ़्तर ही न जा सकते, पेट ख़राब हो जाता तो

छुट्टी हो जाती, लेकिन अल्लाह ने सब कुछ सलामत रखा, अलहम्दु लिल्लाह मैंने अपने बेटे को स्कूल में छोड़ा, आप और बेटा सिहतमंद और तुदुरुस्त थे तो वक़्त पे पहुंचे, ऐक्सीडेंट हो जाता तो कैसे वक़्त पे पहुंचते? लिहाज़ा अलहम्दु लिल्लाह के लफ़्ज़ को ज़्यादा इस्तेमाल करने की ज़रूरत है, अपनी गुफ़्तगू में इसको Commonly use (ज़्यादा इस्तेमाल) करें, घर में औरतों को सिखाएं, बच्चों को सिखाएं कि अपनी गुफ़्तगू में अलहम्दु लिल्लाह खूब इस्तेमाल करें, जिस बंदे ने अलहम्दु लिल्लाह कह दिया गोया उसने अल्लाह की नेअ़मत का शुक्रिया अदा कर दिया।

शुक्र अदा करने का दूसरा तरीक़ा

और दूसरी बात कि हम अल्लाह तआला की नाफ़रमानी से बचें, चूंकि आम तौर पे दस्तूर यह है कि जो मुहसिन होता है इंसान उसकी नाफ़रमानी करने से शर्माता है, कि अजी फ़लां बंदे ने मेरे साथ एहसान किया मैं उसे ना कैसे करूं? इसी तरह जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इतने एहसानात फ़रमाए तो हम अल्लाह तआला के हुक्म को ना कैसे करें? इसलिये नमाज़ पढ़ें, नेकी करें, सच बोलें, अच्छा इंसान बन के रहें, यह अल्लाह तआला की नेअ़मतों का शुक्र अदा करना है, जो इंसान ज़्यादा शुक्र अदा करेगा अल्लाह तआला उसको नेअ़मतें और ज़्यादा अता फ़रमाएंगे। तो यह पहली बात फ़रमाई कि नेअ़मत की ज़ीनत शुक्र अदा करने में है।

बला की ज़ीनत सब्र करने में है

और दूसरी बात फ़रमाई कि बला की ज़ीनत सब्र करने में है, इस दुनिया में इंसान पर हालात अदलते बदलते हैं, कभी कुछ हाल कभी कुछ हाल, अगर तंगी आए, बीमारी आए, ग़म और परेशानी आए तो Impatient (बेसब्रा) होने की ज़रूरत नहीं है, तसल्ली

के साथ उसे बर्दाश्त करना चाहिये, यह ऊंच नीच ज़िंदगी का हिस्सा है, हम अभी जन्नत में नहीं पहुंचे कि जहां कोई परेशानी नहीं होगी, मगर तवक़्क़ो हमने यही रखी हुई है कि बस हमें परेशानी तो होनी ही नहीं चाहिये, भाई! पेरशानियां इस दुनिया में आएंगी, हां जो बंदा जन्नत में दाख़िल होने लगेगा वह कहेगाः "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ" वह वक़्त होगा जब इंसान के ऊपर से ग़म और परेशानी ख़त्म हो जाएगी, लेकिन दुनिया में जब तक हैं तो दुनिया का नाम है "मसाइलिस्तान" कि एक मसला ख़त्म हुआ तो दूसरा शुरू, दूसरा ख़त्म तो तीसरा शुरू, कुछ न कुछ तो रहेगा, इस दुनिया में तो तवक़्क़ो रखनी चाहिये कि हालात आगे पीछे हो सकते हैं, परेशानी, बीमारी और मुसीबत आ सकती है और हमें इसमें सब्र से वक़्त गुज़ारना है।

दुनिया में परेशानियों का आना आज़माइश के लिये है

और हमारे ऊपर तो परेशानियां आई ही क्या हैं, हमारे बड़ों ने जो इस दुनिया में ग़म देखे, हमने तो उसका अश्र अशीर नहीं देखा, अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं "وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصَّابِرِيْنَ" अब इन तमाम आज़माइशों में सबसे ज़्यादा आज़माइशें अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 पर आई हैं, हमने तो गोया परेशानियों को देखा ही नहीं है,।

हुज़ूर सल्ल0 पर ख़ौफ़ के हालात

مِنَ الْخَوْفِ अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि ख़ौफ़ के ज़रीआ आज़माएंगे, अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 की ज़िंदगी में ख़ौफ़ के कितने मवाक़े आए हैं, आप ग़ौर करें, हिज्रत का सफ़र करना चाहते हैं और घर के गिर्द क़ुरैशे मक्का के लोग नंगी तलवारें लिये खड़े हैं

कि आप बाहर निकलें तो आप को शहीद कर देंगे, आप ज़रा Realize (महसूस) करें कि बाहर लोगों ने घेरा किया हुआ है और इंसान अंदर घर में अकेला हो तो दिल पर क्या कैफ़ियत होगी? फिर आप सल्ल0 जब वहां से निकले तो ग़ारे सौर में पहुंचे, मक्का के लोगों ने इन्आम मुतअय्यन कर दिया कि जो ढूंढ निकालेगा एक सौ ऊंट उसको इन्आम देंगे, मक्का मुकर्रमा का हर बूढ़ा जवान पहाड़ों की तरफ़ निकल गया कि हम ढूढेंगे, नबी अकरम सल्ल0 ग़ारे सौर में हैं, सिद्दीक़े अक्बर रज़ि0 फ़रमाते हैं कि कुफ़्फ़ार ग़ार के दरवाज़े पर इतना क़रीब आ गए थे कि हम उनके पांव देख रहे थे, अगर वह नीचे झुक के देखते तो शायद उनकी नज़र हम पर पड़ जाती, अंदर इंसान छिपा हुआ और जान का दुशमन दरवाज़े पर इतना क़रीब पहुंच जाए तो कितना ख़ौफ़ दिल में होता है? पूरी ज़िंदगी हम में से अक्सर ने तो ख़ौफ़ का कभी Experience (तजुर्बा) नहीं किया, जो अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 ने किया। शुअब अबी तालिब में दो साल के लिये बच्चों समीत बंद कर दिया गया, खाने पीने की चीज़ें नहीं जातीं, सोचिये क्या कैफ़ियत होगी? कोई भी अपना नहीं था हत्ता कि एक चचा जो तआवुन करते थे उन्होंने भी बुला के कह दिया कि भतीजे! मेरे ऊपर इतना बोझ न डालो जो मैं उठा न सकूं, अब पीछे कौन रहा? अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने उस वक़्त चचा से जवाब में फ़रमाय थाः चचा! अगर एक हाथ पर सूरज और दूसरे पर चांद रख दिया जाए तो भी जो पैग़ाम मैं लेकर आया हूं वह पहुंचाने से पीछे नहीं हटूंगा। तो अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने ख़ौफ़ को भी बर्दाश्त किया है।

हुज़ूर सल्ल0 पर भूक के हालात

"وَالْجُوْعِ" और भूक भी बर्दाश्त की है, सय्यदा आइशा

सिद्दीक़ा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि नुबूवत के जो 23 साल थे उनमें नबी सल्ल0 की मुबारक ज़िंदगी में तीन दिन मुतवातिर ऐसे नहीं आए कि तीनों दिन पेट भर के खाना खाया हो, एक दिन खाना खाया तो दूसरे दिन फ़ाक़ा, दो दिन खाया तो तीसरे दिन फ़ाक़ा। हमें दिन में अगर तीन दफ़्आ नहीं तो दो दफ़्आ तो मिल ही जाता है, अगर दो दफ़्आ नहीं तो एक मर्तबा तो हर बंदा खा बैठता है, हमें तो भूक का पता ही नहीं कि भूक क्या होती है। अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने इस क़द्र भूक बर्दाश्त फ़रमाई कि सय्यदा आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि कई कई महीने हमारा दो चीज़ों पे गुज़ारा होता था, एक खजूर पर, दूसरे पानी पर, खजूर खा लेते थे, पानी पी लेते थे, महीने इस तरह गुज़रते थे। फ़रमाती हैं कि हमारे चूल्हे के नीचे ज़मीन पर घास उग आती थी, चूल्हे में घास उस वक़्त उगती है जब महीनों आग न जले, है कोई बंदा इस मज्मा में जो कहे कि मेरे घर के चूल्हे में आज घास उग आई, भाई! एक दिन नहीं पकेगा तो दूसरे दिन, दूसरे दिन नहीं तो तीसरे दिन, तीसरे दिन नहीं तो चौथे दिन, आख़िर आग जलेगी, अल्लाह के हबीब सल्ल0 के यहां चूल्हे में घास उगती थी, आप सोचिये कैसी भूक बर्दाश्त करनी पड़ती थी।

चुनांचे एक वाक़िआ सुन लीजिये फिर बात आगे बढ़ाते हैं, सय्यदा फ़ातिमतुज़्ज़ोहरा रज़ि0 ने अपने घर में 4 रोटियां बनाईं, एक हज़रत अली रज़ि0 को दी, सय्यदना हसन रज़ि0 को दी, एक सय्यदना हुसैन रज़ि0 को और एक अपने लिये, जब खाना खाने बैठीं तो दिल में ख़्याल आया कि फ़ातिमा! तुम खाना तो खा रही हो, पता नहीं तुम्हारे अब्बा हुज़ूर सल्ल0 को कुछ खाने को मिला कि नहीं मिला, उन्होंने अपनी आधी रोटी बचा ली और अपनी चादर में उसको लपेटा और नबी सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुईं, नबी

सल्ल0 ने इस्तिक़बाल फ़रमाया, पूछा कैसे आना हुआ? कहा हुज़ूर! मैं आपके लिये हदया लाई हूं, नबी सल्ल0 ने वह रोटी का टुक्ड़ा अपने हाथ में लिया और उसमें से एक लुक़्मा तोड़ के मुंह में डाला और फ़रमाया फ़ातिमा! मुझे क़सम है उस परवरदिगार की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, आज तीसरा दिन गुज़र गया, मेरे मुंह में कोई रोटी का टुक्ड़ा नहीं गया, इतनी भूक बर्दाश्त करनी पड़ी।

हुज़ूर सल्ल0 पर माली हालात

"وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ" अल्लाह के हबीब सल्ल0 पर नक़्से अमवाल के इम्तिहान भी आए, जब हिज्रत की तो हिज्रत के वक़्त कोई आने साथ Container तो भर के नहीं ले गए थे, तने तन्हा सफ़र किया था, जो था वह मक्का मुकर्रमा में रह गया था, सहाबा रज़ि0 के माल पर भी क़ुरैशे मक्का ने क़ब्ज़ा किया, नबी सल्ल0 का जो माल था उस पर भी क़ब्ज़ा कर लिया, ज़िंदगी में ऐसी क़ुर्बानी कभी हम ने दी है?

हुज़ूर सल्ल0 पर जानी हालात

"وَالْأَنْفُسِ" और जान का नुक़्सान भी बर्दाश्त किया, हमारे कितने लोग ऐसे हैं जिनके घर के अफ़राद में दादा परदादा तो फ़ौत हुए, मगर बाक़ी सारे हज़रात सिहत व सलामती की ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं, लेकिन अल्लाह के हबीब सल्ल0 की अपनी मुबारक ज़िंदगी में देखिये, सय्यदा ज़ैनब रज़ि0 वफ़ात पा गईं, सय्यदा रुक़य्या रज़ि0 वफ़ात पा गईं, उम्मे कुल्सुम रज़ि0 वफ़ात पा गईं, अल्लाह ने बेटे अता किये, वह भी वफ़ात पा गए, फिर बीवी वफ़ात पा गईं, कितने घर के लोग थे जिनको अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने खुद दफ़नाए, तो मालूम हुआ कि हमें तो نَقْصٍ مِّنَ الْأَنْفُسِ वाला तजुर्बा भी इतना नहीं हुआ जितना अल्लाह के हबीब सल्ल0 पर यह मुसीबतें आईं,

मगर अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने सब्र फ़रमाया, हम भी तो सब्र करें, बेसब्री से होता क्या है? बेसब्री से सब्र का सवाब ख़त्म हो जाता है मुसीबत तो नहीं टला करती, फिर बेसब्री का कोई फ़ायदा ही नहीं, इसलिये फ़रमाया कि बला की ज़ीनत सब्र करने में है। अगर ज़िंदगी में मुश्किल हालात आ जाएं तो यह भी तो सोचें कि अल्लाह ने अच्छे हालात भी तो रखें हैं, अगर ग़ौर करें तो हमारी ज़िंदगी में आसानियां ज़्यादा हैं, मुश्किलात थोड़ी, सिहत ज़्यादा, बीमारी थोड़ी, ख़ुशी ज़्यादा, ग़म थोड़े, पेट भरे की हालत ज़्यादा, भूक थोड़ी, इससे मालूम हुआ कि नेअ़मतें ज़्यादा हैं और ग़म और परेशानियां थोड़ी हैं, इसको किसी आरिफ़ ने यूं कहा:

लुत्फ़े सजन बदम बदम क़ह्रे सजन गाह गाह

कि इस महबूब का लुत्फ़ तो हर वक़्त है और इसका ख़फ़ा होना या नाराज़ होना वह कभी कभी

ई भी सजन वाह, ओ भी सजन वाह वाह

ऐ मेरे मौला! मैं ऐसे भी आप से राज़ी हूं, मैं वैसे भी आप से राज़ी हूं तू जिस हाल में रखे मेरे मौला! मैं तुझ से राज़ी हूं।

एक औरत का सब्रे जमील

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं तवाफ़ कर रहा था, एक औरत को मैंने देखा कि वह कह रही थी कि अल्लाह! मैं इस हाल में भी तुझ से राज़ी हूं, मैं उस हाल में भी तुझ से राज़ी हूं, वह फ़रमाते हैं कि मैंने पूछा कि ऐ ख़ातून! तेरे साथ क्या मुआमला पेश आया? वह कहने लगी कि मैं अपने घर में थी, मेरे छोटी उम्र के तीन बच्चे थे, घर में मैं रोटियां बना रही थी, मेरे दो बच्चे खेल रहे थे और एक छोटा बच्चा मेरे क़रीब रेंग रहा था, वह भी खेल रहा था, तो अचानक मुझे कमरे से एक ज़ोर की आवाज़ आई, मैंने जब जाकर

देखा तो असल में घर में एक छुरी थी, जो काफ़ी तेज़ थी, वह कहीं बच्चों के हाथ आ गई तो बच्चों में से एक ने दूसरे भाई को कहा कि तुम्हें पता है कि यह छुरी कितनी तेज़ होती है? उसने कहा नहीं, तो उस बच्चे ने नादानी में भाई के गले पे छुरी चला दी और उसका Wind pipe (सांस की नली) कट गया, अब जब वह बच्चा तड़पने लगा तो यह भी परेशान कि यह क्या हुआ, वह औरत कहती है कि जब मैं वहां पहुंची तो मैंने देखा कि मेरा बेटा आख़िरी सांस ले रहा था, मैंने उसकी लाश उठाई और सिहन के अंदर चारपाई पे ला के डाल दिया, फिर मैं फ़िक्रमंद हुई कि मेरा दूसरा बेटा गया कहां? नज़र नहीं आ रहा है, मैं ढूंढने लगी, अब वह बच्चा डर के मारे छिप गया था, हमारे सिहन के अंदर लकड़ियां रखी हुई थीं, वह उसके पीछे छिपा था, जब मैंने देखा तो वहां पर एक सांप था जिसने उस बच्चे को काटा और वह बच्चा भी वहां मरा पड़ा था, कहने लगी कि मैं उसकी लाश भी उठा के ले आई और उसको लाके पहले बच्चे के साथ बिस्तर पर लिटाया, फिर मैंने महसूस किया कि मेरा तीसरा छोटा बच्चा कहां, वह तो इधर खेल रहा था, कहने लगी कि जब मैं क़रीब आई तो मैंने देखा कि वह छोटा बच्चा रेंगते रेंगते तन्नूर के अंदर जा गिरा, मैंने उसकी जली हुई लाश निकाली, तीनों बच्चों को लिटाया, उनको नहलाया, उनको कफ़नाया फिर उनकी तदफ़ीन का आमल हुआ, और मैं उम्रा करने आ गई और मैं अपने अल्लाह से कह रही हूं कि अल्लाह! मैं इस हाल में भी तुम से राज़ी हूं।

सहाबए किराम रज़ि0 का एक क़ौले ज़र्री

सहाबा रज़ि0 एक फ़ुक़रा एक दूसरे को सुनाया करते थे, कितना ख़ूबसूरत फ़ुक़रा है, सोने की सियाही से लिखने के क़ाबिल है, फ़रमाते थे, "اِسْتِقْبَالُ الْمَصَائِبِ بِالتَّحَمُّلِ وَمُوَاجَهَةُ النِّعَمِ بِالتَّذَلُّلِ"

कि जब अल्लाह तआला मुसीबतें भेजें तो खूबसूरती से उन मुसीबतों का इस्तिक़बाल करें और जब अल्लाह तआला नेअ़मतें अता फ़रमाएं तो हम आजिज़ी से उन नेअ़मतों को इस्तेमाल करें।

मुहसिन की ज़ीनत एहसान न जतलाने में है

और तीसरा फ़रमाया कि मुहसिन की ज़ीनत एहसान न जतलाने में है, आजकल कोई किसी के साथ भला कर ले high expectation (बुलंद तवक़्क़ुआत) हो जाती है कि जहां यह मिले मेरी तारीफ़ें करें। अल्लाह तआला ने फ़रमाया "وَلَا تُبْطِلُوا صَدَقَاتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ" कि तुम अपने सदक़ात को और नेक आमाल को एहसान जतला कर और तकलीफ़ पहुंचा कर ज़ाएअ़ न करो, लिहाज़ा अगर हम किसी के साथ भला करें तो अल्लाह के लिये भला करें, यह उम्मीद न करें कि अब यह हर महफ़िल में बैठ के हमारी तारीफ़ें करेगा, अगर तारीफ़ें चाहेंगे तो उस नेकी का असर ख़त्म हो जाएगा।

इमाम अबू हनीफ़ा रह0 का क़र्ज़दार के साथ मुआमला

हमारे अकाबिर इसका इतना ख़्याल रखते थे कि इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह0 गर्मियों के मौसम में एक जगह धूप के अंदर खड़े थे, एक शागिर्द वहां से गुज़रा, उसने कहा कि हज़रत! ख़ैरियत, चिलचिलाती धूप, पसीने में शराबोर आप यहां खड़े हैं? उस मकान की दीवार के साया में आ जाएं, तो इमाम साहब ने फ़रमाया कि उस मकान वाले बंदे ने मुझ से क़र्ज़े हसन मांगा हुआ था, और आज उसने मुझे वपास करने के लिये बुलाया था, मैं क़र्ज़ लेने आया हूं, अब इस हालत में नहीं चाहता कि उसकी दीवार के साए से मैं फ़ाइदा उठाऊं, मैंने तो क़र्ज़ अल्लाह के लिये दिया था, मैं इतना भी उसके बदले फ़ाइदा नहीं लेना चाहता। सोचिये कितना लिवजहिल्लाह

यह हज़रात अमल किया करते थे।

सहाबा रज़ि0 का यह हाल था कि अगर उन्हें किसी को कोई चीज़ देनी होती थी तो ख़रीद के घठरी बांध के रात को उनका दरवाज़ा खोल के दरवाज़े के आगे रख दिया करते थे और बता देते थे कि यह आप की तरफ़ हदया है, दिया किसने? उसका पता भी नहीं चलता था, इस तरह दूसरे बंदे के साथ वह मुहब्बत का मुआमला किया करते थे।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 का वाक़िआ

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं सफ़र के लिये कूफ़ा गया, चूंकि वहां वह इमामे आज़म रह0 की ख़िदमत में बहुत हाज़िरी देते थे, तो रास्ते में एक शहर में Stay (क़्याम) करता था, वहां एक होटल था, जहां मैं रात गुज़ारता और फिर आगे चला जाता, उस होटल में एक नौजवान था जो वहां मेरी ख़िदमत करता, वह मुझे अच्छा लगता था, एक मर्तबा अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 जब गए तो वह नौजवान नज़र नहीं आया पूछा भाई! वह नौजवान कहां? लोगों ने बताया कि उसके ऊपर एक मुक़द्दमा बन गया, और वह तो जेल में है, पूछा भाई! क्या मुक़द्दमा बन गया? कहा कि उसे किसी को पैसे देने थे और Deadline (इंतिहाए मुद्दत) दी हुई थी कि फ़लां Date (तारीख़) तक मैं दे दूंगा, और वह दे नहीं सका तो लेने वाले ने पुलिस को रिपोर्ट कर दी, पुलिस ने पकड़ के उसको जेल में डाल दिया कि अदाइगी कराओगे तो तुम्हें छोड़ेंगे, अब्दुल्लाह बिन मुबारक पुलिस ही के पास चले गए, उससे जाके पूछा कि उस नौजवान को जेल में क्यों डाला? उसने कहा उसको फ़लां बंदे की Payment देनी है, यह दे या इसका कोई अज़ीज़ रिशतेदार दे दे, हम छोड़ देंगे, तो आप ने फ़रमाया कि अच्छा इसकी Payment

मैं कर देता हूं लेकिन, इस Condition (शर्त) के साथ कि मेरा नाम नहीं बताया जाए, उसने कहा नाम बताने से मुझे क्या मतलब, आप अदा कर दें, हक़ वालों को हक़ मिल जाएगा मैं Release (आज़ाद) कर दूंगा, उन्होंने पैसे दे दिये, उसने हक़ वाले को बुला कर दे दिये, अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 चले गए। बाद में वह नौजवान जेल से रिहा हो गया, फिर कुछ महीने बाद अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 गए और उसी होटल में ठहरे, नौजवान से पूछा क्या हाल है? उसने कहा मेरे ऊपर तो एक मुसीबत आ गई थी, मैं Payment करने में Defaulter (अदा न करने वाला) हो गया, और पुलिस ने मुझे Lockup में डाल दिया, कोई अल्लाह का बंदा आया, मुझे उसका पता नहीं, उसने Payment कर दी और मैं रिहा हो गया। अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 सुन रहे हैं उसको नहीं बता रहे हैं कि वह Payment किसने की, सारी ज़िंदगी वह याद करता रहा कि किसी ने मेरे साथ भला किया था, अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 ने ज़ाहिर भी न किया। जब अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 की वफ़ात हुई तो पुलिस वालों ने उस नौजवान को बताया कि तेरी Payment तो अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 ने की थी। सुब्हानल्लाह! नेकी कर दरिया में डाल कि हम दूसरों के साथ भला भी करें और भला सिर्फ़ अल्लाह के लिये करें, यह नहीं कि हर महफ़िल में उसका तज़किरा शुरू कर दें, अल्लाह की रज़ा के लिये करें।

इमाम ज़ैनुल आबिदीन बहुत नाज़ुक बदन थे, जब उनकी वफ़ात हुई तो गुस्ल देने वाले ने देखा कि उनके कंधे पे काला सा निशान है, यह निशान क्यों है, किसी को पता नहीं था, घर के लोगों से मालूम किया उन्होंने कहा हमें तो इसकी Reason (वजह) मालूम नहीं, चुनांचे उनको नहलाया गया, कफ़नाया गया, दफ़ना दिया गया, एक

हफ़्ता जब गुज़रा तो आबादी के जो माजूर लोग थे Handicape थे, बूढ़े थे, उनके घरों से आवाज़ आई कि वह कहां गया जो रात के अंधेरे में हमारे घरों में पानी भरा करता था, तब पता चला कि हज़रत ने मुश्क बनाई हुई थी, जब लोग सो जाते थे तो पानी भरा करते थे और ऐसे Senior citizen (उम्र रसीदा) और Handicape (मअ़जूर) जो लोग थे, कंधे पे मुश्क उठा के उनके घरों में पानी पहुंचा दिया करते थे, सारी ज़िंदगी इस अमल का किसी को पता ही नहीं चलने दिया। सोचें ज़रा! हमारे पास कोई ऐसा अमल है जो हमें मालूम हो और हमारे रब को मालूम हो? अगर नहीं तो फिर नियत कर लें कि आज के बाद हम ऐसे भी अमल करेंगे कि जिसका सिवाए हमारे परवरदिगार के किसी को पता न चले, वह बंदे और उसके मालिक के दर्मियान राज़ हो, हदीसे पाक में आता है कि ऐसे खुफ़िया अमल जो होते हैं अल्लाह तआला उसके अज्र का रेट भी बहुत बढ़ा दिया करते हैं।

नमाज़ की ज़ीनत खुशूअ़ व खुज़ूअ़ में है

और चौथी बात फ़रमाई कि नमाज़ की ज़ीनत खुशूअ़ व खुज़ूअ़ में है कि नमाज़ पढ़ीं तो बड़े सुकून और तसल्ली के साथ पढ़ें, आप ग़ौर करें कि हम कैसी नमाज़ पढ़ते हैं, वक़्त भी होता है, कोई काम भी नहीं होता, मगर भागी दौड़ी हुई नमाज़ पढ़ते हैं, बस रुकूअ़ सज्दा हो रहा होता है, जैसे पीछे कोई डंडा ले के खड़ा है, हमें चाहिये कि हम सुकून व तसल्ली की नमाज़ पढ़ा करें, आजकल हमारी नमाज़ों का हाल कुछ इस तरह है कि जैसे एक बंदा अपनी फ़्लाइट पे जा के बैठे फिर जहाज़ उड़ा, यह बहुत थका हुआ था इसे नींद आ गई, अब नींद में ही सफ़र तै हो गया तो जहाज़ Land (ज़मीन पर उतरना) करता है, जैसे ही पहिये ज़मीन पे लगते हैं तो उसकी आंख खुलती है

कि उफ़्फ़ोह! हमारी मंज़िल आ गई? बिल्कुल इसी तरह अल्लाहु अक्बर इमाम साहब ने कही और हमने ख़्यालात की दुनिया में परवाज़ शुरू कर दी, और अभी परवाज़ चल रही होती है कि इमाम साहब ने कहा अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह और हमें महसूस होता है जैसे अब landing हो गई है, हम वापस उस दुनिया में आ जाते हैं, ऐसी नमाज़ें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां क़बूल नहीं होतीं, नमाज़ पढ़ें सुकून के साथ तसल्ली के साथ, तवज्जो इलल्लाह और रुजू इलल्लाह के साथ।

नौजवानों में एक आम बीमारी

हमने नौजवानों में एक अजीब आदत देखी कि नफ़िलें पढ़ने की आदत ही ख़त्म होती जा रही है, ज़ुहर की नमाज़ होगी तो उसकी नफ़िलें ग़ाइब, मग़रिब की नमाज़ की आख़िरी नफ़िलें ग़ाइब, इशा की नमाज़े वितर के आगे पीछे की नफ़िलें ग़ाइब, भाई! नफ़िलें न छोड़ें, क्योंकि हमारे उलमा ने लिखा है कि क़्यामत के दिन अगर किसी बंदे के फ़राइज़ में कोई कोताही होगी और नामए आमाल में नवाफ़िल होंगे तो अल्लाह तआला करीम हैं, तवक़्क़ो रखते हैं कि वह उन फ़र्ज़ों को नफ़िलों के बदले में Compensate (कमी की भरपाई) फ़रमा देंगे तो मालूम हुआ कि नफ़िल तो पढ़ने चाहियें To be on the safe site (एहतियात के तक़ाज़े के तहत) ऐसा ज़रूर कर लेना चाहिये, और वैसे भी नफ़्ल पढ़ लिया करें कि मालूम नहीं इस ज़मीन पर क्या हुआ मेरा सज्दा मेरे मालिक को पसंद आ जाए, इसलिये नफ़िलें शौक़ से पढ़ा करें, तसल्ली के साथ नमाज़ पढ़ा करें। हम ने अपनी ज़िंदगी में ऐसे बुज़ुर्गों को देखा है जो अपने हर सज्दे में 21 मर्तबा "سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی" पढ़ा करते थे, चलो हम तीन की जगह 5 ही दफ़आ पढ़ लें, 7 दफ़आ पढ़ लें कि आज छुट्टी का

दिन है तो नमाज़ को ज़रा सुकून व तसल्ली के साथ पढ़ लें, जैसे अल्लाह से इंसान हमकलामी कर रहा होता है, उस तरह पढ़ें, यह है सुकून की नमाज़, यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को पसंद है।

जैसी नमाज़ होगी वैसा अल्लाह का दीदार होगा

इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़सानी रह0 ने अपने मक्तूबात में एक बड़ी अजीब बात लिखी है, वह फ़रमाते हैं कि जो हम नमाज़ दुनिया में पढ़ते हैं यह नमाज़ क्यामत के दिन जब जन्नत में जाएंगे तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के दीदार की शक्ल में सामने ज़ाहिर होगी, कि जो शख़्स दुनिया में नमाज़ पढ़ता होगा, लेकिन उसको ख़्यालात आते रहते होंगे, तो वह फ़रमाते हैं कि यह मोमिन जब जन्नत में जाएगा तो उसको अल्लाह तआला का दीदारे ज़ाती होगा, फिर उसके ऊपर सिफ़ात के पर्दे आ जाएंगे, जो बंदा बग़ैर ख़्याल वाली नमाज़ पढ़ता होगा उस मोमिन को जन्नत में जाकर बग़ैर सिफ़ात के पर्दों में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के चेहरे का दीदार होगा, वह फ़रमाते हैं जैसी नमाज़ पढ़ेंगे, जन्नत में मोमिन को दीदार उसी कैफ़ियत का हासिल होगा, लिहाज़ा हमें दुनिया में ऐसी कोई तो दो रक्अत पढ़ना है कि जिस में अल्लाहु अक्बर से लेकर सलाम फेरने तक हमें कोई दुनिया का ख़्याल न आए, मश्क़ करने से यह आ जाता है।

नमाज़ बनाने के लिये मेहनत करनी पड़ती है

और याद रखें नमाज़ बनानी पड़ती है, खुद बखुद नहीं बन जाती। इसकी मिसाल यूं समझ लीजिये कि एक बंदे को Boxing (मुक्केबाज़ी) का मुक़ाबला करना है तो आप देखेंगे कि कभी तो वह Jogging (वर्ज़िश की नियत से दौड़ना) कर रहा है, और वह कभी Trade Mill (वर्ज़िश की एक मशीन) के ऊपर चल रहा है, और कभी एक Leather (चमड़े) का तकिया है उस पर मुक्के

मार रहा है, उससे पूछेंगे कि क्या कर रहा है? वह कहेगा मैं Practice (मश्क़) कर रहा हूं, ताकि जब मैं Ring (बोक्सिंग के मुक़ाबले का मख़्सूस अहाता) में उतरूं तो मैं Champion (कामियाब) बन जाऊं, अब अगर यह बंदा Boxing के मुक़ाबले में नाम तो लिखा चुका, लेकिन तैयारी नहीं करके आया तो रिंग में उसके साथ क्या होगा कि यह पहले ही मुक्के पे ही technical knockout (ढेर) हो जाएगा, बिल्कुल इसी तरह हम अगर चाहते हैं कि नमाज़ के रिंग में उतरते ही हम हज़ूरी के साथ नमाज़ पढ़ें तो इसके लिये रिंग के बाहर उसकी Exercise (मश्क़) करनी पड़ती है।

हमारे मशाइख़ जो कहते हैं कि ज़िक्र करो और हर वक़्त अल्लाह का ध्यान रखो, चलते फिरते, लेटे बैठे दिल में अल्लाह की तरफ़ ध्यान रखो, यह असल में नमाज़ की प्रेक्टिस है जो ख़ारिजे नमाज़ करवाई जाती है, चुनांचे जिस बंदा की तबीअत पहले ही से अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जो होती है जब वह अल्लाहु अक्बर कहके नमाज़ के रिंग में दाख़िल होता है तो उसको मुकम्मल इन्कि़ताअ़ महसूस होता है, वह फिर अपने अल्लाह के साथ वासिल हो जाता है, हमकलाम हो जाता है, फिर उसको اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ पढ़ने का मज़ा आता है कि जैसे मेरे मालिक इसका जवाब दे रहे हों कि मेरे बंदे ने मेरी हम्द बयान की, इसलिये हम नमाज़ को बनाने की कोशिश करें और अल्लाह से यह नेअ़मत मांगे, क्योंकि नमाज़ की ज़ीनत ख़ुशूअ़ और ख़ुज़ूअ़ में है।

ख़ौफ़ की ज़ीनत गुनाहों को छोड़ने में है

और चौथी बात फ़रमाई कि ख़ौफ़ की ज़ीनत गुनाहों को छोड़ने में है, कोई बंदा कहे कि मेरे दिल में बड़ा अल्लाह का ख़ौफ़ है, तो

भाई ख़ौफ़ का तक़ाज़ा तो यह है कि इंसान नाफ़रमानी छोड़ दे, यह कैसा ख़ौफ़ कि इंसान आंसू भी बहा ले, गुनाह करना भी न छोड़े, अच्छा इंसान वही है जो अपने मालिक की नाफ़रमानी से बचे।

सर्री सक़्ती रह0 फ़रमाते हैं कि मैंने एक मर्तबा वअज़ किया, लोग चले गए, एक नौजवान आया, लगता था कि किसी बड़े अमीर घराने का है, किसी नवाब का बेटा है, उसके साथ और भी 15, 20 नौजवान थे, आकर कहने लगा कि हज़रत! आप ने यह बात कही है, बात क्या थी कि सर्री सक़्ती रह0 ने बयान में कहा था: "عَجَبًا لِضَعِيفٍ يَعْصِى قَوِيًّا" तअज्जुब है उस कमज़ोर पर जो एक ताक़तवर की नाफ़रमानी कर रहा है। कहते हैं जब उसने पूछा तो मैंने कहा कि देखो इंसान से ज़्यादा कमज़ोर कोई नहीं, रब से ज़्यादा ताक़त वाला कोई नहीं, और तअज्जुब है कि इतना कमज़ोर इतने क़वी की नाफ़रमानी करता है, कहने लगा कि आज के बाद मैं उस क़ादिर परवरदिगार की नाफ़रमानी नहीं करूंगा, हम भी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की नाफ़रमानी से बचें।

इबादतगुज़ार बनने का आसान रास्ता

एक सहाबी रज़ि0 नबी सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए, अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! मैं सबसे ज़्यादा इबादत गुज़ार बनना चाहता हूं, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया: "اِتَّقِ الْمَحَارِمَ" गुनाहों से अपने आप को बचा ले "تَكُنْ أَعْبَدَ النَّاسِ" इंसानों में सबसे ज़्यादा इबादत गुज़ार तो बन जाएगा, लिहाज़ा हम गुनाहों को छोड़ दें और दुआ मांगें कि ऐ अल्लाह! हमें मअसियत की ज़िल्लत से महफ़ूज़ फ़रमा।

सबसे बड़ा आलिम कौन?

इमाम ग़ज़ाली रह0 फ़रमाते हैं: "बड़ा आलिम होता है जिस पर

गुनाहों की मुज़रतें ज़्यादा खुल जाएं" हम तो कुछ और समझते हैं, जो ज़्याबा बोलता हो, हर बात का जवाब देता हो, हम समझते हैं कि यह बड़ा आलिम है, इसका बड़ा मुतालआ है, वह फ़रमाते हैं, कि जिस बंदे पर गुनाहों की मुज़रतें ज़्यादा खुल जाएं वह शख़्स बड़ा आलिम है, इसलिये कि अब वह गुनाहों से खुद बचेगा।

तालिबे इल्म की ज़ीनत आजिज़ी में है

और पांचवीं चीज़ फ़रमाया कि तालिबे इल्म की ज़ीनत आजिज़ी में है, जो इंसान चाहे कि मुझे इल्म की दौलत मिले, उसको अपने असातिज़ा के सामने आजिज़ बनना चाहिये, हदीसे मुबारक है "تَوَاضَعُوْا لِمَنْ تَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمْ" तुम जिनसे इल्म हासिल करते हो उनके सामने तवाज़ो इख़्तियार करो। याद रखिये! इल्म को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अज़्मत दी है, इल्म अल्लाह की सिफ़त है और अल्लाह अज़्मतों वाले हैं तो इल्म के अंदर भी अज़्मत है, यह उसको मिलता है जो झुकता है, जो नहीं झुकेगा उसको नहीं मिलेगा।

हज़रत अली रज़ि0 फ़रमाया करते थेः "لَا يَتَعَلَّمُ الْعِلْمَ مُسْتَحْيٍ وَلَا مُسْتَكْبِرٌ" कि जो शर्माने वाला हो या तकब्बुर करने वाला हो, उन बंदों को इल्म हासिल नहीं होता, तो इल्म हासिल करने के लिये इंसान झुकता है तब यह नेअ़मत मिलती है। आपने देखा होगा कि पानी निचान की तरफ़ जाता है, इल्म की नेअ़मत भी निचान की तरफ़ जाती है

जो अह्ले वस्फ़ होते हैं हमेशा झुक के रहते हैं
सुराही सर नगूं होकर भरा करती है पैमाना
तवाज़ो का तरीक़ा सीख लो लोगो सुराही से
कि जारी फ़ैज़ भी है और झुकी जाती है गर्दन भी

जितना सुराही ज़्यादा झुकती है उतना फ़ैज़ ज़्यादा जारी होता है,

पानी ज़्यादा जारी होता है, तो इल्म इंसान को तवाज़ो से मिलता है।

एक इल्मी नुक्ता

अब तलबा के लिये एक नुक्ते की बात कि इल्म के सामने फ़रिशते भी सर नगूं, आदम अलै0 के सामने फ़रिशतों को सज्दा करने का जो हुक्म दिया गया तो उसकी वजह क्या थी कि आदम अलै0 के पास इल्मुल अस्मा था, इस इल्मुल अस्मा की वजह से फ़रिशते उनके सामने झुके तो इल्म के सामने फ़रिशते भी सरनगूं। और इल्म के सामने अंबिया भी सरनगूं, वह कैसे कि ख़िज़र अलै0 अल्लाह के वली हैं और सय्यदना मूसा अलै0 अल्लाह के पैग़म्बर हैं, सूरए कह्फ़ पढ़ के देखिये मूसा अलै0 उनके सामने शार्गिद बनके बैठे हैं, तो इल्म के सामने अंबिया अलै0 को भी झुकना पड़ा। और इल्म के सामने दुनिया के बादशाह भी सरनगूं, चुनांचे मुल्ला जीवन रह0 दर्स दिया करते थे और वक़्त का बादशाह मिलने आता था, एक एक घंटा इंतेज़ार करता था, जब हज़रत का दर्स मुकम्मल होता तब मुसाफ़हा किया करता था, तो इल्म के सामने दुनिया के बादशाह भी सरनगूं। इल्म को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने यह बड़ाई दी है और इल्म की वजह से इंसान को दुनिया में इज़्ज़तें मिलती हैं।

इल्म की ज़ीनत हिल्म में है

सातवीं बात फ़रमाई कि इल्म की ज़ीनत हिल्म में है। हिल्म कहते हैं Tolerance को, हलीमुत्तबअ़ वह बंदा है जिस में Tolerance ज़्यादा हो जो बर्दाश्त कर सकता हो तो इल्म की ज़ीनत हिल्म में है। अल्लाह तआला ने इन दोनों सिफ़तों का क़ुर्आन में एक जगह तज़किरा फ़रमाया "وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا" यह दोनों सिफ़तें इकट्ठी अच्छी लगती हैं कि अल्लाह जितना इल्म किसी का बढ़ाए उसके अंदर हिल्म भी उतना ही बढ़ जाए। आप अगर ग़ौर करें तो

आज हम इसमें बहुत कोताही के मुरतकिब नज़र आते हैं, इतने Short tempered (जल्द गुस्सा में आने वाले) हैं कि छोटी छोटी बातों पे गुस्सा, Day to day (रोज़ मर्रा) की बातें होती हैं उसमें गुस्सा चढ़ जाता है और कभी तो बग़ैर वजह के गुस्सा कर लेते हैं, चुनांचे एक नौजवान आया, कहने लगा कि पता नहीं किया हुआ, बाहर दोस्तों में बड़ा ठीक रहता हूं, घर आता हूं तो बस पारा चढ़ा रहता है, पूछा भाई! कोई वजह? कहा कोई वजह भी नहीं है, मैंने कहा देखें शैतान आग से बना और यह शैतानियत जिसके दिमाग़ में जितना ज़्यादा होती है उतना बंदे का पारा चढ़ा रहता है, तो इस शैतानियत से जान छुड़ा, घर में शगुफ़्ता चेहरे के साथ आना चाहिये। सय्यदा आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि नबी सल्ल0 घर में तशरीफ़ लाते थे तो मुस्कुराते चेहरे के साथ आते थे और अह्ले ख़ाना को सलाम किया करते थे, हमें भी इस सुन्नत पर अमल करना चाहिये।

हिल्म की कमी तलाक़ का सबब

हिल्म की कमी आज बहुत ज़्यादा देखने में आ रही है, छोटी बात का बतंगड़ बन जाता है, चुनांचे एक मुल्क में हमें एक अजीब वाक़िआ सुनने में आया, मियां बीवी और दोनों पी एच डी डाक्टर थे और उनमें 23 साल शादी शुदा ज़िंदगी गुज़ारने के बाद एक मामूली सी बात पे Separation (अलाहिदगी) हो गई, मियां को एक दिन दफ़्तर में Meeting में पहुंचना था, आंख खुली तो उन्होंने देखा कि टाइम कम है, उन्होंने सोचा कि चलो मैं नाश्ता तो नहीं करता, मैं ब्रश कर लेता हूं, ताकि मैं जल्दी से पहुंचूं, देखा तो वाश रूम में कोई बच्चा था, उन्होंने यह किया कि वह Kitchen (बावर्ची ख़ाना) में चले गए और वहां का Sink (बर्तन वग़ैरा धोने

की जगह) था वहां जा के उन्होंने टूथपेस्ट कर ली, अब जब बीवी साहिबा आईं तो देखा कि कीचन के Sink में ख़ाविंद ने टूथपेस्ट ब्रश इस्तेमाल किया, तो उसको बड़ा गुस्सा हुआ, जब मियां साहब आए तो वह Argument (लड़ाई) करने लगी कि आप तो बहुत ही Tough rough (बद सलीक़ा) हैं, आप के अंदर तो Sophistication (सलीक़ा) नहीं है, लिखे पढ़े तो हैं लेकिन आप को तहज़ीब नहीं आती, उसने कहा मेरी मजबूरी थी, बीवी ने कहाः नहीं, आप हैं ही ऐसे। अब यह छोटी सी बात बढ़ते बढ़ते इतनी बड़ी बन गई कि दोनों ने एक दूसरे से Separate (अलग, जुदा) होने का फ़ैसला कर लिया, हमने जब यह सुना तो वाक़िआ सुनाने वाले को कहा कि वाक़ई मुझे भी लगता है कि दोनों "पी एच डी" (PHD), तो वह हैरान होके देखने लगे कि हज़रत! आप की क्या मुराद कि दोनों पी एच डी (PHD), मैंने कहा अंग्रज़ी के नहीं, उर्दू के, कहने लगा क्या मतलब? मैंने कहा पी एच डी (PHD) यअ़नी "फिरा हुआ दिमाग़"। (Phira Hua Dimagh) इसको क्या कहेंगे? 23 साल की Association (साथ) के बाद जो बंदा बीवी को इतनी छोटी सी बात पे तलाक़ दे, वह फिरा हुआ दिमाग़ नहीं है तो और क्या है? यह इसलिये हुआ कि हमारे अंदर हिल्म की बहुत ज़्यादा कमी है, उसको बढ़ाने की ज़रूरत है।

हुजूर सल्ल0 का हिल्म नौजवानों के साथ

अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 हिल्म की एक मिसाल थे, बच्चों के साथ भी हिल्म, बूढ़ों के साथ भी, औरतों के साथ भी, जवानों के साथ भी, हर एक के साथ हिल्म का बरताव करते थे। चुनांचे एक नौजवान सहाबी रज़ि0 हैं, वह कहते हैं कि मुझे आदत थी कि जब मुझे भूक लगती तो मुझे जो भी खजूर का फल पसंद आता, मैं उसे

तोड़ के खा लेता था, एक दिन मुझे मालिक ने पकड़ लिया और वह नबी सल्ल0 के पास लेकर आया, वह कहते हैं कि पहले तो मैं बड़ा घबराया कि पता नहीं क्या होगा, मुझे दुर्रे लगेंगे या मेरा हाथ कटेगा, मैं बड़ा नर्वस था, उसने आ के नबी सल्ल0 की ख़िदमत में कहा कि नबी सल्ल0! यह लड़का मेरी खजूरें बग़ैर इजाज़त के तोड़ के खाता है, नबी सल्ल0 ने मुझे देखा और मुझे अपने क़रीब बुलाया—हम होते तो मुआमला को कैसे Deal (अंजाम तक पहुंचाना) करते? ऐ फ़लां! तू ऐसा और तू वैसा, ऐसे मिज़ाज से हम बात शुरू करते, दो चार गालियां निकालते—नबी सल्ल0 ने उसको अपने पास बुलाया, वह कहते हैं कि मैं डरते डरते क़रीब हुआ, नबी सल्ल0 ने शफ़क़त भरा हाथ मेरे सर पर रखा, हाथ सर पर रखने से मेरा आधा डर ख़त्म हो गया, मेरे अंदर Confidence (खुद एतमादी) आ गया, नबी सल्ल0 ने पूछाः भाई! तुम दूसरों की खजूरें बग़ैर इजाज़त के क्यों खाते हो? मैंने अर्ज़ किया; ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0! मुझे भूक लगी होती है, मुझे जो खजूर पसंद होती है मैं तोड़ के खा लेता हूं, तो नबी सल्ल0 ने मुझे मसला समझाया, फ़रमाया कि देखो! जो खजूरें नीचे गिरी पड़ी होती हैं उसका तो इज़्ने आम होता है, सबको इजाज़त है, लिहाज़ा जो खजूर नीचे गिरी हो तो बेशक उसको खा लिया करो, लगी खजूरें तोड़ के खाने के लिये मालिक से इजाज़त लेनी ज़रूरी है, फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल0 ने मसला समझा दिया तो मुझे पता चल गया कि क्या कर सकता हूं, क्या नहीं कर सकता, फ़िर इसके बाद नबी सल्ल0 ने एक दुआ दी कि ऐ अल्लाह! इसके रिज़्क़ में बरकत अता फ़रमा और इनकी भूक को दूर फ़रमा दे, वह सहाबी रज़ि0 कहते हैं कि मैं वहां से लौट के आया फिर पूरी ज़िंदगी मैंने किसी की चीज़ को बग़ैर इजाज़त इस्तेमाल नहीं की। यह होता

है हिल्म कि जड़ ही काट के रख दी थी, नबी सल्ल० ने पहले पूछा कि मसला क्या? फिर मसला समझाया, फिर उनको दुआ भी दी, चुनांचे उसने गुनाह ही छोड़ दिया।

हिल्म से महरूमी और इसके नुक्सानात

क्या हम अपने घर में अपने बच्चों के साथ ऐसा ही मुआमला करते हैं? हम तो ज़िक्र में लगे हुए हैं, दावत में लगे हुए हैं, दीन में लगे हुए हैं, लेकिन नौजवान बच्चा बअज़ मर्तबा रात देर में सोया, जवानी की पक्की नींद, वक़्त पर नहीं उठ सका तो एक मर्तबा आवाज़ दी, नहीं उठा तो दूसरी मर्तबा जाके डांटना शुरू कर देते हैं कि मुर्दार! सोया पड़ा है, शर्म नहीं आती, बैल की तरह खाता है, नमाज़ पढ़ने के लिये नहीं उठता, अब ज़रा सोचिये! हम दीनदार होकर अपने बच्चों को इस तरह दीन की दावत दे रहे हैं तो मालूम हुआ कि हमारे अंदर आज इस Tolerance (हिल्म, बर्दाश्त की सिफ़त) की बहुत ज़्यादा कमी है, हद से ज़्यादा कमी है। इसी वजह से घरों में झगडें ज़्यादा हैं, कोई घर बता दीजिये जहां मियां बीवी के झगड़े, भाई भाई के झगड़े, पड़ोसी के झगड़े, न हों, हर जगह झगड़े हैं, इसकी बुन्याद यह होती है कि Tolerance नहीं होती है, बात बर्दाश्त ही नहीं होती। और हम ने कई जगह देखा कि दो बंदों में झगड़ा है, यह भी बोल रहा है, वह भी बोल रहा है, न यह सुन रहा है न वह सुन रहा है, तो फिर मसला कैसे हल होगा? इतनी भी Tolerance हमारे यहां नहीं होती।

हुज़ूर सल्ल० का हिल्म औरतों के साथ

नबी सल्ल० औरतों के साथ भी हिल्म का मुआमला फ़रमाते थे, चुनांचे एक मर्तबा सय्यदा आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० ने कोई बात की, नबी सल्ल० ने उनको बात समझाई, इतने में अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि०

आ गए, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः अबू बक्र! आप हकम बन कर हमारा फ़ैसला करवा दें, उन्होंने कहाः बहुत अच्छा, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः आइशा! तुम बात बताओगी या मैं बात बताऊं? उन्होंने जल्दी में कह दियाः आप ही बताएं, लेकिन ठीक ठीक बताएं, अब सय्यदना सिद्दीक़े अक्बर रज़ि0 ने जब यह सुना उन्होंने कहाः आइशा! तुझे तेरी मां रोए, क्या नबी सल्ल0 सही नहीं बताएंगे? एक थप्पड़ लगाना चाहा, नबी सल्ल0 ने अपने हाथ पर रोक लिया बचाया, आइशा रज़ि0 नबी सल्ल0 के पीछे आके छिप गईं, कि अब्बू हैं कहीं दूसरा न लगा दें, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः अबू बक्र! हम अपना मुआमला ख़ुद हल कर लेंगे, अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 चले गए तो नबी सल्ल0 ने पीछे मुड़ के कहाः आइशा! थप्पड़ से मैंने तुझे बचाया। मसला ही हल हो गया, तो अल्लाह के नबी सल्ल0 का घर वालों के साथ हिल्म का यह मुआमला था।

हुज़ूर सल्ल0 का हिल्म बूढ़ों के साथ

अल्लाह के रसूल सल्ल0 बूढ़ों के साथ भी हिल्म का मुआमला फ़रमाते थे, चुनांचे एक सहाबी जो दीहात के रहने वाले थे, वह आए और मस्जिदे नबवी के अंदर आकर बैठे, उनको Urination (पेशाब) की ज़रूरत पेश आई, मस्जिदे नबवी का Covered Area (ढकी हुई जगह) जो था वह छोटा सा था, मगर जो Land occupied (मक़बूज़ा खुली ज़मीन) थी वह ज़रा ज़्यादा थी Courtyard (सिहन, आंगन) की तरह सिहन भी था, उनको पता नहीं था, और दीहाती लोगों को तो जहां जगह मिल जाए वह पेशाब कर लेते हैं वह कमरे से निकले और उन्होंने पेशाब करना शुरू कर दिया, अब जिसने देखा उसने कहा अरे! क्या कर रहे हो? नबी सल्ल0 ने मना कर दिया, अब नबी सल्ल0 का तहम्मुल और हिक्मते

अमली देखिये!—जो बंदा पेशाब करने की इब्तिदा कर चुका हो फिर वह तो उसके अपने इख़्तियार में भी नहीं होती, अगर उसको मना किया जाता तो बदन भी नापाक, कपड़े भी नापाक, और मस्जिदे नबवीं का ज़्यादा हिस्सा भी नापाक होता, नबी सल्ल0 ने ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई, वह फ़ारिग़ हो गए, मिट्टी इस्तेमाल कर ली, फिर उठ के आ गए। नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः देखो! मस्जिद का घर है, अल्लाह बड़े अज़ीम हैं, हमें उसके घर को पाक साफ़ रखना चाहिये, जब नबी सल्ल0 ने बात समझाई तो उन बड़े मियां को महसूस हुआ कि मैं कितना बड़ा Blunden (बहुत बड़ी ग़लती) कर बैठा, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0! मुझे अब एहसास हुआ कि मुझ से वाक़ई ग़लती हुई, मैं आज के बाद कभी कोई ऐसा काम नहीं करूंगा। नबी सल्ल0 ने बात समझाने के बाद जब मजलिस बरख़ास्त की तो वह सहाबी रज़ि0 जाने लगे, नबी सल्ल0 ने देखा कि उनके कपड़े फटे हुए हैं, अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने उनको नए कपड़े हदये के तौर पर दिये, उन्होंने वह कपड़े पहन लिये, और बड़े ख़ुश हुए, जब जाने लगे तो देखा कि पैदल जा रहे हैं, नबी सल्ल0 ने उनको सवारी भी पेश की कि भाई! आप पैदल आए हैं, सवारी पे सवार होके जाएं, वह सवारी पे सवार हो के गए, जब अपने गांव पहुंचे तो गांव से बाहर ही चिल्लाने लगे ऐ मेरे चचा, ऐ मेरे मामू, ऐ मेरे भाई, सब लोग हैरान कि तुझे क्या हो गया? क्यों तुम इस तरह आवाज़ें लगा रहे हो? उसने कहा कि मैंने एक ऐसे मुअल्लिम को देखा है कि मुझ से तो इतनी बड़ी ग़लती हुई, लेकिन न उन्होंने मेरी Public Insult (सरे आम बेइज़्ज़त करना) की, न उन्होंने Punish (सज़ा देना) किया, न मुझे दूसरों के सामने रुसवा किया, प्यार से बात समझाई, जब मैं आने लगा तो उन्होंने मुझे कपड़े भी तोहफ़े में दिये

और सवारी भी तोहफ़े में दी। वह सब कहने लगे अच्छा अगर इतने अख़्लाक़ वाला बंदा है तो हम भी तेरे साथ जाएंगे, उस बस्ती से तीन सौ आदमी उस सहाबी रज़ि० के साथ आए और उन्होंने कलिमा पढ़ा, अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल० की Patience (सब्र) का और Tolerance (हिल्म) का यह हाल था।

इमाम अबू यूसुफ़ रह० का हिल्म

हमारे बुज़ुर्गों की ज़िंदगी में भी यह चीज़ नज़र आती है, इमाम अबू यूसुफ़ रह० अपने वक़्त के Chief justice थे, क़ाज़ियुल क़ज़ा थे, उनकी एक आदत थी कि जो मसला उनको अज़बर नहीं होता था यअ़नी मुतालआ फ़ौरी नहीं होता था तो वह कह देते थे: "لا أدرى" भाई! मुझे नहीं पता---हमारा तो हाल यह है कि जिसको कुछ भी नहीं आता, वह भी मुफ़्ती बना फिरता है, मर्द से पूछो, औरत से पूछो, फ़ौरन फ़तवा देना शुरू कर देते हैं, लेकिन वह अकाबिर हज़रात इतने मुहतात थे कि बंदा मसला पूछता, अगर फ़ौरी तौर पे अज़ बर नहीं होता था, या वह जुज़्इया पहले सामने नहीं आया होता था, तो कह देते थे "لا أدرى" भाई! मुझे नहीं पता, मक़्सद यह था कि Consult (रुजूअ़) करूंगा, देखूंगा, फिर दोबारा जवाब दे दूंगा। अब एक मर्तबा बैठे हुए थे, एक नौजवान आया और उसने आके कोई मसला पूछा, हज़रत ने सुन के कहा: "لا أدرى" उसको गुस्सा आ गया, वह कहने लगा: ऐसे ही Chief justice बने हुए हैं, आधे ख़ज़ाने के बराबर तन्ख़्वाह लेते हैं और जब मसला पूछते हैं तो कहते हैं "لا أدرى" मुझे नहीं आता, अब देखिये उसने कैसी बेइज़्ज़त करने वाली बात की कि Chief justice बने हुए हैं और आधे ख़ज़ाने के बराबर तन्ख़्वाह लेते हैं और मसला पूछते हैं तो कहते हैं "لا أدرى" तो हज़रत मुस्कुराए और फ़रमाया कि भाई!

यह तन्ख़्वाह मेरी जिहालत के बक़द्र मिलती तो पूरे ख़ज़ाने से ज़्यादा मिलती, वह बच्चा मुस्कुरा पड़ा और बात ख़त्म हो गई, तो देखिये अकाबिर का हिल्म कैसा था।

हज़रत थानवी रह0 का हिल्म

हमारे हज़रत अक्दस थानवी रह0 एक मर्तबा कहीं बयान के लिये तशरीफ़ ले गए, उस इलाक़े में कोई मुख़ालिफ़ भी था, उसने बयान से पहले एक चिठ हज़रत के पास भेज दी, जब आप ने चिठ पढ़ी तो पर्ची के ऊपर तीन बातें लिखी हुई थीं, पहली बात लिखी हुई थी कि "तुम काफ़िर हो" और दूसरी बात कि "हराम ज़ादे हो" और तीसरी बात यह कि "संभल के बात करना"। अब हम जैसा कोई Short Tempered (जल्द तैश में आ जाने वाला) बंदा होता तो कहता कि मैं ऐसे नामाकूल लोगों में बयान ही नहीं करता, उठ कर ही आ जाता, मगर हमारे अकाबिर के हौसले बड़े थे, ज़र्फ़ बड़े थे, उन्होंने वह चिठ पढ़ कर सब लोगों को सुनाई और सुनाने के बाद फ़रमाया कि देखो भाई! पहली बात इस में लिखी है कि तुम काफ़िर हो, तो भाई सब गवाह रहो मैं कलिमा पढ़ के मुसलमान होता हूं: "أشهدُ أنْ لا إلٰه إلّا اللّٰه وأشهدُ أنّ محمداً رسولُ اللّٰه" फिर उसमें लिखा है कि तुम हरामज़ादे हो, तो भई, मेरे वालिदैन के निकाह के गवाह भी ज़िंदा हैं, मैं उनके नाम बता देता हूं, जो बंदा Verify (तसदीक़) करना चाहे, वह जाके पूछ ले कि मैं निकाह की औलाद हूं कि ज़िना की, इसका भी पता चल जाएगा और फिर तीसरी बात लिखी कि संभल के बात करना तो भाई! मैं चंदा करने तो आया नहीं हूं, मैं तो दीन की बात करने आया हूं जो खरी बात होगी वह मैं सुना दूंगा, इसके बाद बयान शुरू फ़रमाया। अब बताइये! कितना बड़ा पहाड़ बन सकता था मगर आपने कितने

आराम के साथ मसला को हल कर दिया, इसको कहते हैं Tolerance। और आज हमारे अंदर इस Tolerance की कमी है, छोटी छोटी बात पे फ़ौरन React (रद्दे अमल) कर देना, Instantaneously (फ़ौरी) गुस्सा के अंदर आ जाना, यह मोमिन का शैवा नहीं होता, इतना जज़्बातीपन का होना कि बिना सोचे समझे हाथ उठा लेता, क़दम उठा लेता, बेवक़ूफ़ी की अलामत होती है, ठंडे दिल व दिमाग़ से इंसान सोचे कि मुझे क्या करना है शरीअत का मुझे हुक्म क्या है। लिहाज़ा हम अपने अंदर हिल्म पैदा करें।

आप ने देखा होगा कि मशीनें जब बनाई जाती हैं तो उन मशीनों के अंदर Tolerance Clearance होती है, Shape (बनावट) का साइज़ इतना होगा, तो Barring का साइज़ उतना होगा, अब उनमें कुछ Thousand (हज़ार) का Difference (फ़र्क़) होता है, अगर वह फ़र्क़ न हो तो उस Shape के ऊपर Barring फ़िट ही न हो सकेगा, मशीन फ़िट ही न होगी तो चल ही न सकेगी, जाम हो जाएगी, तो जैसे मशीन को चलने के लिये Tolerance का होना ज़रूरी है, इसी तरह इंसान की मशीन को चलने के लिये भी Tolerance का होना ज़रूरी है। और आज हम बीवी की, भाई की, वालिदैन की, पड़ोसी की, छोटी सी बात बर्दाश्त नहीं करते, हमने कई नौजवानों को देखा कि ज़रा सी बात पे वालिद ने समझा दिया तो गुस्सा कर लिया, अम्मी से नहीं बोलते, क्योंकि अम्मी ने समझा दिया, भाई! अम्मी नहीं समझाएगी तो कौन समझाएगा? समझाने पे नौजवान अपनी मां से नाराज़ फिरते हैं, Tolerance की इतनी कमी हो गई, लिहाज़ा आज की इस मजलिस में हमें अपने दिल में यह अहद करना है कि हम अपने

अंदर Tolerance को बढ़ाएंगे और घरों के अंदर एक अच्छा इंसान बन कर ज़िंदगी गुज़ारेंगे, एक अच्छा पड़ोसी बनेंगे, शहर का एक अच्छा फ़र्द बनेंगे, एक अच्छा मोमिन मुसलमान बन कर अल्लाह का बंदा बन कर ज़िंदगी गुज़ारेंगे।

नबी सल्ल0 का हिल्म

नबी सल्ल0 की अपनों के साथ Tolerance तो थी ही, अल्लाह के नबी सल्ल0 तो कुफ़्फ़ार के साथ भी हिल्म के साथ पेश आते थे, ज़रा दिल के कानों से बात सुनियेगा! बात बड़ी ख़ूबसूरत और अजीब है, यहूदियों के एक आलिम थे, उनका नाम ज़ैद बिन साना था, वह मालदार भी थे और हबर भी थे यअ़नी आलिम भी बड़े थे, वह अपने इस्लाम लाने का वाक़िआ बयान करते हैं और इस वाक़िआ को अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि0 ने रिवायत किया "قَـــالَ" तो ज़ैद रज़ि0 ने कहा "لَــمْ يَبْـقَ مِـنْ عَـلامَاتِ النُّبُوةِ شيىءِ اِلَّا وقَدْ عَـرفْتُهُ فِى وَجهِ محمدٍ ﷺ حِين نظرتُ اِليه اِلَّا اثْنَيْنِ" कि जब मैंने पहली नज़र मुहम्मद सल्ल0 के चेहरे पर डाली तो उनमें नुबुवत की तमाम अलामतें मुझे नज़र आ गईं सिवाए दो अलामतों के "لَـــــم أخبـرهــامنه" मुझे दो निशानियों का पता न चल सका, एक निशानी तौरात में यह लिखी हुई थीः "يَسْبِـقُ حلْمُه غضبَه" कि वह जो नबी आख़िरुज़्ज़मां होंगे, उनका हिल्म उनके गुस्से से ज़्यादा होगा और जो बंदा जितना उनके साथ जिहालत का बरताव करेगा, उतना उनका हिल्म और बढ़ता जाएगा, यह दो निशानियां मुझे नज़र न आएं "فَكُنْتُ أَتَلَطَّفُ لَهٗ لِاَنْ أُخالِطَهٗ" अब मैं मौक़ा की तलाश में था कि मुझे Interact करने, लेनदेन, बातचीत का कोई मौक़ा मिले, तो मैं आज़माऊं कि उनके अंदर हिल्म कितना है, वह कहते हैं: "فَخرَجَ رَسولُ اللّٰهِ ﷺ يَوْمًا مِنَ الأيَّامِ مِنَ الْحُجُراتِ" एक दिन नबी अलै0

हुजरा से बाहर तशरीफ़ लाए "وَمَعَهُ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِب" और अली बिन अबी तालिब रज़ि० साथ थे, "فَأَتَاهُ رَجُلٌ عَلَى رَاحِلَتِهِ كَالْبَدَوِيّ" एक बदवी सहाबी उनके पास सवारी पे सवार हो के आए और कहने लगे "يَا رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ" ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल० "اِنَّ قَرِيَةَ بَنِي فُلَان قَدْ أَسْلَمُوا" फ़लां बस्ती के लोग ईमान ले आए और उनको तंगदस्ती और क़हत ने परेशान कर दिया "فَاِنْ رَأَيْتَ أَنْ تُرْسِلَ اِلَيْهِمْ بِشَيْءٍ تُعِيْنُهُمْ" अगर आप उनको कोई चीज़ Help (इम्दाद) के तौर पर देना चाहते हैं तो मैं उनको पहुंचा दूंगा "فَلَمْ يَكُنْ مَعَهُ شَيْءٌ" अल्लाह के हबीब सल्ल० के पास देने के लिये कुछ नहीं था जो वह उसको दे सकते "قَالَ زَيْد" ज़ैद कहते हैं कि मैंने सोचा सुनहरा मौक़ा और Golden Opportunity है, "فَدَنَوْتُ مِنْهُ" में ज़रा क़रीब हो गया "فَقُلْتُ يَا مُحَمَّدُ" मैंने कहा ऐ मुहम्मद सल्ल०! "اِنْ رَأَيْتَ أَنْ تَبِيْعَنِي تَمرًا مَعْلُومًا مِنْ حَائِطِ بَنِيْ فُلَان اِلَى أَجَلٍ كَذَا وكَذَا" आप मुझसे फ़लां फ़लां बाग़ की इतनी खजूरें बेचने का सौदा करें तो मैं आपको Advance Payment (पेशगी अदाइगी) अभी कर देता हूं, आप इसको दे दें, यह लेकर चला जाएगा "فَقَالَ" नबी सल्ल० ने जवाब में फ़रमाया "لَا يَا أَخَا يَهُود" ऐ यहूद के भाई मैं ऐसा नहीं कर सकता "وَلَا أُسَمِّيْ حَائِطَ بَنِيْ فُلَان وَلٰكِنْ أَبِيْعُكَ تَمرًا مَعْلُومًا اِلَى أَجَلٍ كَذَا وكَذَا" मैं इतने पैसे के बदले इतनी खजूरें तो बेच दूंगा, लेकिन जो तुमने Condition (शर्त) लगाई हैं वह शर्त मुझे नहीं मंजूर "فَقُلْتُ: نَعَم" वह यहूदी कहने लगा कि ठीक है, बस यह Rate (भाव) है, आप को इतनी खजूरें देनी हैं, वह कहते हैं कि "فَبَايَعَنِي وَآتَيْتُهُ ثَمَانِيْنَ دِيْنَارًا فَأَتَاهُ الرَّجُلُ" यह डील हो गई, मैंने 80 दीनार दे दिये, नबी सल्ल० ने वह दीनार उस बंदे को दिये कि तुम जाके उन ग़रीबों को दे दो जो क़हत

की वजह से परेशान हैं, अब Date (तारीख़) तै हो गई थी कि मैं फ़लां Date (तारीख़) तक खजूरें दे दूंगा, अब सुनिये ज़ैद कहते हैं: "فلما كان قبل محل الاجل بيومين أو ثلثة" वह जो Date (तारीख़) तै की गई थी, उसमें दो दिन या तीन दिन अभी बाक़ी थे "خرج رسول الله ﷺ في جنازة رجل من الأنصار ومعه ابو بكر وعمرو عثمان في نفر من أصحابه" नबी सल्ल0 एक जनाज़ा पढ़ने के लिये आए, अबू बक्र व उमर व उसमान व अली रज़ि0 साथ थे, "فلما صلى على الجنازة أتيته" वह यहूदी कहता है कि जब नबी सल्ल0 ने जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाई तो उस वक़्त मैं आया, अब ज़रा समझने की बात यह है कि जनाज़ा पढ़ने में तो Community (मुआशरा) के सारे ही लोग होते हैं, इसका मतलब यह कि उसने सब के सामने यह मुआमला किया, कहता है "فأخذت بمجامع قميصه ورداءه" यह जो क़मीस और तहबंद का कमर का ज्वाइंट हिस्सा होता है, वह कहता है कि मैं आया और मैंने आके बग़ैर किसी तमहीद के वहां से कपड़े को पकड़ लिया यह तो Misbehave (बदतमीज़ी) करने वाली बात हुई और अकेले में भी नहीं बल्कि लोगों के सामने और आते ही बातचीत किये बग़ैर, चूंकि वह Intentionally (इरादे के साथ, क़सदन) ऐसा मुआमला कर रहा था कि मैं Misbehave (बदतमीज़ी) करूंगा और मैं देखूंगा कि यह आगे से React (रद्दे अमल) कैसे करते हैं, वह यहूदी कहता है "ونظرت إليه بوجه غليظ" और बड़े गुस्से वाले चेहरे से मैंने उनकी तरफ़ देखा "ثم قلت" फिर मैंने कहा "ألا تقضي يا محمد حقي" ऐ मुहम्मद! मेरी खजूरें क्यों नहीं मुझ को देते, "فو الله ما علمتكم يا بني عبد المطلب الا نسيّ القضاء مطلا" अल्लाह की क़सम ऐ बनी अब्दुल मुत्तलिब की औलाद! मैंने तुम से ज़्यादा Payment

(अदाइगी) करने में सुस्ती कोताही करने वाला कोई देखा ही नहीं है, अब ज़रा ग़ौर कीजिये! ग़रीबों में ख़ानदान का तअ़ना देना कितनी बड़ी बात होती थी, एक तो क़मीस को पकड़ के खींचा, गुस्से वाले चेहरे से देखा और ख़ानदान का भी तअ़ना दिया और अभी दो तीन दिन Deadline (इंतिहाए मुद्दत) में बाक़ी हैं, वह कहते हैं कि जब मैंने यह किया "فَنَظَرْتُ إِلَى عُمَرَ وعَيْنَاهُ تَدُورَانِ فِي وَجْهِهِ" — उमर रज़ि0 तो आशिक़ थे, उनके सामने नबी सल्ल0 के साथ कोई ऐसी बदतमीज़ी कैसे कर सकता था? वह Expect (सोच) ही नहीं कर सकते थे कि कोई बंदा मेरे आक़ा सल्ल0 के साथ इस क़दर Misbehave करेगा—ज़ैद कहते हैं कि मैंने उमर रज़ि0 की तरफ़ देखा, उनकी निगाहें मेरे चेहरे पर गड़ी हुई थीं "ثُمَّ قَالَ" फिर उमर रज़ि0 कहने लगे: "أَيْ عَدُوَّ اللّٰهِ" ओ अल्लाह के दुशमन! "أَتَقُولُ لِرَسُولِ اللّٰهِ مَا أَسْمَعُ" नबी सल्ल0 को तू यह कह रहा है जो मैं सुन रहा हूं? "فَوَالَّذِي بَعَثَهُ بِالْحَقِّ" उस ज़ात की क़सम जिसने नबी सल्ल0 को सच का पैग़ाम दे कर भेजा "لَوْ لَا مَا أُحَاذِرُ فَوْتَهُ لَنَزَعْتُ بِسَيْفِي رَأْسَكَ" अगर तेरा हक़ ज़ाए होने का मुझे डर न होता तो मैं तेरी गर्दन उड़ा देता, तू होता कौन है नबी सल्ल0 से ऐसे बात करने वाला, "وَرَسُولُ اللّٰهِ ﷺ يَنْظُرُ إِلَى عُمَرَ فِي تَكَوُّنٍ وتَبَسُّمٍ" ज़ैद कहते हैं कि नबी सल्ल0 ने उमर रज़ि0 को मुस्कुराते और तबस्सुम वाले चेहरे के साथ देखा Cool mind (ठंडे दिमाग़ के साथ) होकर उमर रज़ि0 को देखा "ثُمَّ قَالَ" फिर फ़रमाया "يَا عُمَرُ" ऐ उमर! "أَنَا وَهُوَ إِلَى غَيْرِ هٰذَا مِنْكَ أَحْوَجُ" मैं और यह बंदा तेरे दूसरे बर्ताव के मुस्तहिक़ थे "أَنْ تَأْمُرَهُ بِحُسْنِ الْإِقْتِضَاءِ وَتَأْمُرَنِي بِحُسْنِ الْقَضَاءِ" कि तुम उसको ऐसा कहते कि अगर किसी से कुछ मांगना हो तो Decent (मुहज़्ज़ब) तरीक़े से मांगना चाहिये और

मुझे भी समझाता कि अगर किसी को अदाइगी करनी हो Well in time (वक़्त पर) कर लेनी चाहिये, उमर तू उसे भी समझाता, तू मुझे भी समझाता, "اِذْهَبْ يَا عُمَرُ" ऐ उमर! अब जाओ "فَاقْضِهِ حَقَّهُ" उस बंदे को उसकी खजूरें भी दे दो "وَزِدْهُ عِشْرِينَ صَاعًا" और उसको 20 साअ खजूरें ज़्यादा दो---साअ एक पैमाना था, मसलन समझ लीजिये एक किलो---"مَكَانَ مَارَوَّعْتَهُ" कि तुमने उसको क्यों किया है, तुमने उसको जो धमकी दी है उस धमकी की Compensation (भरपाई) में उसकी खजूरें भी दे दो और 20 किलो खजूरें ज़्यादा भी दे दो "قَالَ زَيْد" ज़ैद कहते हैं "فَذَهَبَ بِيْ عُمَرُ" उमर रज़ि0 मुझे साथ ले गए "فَقَضَانِي" उन्होंने मेरी खजूरें भी तौल के मुझे दे दीं "وَزَادَنِي" और 20 किलो खजूरें ज़्यादा भी दीं "فَأَسْلَمْتُ" मैं लौट के आया और आके मैंने इस्लाम क़बूल कर लिया। अल्लाह के हबीब सल्ल0 का हिल्म ऐसा था कि काफ़िर उस हिल्म को देख कर इस्लाम क़बूल किया करते थे और आज इस हमारी जज़्बातियत को देख के लोग दीन से मुतनफ़्फ़िर हो जाते हैं, हम अपने घर में तहम्मुल मिज़ाजी का इज़हार नहीं कर सकते? क्यों होते हैं यह घरों में झगड़े? सब कलिमा पढ़ने वाले हों तो झगड़े तो नहीं होने चाहियें, इसलिये कि तहम्मुल मिज़ाजी ही नहीं, बर्दाश्त ही नहीं होती, छोटी छोटी बात का बतंगड़ बन जाता है, आज हमें यह सबक़ फिर सीखने की ज़रूरत है कि अल्लाह हमें इल्म भी अता फ़रमाए और इल्म के साथ हिल्म भी अता फ़रमाए।

याद रखिए! सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब इस दुनिया से पर्दा फ़रमाने लगे तो आख़िरी बात जो आप ने फ़रमाई, आइशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि मैंने कान लगा के सुनी तो कह रहे थे "اَلتَّوحِيد اَلتَّوحِيد" कि तौहीद पे क़ाइम रहना और दूसरी बात फ़रमाई "وَمَا

"مَلَكَتْ اَيْمَانُكُم" जो तुम्हारे मातहत हैं, नौकर हैं, ख़ादिम हैं, औलाद हैं, बीवी बच्चे हैं, यह सब मातहत हैं, कहते कि मातहतों के बारे में अल्लाह से डरते रहना, यह नबी सल्ल0 का इस उम्मत को Last Message (आख़िरी पैग़ाम) है, आप सल्ल0 ने पर्दा फ़रमाने से पहले जो पूरी ज़िंदगी तालीमात थीं उसकी Summary (खुलासा) बताई वह यह थी कि अपने मातहतों के बारे में अल्लाह से डरते रहना, और आज गुस्से का इज़्हार भी उन्हीं के साथ होता है।

और नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि क़्यामत के दिन मैं इन मातहतों का वकील बनूंगा और जो मातहतों के हुक़ूक़ पामाल करेगा मैं क़्यामत के दिन उनके हुक़ूक़ उनको लेकर दूंगा, अब क्या अजीब मंज़र होगा, ख़ाविंद कलिमा पढ़ने वाला खड़ा है और बीवी मुक़द्दमा दाइर करती है कि ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! इसने मुझे सताया हुआ था, निकाह में मुझे रखा हुआ था और ग़ैर लड़कियों के पीछे भागता फिरता था, मेरे ऊपर घर में तवज्जो नहीं देता था, बात करती थी तो झगड़ा करता था, गुस्सा उतारता था, मार पीट करता था, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0! मुझे हक़ लेके दीजिये, नबी सल्ल0 फ़रमाते हैं "اَنَا حَجِيْجُهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ" मैं क़्यामत के दिन Attorney (वकील) बनूंगा, हक़ लेकर दूंगा अब सोचिये जिस की शफ़ाअत की हम तवक्क़ो रखते हैं कि उस शफ़ाअत की वजह से हमें क़्यामत के दिन अल्लाह मग़फ़िरत फ़रमाएंगे अगर वह वकील बन कर खड़े हो गए हमें कौनसी जगह समाएगी कहां ठिकाना होगा आज वक़्त है अपनी कोताहियों से सच्ची मुआफ़ी मांग कर अल्लाह के सामने एक नेक इंसान बनने का इरादा फ़रमाइये अल्लाह हमें इल्म भी अता फ़रमाइये और हिल्म भी अता फ़रमा दीजिये एक अच्छा इंसान बन कर ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाइये।

وآخر دعوانا أن الحمدُ لله رب العالمين

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का इर्शाद है "وَلِلّٰهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا" अल्लाह तआला के प्यारे प्यारे नाम हैं, इन नामों का वासता देकर मांगो। चुनांचे हदीसे पाक में आता है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का एक नाम है जिसको इस्मे आज़म कहा जाता है, इस नाम के साथ दुआ मांगें तो दुआ क़बूल होती है। अब इस पर मुफ़स्सिरीन ने बड़ी तफ़सील लिखी कि वह "يَا حَىُّ يَا قَيُّومُ" है या इस्मे जलाला "اللّٰه" है लेकिन एक बात पक्की है कि जो अल्लाह के 99 नाम हैं, उनमें से कोई एक नाम है, इसलिये हम दुआ पूरे अस्माउल हुसना पढ़ कर मागेंगे, तरीक़ा यह होगा कि यह आजिज़ पढ़ेगा اَلرَّحْمَانُ يَا اللّٰه، आप को ख़ामोशी से सुनना है और आपको सिर्फ़ या अल्लाह कहना है, फिर यह आजिज़ पढ़ेगा "اَلرَّحِيْمُ يَا اللّٰه،" फिर आपको "يَا اللّٰه" कहना है, सिर्फ़ या अल्लाह, या अल्लाह, जिस तरह बच्चा मां को मनाता है तो अम्मी, अम्मी, अम्मी, अम्मी कहता है और उसकी ज़बान से जो अम्मी का लफ़्ज़ निकलता है तो मां का दिल मोम हो जाता है, बस हमें भी आज इसी तरह अल्लाह अल्लाह अल्लाह ऐसे दिल से कहना है कि अल्लाह की रहमत जोश में आ जाए, अल्लाह को मनाना है, बस इस नियत के साथ कि अपने गुनाहों की मुआफ़ी मांग के छोड़ना है, आप ने देखा होगा कि छोटा बच्चा रोता है तो वह यह नहीं देखता कि कमरे के अंदर भाई बैठा है, बहन बैठी है, फूफी बैठी है, उसको किसी की परवाह नहीं होती, आज इसी तरह जब अल्लाह को पुकारें तो इर्दगिर्द से बिल्कुल हट कट जाएं, बस आप हों और अल्लाह हों, इस तरह ताल जोड़ के आज अपने अल्लाह से दुआ मांगनी है, अल्लाह तआला हमारी इन दुआओं को क़बूल फ़रमाए।

سُبْحانَ رَبِّیَ الاَعْلٰی الْوهَّاب

اللّٰهمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنا محمدٍ وعَلٰی آلِ سَیِّدِنا محمدٍ وبارِکْ وسَلِّمْ

رَبَّنا ظَلَمْنا أنفُسَنا وَإنْ لَمْ تَغفِرْ لَنا وَتَرْحَمْنا لَنَکُوْنَنَّ مِنَ الْخاسِرِیْنَ

الرَّحْمٰنُ یَا اَللّٰه، الرَّحِیمُ یَا اَللّٰه، الْمَالِکُ یَا اَللّٰه، الْقُدُّوسُ یَا اَللّٰه، السَّلامُ یَا اَللّٰه، الْمُؤمِنُ یَا اَللّٰه، الْمُهَیْمِنُ یَا اَللّٰه، العَزیزُ یَا اَللّٰه، الْجَبَّارُ یَا اَللّٰه، الْمُتَکَبِّرُ یَا اَللّٰه، الْخالِقُ یَا اَللّٰه، الْبارِیءُ یَا اَللّٰه، الْمُصَوِّرُ یَا اَللّٰه، الْغَفَّارُ یَا اَللّٰه، الْقَهَّارُیَا اَللّٰه، الْوهَّابُ یَا اَللّٰه، الرَّزَّاقُ یَا اَللّٰه، الْفَتَّاحُ یَا اَللّٰه، الْعَلِیمُ یَا اَللّٰه، الْقابِضُ یَا اَللّٰه، الباسِطُ یَا اَللّٰه، الْخافِضُ یَا اَللّٰه، الرَّافِعُ یَا اَللّٰه، الْمُعِزُّ یَا اَللّٰه، الْمُذِلُّ یَا اَللّٰه، السَّمِیْعُ یَا اَللّٰه، الْبَصِیْرُ یَا اَللّٰه، الْحَکَمُ یَا اَللّٰه، الْعَدْلُ یَا اَللّٰه، اللَّطِیْفُ یَا اَللّٰه، الْخَبِیْرُ یَا اَللّٰه، الْحَلِیْمُ یَا اَللّٰه، العظِیمُ یَا اَللّٰه، الغفورُ یَا اَللّٰه، الشَّکورُ یَا اَللّٰه، الْعلِیُّ یَا اَللّٰه، الْکَبِیْرُ یَا اَللّٰه، الْحَفِیْظُ یَا اَللّٰه، الْمُقِیْتُ یَا اَللّٰه، الْحَسِیْبُ یَا اَللّٰه، الْجَلِیْلُ یَا اَللّٰه، الْکَرِیمُ یَا اَللّٰه، الرَّقِیبُ یَا اَللّٰه، الْمُجِیبُ یَا اَللّٰه، الواسِعُ یَا اَللّٰه، الْحَکیمُ یَا اَللّٰه، الْوَدُودُ یَا اَللّٰه، الْمَجِیدُ یَا اَللّٰه، الْباعِثُ یَا اَللّٰه، الشَّهِیدُ یَا اَللّٰه، الحَقُّ یَا اَللّٰه، الْوَکیلُ یَا اَللّٰه، الْقوِیُّ یَا اَللّٰه، الْمَتِینُ یَا اَللّٰه، الْوَلِیُّ یَا اَللّٰه، الْحَمِیدُ یَا اَللّٰه، الْمُحْصِیُ یَا اَللّٰه، الْمُبدِیءُ یَا اَللّٰه، الْمُعِیدُ یَا اَللّٰه، الْمُحْیِی یَا اَللّٰه، الْمُمِیتُ یَا اَللّٰه، الْحَیُّ یَا اَللّٰه، الْقَیُّومُ یَا اَللّٰه، الْواجِدُ یَا اَللّٰه، الاَحَدُ یَا اَللّٰه، الصَّمَدُ یَا اَللّٰه، القادِرُ یَا اَللّٰه، الْمُقْتَدِرُ یَا اَللّٰه، الْمُقدِّمُ یَا اَللّٰه، الْمُؤخِرُ یَا اَللّٰه، الاَوَّلُ یَا اَللّٰه، الآخِرُ یَا اَللّٰه، الظَّاهِرُ یَا اَللّٰه، الباطِنُ یَا اَللّٰه، الوالِی یَا اَللّٰه، الْمُتعالِی یَا اَللّٰه، البرُّ یَا اَللّٰه، التوَّابُ یَا

اَللّٰہ، اَلْمُنْتَقِمُ یَا اَللّٰہ، اَلْعَفُوُّ یَا اَللّٰہ، الرَّؤُوْفُ یَا اَللّٰہ، مالِکُ الْمُلْکِ ذوالجَلالِ والاِکْرام یَا اَللّٰہ، اَلْمُقْسِطُ یَا اَللّٰہ، اَلْجامِعُ یَا اَللّٰہ، اَلْغَنِیُّ یَا اَللّٰہ، اَلْمُغْنِی یَا اَللّٰہ، اَلْمانِعُ یَا اَللّٰہ، اَلضَّارُّ یَا اَللّٰہ، النافِعُ یَا اَللّٰہ، النُّورُ یَا اَللّٰہ، اَلْهَادِی یَا اَللّٰہ، اَلْبَدِیْعُ یَا اَللّٰہ، الباقِیُ یَا اَللّٰہ، اَلْوارِثُ یَا اَللّٰہ، الرَّشِیْدُ یَا اَللّٰہ، الصَّبُورُ یَا اَللّٰہ، یَا اَللّٰہ،یَا اَللّٰہ،یَا اَللّٰہ،یَا اَللّٰہ،یَا اَللّٰہ،یَا اَللّٰہ،یَا اَللّٰہ،یَا اَللّٰہ،یَا اَللّٰہ،یَا اَللّٰہ،یَا اَللّٰہ،یَا اَللّٰہ،یَا اَللّٰہ،یَا اَللّٰہ،یَا اَللّٰہ،یَا اَللّٰہ،یَا اَللّٰہ.

ऐ करीम परवरदिगार! आप के बंदे आप के दर पर हाज़िर हैं, दामन फैलाए बैठे हैं, मेरे मौला! हमारे गुनाहों को बख़्श दीजिये, मुआफ़ फ़रमा दीजिये, कोताहियों से दरगुज़र कर दीजिये, ऐ अल्लाह! हमारे सर से गुनाहों का बोझ हटा दीजिये, हमें अच्छा इंसान बना दीजिये, नेकी और तक़्वा की ज़िंदगी अता फ़रमा दीजिये, दिलों को नूर से भर दीजिये, लोगों को मोम कर दीजिये, ऐ अल्लाह! दिलों को मुनव्वर कर दीजिये, अल्लाह! इल्म में बरकत अता फ़रमा, अमल में बरकत अता फ़रमा, रिज़्क़ में बरकत अता फ़रमा, सिहत में बरकत अता फ़रमा, कामों में बरकत अता फ़रमा, अल्लाह! क़दम क़दम पर अपनी बरकतें शामिले हाल फ़रमा, अल्लाह! हमें नमाज़ की हुज़ूरी नसीब फ़रमा, सज्दे का सुरूर नसीब फ़रमा, क़ुर्आन पाक पढ़ने का लुत्फ़ अता फ़रमा, रात के आख़िरी पहर की मुनाजात, की लज़्ज़त नसीब फ़रमा, ईमाने हक़ीक़ी की हलावत नसीब फ़रमा, ऐ करीम आक़ा! इससे पहले कि लोग हमें कलिमा पढ़ाएं हमें अपने इख़्तियार से कलिमा पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, इससे पहले कि ज़ाहिर की आंखें बंद हो जाएं, मन की आंखें खुलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा,

इससे पहले कि लोग हमें गुस्ल दें, हमें गुस्ले तौबा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, इससे पहले कि लोग कफ़न पहनाएं, हमें तक़्वा की पोशाक पहनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, इससे पहले कि हमारी नमाज़ पढ़ी जाए, अल्लाह! हमें नमाज़ की हजूरी नसीब फ़रमा, इससे पहले कि क़्यामत के दिन आप के सामने पेशी हो, अल्लाह! हमें अपनी बारगाह में क़बूलियत नसीब फ़रमा, ज़िंदगी के आख़िरी हिस्से को ज़िंदगी का बेहतरीन हिस्सा बना, क़्यामत के दिन को ज़िंदगी का सब से ज़्यादा ख़ुशियों भरा दिन बना, अल्लाह! हमें इल्म हासिल होने के बाद जिहालत के कामों से महफ़ूज़ फ़रमा, अल्लाह! क़ुर्ब हासिल होने के बाद दूरी से महफ़ूज़ फ़रमा, हिदायत मिलने के बाद गुमराही से महफ़ूज़ फ़रमा, अल्लाह! अज़िय्यतें मिलने के बाद ज़िल्लत से महफ़ूज़ फ़रमा, मेरे मौला! आप ने हम बेक़द्रों को कितनी नेअ़मतें अता फ़रमाई हैं, अल्लाह! हमें नेअ़मतों की क़द्रदानी की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, मेरे मौला! हमें नेअ़मतों से महरूम न फ़रमा, ऐ अल्लाह! दी हुई नेअ़मतें वापस न लीजिये, ऐ अल्लाह! और ज़्यादा अता फ़रमाइये, अल्लाह! मेहरबानी का मुआमला फ़रमा, ऐ अल्लाह! हमें परेशानियों से महफ़ूज़ फ़रमा, ग़मों से महफ़ूज़ फ़रमा, ऐ अल्लाह! ज़िल्लत से महफ़ूज़ फ़रमा, क़िल्लत से महफ़ूज़ फ़रमा, इल्लत से महफ़ूज़ फ़रमा, अपनी रहमतों की पुश्त पनाही नसीब फ़रमा, ज़िंदगी में कभी भी बेसहारा न फ़रमा, कभी भी बेआसरा न फ़रमा, कभी भी अपने दर से दूर न फ़रमा, हमेशा अपनी रहमतों की ठंडी छांव नसीब फ़रमा, ऐ अल्लाह! हमारे तीनों हरम की हिफ़ाज़त फ़रमा, करीम आक़ा! हमने ज़िंदगी में जो गुनाह छिप कर किये वह भी मुआफ़ फ़रमा, जो ज़ाहिर में किये वह भी मुआफ़ फ़रमा, जो महफ़िल में किये वह भी मुआफ़ फ़रमा, जो तन्हाइयों में किये वह भी मुआफ़

फ़रमा, जो गुनाह याद हैं वह गुनाह भी मुआफ़ फ़रमा, जो कर के भूल गए अल्लाह! वह गुनाह भी मुआफ़ फ़रमा, ऐ करीम! आप ने इर्शाद फ़रमायाः "وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ" सवाली को इंकार न करो, जब हम कमज़ोरों को हुक्म है कि हम सवाली को इंकार न करें, ऐ मालिक! हम भी तो आप के दर के सवाली हैं, ऐ अल्लाह! इंकार न फ़रमाइये झिड़कियां न दीजिये, अपने दर से ख़ाली न लौटाइये, ऐ अल्लाह! रहमत का मुआमला कर दीजिये, फ़ज़्ल का मुआमला फ़रमा दीजिये, ऐ अल्लाह! मेहरबानी का मुआमला फ़रमाइये, आप ने कुर्आन मजीद में फ़रमायाः "يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ" ऐ इंसानो! तुम सब फ़क़ीर हो, और दूसरी जगह फ़रमायाः "إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ" सदक़ात फ़क़ीरों के लिये होते हैं, जब हम फ़क़ीर हैं और सदक़ात फ़क़ीरों के लिये होते हैं, अल्लाह! हमें अपनी करीमी का सदक़ा दे दीजिये, रहीमी का सदक़ा दे दीजिये, सत्तारी का सदक़ा दे दीजिये, ग़फ़्फ़ारी का सदक़ा दे दीजिये, रज़्ज़ाक़ी का सदक़ा दे दीजिये, ऐ अल्लाह! हमारे दामन भर दीजिये, उम्मीदों से ज़्यादा अता फ़रमा दीजिये, ऐ अल्लाह! मेहरबानी का मुआमला फ़रमा दीजिये, अल्लाह! आप ने हारून और मूसा अलै0 को फ़िरऔन के पास भेजा तो उन्हें फ़रमायाः "فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَيِّنًا" कि जाओ और उसके साथ नरम बात करना, ऐ अल्लाह! जब फ़िरऔन के साथ आप ने उनको नर्मी का मुआमला करने का हुक्म फ़रमाया, वह फ़िरऔन तो "أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَى" कहता था, ऐ अल्लाह! यह सामने सारा वह मज्मा है जो रोज़ाना सज्दे में सर डाल कर "سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى" कहता है, अल्लाह! उनके साथ नर्मी कर दीजिये, अल्लाह उनके साथ नर्मी कर दीजिये, ऐ अल्लाह! नर्मी फ़रमा दीजिये, ऐ करीम! नर्मी कर दीजिये, ऐ हन्नान! नर्मी फ़रमा दीजिये, ऐ मन्नान! नर्मी फ़रमा दीजिये,

अल्लाह! गुनाह मुआफ़ कर दीजिये, आज की इस मजलिस में गुनाहों को बख़्श दीजिये, ख़ताओं को मुआफ़ कर दीजिये, ऐ अल्लाह! इस मज्मा में कितने नौजवान हैं जो आज सच्ची तौबा करना चाहते हैं, मेरे मौला! आज तो गर्म खून भी मुआफ़ियां मांग रहा है, मेरे मौला! मुआफ़ फ़रमा दीजिये, तौबा कबूल कर लीजिये, अल्लाह! अगर आप ने धुतकार दिया, तो शैतान बहकाएगा और ज़िंदगियां बर्बाद हो जाएंगी, अल्लाह! मेहरबानी कर दीजिये, मुआफ़ फ़रमा दीजिये, ऐ अल्लाह! हमें तक़्वा व तहारत की ज़िंदगी अता फ़रमाइये, पाकदामनी की ज़िंदगी अता फ़रमाइये, अल्लाह! हमारी इन दुआओं को अपनी रहमत से कबूल फ़रमा लीजिये, ऐ अल्लाह! इस मज्मा में कितने लोग ऐसे हैं जो बाल सफ़ेद कर बैठे, मगर दिल सियाह कर बैठे, वह अपने दिल का हाल किसके सामने जाकर खोलें, आप सीनों के भेद जानने वाले हैं, मेरे मौला! वह भी हाथ उठाए बैठे हैं, अल्लाह इनके सफ़ेद बालों की लाज रख लीजिये, मेरे मौला! आप के नबी सल्ल0 ने बतलाया कि आप सफ़ेद बालों से हया फ़रमाते हैं, ऐ अल्लाह! मेहरबानी फ़रमा दीजिये, ऐ अल्लाह! करम कर दीजिये, ऐ अल्लाह! हमारी तौबा क़बूल फ़रमा लीजिये, ऐ अल्लाह! इस मजलिस में छोटे छोटे बच्चे भी तो बैठे हैं, ऐ अल्लाह! इनके हाथों की मासूमियत का वास्ता देते हैं, ऐ अल्लाह! इन मासूमों के हाथ ख़ाली न लौटाइये, और इनकी बरकत से हम गुनहगारों के हाथों को भी क़बूल फ़रमा लेना, अल्लाह! मेहरबानी का मुआमला फ़रमा, रब्बे करीम! रहमतों का मुआमला फ़रमा, जिस्मानी बीमारियों को दूर फ़रमा, रूहानी बीमारियों को दूर फ़रमा, घरों की परेशानियों को दूर फ़रमा, अज़्दवाजी ज़िंदगी की परेशानियों को दूर फ़रमा, काम कारोबार की मुख़्तलिफ़ परेशानियों को दूर फ़रमा, बेऔलाद को औलाद अता

फ़रमा, औलादे नरीना के जो तलबगार हैं उनको औलादे नरीना अता फ़रमा, जो साहिबे औलाद हैं उनकी औलादों को नेकूकार बना, फ़रमांबरदार बना, मां बाप की आंखों की ठंडक बना, जिन घरों में जवान बच्चे बच्चियों मौजूद हैं, अल्लाह! उन बच्चों के मुस्तक़बिल को रौशन फ़रमा, मां बाप के लिये फ़र्ज़ अदा करने आसान फ़रमा, ऐ करीम! रहमतों का मुआमला फ़रमा, अल्लाह! आप के प्यारे यूसुफ़ अलै० करीम थे, उन्होंने भाइयों को मुआफ़ करते हुए कह दिया थाः "لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوم" आप के प्यारे हबीब सल्ल० भी करीम थे, उन्होंने क़ुरैशे मक्का को यही अलफ़ाज़ कहे थेः "لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوم" अल्लाह! आप सब करीमों से बड़े करीम हैं, ऐ मौला! आप आप अपने बंदों को यही फ़रमा दीजिये, "لَا تَثْرِيبَ عليكم اليوم" अल्लाह! गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे, ख़ताएं मुआफ़ हो जाएंगी, मेरे मौला! मुआफ़ कर दीजिये, अल्लाह! मुआफ़ फ़रमा दीजिये, ऐ अल्लाह! मेहरबानी का मुआमला फ़रमा दीजिये, हमारे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा दीजिये, अल्लाह! मांगना नहीं आता, हमें बिन मांगे अता फ़रमा दीजिये, ऐ अल्लाह! इतना बड़ा मज्मा आप से दिल में तवक़्क़ुआत लेकर बैठा है, आप ही ने तो फ़रमायाः कि अच्छे बुरों के साथ भी अच्छाई का ही मुआमला करें, ऐ अल्लाह! हम मानते हैं हम बुरे हैं, मगर अल्लाह! आप तो अच्छे हैं, आप हमारे साथ अच्छाई का मुआमला फ़रमा दीजिये, अल्लाह! हमें नेकी पर इस्तिक़ामत अता फ़रमा दीजिये, हमारे घरों को नबी सल्ल० की सुन्नतों का गुलशन बना दीजिये ऐ अल्लाह! हमें अख़्लाक़े मुहम्मदी सल्ल० का नमूना बना दीजिये, तक़्वा तहारत की ज़िंदगी अता फ़रमाइये, अल्लाह! मेहरबानी का मुआमला फ़रमा, अल्लाह! हमारी इन दुआओं को अपनी रहमत से क़बूल फ़रमा, अल्लाह! जो मांगा वह भी अता

फ़रमा, जिन दोस्तों ने पैग़ाम भेजे, ख़त लिखे, फ़ोन किये, या जिनके हमारे ऊपर हुकूक़ आते हैं, या जो हम से तवक़्क़ुआत रखते हैं, या जो अहबाब आना चाहते थे, मजबूरियों की वजह से नहीं आ सके, अल्लाह! सबको इन दुआओं में शामिल फ़रमा दीजिये, जो दूर बैठी औरतें अपने घरों में प्रोग्राम सुन रही हैं, आमीन कह रही हैं, अल्लाह! सब मर्दों औरतों की आमीन क़बूल कर लीजिये, उनको भी दुआओं में हिस्सा अता फ़रमाइये, अल्लाह! मेहरबानी का मुआमला फ़रमा, अल्लाह! हमारी इन दुआओं को अपनी रहमत से क़बूल फ़रमा, ऐ करीम! रहमतों का मुआमला फ़रमाइये, अल्लाह! आप के सामने कोई झूट नहीं बोल सकता, आप हमारे दिलों के भेद जानते हैं, अल्लाह! हम एक क़दम आगे ब़ढ़ना चाहते हैं, मगर दो क़दम पीछे हट जाते हैं, नफ़्स व शैतान रुकावट बनते हैं, ऐ अल्लाह! हमारे नफ़्स को नफ़्से मुत्मइन्ना बना दीजिये, शैतान को हमारे रास्ते से हटा दीजिये, ऐ अल्लाह! जो आसमान को ज़मीन पर गिरने से रोके हुए है, शैतान को हम पर मुसल्लत होने से रोक दीजिये, अल्लाह! हमें गुनाह के मौक़ों से बचा लीजिये, क़दम उठना चाहें उठे क़दमों को वापस लौटा दीजिये, गुनाह के लिये हाथ उठना चाहें तो बढ़ते हाथें को वापस लौटा दीजिये, अल्लाह! गुनाह की ज़िल्लत से महफ़ूज़ फ़रमा, तापआत की इ़ज़्ज़त नसीब फ़रमा, या अल्लाह! जो अहबाब दीनी तालीम के इदारे चला रहे हैं, उन सब के साथ अपनी मदद को शामिल फ़रमा दीजिये, जो मुख़्तलिफ़ इदारों के मुआविनीन हैं, उनके अपने मुक़र्रिबीन में शामिल फ़रमा दीजिये, रब्बे करीम! आज की इस मजलिस में हम सब की तौबा क़बूल फ़रमा लीजिये, रब्बे करीम! हमने देखा कि मां बाप के दिल में आप ने मुहब्बत डाली है, बच्चा अगर अपने बाप से कोई फल मांगे तो बाप उसके मुंह में कोई

कंकरी या पत्थर नहीं डालता, इस मुहब्बत की वजह से जो बाप के दिल में होती है, ऐ अल्लाह! सारी मख़्लूक़ की मुहब्बतें जमा कर दी जाएं इससे भी निन्नानवे गुना आप को अपनी मख़्लूक़ से मुहब्बत है, ऐ अल्लाह! उठे हाथों की लाज रख लीजिये, मेहरबानी का मुआमला फ़रमा दीजिये, बच्चा परेशान होता है, मां बाप की तरफ़ दौड़ता है, बंदा परेशान होता है परवरदिगार की तरफ़ लौटता है, ऐ बेकसों के दस्तगीर! ऐ टूटे दिलों को तसल्ली देने वाले! ऐ ख़ाली झोलों को भर देने वाले अल्लाह! हमने तो मां को देखा है कि बच्चा को नजासत में लथड़ा देखती है तो फैंक नहीं देती, छोड़ नहीं देती, समझती है कि यह तो नादान है, बेटा तो मेरा ही है, वह बच्चा को धो लेती है, सीने से लगा लेती है, ऐ करीम आक़ा! हम भी आप के बंदे हैं, मगर नादान हैं, गुनाहों की नजासत में लथड़े हुए हैं, ऐ अल्लाह! हमें रद्द न कर दीजिये, शैतान के हवाले न कर दीजिये, एक रहमत की नज़र डाल के हमें धो दीजिये और रहमत की चादर में जगह अता फ़रमा दीजिये, अल्लाह! हमें हिल्म अता फ़रमा, इल्म अता फ़रमा, ऐ अल्लाह! हमें नबी सल्ल0 के अख़्लाक़ से अपने आप को मुज़य्यन करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, ऐ अल्लाह! हमने दुनिया के बड़ों को देखा है कि जब उनके गुलाम उनकी गुलामी करते करते बूढ़े हो जाते हैं तो वह बादशाह गुलामों को आज़ाद कर देते हैं, अल्लाह! इस मज्मा में कितने लोग हैं, जो कलिमा पढ़ते पढ़ते बाल सफ़ेद कर बैठे, आप की गुलामी करते करते बूढ़े हो गए, अल्लाह! आज आप इन को जहन्नम की आग से आज़ाद कर दीजिये, जहन्नम की आग से बचा लीजिये, हालत हमारी ऐसी है कि हम से चंद किलो का वज़न नहीं उठाया जाता, अल्लाह! क़यामत के दिन यह पहाड़ों बराबर गुनाहों का वज़न हम कैसे उठाएंगे, मेहरबानी फ़रमा दीजिये, ऐ

अल्लाह! हम दुनिया में ऐसे वक़्त में पैदा हुए कि आप के प्यारे हबीब सल्ल0 का दीदार न कर सके, ऐ अल्लाह! अब हमें आख़िरत में उनका दीदार अता फ़रमाना, उनके क़दमों में जगह नसीब फ़रमाना, अल्लाह! क़ुर्आने पाक की आयत पढ़ते हैं, आपने फ़रमाया कि क़्यामत के दिन कुछ लोगों को अंधा खड़ा करूंगा, अल्लाह! बड़ा डर लगता है, अगर क़्यामत के दिन अंधा खड़ा कर दिया तो क़्यामत के दिन भी हम उनकी ज़ियारत से महरूम हो जाएंगे, अल्लाह! दोहरी महरूमी से बचा लेना, बड़ी दिल की तमन्ना है कि इस चेहरे को देखें जिसे आप ने "وَالضُّحٰى" फ़रमाया, उन ज़ुल्फ़ों को देखें जिन्हें आप ने "وَاللَّيْل" फ़रमाया, अल्लाह! क़्यामत के दिन अपने महबूब के दीदार की तौफ़ीक़ अता फ़रमाना, उनके हाथों हौज़े कौसर का जाम अता फ़रमाना, उनकी शफ़ाअत नसीब फ़रमाना, जन्नत में उनके क़दमों में जगह अता फ़रमाना, हमारे वालिदैन, अज़ीज़ व अक़ारिब और मशाइख़ जो फ़ौत हो चुके हैं, अल्लाह! उनकी मग़फ़िरत फ़रमा, जिनकी आप ने मग़फ़िरत कर दी, अल्लाह! उनको क़ुर्ब के आला दरजात अता फ़रमा, इस इज्तिमाअ़ के लिये ख़िदमत की जितनी जमाअतें हैं ऐ अल्लाह! हर हर फ़र्द को उसकी उम्मीदों से बढ़ कर अज्र अता फ़रमा दीजिये, हमने अपने बड़ों से सुना है कि इबादत से जन्नत मिलती है, ख़िदमत से ख़ुदा मिलता है, ऐ अल्लाह! ख़िदमत करने वालों को आप मिल जाइये, उनको अपना बना लीजिये, अपने बंदों में शामिल फ़रमा लीजिये, ऐ करीम! सारी ज़िंदगी हम यही कहते रहे कि हम अल्लाह के हैं, हम अल्लाह के हैं, हम अल्लाह के हैं, मेरे मौला! आज तो आप भी एक मर्तबा कह दीजिये कि हां! तुम मेरे हो, ऐ अल्लाह! एक मर्तबा कह दीजिये, ऐ अल्लाह! एक मर्तबा तो कह दीजिये कि तुम मेरे हो, ऐ अल्लाह! मेहरबानी कर दीजिये,

अल्लाह! एक मर्तबा कह दीजिये, रब्बे करीम, एक मर्तबा कह दीजिये, अल्लाह! Please कह दीजिये कि हां तुम मेरे हो।

अल्लाह! मेहरबानी फ़रमा दीजिये, रहमत का मुआमला फ़रमाइये, अल्लाह! हमारी इन दुआओं को अपनी रहमत से क़बूल फ़रमा लीजिये, जो मांगा अता फ़रमा, जो मांगना चाहिये था नहीं मांग सके, वह भी अता फ़रमा, ऐ करीम आक़ा! कितने लोग हैं जो सैंकड़ों हज़ारों मील दूर से सफ़र कर के इस गर्मी के मौसम में आप की मुहब्बत की तलाश में आप को पाने की नियत से सब यहां आए बैठे हैं, मेरे मौला! यह सवाली अगर दुनिया के बादशाह के दरवाज़े पे जाते और एक टका देना मुश्किल काम है, ऐ अल्लाह! बख़्श दीजिये, मग़फ़िरत मांग रहे हैं, आप की मुहबबत मांग रहे हैं, अपनी मुहब्बत से दिलों को भर दीजिये, ऐ करीम आक़ा! दुआ ख़त्म करने से पहले दो दुआएं मांगते हैं, ऐ अल्लाह! हमें मौत देने से पहले हमें अपनी रज़ा अता फ़रमा देना, पहले हम से राज़ी हो जाना और बाद में हमें मौत देना, दूसरी एक दुआ जो आख़िरी है, ऐ अल्लाह! इस पूरे इतने बड़े मज्मा को एक मर्तबा मुहब्बत की नज़र से देख लीजिये, अल्लाह! एक मर्तबा, अल्लाह! एक मर्तबा, अल्लाह! एक मर्तबा प्यार की नज़र से देख लीजिये, मुहब्बत की नज़र से देख लीजिये, ऐ अल्लाह! यह दुआ मांगते हुए डर भी लग रहा है कि कहीं आप की तरफ़ से आवाज़ न आ जाए कि मुहब्बत की नज़र मैं बिलाल रज़ि0 पे डालता था, मुहब्बत की नज़र मैं सुमय्या रज़ि0 पे डालता था, तुम अपनी ज़िंदगियों को देखो, मेरे मौला! यक़ीनन हमारी ज़िंदगियां गुनाहों से भरी हुई है, हम इक़रार करते हैं, मगर अल्लाह! मुआफ़ भी तो आप ही को करना है, ऐ अल्लाह! हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर दीजिये, और हमें आइंदा नेकियों भरी ज़िंदगी अता फ़रमाइये, बस एक

मुहब्बत की निगाह डाल दीजिये, Please अल्लाह मान जाइये।

तेरी एक निगाह की बात है मेरी ज़िंदगी का सवाल है

ऐ अल्लाह! अपनी रहमत का मुआमला फ़रमा, हमारी इन दुआओं को अपनी रहमत से क़बूल फ़रमा, ऐ अल्लाह! इस इदारे[1] को दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी नसीब फ़रमा, ऐ अल्लाह! इसको मिनारए नूर बना, और इसके नूर को दुनिया के कोने कोने के अंदर पहुंचा, जो इस इदारे के मुआविनीन हों, अल्लाह उनको अपने मुक़र्रिबीन में शामिल फ़रमा।

وصَلَّى اللّٰهُ تَعالٰى على خَيرِ خَلقِهٖ سيدِنا محمدٍ و آلِهٖ و أصحابِهٖ أجْمَعِين

بِرَحْمتِک یاأرْحمَ الرَّاحِمِين

☆☆☆

1. मअहुदुल इमाम वली अल्लाह अद्देहलवी लिद्दिरासातिल इस्लामिया, ख़ानक़ाहे नोमानिया नीरल

आइंदा सफ़्हात पर आप जो ख़िताब मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, यह ख़िताब "ख़ानक़ाहे फ़ैज औलिया" के ज़ेरे एहतिमाम, तरकैसर के एक क्रिकेट ग्राउंड में 7 अप्रेल 2011 ई० बरोज़ जुमेरात बाद नमाज़े मग़रिब, हुआ था, शुरका की तादाद सवा से डेढ़ लाख के दर्मियान बताई जाती है। जिनमें हज़ारों उलमा व तलबए मदारिस भी थे। जिनके तालिब इल्माना ज़ौक़ की रिआयत के असरात आप इस ख़िताब में साफ़ महफ़ूज़ करेंगे।

नामे खुदा में हज़ारों बरकतें

الحمد للّٰه وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد

اعوذ باللّٰه من الشيطان الرجيم، بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم

يَا أَيُّها الاِنسانُ ما غرَّكَ بِربِّكَ الكريم

سبحان ربك رَبِّ العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد للّٰه رب العلمين

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم

अल्लाह के नामों की खूबसूरती

जब किसी घर में बच्चा पैदा हो तो मां बाप की यह ख़्वाहिश होती है कि उसका अछूता नाम रखा जाए, जो लेने में आसान भी हो, खूबसूरत भी हो और मअ़नी के एतिबार से बेहतरीन भी हो, ताकि इस्म बा मुसम्मा बन जाए, यह हर मां बाप के दिल की फ़ित्री ख़्वाहिश है और अजीब बात है कि कुर्आन मजीद में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने भी अपने एक पैग़म्बरे इस्लाम का नाम रखा तो फ़रमायाः "اِسْمُهٗ يَحْيٰى لَمْ نَجْعَلْ لَهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا" ऐसा नाम हम ने रखा कि इससे पहले कभी रखा ही नहीं गया। जब अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 की विलादत हुई तो आप के दादा अब्दुल मुत्तलिब ने आप का नाम मुहम्मद रखा, यह ऐसा नाम था जो आम लोगों ने सुना ही नहीं था। यह फ़ित्री चीज़ होती है कि बच्चा का नाम बहुत बामअ़नी, खूबसूरत और आसान होना चाहिये, यह तो मख़्लूक़ का हाल है, क्या हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि जिस परवरदिगार ने इस काइनात को पैदा किया, उसने अपना नाम कितना खूबसूरत रखा होगा? "وَلِلّٰهِ

“الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى” अल्लाह तआला के बहुत सारे खूबसूरत नाम हैं, जितनी सिफ़ात उतने नाम, जब सिफ़ात की इंतिहा नहीं तो नामों की भी इंतिहा नहीं, कुछ वह नाम जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने अंबिया को बताए, कुछ वह नाम जो उसके फ़रिशतों को मालूम, कुछ वह नाम जो मख़्लूक़ में से किसी को भी नहीं मालूम, फ़क़त अल्लाह तआला ही जानते हैं, ताहम निन्नानवे नाम बहुत मअ़रूफ़ हैं, जो हदीसे मुबारक में आए हैं, उनको याद करने की फ़ज़ीलत भी है, वह सब के सब सिफ़ाती नाम हैं, लेकिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का एक नाम ज़ाती है, वह इस्मे जलाला “अल्लाह” है।

इस्मे जलाला अल्लाह की खूबसूरती

यह अल्लाह का नाम इस क़दर खूबसूरत है कि आप इसके मआरिफ़ पे ग़ौर करें तो हैरान होते चले जाएं, हमारे नाम ऐसे होते हैं कि एक हुरुफ़ को अलग कर दो तो बक़िया सब बेमअ़नी रह जाते हैं, मगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का नाम कितना खूबसूरत है कि आप अलग अलग भी करते चले जाएं तो जो बचेगा वह भी बामअ़नी होगा, मसलन अल्लाह तो “اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ” फिर अगर शुरू में हम्ज़ा को हटा दें, अलिफ़ को हटा दें तो “لِلّٰه” बचा, वह भी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ इशारा करता है “لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ” अगर एक और लाम भी हटा दें तो “لَهٗ” बाक़ी बचा, इसका इशारा भी अल्लाह की तरफ़ “لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ” और अगर एक और लाम भी हटा दें तो “ه” का इशारा भी अल्लाह की तरफ़, तो मालूम हुआ कि इस क़दर खूबसूरत नाम है कि अलग अलग हुरूफ़ भी करें तो हर हुरूफ़ उसी ज़ात की तरफ़ दाल है। फिर उस नाम पे नुक़्ता भी कोई नहीं है, जैसे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को शिर्क पसंद नहीं तो नाम पे भी कोई नुक़्ता नहीं लगने

दिया।

एक इल्मी नुक्ता

तलबा के लिये एक इल्मी नुक्ता कि लफ़्ज़ अल्लाह की इज़ाफ़त किसी दूसरे की तरफ़ नहीं हो सकती, क्योंकि इज़ाफ़त नुक़्स की दलील होती है, हां बाक़ी अस्मा की इज़ाफ़त अल्लाह के इस्म की तरफ़ हो सकती है, जैसे बैतुल्लाह, किताबुल्लाह, अब्दुल्लाह।

हर चीज़ से पहले अल्लाह और हर चीज़ के बाद भी अल्लाह

यह ऐसा नाम है कि बच्चा इस दुनिया में पैदा होता है तो उसके कान में सब से पहले अल्लाह का नाम पड़ता है, सुन्नत यही है कि उसके दाएं कान में अज़ान दें और बाएं में इक़ामत, तो अल्लाह का नाम दोनों कानों में पहुंच रहा है। फिर यह नाम इंसान की ज़िंदगी का आख़िरी नाम होता है, हम यह तमन्ना करते हैं कि हमारी मौत कलिमा पर आए तो कलिमा पढ़िये तो आख़िर में आएगा "لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰه" पूरा कलिमा "مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه" इसका मतलब कि आख़िरी लफ़्ज़ जो ज़बान से निकले वह भी अल्लाह का नाम होना चाहिये। और हदीसे मुबारक में है कि अगर किसी का बच्चा हो बेटा या बेटी और मां बाप उस बच्चे को अल्लाह का लफ़्ज़ सिखाएं और वह बच्चा जब बोलना शुरू करे तो सबसे पहले अल्लाह का लफ़्ज़ उसकी ज़बान से निकले, इस अमल पर अल्लाह मां और बाप के पिछले सब गुनाहों की मग़फ़िरत फ़रमा देते हैं। अज़ान की इब्तिदा अल्लाह के लफ़्ज़ से और अज़ान की इंतिहा भी अल्लाह के लफ़्ज़ से। नमाज़ की इब्तिदा अल्लाह के लफ़्ज़ से और नमाज़ की इंतिहा भी अल्लाह के नाम पर। यह क्या ख़ूबसूरत नाम है जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपनी ज़ात के लिये पसंद फ़रमाया।

लफ़्ज़ अल्लाह में तलफ़्फ़ुज़ की आसानी

इसमें एक ख़ूबसूरत बात यह भी है कि हरकतें तीन तरह की होती हैं, फ़त्हा, ज़म्मा, कस्रा, और क़ुर्रा हज़रात जानते हैं कि फ़त्हा, जिसको ज़बर कहते हैं, यह अख़फ़्फ़ुल हरकात है, अदा करने में सबसे आसान फ़त्हा है, आप ग़ौर करें कि बच्चा जब बोलना सीखता है तो सबसे पहले अब्बा अम्मा बोलता है, ऐसे ही अल्लाह का लफ़्ज़ सीखना सबसे ज़्यादा उसके लिये आसान है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस लफ़्ज़ को इतना आसान कर दिया कि बड़ी उम्र का आदमी ले तो सही बोलेगा, छोटा बच्चा जो बोलना सीखता है, वह भी इस लफ़्ज़ को सब से पहले ले सकता है।

अल्लाह तआला के ज़ाती व सिफ़ाती नामों मे फ़र्क़

हां एक फ़र्क़ है, उलमा ने लिखा कि अल्लाह तआला के जितने सिफ़ाती नाम हैं, वह सब तख़ल्लुक़ के लिये हैं और इस्मे ज़ात तअल्लुक़ के लिये है, इसलिये फ़रमाया "تَخَلَّقُوا بِأَخْلَاقِ اللهِ" कि बाक़ी नामों से तुम अपने अख़्लाक़ को मुज़य्यन करो, लेकिन जो इस्मे जलाला "अल्लाह" है यह तअल्लुक़ के लिये है, ज़ात का नाम है। आप ज़रा ग़ौर कीजिये कि "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ज़ाती नाम भी इस्तेमाल फ़रमाया, सिफ़ाती नाम भी इस्तेमाल फ़रमाया, लेकिन तअव्वुज़ (أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ) में कोई सिफ़ाती नाम इस्तेमाल नहीं किया, सिर्फ़ इस्मे जलाला "अल्लाह" सिफ़ाती नाम भी यहां हो सकता था, इस पर मुफ़स्सिरीन ने इसमें नुक्ता लिखा कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की शैतान के साथ ज़ाती अदावत है, उस ज़ाती दुशमन से बचने के लिये जब अल्लाह का बंदा अल्लाह को पुकारता है तो वह फ़रमाता है तू मेरा नाम लेकर मुझे पुकारो, मैं तेरी इससे हिफ़ाज़त फ़रमा दूंगा।

अल्लाह तआला की ज़ात भी बरकत वाली, फ़रमाया: "تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ" बरकत वाली है वह ज़ात जिस के हाथ में यह मुल्क है, और अल्लाह का नाम भी बरकत वाला है, कुर्आन मजीद में फ़रमाया: "تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ" बरकत वाला नाम है तेरे रब का, इस नाम की इतनी बरकतें है सुब्हानल्लाह, चुनांचे बिस्मिल्लाह का एक मअनी तो यह है कि "अल्लाह के नाम के साथ", मगर मुफ़स्सिरीन ने लिखा कि इस्म लफ़्ज़ अरबी में कई मअनी में इस्तेमाल होता है और एक मअ़नी इसका बरकत है, तो फिर बिस्मिल्लाह का मअ़नी बनेगा: "अल्लाह की बरकत के साथ"। हम अपने घर की बड़ी औरतों को सुना करते थे कि बैठतीं उठतीं तो ज़बान से निकलता था: अल्लाह की बरकत के साथ, यह असल में उनको किसी ने बिस्मिल्लाह का तुर्जुमा सिखा दिया था, अरबी लफ़्ज़ तो ज़बान पे चढ़ना मुश्किल होता था, तो उठते बैठते "अल्लाह की बरकत" "अ़ल्लाह की बरकत" कहती थीं, वह असल में बिस्मिल्लाह कह रही होती थीं, इसलिये बिस्मिल्लाह हर अच्छे काम के शुरू में करना चाहिये। खाने की इब्तिदा बिस्मिल्लाह करनी चाहिये, हदीसे पाक में दुआ आई है: "بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى بَرَكَةِ اللّٰهِ" सवारी में बैठना हो तो "بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرِيهَا وَمُرْسٰهَا إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ" पढ़ें।

बिस्मिल्लाह की कसरत से जहन्नम से हिफ़ाज़त

यहां मुफ़स्सिरीन ने एक अजीब नुक्ता लिखा, वह फ़रमाते हैं कि नूह अलै0 को अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने पूरी आयत नहीं अता की थी, सिर्फ़ "بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرِيهَا وَمُرْسٰهَا" दो लफ़्ज़ अता फ़रमाए थे, वह फ़रमाते हैं कि बिस्मिल्लाह के अलफ़ाज़ में इतनी बरकत थी कि अल्लाह ने पूरे तूफ़ान से बचा कर नूह की कशती को किनारे लगा दिया, ऐ मोमिन! अगर तू अपनी ज़िंदगी में पूरे بسم اللّٰه الرحمٰن

الـرحـيـم के लफ़्ज़ को कसरत से इस्तेमाल करेगा तो अल्लाह तेरे ईमान की कशती को पुल सिरात से किनारे लगा देगा, दो लफ़्ज़ों से दुनिया के तूफ़ान से हिफ़ाज़त और पूरी आयत से अल्लाह तआला क़्यामत के दिन जहन्नम से हिफ़ाज़त फ़रमाएंगे।

बिस्मिल्लाह में तमाम आसमानी किताबों का ख़ुलासा

उलमा ने लिखा है कि जितनी आसमानी किताबें आईं, उनका निचौड़ और उनका ख़ुलासा अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने क़ुर्आन मजीद में अता फ़रमा दिया, फिर जो कुछ क़ुर्आन मजीद में है उसका ख़ुलासा सूरए बक़रा में अता फ़रमा दिया, और जो सूरए बक़रा में है उसका ख़ुलासा अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने सूरए फ़ातिहा में अता फ़रमा दिया, और जो कुछ सूरए फ़ातिहा में है उसका ख़ुलासा बिस्मिल्लाह में अता फ़रमा दिया, और बिस्मिल्लाह का ख़ुलासा उसके पहले हुरुफ़ ''ब'' में अता फ़रमा दिया और ''ब'' का मअ़नी होता है जोड़ना, गोया तमाम आसमानी किताबों का लब्बे लुबाब यह था कि मख़्लूक़ अपने ख़ालिक़ के साथ जुड़ जाए।

लफ़्ज़ अल्लाह ने ज़मीन व आसमान को संभाला हुआ है

यह इस क़दर खूबसूरत नाम है कि हदीसे मुबारक है: ''لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتّٰى يُقَالَ فِى الْاَرْضِ اَللّٰهُ اَللّٰهُ'' उस वक़्त तक क़्यामत क़ाइम नहीं हो सकती जब तक ज़मीन में एक आदमी भी अल्लाह अल्लाह कहने वाला बाक़ी रहे। यहां मुहद्दिसीन ने लिखा है कि इसका मतलब यह है कि अल्लाह के लफ़्ज़ ने इस ज़मीन व आसमान को संभाला हुआ है, इतना बाबरकत लफ़्ज़ है कि जब तक यह लफ़्ज़ दुनिया में है क़्यामत नहीं आ सकती, अगर अल्लाह का लफ़्ज़ दुनिया में है तो क़्यामत नहीं आ सकती, तो जिस बंदे के दिल में यह अल्लाह का नाम होगा, उस बंदे के दिल में भी ऐसी मुसीबतें

नहीं आ सकतीं।

एक मर्तबा अल्लाह कहने का असर 40 साल तक

एक हदीसे मुबारक में है कि इस्राफ़ील अलै० सूर फूकेंगे, जिसकी वजह से पूरी काइनात को अल्लाह तआला ख़त्म फ़रमा देंगे, मगर उनको यह हुक्म है कि अगर तुम मेरी मख़्लूक़ में से किसी की ज़बान से मेरा नाम सुनो तो तुम सूर नहीं फूंक सकते। और हदीसे मुबारक में है कि जब आख़िरी बंदा आख़िरी मर्तबा अल्लाह का नाम लेगा तो उस नाम को सुनने के 40 साल के बंद फिर वह सूर फूंकना शुरू करेंगे, गोया अल्लाह का लफ़्ज़ एक दफ़आ कहना इतनी कुव्वत रखता है कि सूर फूंकने वाले फ़रिशते को 40 साल इंतेज़ार करना पड़ता है, इस नाम की बरकतों की क्या इंतिहा है।

अल्लाह के नाम की बरकतें

इस नाम के ज़रीआ से बीवी हलाल हो जाती है, आप ग़ौर करें एक बच्चा एक बच्ची दोनों आपस में ग़ैर महरम हैं, आंख उठा के देखना हराम, मगर अल्लाह के नाम पर इन दोनों का रिशता जोड़ा जाता है "يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ" अल्लाह का नाम कितना प्यारा है कि इस नाम की बरकत से यह रिशता जुड़ गया, जो ग़ैर महरम थी, जिस पर एक नज़र डालना हराम था, अब वह ज़िंदगी की साथी सब अपनों से बड़ी अपनी बन गई। और अल्लाह ही के नाम के साथ इंसान के लिये गोश्त हलाल होता है, बकरी को ज़ब्ह करना चाहें तो फ़रमायाः "لَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ" अगर वैसे ही मर जाए तो हराम है, नहीं खा सकते। ग़ौर कीजिये कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के नाम में कितनी बरकत है। जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० एक हदीसे

मुबारक रिवायत करते हैं कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने इज़्ज़त व जलाल की क़सम खा के कहा कि जिस चीज़ पर मेरा नाम लिया जाएगा मैं उसमें बरकत और रहमत अता करूंगा।

तीन मौक़ों पे शैतान बहुत ज़्यादा रोया

उलमा ने लिखा है कि तीन ऐसे मवाक़े थे कि शैतान बहुत ज़्यादा रोया, नेकों के आमाल देख के वह रोता तो रहता ही है, मगर तीन मवाक़े ऐसे थे कि बहुत ज़्यादा रोया, सब से पहले जब रब्बुल इज़्ज़त ने फ़रमाया "فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ" और फ़रिशतों की जमाअत से जुदा हो, उस वक़्त बहुत ज़्यादा रोया, दूसरा मौक़ा जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के प्यारे हबीब सल्ल0 दुनिया में तशरीफ़ ले आए, जब महबूब सल्ल0 की विलादत्ते बा सआदत हुई तो उस मौक़ा पे बहुत रोया कि رحمة للعالمين अब दुनिया में तशरीफ़ ले आए। और तीसरा मौक़ा जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने सूरए फ़ातिहा को उतारा, वह इतनी बाबरकत सूरह थी कि शैतान बहुत ज़्यादा रोया।

एक इल्मी नुक्ता

मुफ़स्सिरीन ने एक अजीब नुक्ता लिखा कि بسم الله الرحمٰن الرحيم के हुरूफ़ को गिनें तो 19 हुरूफ़ बनते हैं, और जहन्नम के ऊपर जो फ़रिशते मुतअय्यन हैं वह भी 19 हैं, तो जो बंदा अपनी ज़िंदगी में बिस्मिल्लाह की कसरत करेगा, उनको अल्लाह इन 19 फ़रिशतों वाले जहन्नम के अज़ाब से महफ़ूज़ फ़रमाएंगे।

लफ़्ज़ अल्लाह के पढ़ने में सैकड़ों फ़ाइदे

इब्ने कय्यिम रह0 ने लफ़्ज़ अल्लाह के बहुत ज़्यादा फ़ाइदे बतलाए हैं, फ़रमायाः "فَمَا ذُكِرَ هٰذَا الْاِسْمُ فِيْ قَلِيْلٍ اِلَّا كَثَّرَهٗ" यह लफ़्ज़ थोड़ी चीज़ पर अगर पढ़ा जाए तो अल्लाह उसको बढ़ा देते हैं "وَلَا عِنْدَ خَوْفٍ اِلَّا اَزَالَهٗ" ख़ौफ़ की हालत में अल्लाह का लफ़्ज़

कहा जाए तो यह ख़ौफ़ को दूर कर देता है "وَلَا عِنْدَ كَرْبٍ إِلَّا كَشَفَهُ" और परेशानी के आलम में अगर उसका नाम लिया जाए तो परेशानी ख़त्म हो जाती है "وَلَا عِنْدَ هَمٍّ وَغَمٍّ إِلَّا فَرَجَهُ" हिम और ग़म के हालात में पढ़ा जाए तो अल्लाह उस ग़म की हालत को ख़त्म कर देते हैं "وَلَا عِنْدَ ضِيقٍ إِلَّا وَسَّعَهُ" तंगी की हालत में पढ़ा जाए तो अल्लाह तआला तंगी में आसाानी पैदा फ़रमा देते हैं "وَلَا تَعَلَّقَ بِهٖ ضَعِيفٌ إِلَّا أَفَادَهُ الْقُوَّةَ" और जब कमज़ोर बंदा अल्लाह के नाम से रिशता जोड़ लेता है तो अल्लाह उस कमज़ोर को क़वी बना देते हैं "وَلَا ذَلِيلٌ إِلَّا أَنَالَهُ الْعِزَّ" और कोई आदमी पस्त होता है अगर वह इस नाम के साथ तअल्लुक़ को जोड़ लेता है, तो अल्लाह उसको इज़्ज़त अता फ़रमा देते हैं "وَلَا فَقِيرٌ إِلَّا أَصَارَهُ غَنِيًّا" फ़क़ीर अगर इस नाम को कसरत से लेता है अल्लाह उसको ग़नी बना देते हैं, "وَلَا مُسْتَوْحِشٌ إِلَّا آنَسَهُ" परेशान हाल अगर इस नाम को लेता है अल्लाह उसके दिल की तसकीन अता फ़रमा देते हैं "وَلَا مَغْلُوبٌ إِلَّا أَيَدَهُ وَنَصَرَهُ" मग़लूब अगर अल्लाह का नाम लेता है तो अल्लाह बंदे को ग़ालिब फ़रमा देते हैं, और मदद कर देते हैं "وَلَا مُضْطَرٌّ إِلَّا كَشَفَ ضُرَّهُ" मुज़्तरब आदमी अगर इसको लेता है, अल्लाह इज़्तिराब को दूर फ़रमा देते हैं, फिर आगे लिखते हैं "وَهُوَ الْإِسْمُ الَّذِىْ تُكْشَفُ بِهٖ الْكُرُبَاتُ وَتُسْتَنْزَلُ بِهٖ الْبَرَكَاتُ وَتُجَابُ بِهٖ الدَّعْوَاتُ" यह वह लफ़्ज़ है जिससे कि परेशानियां दूर होती हैं, बरकात उतरती हैं और दुआएं क़बूल होती हैं "وَتُقَالُ بِهٖ الْعَثَرَاتُ" लग़ज़िशों से अल्लाह तआला दर गुज़र फ़रमा देते हैं "وَتُسْتَدْفَعُ بِهٖ السَّيِّئَاتُ" ख़ताओं को अल्लाह तआला मिटा देते हैं "وَتُسْتَجْلَبُ بِهٖ الْحَسَنَاتُ" यह वह नाम है जिस पर ज़मीन और आसमान क़ाइम हैं, "وَبِهٖ أُنْزِلَتِ الْكُتُبُ" इस नाम के साथ किताबें नाज़िल हुई "وَبِهٖ

"وَبِهٖ شُرِعَتِ أُرْسِلَتِ الرُّسُلُ" जिसके नाम के साथ रसूल भेज गए "وَبِهٖ انْقَسَمَتِ الْخَلِيقَةُ" जिस नाम पर शरीअतें नाज़िल हुई "الشَّرَائِعُ اِلَى السُّعَدَاءِ وَالْاَشْقِيَاءِ" यह अल्लाह का यह नाम है कि जिस नाम को लेने वाले वह सईद होते हैं, जो नाम से महरूम सोते हैं वह शक़ी होते हैं, तो यह शक़ी और सईद के दर्मियान फ़ैसला करने वाला है, लिहाज़ा इस नाम को हम जितना ज़्यादा लें उतना कम है।

क़ुर्आने करीम में लफ़्ज़े अल्लाह की कसरत

क़ुर्आन मजीद की एक आयत है जिसका नाम है ''सूरए मुजादिला'' इसकी हर हर आयत में अल्लाह रब्बुल का नाम है, सूरत की जितनी आयात हैं, हर आयत में अल्लाह का नाम है। और फिर बअज़ आयात ऐसी हैं जिनमें एक मर्तबा अल्लाह का नाम है, बअज़ आयात में दो मर्तबा अल्लाह का नाम है जैसे "يٰاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ج وَاللّٰهُ وَهُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ." बअज़ आयात में तीन मर्तबा अल्लाह का नाम है मसलन "يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ج وَاتَّقُوا اللّٰهَ ط اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ م بِمَا تَعْمَلُوْنَ." बअज़ आयात में 4 मर्तबा अल्लाह का नाम आया है "تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ج وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ط وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْ م بَعْدِهِمْ مِنْ م بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ط وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ." इस आयत में 4 मर्तबा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का नाम आया है। और बअज़ आयात में 5 मर्तबा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का नाम है "وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ط وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ط وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ لا اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا

"وَاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ." इस आयत के अंदर पांच मर्तबा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का नाम अस्मे अल्लाह आया है।

क्या इस्मे आज़म लफ़्ज़े "अल्लाह" है?

अहादीस में आता है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का एक नाम ऐसा है जिसको इस्मे आज़म कहते हैं, चुनांचे अवामुन्नास को भी इसकी बड़ी फ़िक्र रहती है, शौक़ रहता है कि हमें इस्मे आज़म का पता चल जाए और मुफ़स्सिरीन ने इस पर बड़ी तफ़सील लिखी है, अगर बेहतरीन तफ़सीर पढ़नी हो तो तफ़सीरे मज़हरी में क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती रह० ने इस पर अजीब कलाम किया है, उनके कलाम का ख़ुलासा यह है, वह लिखते हैं कि इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह० का क़ौल यह था कि लफ़्ज़े अल्लाह यह इस्मे आज़म है, बअज़ हज़रात "يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ" को इस्मे आज़म कहते हैं, मगर इमामे आज़म रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का नाम जो अल्लाह है यह इस्मे आज़म है।

लफ़्ज़े अल्लाह की तासीर

फ़रमाते हैं कि इस्मे आज़म यही है, मगर लेने वाली ज़बान का फ़र्क़ है, मिसाल के तौर पर आप अगर स्कूल में किसी बच्चे को शरारत करते देखें और आप बच्चे को कहें कि मैंने तुम्हें स्कूल से निकाल दिया, तो वह बिल्कुल नहीं निकलेगा, बल्कि आपको पूछेगा कि आप होते कौन हैं मुझे निकालने वाले? और अगर स्कूल के प्रिंसिपल उसको कोई उल्टा काम करते देखें और वह कह दें कि मैंने तुम्हें स्कूल से निकाल दिया तो वह निकल जाएगा, यही अलफ़ाज़ हमने कहे तो बच्चा नहीं निकला, यही अलफ़ाज़ प्रिंसिपल ने कहे तो बच्चा स्कूल से निकल गया, तो मालूम हुआ कि इंसान अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की इबादत करते करते एक ऐसे मकाम पे पहुंच जाता

है अल्लाह उसको Range (ताक़त) ऐसा दे देते हैं कि जब उसकी ज़बान से अल्लाह का लफ़्ज़ निकलता है तो अल्लाह उसकी दुआओं को क़बूल फ़रमा लेते हैं, लफ़्ज़ यही होता है, मगर लेने वाली ज़बान में फ़र्क़ होता है।

चुनांचे वाकिआत में लिखा है कि नबी सल्ल0 एक दरख़्त के नीचे आराम फ़रमा रहे थे, एक काफ़िर आ गया, उसके हाथ में तलवार थी, उसने सोचा कि मैं मौक़ा से फ़ाइदा उठाऊं, जब ज़रा क़रीब आया तो नबी सल्ल0 बेदार हुए, उस वक़्त वह कहने लगा "مَنْ يَّعْصِمُكَ مِنِّى" आप को मुझ से कौन बचाएगा? हदीसे मुबारक में है कि नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "अल्लाह", इस लफ़्ज़ का लेना था कि उस बंदे के ऊपर ऐसा ख़ौफ़ तारी हुआ कि उसके हाथ से वह चीज़ गिर गई, नबी सल्ल0 ने उठा लिया, फ़रमाया कि अब तुझे कौन बचाएगा? तो मन्नते करने लगा कि आप तो बहुत करीम हैं, बहुत मुहसिन हैं। मालूम हुआ कि अगर ऐसी ज़बान से लिया जाए जो सच बोलने वाली हो तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के नाम के अंदर बरकत है, और छोटी ज़बानों से अगर हम यह नाम लेंगे तो उसकी बरकात ज़ाहिर न होंगी।

चुनांचे एक शहर था, जिसका नाम था "दरबंद" जब तातारियों से फ़तह पाई तो वह उसमें दाख़िल हुए, शहर के सारे लोगों ने शहर ख़ाली कर दिया तो तातारी शहज़ादे ने ख़ुश हो के कहा कि हमारा कितना रोअ़ब है, कितना ख़ौफ़ है कि लोग शहर ख़ाली करके पहले ही चले गए, किसी ने कहा नहीं जनाब! मस्जिद में एक बड़े मियां हैं बैठे हुए हैं, उसने कहाः गिरफ़्तार करके पेश करो, चुनांचे उसको गिरफ़्तार करके हथकड़ियां लगा के पेश किया गया, तातारी शहज़ादे ने पूछा कि बाक़ी सब लोग यहां से भाग गए जान का ख़ौफ़ था,

तुम्हें नहीं था? उन्होंने कहा कि ख़ौफ़ तो था लेकिन मुझे यक़ीन है कि मेरा अल्लाह मुझे बचाएगा, कहा कि कौन बचाएगा? जब उसने यह कहा कि तुझे कौन बचाएगा, तो सय्यद अहमद दरबंदी रह0 ने हथकड़ियां पहनी हुई थीं, फ़रमायाः अल्लाह, और इस लफ़्ज़ के लेने से हथकड़ियां टूट कर नीचे गिर गईं, इस लफ़्ज़ के अंदर ऐसी बरकत है।

चुनांचे हमारे इलाक़े में हज़रत ख़्वाजा गुलाम हसन सिवाक रह0 एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, उनके मुतअल्लिक़ हज़ारों लोग गवाह हैं कि अगर किसी काफ़िर की तरफ़ भी रुख़ कर के अल्लाह का लफ़्ज़ कह देते थे तो वह फ़ौरन कलिमा पढ़ लेता था, ऐसी उनकी ज़बान में तासीर थी कि दूसरों के दिल में अल्लाह का लफ़्ज़ उतर जाया करता था। हज़रत अक़्दस गंगोही रह0 ने लिखा है कि अल्लाह का नाम इतना बाबरकत है कि अगर किसी शख़्स ने पूरी ज़िंदगी में एक मर्तबा मुहब्बत के साथ अल्लाह का लफ़्ज़ लिया होगा तो यह लफ़्ज़ कभी न कभी उसके लिये जहन्नम से निकलने का सबब बन जाएगा।

अल्लाह के नाम में दिलों की तसकीन

इसलिये इस नाम में तसकीन है, सुकून है, फ़रमाया "أَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ" जान लो! अल्लाह की याद के साथ दिलों का इत्मीनान होता है-

न दुनिया से न दौलत से न घर आबाद करने से
तसल्ली दिल को होती है ख़ुदा को याद करने से

कितनी तसकीन है वाबस्ता तेरे नाम के साथ
नींद कांटों पे भी आ जाती है आराम के साथ

इसी लिये मोमिन जब अल्लाह का नाम सुनता है तो उसका दिल गुदगुदा जाता है, फ़रमायाः "اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ" ईमान वाले वह बंदे हैं जिनके सामने अल्लाह का नाम आता है तो तड़प जाते हैं:

एक दम से मुहब्बत छिप न सकी   जब तेरा किसी ने नाम लिया

मां के सामने उसके बेटे का भी नाम लें तो मां फ़ौरन मुतवज्जो होती है, उसका नाम अच्छा लगता है, इसी तरह अल्लाह वालों को अल्लाह का नाम भी अच्छा लगता है, चुनांचे क़ुर्आन मजीद में फ़रमायाः "وَاذْكُرِاسْمَ رَبِّكَ" तुम अपने रब के नाम को याद करो, अब हमारे रब का ज़ाती नाम अल्लाह है, तो अल्लाह के नाम का हम ज़िक्र करें, जितना भी कर सकते हैं। फिर फ़रमाया "قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى وَذَكَرَاسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى" इस्म रब अल्लाह का ज़िक्र करे, एक जगह फ़रमायाः "فِىْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ" तो अल्लाह का नाम जितना हम अपने दिलों में गुज़ारें उतना हमारे लिये यह तसकीन का बाइस होता है।

अल्लाह के नाम की लज़्ज़त

किसी आरिफ़ ने कहा:

अल्लाह अल्लाह ईंचा शीरीं हस्त नाम   शीर व शकर मी शूद जानम तमाम

यह अल्लाह अल्लाह इतना शीरीं लफ़्ज़ है कि जब मैं लेता हूं तो मेरे तन बदन में इस तरह मिठास आती है जैसे चीनी के मिलाने से पूरा का पूरा दूध मीठा हो जाया करता है, अल्लाह कैसा प्यारा नाम है, आशिक़ों का मीना और जाम है।

अल्लाह के नाम की लज़्ज़त की एक दिलचस्प मिसाल

हज़रत ख़्वाजा अबुल हसन ख़र्क़ानी रह० सिलसिलए आलिया नक़्शबंदिया के एक बुज़ुर्ग थे, एक मर्तबा उनके पास एक फ़्लासफ़र

बू अली सीना आए तो हज़रत ने अपनी मजलिस में इस्मे ज़ात के कुछ फ़ज़ाइल बयान करना शुरू किये कि इससे परेशानियां दूर होती हैं, दिलों को सुकून मिलता है, बरकत होती है, ख़ूब फ़ज़ाइल बयान किये और फिर फ़रमाया कि इस नाम से इंसान के अंदर एक चाशनी आ जाती है, अब यह अक़्ली इंसान था, मजलिस के बाद कहने लगा: हज़रत! इस एक लफ़्ज़ में यह सारा कुछ? हज़रत ने फ़रमाया! ऐ ख़र तूचादानी? "अबे गधे! तू क्या जाने यह बातें" अब जब भरी मजलिस में गधा कहा गया तो उनके तो पसीने छूट गए, यह तो एक Public insult (सरे आम बेइज़्ज़ती) है, अब हज़रत ने देखा कि पसीने आ रहे हैं और "बदले बदले मेरे सरकार नज़र आते हैं" तो हज़रत ने पूछा हकीम साहब! क्या हुआ? हज़रत आपने लफ़्ज़ ही ऐसा बोला, हज़रत ने कहा कि देखो! मैंने एक लफ़्ज़ गधा बोला और उसने तन बदन में तबदीली पैदा कर के रख दी, क्या अल्लाह का लफ़्ज़ इंसान के अंदर तबदीली नहीं पैदा कर सकता?

और हम अपनी ज़िंदगी में इसका तजुर्बा करते हैं वह इस तरह कि ज़रा अचार का नाम लीजिये देखो मुंह में पानी आता है कि नहीं? मिठास का नाम लो, खटास का नाम लो, फ़ौरन तबीअत मुतवज्जो होती है, ललचाती है, तो अगर अचार, खटास और मिठास का नाम तासीर छोड़ता है तो अल्लाह के नाम में भी तो तासीर है, यह अलग बात है कि हमारे दिल के ऊपर ग़फ़लत का पर्दा होता है, दिल उसको महसूस नहीं कर पाता, जब वह ग़फ़लत का पर्दा उतर जाता है तो फिर अल्लाह का नाम इंसान को गुदगुदा देता है। मां कितनी थकी हुई क्यों न हो, बहुत भूक लगी हो, ज़रा लुक़्मा तोड़ा कि खाना खाऊं और दूसरे कमरे से बच्चे ने कहा: अम्मी अम्मी! तो क्या मां बैठी रहेगी? उसी वक़्त पहुंचेगी जैसे बिजली उसके जिस्म में

आ गई, तो अगर अम्मी का लफ़्ज़ बोलने से मां मुतवज्जो होती है तो मोमिन जब मुहब्बत के साथ अल्लाह का लफ़्ज़ बोलता है तो मालिकुल मुल्क की रहमत मुतवज्जो हो जाती है।

एक मर्तबा एक साहब मिल गए, जिनकी तबीअत ज़रा ख़ुश्क नागवार सी थी, कहने लगे "देखो! आप तो बस हर वक़्त अल्लाह अल्लाह ही करते रहते हैं, इसके इलावा आप को कुछ काम ही नहीं" उनके सामने हाथ जोड़ के मैंने कहाः आप का एहसान होगा क़्यामत के दिन यही गवाही दे देना कि यह शख़्स दुनिया में बस अल्लाह अल्लाह ही करता रहता था, क्या यह छोटी बात है कि हर वक़्त इंसान का दिल अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ मुतवज्जो रहे? हां पानी का नल अगर लीक हो और एक एक क़तरा गिरता रहता हो तो हमने देखा कि नीचे सीमेंट या मार्बल हो उसमें भी सुराख़ हो जाता है, इसकी वजह क्या बनी? इसकी वजह यह बनी कि मुतवातिर क़तरा गिरता रहा, गिरता रहा, उसने पत्थर में भी अपना रास्ता बना लिया। बिल्कुल इसी तरह हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया कि जब अल्लाह अल्लाह का लफ़्ज़ तवातिर के साथ इंसान के दिल पर पड़ता रहता है, तो यह यह दिल में भी अपना रास्ता बना लिया करता है।

हज़रत शिब्ली रह0 को अल्लाह के नाम की लज़्ज़त

शिब्ली रह0 एक बुज़ुर्ग थे, उनका वाक़िआ अजीब है, यह शुरू में नहाविंद के इलाक़े के गर्वनर थे, एक मर्तबा बादशाह ने सारे गर्वनरों को बुलाया कि मैं इन में से अच्छे काम करने वालों का एज़ाज़ करूंगा, ताकि जो दूसरे हैं वह ख़ुद बख़ुद ज़रा समझ जाएं, अक़्लमंद को इशारा काफ़ी होता है, तो जितने भी गर्वनर थे वह आए, बादशाह ने उनको ख़िलअत पेश की, उस ज़माने में ख़िलअत एक Honour (एज़ाज़) था, इसकी ख़ुसूसियत यह होती थी कि

जिसको बादशाह दे देता था, उसको बादशाह के पास आने के लिये किसी हाजिब और दरबान से पूछने की ज़रूरत नहीं होती थी, वह जब चाहता था, आ जाता था, वह ग्रीन कार्ड होता था, बादशाह से मिलने के लिये तो बड़ी उसकी इज़्ज़त होती थी, तो बादशाह ने सबको वह पोशाक दी और कहा कि मैं कल इस ख़ुशी में आप सब लोगों की दावत करूंगा, अगले दिन दावत हुई, फिर मजलिस लगी, अल्लाह की शान देखें कि बादशाह साहब बात कर रहे थे, लोग तवज्जो से सुन रहे थे, उनमें एक साहब ऐसे थे, जिन को छींक आनी चाह रही थी और वह उसको दबा रहे थे कि न आए, क्योंकि मजलिस में छींक आए तो ज़रा बदमज़्गी सी हो जाती है, तो वह दबा रहे थे, लेकिन अचानक उनको दो तीन मर्तबा मुतवातिर छींक आ गई, सब ने उनकी तरफ़ देखा, अब छींक आई तो नाक से कुछ पानी भी निकल आया, अब वह टिशू पेपर का ज़माना नहीं था, और उनके पास कोई और कपड़ा भी नहीं था, उन्होंने हाथ से पानी को साफ़ तो किया, मगर हाथ यूं कपड़े पे साफ़ कर लिया और ऐन जब उन्होंने वह पानी कपड़े पे साफ़ किया तो बादशाह की उन पर नज़र पड़ गई, बादशाह को गुस्सा हुआ, कि तुमने मेरी दी हुई पोशाक के साथ इतनी बेक़द्री का मुआमला किया? उसने हुक्म दिया कि मेरे ख़ादिम आएं और उससे पोशाक छीन लीं और उसको मेरे दरबार से धक्का दे दें, अब इतना मुअज़्ज़ज़ आदमी और उसकी इस तरह Public insult (सरे आम बेइज़्ज़ती) करके निकाल दिया जाए तो उसका तो मुस्तक़बिल ही ख़त्म हो गया, बाक़ी लोग जो लोग थे वह बड़े परेशान हुए कि यह क्या हो गया कि बादशाह इतना गुस्सा हो गया, वज़ीर समझा रहा था, उसने कहाः बादशाह सलामत! मजलिस बरख़ास्त कर दीजिये, मललिस बरख़ास्त हो गई, थोड़ी देर के बाद

एक आदमी आया, उसने यह पैग़ाम भेजा कि मैं बादशाह साहब से मिलना चाहता हूं, बादशाह ने बुला लिया, उसने आकर कहा कि मैं नहाविंद के इलाक़े का गर्वनर हूं, मैं सिर्फ़ इतना पूछने के लिये आया हूं कि क्या छींक इख़्तियार से आती है या बे इख़्तियार आ जाती है? तो बादशाह समझ गया कि यह मुझसे Question (सवाल) कर रहा है, उसने कहाः तुमको मुझ से ऐसी बात करने की जुर्अत कैसे हुई? उसने कहाः बादशाह सलामत! मुझे एक बात आज समझ में आ गई कि आप ने किसी को ख़िलअत दी और वह बंदा उसकी इज़्ज़त न कर सका तो भरे दरबार में आपने उसको धक्का दे दिया, मुझे भी मेरें मालिक ने इंसानियत की ख़िलअत पहना कर भेजा है, अगर मैं दुनिया में उसका इकराम न करूंगा, तो फिर क़्यामत के दिन अल्लाह भी मुझे धुतकार देगा, आपकी यह गर्वनरी पड़ी है, मैं जाता हूं और पहले मैं अपने अल्लाह की बंदगी करता हूं, यह आदमी सोचने लगा कि मैं कहां जाऊं, सोचा कि मैं सिराज रह० के पास जाता हूं वह एक बुजुर्ग थे, जाके कहने लगा कि हज़रत! मैं आप की ख़िदमत में आया हूं कि मेरे दिल में नूर आ जाए, उन्होंने दो दिन में पहचान लिया कि तबीअत तो बहुत तेज़ है, यह मेरे क़ाबू में नहीं आएगा, उन्होंने कहा कि जाओ जुनैद बग़दादी के पास, यह जुनैद बग़दादी रह० के पास आ गए, जुनैद बग़दादी रह० ने उनको ख़ूब तरबियत फ़रमाई और आख़िर दो तीन साल के बाद उनकी तरफ़ से इजाज़त और नूरे निस्बत नसीब हो गई, अब उस अल्लाह के बंद पर अल्लाह की मुहब्बत का अजीब ग़ल्बा था, चूंकि कुर्बानी बड़ी दी थी, इतने बड़े उहदे को अल्लाह की ख़ातिर लात मारी थी, उनके दिल में अल्लाह की इतनी मुहब्बत थी कि उनके सामने कोई बंदा अल्लाह का नाम लेता था तो यह जेब में हाथ डालते थे, यह उनकी करामत

थी कि जेब में से गुड़ की डली निकालते थे और उस बंदे को खाने के लिये दे देते थे, फिर कोई अल्लाह का नाम लेता फिर उसको गुड़ की डली देते, तो किसी ने पूछा कि हज़रत! यह क्या मुआमला कि जो अल्लाह का नाम ले उसको गुड़ खाने को देते हैं? कहने लगे कि जिस मुंह से मेरे महबूब का नाम निकले, उस मुंह को मिठास से न भर दूं तो और क्या करूं, दिल में कितनी मुहब्बत होगी?

हज़रत शिब्ली रह0 का तअल्लुक़ मअ़ अल्लाह

इनके बारे में तज़किरतुल औलिया में बड़े वाक़िआत लिखे हैं, लेकिन इस तरह के वाक़िआत को बयान करने से मेरी तबीअत बहुत घबराती थी, मगर एक वाक़िआ हज़रत मौलाना मुहम्मद असलम मुलतानी ने राएवंड के सालाना इज्तिमाअ़ में सुनाया, इसके बाद हमें भी जुर्अत हो गई, फ़रमाने लगे कि उनका अल्लाह के साथ ऐसा अजीब तअल्लुक़ था कि जैसे पियारे एक दूसरे के साथ ख़ुश तबई करते हैं, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का उनके साथ ऐसा ही मुआमला हुआ, चुनांचे एक दफ़्आ वज़ू कर के मस्जिद की तरफ़ जा रहे थे, इल्हाम हुआः "शिब्ली! ऐसा गुस्ताख़ाना वज़ू करके मेरे घर की तरफ़ जा रहे हो?" यह इल्हाम जैसे हुआ शिब्ली रह0 वापस चले कि फिर से वज़ू करके आता हूं, फिर इल्हाम हुआः "शिब्ली! हमारे दर से पीठ फेर के कहां जाओगे?" तो शिब्ली रह0 ने ज़ोर से अल्लाह का नाम लिया, फिर इल्हाम हुआः "शिब्ली! तू हमें अपना जज़्बा दिखाता है?" अब चुप हो गए, फिर इल्हाम हुआः "शिब्ली! तू हमें अपना सब्र दिखाता है?" अल्लाह का उनके साथ ऐसा मुहब्बत का मुआमला था, मगर जो बताने वाली बात है वह बहुत अजीब है, कि एक मर्तबा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इल्हाम फ़रमाया कि "शिब्ली! क्या तू चाहता है कि मैं तेरे ऐबों को लोगों पर ज़ाहिर कर दूं कि

तुझे दुनिया में कोई मुंह लगाने वाला न रहे?" तो किताब में लिखा है कि फ़ौरन अर्ज़ किया कि अल्लाह!" क्या आप चाहते कि मैं तेरी रहमत को खोल खोल के बयान कर दूं कि तुझे दुनिया में कोई सज्दा करने वाला ही न रहे," फिर इल्हाम हुआः शिब्ली! "न तुम मेरी बात कहना, न मैं तेरी बात कहता हूं," अल्लाहु अक्बर!

रहमते इलाही की वुसअत

अल्लाह की रहमत इतनी ज़्यादा है कि पूरी दुनिया में जो आप मुहब्बतें देखते हैं, हमदर्दियां देखते हैं, यह एक हिस्सा हैं, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अपनी रहमत के हज़ार हिस्से फ़रमाए, उनमें से एक हिस्सा अल्लाह ने दुनिया में पैदा किया, इंसानों, जानवरों और परिंदों, सब की आपस में मुहब्बतें और हमदर्दियां इकट्ठी करें तो यह एक हिस्सा हैं और अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की रहमत नौ सौ निन्नानवे (999) हिस्से क़्यामत के दिन ज़ाहिर होंगे। जब इंसान अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का नाम कसरत से अपने दिल में सोचता है, लेता है तो दिल मानूस हो जाता है, इस नाम को लेने से को राहत होती है, फिर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त आ जाती है।

मुहब्बते इलाही के दो दीवाने

हमारे यहां ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह० एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, उनकी ख़ानक़ाह में लाग आके ठहरते थे, और अल्लाह अल्लाह सीखते थे, दो बूढ़े मियां दोनों सफ़ेद रीश, तहज्जुद के पाबंद, मुत्तबए सुन्नत, वर्अ़ा और तक़्वा की ज़िंदगी गुज़ारने वाले थे, एक मर्तबा मस्जिद के सिहन में एक दूसरे को पकड़ के झंझोड़ रहें, देखने वाला हैरान कि यह दोनों इतने बुज़ुर्ग आदमी यह क्या हुआ, जब वह क़रीब हुआ तो हैरान हुआ कि असल में उनमें से किसी एक ने कह दिया था कि अल्लाह मेरा है, अल्लाह मेरा है, और दूसरा इस बात

को सुन के उसको झंझोड़ता है कि नहीं, अल्लाह मेरा है, अल्लाह मेरा है, दोनों अल्लाह की मुहब्बत में दीवाने हैं, और वाक़ई जब इंसान अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त से ऐसी मुहब्बत करता है तो परवरदिगार इसका बदला उसकी उम्मीदों से बढ़ कर अता फ़रमाता है, तभी तो एक साहब कहते हैं कि मैं बांदी लेकर आया, आंख खुली तो तहज्जुद में वह कह रही थी कि "अल्लाह! आप को मुझ से मुहब्बत रखने की क़सम" तो मैंने उसे टोका कि यूं न कहो, बल्कि यूं कहो "अल्लाह! मुझे आप से मुहब्बत रखने की क़सम" कहते हैं कि वह इस बात पे ख़फ़ा हुई, कहने लगी कि अगर अल्लाह को मुझ से मुहब्बत न होती तो तुझे मीठी नींद न सुलाता और मुझे रात को मुसल्ले पे न बैठाता, मुसल्ले पे बैठाया है तो आख़िर अल्लाह को मुझ से मुहब्बत है

मुझको न अपना होश न दुनिया का होश है
बैठा हूं मस्त हो के तुम्हारे जमाल में

तारों से पूछ लो मेरी रूदादे ज़िंदगी
रातों को जागता हूं तुम्हारे ख़्याल में

इंसान को ऐसी मुहब्बत हो जाती है कि तहज्जुद में खुद बखुद आंख खुलती है। तो यह अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का ज़ाती नाम है, इसको इस्मे ज़ात कहते हैं।

अल्लाह के सिफ़ाती नाम "मन्नान" का मतलब

अब दो नामों की और मुख़्तसर सी तशरीह अर्ज़ कर दें, फिर बात मुकम्मल करें, एक नाम है "मन्नान" यह नाम अगर बैतुल्लाह की ज़ियारत नसीब हो तो ग़िलाफ़े कअ़बा के ऊपर भी "يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ" लिखे हुए होते हैं, मन्नान का मअ़नी होता हैः एहसान करने

वाला, मगर उलमा ने लिखा है कि बअ़ज़ लोगों की तबीअत होती है कि मांगने वाले को मांगने का मौक़ा नहीं देते, बस आसार देख के पहले ही दे देते हैं, इसकी मिसाल यूं समझें कि आप गाड़ी में रुके और आप ने एक फ़क़ीर को आते हुए देखा तो आप ने जैसे ही देखा, कुछ Coins (सिक्के) निकाल लिये, उसने मांगा नहीं, सिर्फ़ उसके अंदाज़ देख के आप ने उसको दे दिया, जिस की यह सिफ़त हो उसको मन्नान कहते हैं। और उलमा ने लिखा है कि कुछ लोग होते हैं जो उम्मीद से बढ़ के दे देते हैं, तवक़्क़ो से ज़्यादा देने की आदत होती है, जैसे हातिम ताई कि एक आदमी आया और कहने लगा कि जनाब! मुझे पांच दीनार की ज़रूरत है, गुलाम को कहा कि इसको पांच सौ दीनार दे दो, गुलाम ने पैसे तो दे दिये, फिर आकर पूछने लगा कि मांगे तो उसने पांच थे और आप ने पांच सौ कह दिये? तो हातिम ताई ने जवाब दिया कि उसने अपने मक़ाम के मुनासिब मांगा था और मैंने अपने हिसाब से दिया था, तो आदमी का अपना भी एक मक़ाम होता है, उसको फिर थोड़ा देते हुए भी शर्म आती है, तो जो उम्मीद से बढ़ कर देने वाला हो उसको भी मन्नान कहते हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मन्नान हैं, इसलिये जब भी कोई बंदा अल्लाह से मांगता है तो जितना मांगता है, अल्लाह उसकी उम्मीदों से बढ़ कर अता फ़रमाते हैं।

ज़रा ग़ौर कीजियेगा, तलबा के लिये एक दो मिसालें पेश हैं, सय्यदुना इब्राहीम अलै० ने दुआ मांगी कि ऐ परवरदिगारे आलम! मैंने अपनी औलाद को तेरे घर के पास आबाद किया "وَارْزُقْهُمْ مِنَ الثَّمَرَاتِ" उनको खाने के लिये फल अता कीजिये। अब उमूमी तौर पे फल दरख़्तों पे लगते हैं, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने दुआ क़बूल कर ली, मगर दुआ के जवाब में फ़रमाया कि ऐ मेरे इब्राहीम! "يُجْبٰى

"إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ" उस जगह पर हर चीज़ का फल पहुंचेगा, "ثَمَرَاتُ أَشْجَار" नहीं कहा कि दरख़्तों के फल पहुंचेंगे, हालांकि जानते थे कि मांगने वाले का मक़्सूद तो वही था, मगर देने वाला बहुत बड़ा है, मेरे ख़लील! तुम दरख़्तों के फल मांगते हो "يُجْبَى إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ" चुनांचे दरख़्तों के फल तो उनके Fruits (फल) होते हैं और खेतियों का फल उनके ग़ल्ला और सब्ज़ियां, और फ़ैक्ट्रियों का फल उनका Products (इनमें बनने वाली चीज़ें) होता है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने आज बैतुल्लाह को ऐसी जगह बना दिया जो चीज़ जहां कहीं बन रही है, पैदा हो रही है, अल्लाह दुनिया की हर चीज़ को अपने घर में पहुंचा रहा है, तो मांगने वाले ने थोड़ा मांगा था, मगर देने वाले ने ज़्यादा दिया। सय्यदुना उमर रज़ि0 एक मर्तबा मक्का मुकर्रमा से मदीना तय्यबा की तरफ़ आ रहे थे, तहज्जुद में आंख खुली, चौदहवीं का चांद था, नूर बरस रहा था, तबीअत बहुत मुतवज्जो हुई और इसमें उन्होंने सोचा कि यह क़बूलियते दुआ का वक़्त है, क्यों न मैं अल्लाह से अपनी मुराद मांगू, उन्होंने अल्लाह से दुआ मांगी "اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِي شَهَادَةً فِي سَبِيْلِكَ وَاجْعَلْ قَبْرِي فِي بَلَدِ حَبِيْبِكَ" (ऐ अल्लाह अपनी राह में मुझे शहादत नसीब फ़रमा, और मेरी क़ब्र अपने हबीब सल्ल0 के शहर यअ़नी मदीना मुनव्वरा में बनवा दीजिये) अब ज़रा सोचिये कि उन्होंने तो फ़क़त शहादत मांगी थी, यह पहाड़ की चोटी पे भी मिल सकती थी, ज़मीन की पस्ती पे भी, मगर नहीं, अल्लाह ने यह सआदत कहां दी? बावज़ू हैं, मस्जिदे नबवी है, मुसल्ला रसूल है, उसके ऊपर फ़ज्र की नमाज़ की इमामत करवा रहे हैं, नमाज़ के अंदर उनको यह सआदत मिलती है, नमाज़ के अंदर वह ज़ख़्म लगा जो शहादत का

ज़रीआ बना, फिर उन्होंने दुआ मांगी थी कि अल्लाह! मुझे अपने महबूब के शहर में दफ़न होने की तौफ़ीक़ देना, तो जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़न हो जाते, दुआ पूरी हो जाती, मगर नहीं, देने वाला बड़ा है और उम्मीदों से बढ़ के देता है, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने कहां जगह अता फ़रमाई? सुब्हानल्लाह! अपने हबीब सल्ल० के क़दमों में जगह अता फ़रमाई, गुंबदे ख़ज़रा में आज आराम कर रहे हैं तो जितना इंसान अल्लाह से तवक़्क़ो करता है, वह परवरदिगार जब देता है, फिर उसकी उम्मीदों से ज़्यादा बढ़ के देता है, वह मन्नान है, तवक़्क़ुआत से भी ज़्यादा देने वाली ज़ात है।

अल्लाह के सिफ़ाती नाम "हन्नान" का मतलब

और फिर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का एक सिफ़ाती नाम हन्नान है, हन्नान कहते हैं सबको ख़ुश रखने वाला और अगर कोई नाराज़ हो तो उसको जल्दी मना लेने वाला, हमने बअ़ज़ लोगों की तबीअत देखी है कि वह किसी की नाराज़गी नहीं बर्दाश्त कर सकते, कोई नाराज़ होगा तो मुआफ़ी मांग लेंगे, हाथ पकड़ लेंगे, पांव पकड़ लेंगे कि भाई! मान जाओ, वह बर्दाश्त ही नहीं कर सकते कि कोई उनसे नाराज़ हो, तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हन्नान भी हैं, वह चाहते ही नहीं कि मेरा बंदा मुझसे दूर हो, मुझसे ख़फ़ा हो, हालांकि आदाबे शाहाना का तक़ाज़ा तो यही था कि अगर कोई बंदा अल्लाह के दर से पीठ फेर के जाने लगता तो उसकी कमर में एक लात भी लगवा देते और दरवाज़ा भी हमेशा के लिये बंद कर देते कि बदबख़्त! तू मेरे दरवाज़े से पीठ फेर के जाता है, मगर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हन्नान हैं, वह ऐसा नहीं करते, बल्कि पीठ फेर के जाने वाले फ़रमाते हैं: "يَاأَيُّهَا الْإِنسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ" ऐ इंसान! तुझे तेरे करीम

परवरदिगार से किस चीज़ ने धोके में डाला हुआ है? जैसे छोटा बच्चा नाराज़ होता है तो मां उसको बैठ के मना रही होती है कि बेटे! मां से नहीं ख़फ़ा हुआ करते, मां से नहीं रूठा करते, वह बताती है कि मेरा तो मुहब्बत का तअल्लुक़ ऐसा है। इस आयते मुबारक का मतलब बिल्कुल इसी तरह बनता है, अल्लाह फ़रमाते हैं: "يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ" ऐ इंसान! तुझे तेरे करीम परवरदिगार से किस चीज़ ने धोके में डाला हुआ है? क्यों इस दर से दूर भागता फिर रहा है, ठोकरें खा रहा है, आओ न ज़रा मेरे दर की तरफ़, चुनांचे मां अपने बच्चे के साथ जितनी मुहब्बत करती है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने बंदों से इससे ज़्यादा मुहब्बत करते हैं। ज़रा सोचें! अगर मां का बेटा अग़वा हो जाए और फिर अचानक वह किसी वक़्त आके दरवाज़े पे दस्तक दे कि अम्मी! मैं आ गया हूं, दरवाज़ा खोलें, तो क्या मां दरवाज़ा खोलने में देर लगाएगी? कभी देर नहीं लगा सकती, मां जिस तरह बच्चे के लिये दरवाज़ा खोलने में देर नहीं लगाती, अल्लाह का कोई बंदा जिसने ग़फ़लत की ज़िंदगी गुज़ारी, गुनाहों भरी ज़िंदगी गुज़ारी, जो शैतान के पीछे चलता फिरा, नफ़्स की पूजा करता फिरा, अगर वह एहसास कर ले कि मुझे लौट के आना है, वह अल्लाह के दरवाज़े पे आकर दरवाज़ा खटखटाता है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त दरवाज़ा खोलने में देर नहीं लगाते, मेरे बंदे! तू मेरे पास आ गया? इसी लिये फ़रमाया कि अगर बूढ़ा जो हड्डियों का ढांचा बन गया था, न घर रहा, न दर रहा, न बीवी बच्चे रहे, वह किसी के यहां रहता था, अगर वह बंदा एहसास करता है कि अब मझे लोगों ने भी जवाब दे दिया, कि बड़े मियां! आप हर वक़्त खांसते रहते हैं, बच्चे तंग होते हैं, आप जाएं कहीं और ठिकाना

पकड़ें, तो वह वहां से निकलता है, सोचता है कहां जाऊं, फिर सोचता है कि चलो मस्जिद की तरफ़ चलता हूं, अब वह बूढ़ा लाठी टेक रहा है, कमर झुकी हुई है और मस्जिद की तरफ़ आ रहा है, तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस बंदे से यह नहीं पूछते कि मेरे बंदे! तेरी जवानी कहां गई? जमाल कहां गया? तुझे कितना मैंने दिया था तूने सब कुछ कहां लुटा दिया? आज तुझे मेरा दर याद आया? अल्लाह तआला तअ़ना नहीं देते, बल्कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस बंदे की तरफ़ मुतवज्जो होते हैं, मेरे बंदे! न तेरे जिस्म में ताक़त रही, न जवानी रही, न माल रहा, न जमाल रहा, सब कुछ ज़ाए करके अब इस उम्र में तुझे मेरा दर याद आया, मेरे बंदे! मैं तुझे तअ़ना नहीं दूंगा, मैं तेरे लिये दरवाज़े बंद नहीं करूंगा, तू एक क़दम उठाएगा, मेरी रहमत दो क़दम जाएगी "وَإِنْ أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً" तू मेरी तरफ़ चल के आएगा, मेरी रहमत तेरी तरफ़ दौड़ के जाएगी, अल्लाह तआला अपने बंदे को इस तरह मुतवज्जो फ़रमाते हैं।

चुनांचे इब्ने क़य्यिम रह० ने एक वाक़िआ लिखा है, फ़रमाते हैं कि मैं एक गली से गुज़र रहा था, मैंने देखा कि एक घर का दरवाज़ा खुला, एक मां अपने बच्चे से ख़फ़ा थी, उस मां ने अपने बच्चे को दो थप्पड़ लगाए और दरवाज़े से धक्का दिया और यह भी कहा कि तू मेरी बात नहीं मानता, नाफ़रमान है, अगर तुझको मेरी बात नहीं माननी है तो चल तू बाहर निकल, उसने घर से धक्का दिया, दरवाज़े बंद कर लिये, इब्ने क़य्यिम रह० फ़रमाते हैं कि मैंने उस बच्चे को देखा, वह ज़ार व क़तार रो रहा था कि उसकी मां ने उसको थप्पड़ लगाए थे और घर से बाहर उसको धक्का दे दिया था, मैं देखने लगा कि होता क्या है, वह कहते हैं कि वह बच्चा रोते रोते गली में चलता

चलता बिलआख़िर गली के किनारे पर पहुंचा और गली के किनारे पर खड़ा हो गया और वहां वह सोचने लगा और सोचने के बाद फिर आहिस्ता आहिस्ता वापस उसी दरवाज़े पर आया, थोड़ी देर के बाद मां ने जब दरवाज़ा खोला तो देखा कि वह बच्चा अभी दरवाज़े के ऊपर बैठा है तो वह कहने लगी जाता क्यों नहीं? अगर तुमको मेरी बात नहीं माननी, मेरी बात नहीं सुननी, तो यहां से दूर हो जा, जब मां ने दोबारा उसको डांटा तो बच्चा की आंख में आंसू आ गए, कहने लगाः अम्मी! मैंने दिल में सोचा था कि आपने तो मुझे घर से धक्का दे दिया, मैं चला जाता हूं और मैं गली के कोने तक चला भी गया था, वहां जाकर मुझे ख़्याल आया कि मैं किसी का नौकर बन जाऊंगा, खाना भी मिल जाएगा, कपड़े भी मिल जाएंगे, ठिकाना भी मिल जाएगा, मगर अम्मी! फिर यह ख़्याल आया कि दुनिया की सारी चीज़ें तो मिल जाएंगी मगर अम्मी! जो मुहब्बत आप ने मुझे दी है, वह मुहब्बत मुझे दुनिया में कहीं नहीं मिलेगी, यह सोच के मैं वापस आ गया, अम्मी! अब तू मारे, या धक्के दे, मैं यह दर छोड़ के नहीं जा सकता, इब्ने क़य्यिम रह0 फ़रमाते हैं कि उसने जब यह अलफ़ाज़ कहे तो मां का दिल मोम हो गया, मां ने कहाः बेटे! अगर तू यह समझता है कि जो मुहब्बत मैं दे सकती हूं दुनिया में कोई नहीं दे सकता तो मेरा दरवाज़ा खुला है, आके तू इस घर में ज़िंदगी गुज़ार ले, फ़रमाते हैं कि अगर इसी कैफ़ियत के साथ अल्लाह का कोई बंदा अल्लाह के दरवाज़े पे आता है और यह दुआ करता हैः

اِلٰهِیْ! عَبْدُکَ الْعَاصِیْ اَتَاکَا

مُقِرًّا بِالذُّنُوْبِ وَقَدْ دَعَاکَا

अल्लाह! तेरा गुनहगार बंदा तेरे दरवाज़े पे हाज़िर है, अल्लाह!

अपने गुनाहों का मैं इक़रार करता हूं और आप के सामने यह दुआ करता हूं

فَاِنْ تَغْفِرْ فَاَنْتَ لِذَاکَ اَھْل

وَاِنْ تَطْرُدْ فَمَنْ یَرْحَمْ سِوَاکَا

अल्लाह! अगर आप मग़फ़िरत मेरी कर दें तो यह बात आप को सजती है, और अगर आप भी धक्का दे दें तो मेरे लिये तो कोई दर नहीं, मेरे लिये तो यही एक दर है, अगर रोटी का सवाल करने वाला एक दरवाज़े से ख़ाली चला जाए तो उसको दूसरे दरवाज़े से मिल जाएगी, तीसरे दरवाज़े से मिल जाएगी, अल्लाह! मेरा तो यह मुआमला यह है कि एक ही दर है, मुझे तो आप को मनाना है, ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को मुआफ़ कर दीजिये, मैं अब तक ग़फ़लत भरी ज़िंदगी गुज़ारता रहा, अल्लाह! आइंदा मुझे नेकूकारी की ज़िंदगी अता फ़रमाइये, मुझे अपना बना लीजिये।

हमारी कितनी खुशनसीबी है कि हम अभी ज़िंदा हैं, ज़िंदगी में इंसान जिस वक़्त भी तौबा करे अल्लाह तौबा क़बूल फ़रमा लेते हैं, लिहाज़ा इस क़ीमती वक़्त को और ज़्यादा क़ीमती बना कर आज की इस महफ़िल में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामने, उस मन्नान के सामने जो इंसान की तवक़्क़ो से बढ़ कर देने वाला है, उस हन्नान के सामने जो नहीं चाहता कि मेरे बंदे मुझ से दूर हो जाएं, जो क़रीब करना पसंद फ़रमाता है, उसके सामने अपने गुनाहों से सच्ची मुआफ़ी मांग के आज हम एक नई ज़िंदगी गुज़ारने का, और आइंदा नेकूकारी और परहेज़गारी की ज़िंदगी गुज़ारने का इरादा करें, ऐ परवरदिगारे आलम आज की इस मजलिस को ज़िंदगी के बदलने का ज़रीआ बना दीजिये, ताकि हम घर में भी अच्छे फ़र्द बन कर रहें, मुआशरे का

अच्छा इंसान बन के रहें, एक तड़पता हुआ दिल हमारे सीनों के अंदर हो, जो दूसरों के लिये ख़ैर का ज़रीआ बन जाए, परवरदिगारे आलम बड़े करीम हैं यक़ीनन हमारी इन मुरादों को पूरा फ़रमाएंगे और आज की इस मजलिस में अल्लाह हमारे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमाएंगे।

وآخرُ دعْوانا أنِ الحمدُ لِلّٰهِ ربِّ العالَمين

☆☆☆

आइंदा सफ़्हात पर आप जो ख़िताब मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, यह ख़िताब गुजरात की मुअक्कर दीनी दर्सगाह "जामिआ फ़लाहुद्दारैन", तरकैसर की मस्जिद में 8 अप्रेल 2011 बरोज़, जुमुआ की नमाज़ से पहले हुआ था, सामिईन में ग़ालिब अक्सरियत हज़राते उलमाए किराम व तलबा पर मुशतमिल थी।

कुर्बे इलाही के सात ज़ीने

الحمد للّٰه و کفی وسلام علی عباده الذین اصطفی، اما بعد

اعوذ باللّٰه من الشیطان الرجیم، بسم اللّٰه الرحمٰن الرحیم

عَیْنًا یَّشْرَبُ بِھَا الْمُقَرَّبُوْنَ

سبحان ربک رَبِّ العزة عما یصفون، وسلام علی المرسلین، والحمد للّٰه رب العلمین

اللھم صل علی سیدنا محمد و علی ال سیدنا محمد وبارک وسلم

اللھم صل علی سیدنا محمد و علی ال سیدنا محمد وبارک وسلم

اللھم صل علی سیدنا محمد و علی ال سیدنا محمد وبارک وسلم

अल्लाह का कुर्ब, एक अज़ीम नेअ़मत

हर इंसान के ऊपर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की ला तादाद नेअ़मतें हैं, उनमें से वह नेअ़मतें बहुत मुम्ताज़ हैं, एक ईमान वाली नेअ़मत और दूसरी नेअ़मत अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का कुर्ब नसीब होना। जादूगरों ने फ़िरऔन से पूछा था कि अगर हम जीत गए तो हमें इन्आम क्या मिलेगा? उसने जवाब दिया था: "اِنَّکُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِیْنَ" कि इन्आम यह होगा कि मैं तुमको अपने मुक़र्रब बंदों में बना लूंगा, तो मालूम हुआ कि कुर्ब से बड़ी नेअ़मत और कोई नहीं है। और हर कलिमा गो की यह तमन्ना होती है कि मुझे अल्लाह का कुर्ब नसीब हो जाए। हमारे मशाइख़ ने उसके सात दर्जे बताए हैं, सात ज़ीने अगर चढ़ जाएं तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का कुर्ब हासिल हो जाएगा।

कुर्बे इलाही का पहला ज़ीना: अदब

इनमें सबसे पहला ज़ीना अदब है, इस सफ़र की इब्तिदा अदब से शुरू होती है "اَلدِّیْنُ کُلُّهٗ آدابٌ" दीन सबका सब अदब है। नबी

सल्ल० ने फ़रमायाः "أَدَّبَنِي رَبِّي فَأَحْسَنَ تَأْدِيبِي" मेरे रब ने मुझे अदब सिखाया और बेहतरीन अदब सिखाया।

أَدِّبُوا النَّفْسَ أَيُّهَا الْأَصْحَابُ   طَرِيقُ الْعِشْقِ كُلُّهَا آدَابُ

राहे इश्क़ में आदाब ही आदाब हैं   ऐ साथियो! खुद को बा अदब बनाओ

अदब के सबूत की कुर्आनी दलील

अब अगर कोई पूछे कि अदब कहां से आ गया? तो देखिये हज़रत मूसा अलै० एक वादी के अंदर पहुंचे, तो रब्बे करीम इर्शाद फ़रमाते हैंः ऐ मेरे प्यारे मूसा! "فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ" अपने जूतों को उतार दीजिये, "إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى" आप एक मुक़द्दस वादिये तुवा के अंदर हैं, यह मूसा अलै० का जूतों का उतार देना यह अदब की कुर्आनी दलील है, तो अदब पहला क़दम है, यह पहला ज़ीना है, जितना अदब ज़्यादा होगा, उतना इंसान का पहला दर्जा बुलंद होगा।

आदाब की रिआयत करने पर अल्लाह की खुसूसी रहमतें

फिर इस अदब से अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की खुसूसी रहमतें नाज़िल होती हैं। एक वाक़िआ सुन लीजिये! इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़ सानी रह० ने अपने बारे में वाक़िआ लिखा है कि मैं मक्तूबात लिख रहा था, यअ़नी कुर्आन व हदीस से दावत के मज़मून को यक्जा कर रहे थे, मुझे बैतुल खुला जाने की ज़रूरत पेश आई, मैं वहां गया और क़ज़ाए हाजत के लिये बिल्कुल बैठने लगा तो मेरी नज़र अपनी उंगली पर पड़ी, उसमें सियाही लगी होती थी, मैंने सोचा कि अगर मैं यह पानी इस्तेमाल करूंगा तो यह सियाही पानी के साथ बह कर नजासत के साथ मिलेगी, और यह तो वह सियाही है जो मैं मक्तूबात लिखने में इस्तेमाल करता हूं, तो यह अदब के ख़िलाफ़ है, फ़रमाते हैं कि मैंने अपने तक़ाज़े को रोका और बैतुल खुला से बाहर निकल कर पाक जगह पर उस सियाही को साफ़ किया, उसी वक़्त

इल्हाम हुआः अहमद सरहिंदी! इस अदब की वजह से हमने जहन्नम की आग को तुम पर हराम कर दिया है।

ज़ुबैदा ख़ातून एक नेक औरत गुज़री हैं, उसने बड़े अच्छे अच्छे काम करवाए, नहरे ज़ुबैदा बनवाई और लोगों की फ़लाह के बड़े आला काम किये, जब फ़ौत हो गईं तो किसी के ख़्वाब में नज़र आईं तो पूछा कि क्या मुआमला हुआ? कहने लगीं कि अल्लाह तआला ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी, उसने कहाः मग़फ़िरत तो होनी ही थी, क्योंकि आप ने नहरे ज़ुबैदा बनवाई थी, प्यासों को पानी पिलाया था, कहने लगीं कि नहरे ज़ुबैदा की वजह से मग़फ़िरत नहीं हुई, बल्कि एक ऐसे अमल की वजह से हुई जो मुझे याद भी नहीं था, पूछा वह कौनसा अमल था? कहने लगीं कि मैं बैठी खाना खा रही थी, लुक़्मा तोड़ा कि मुंह में डालूं, इतने में अज़ान हुई, अल्लाहु अक्बर की आवाज़ कानों में आई तो मैंने महसूस किया कि मेरे सर पे दुपट्टा पूरा नहीं था, आधे सर पे था और आधा सर नंगा था, मैंने अपनी भूक को दबा के लुक़्मे को रख दिया और अल्लाह के नाम के अदब की वजह से पहले दुपट्टे से अपने को ढांपा, इसके बाद वह लुक़्मा खाया, अल्लाह ने फ़रमायाः तूने मेरे नाम का इतना इक्राम किया, इस पर हमने तेरे सब गुनाहों की बख़्शिश कर दी। यह पहला क़दम अदब है जो इंसान के लिये सआदत का दरवाज़ा है।

दूसरा ज़ीनाः इल्मे नाफ़ेअ़

अदब से एक नेअ़मत मिलती है, जिसको इल्मे नाफ़ेअ़ कहते हैं, एक इल्म मिलता है फ़क़त किताबों के मुतालआ से, और एक इल्मे नाफ़ेअ़ होता है, इन दोनों में फ़र्क़ यह है कि एक मालूमात होती है, जैसे बहुत सारी बातों का लोगों को पता होता है, मगर अमल की तौफ़ीक़ नहीं होती, तो जो आम बातें हैं उनको मालूमात कहेंगे, और

जिस पर इंसान का अमल हो, उसको इल्मे नाफ़ेअ़ कहेंगे, इसी लिये इंसान बअ़ज़ मर्तबा इल्म के बावजूद गुमराह हो जाता है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं: "أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلٰهَهُ هَوَاهُ" क्या देखा आपने उसको जिसने अपनी ख़्वाहिशात को अपना मअ़बूद बना लिया "وَأَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ" अल्लाह ने इल्म के बावजूद उसे गुमराह कर दिया, क्योंकि उसके पास मालूमात थीं, इल्मे नाफ़ेअ़ नहीं था।

यह नफ़्आ देने वाला इल्म अजीब चीज़ होती है, एक मर्तबा इस आजिज़ को मुफ़्तीये आज़म हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ीअ़ रह0 की मजलिस में बैठने की सआदत मिली, हज़रत ने हाज़िरीन से पूछा कि इल्म का मफ़हूम क्या है? किसी ने कहा: जानना, किसी ने कहा: पहचानना, सबने अपने अपने जवाब दिये, हज़रत ख़ामोश रहे, किसी ने अर्ज़ किया: हज़रत! आप ही बता दीजिये, तो हज़रत ने फ़रमाया कि इल्म वह नूर है जिसके हासिल होने के बाद उस पर अमल किये बग़ैर चैन नहीं आता, इसको इल्मे नाफ़ेअ़ कहते हैं, चुनांचे इधर बात बढ़ी और उधर सुन्नत से अपने आप को सजा लिया, यह तालिबे इल्म का शिआ़र बन जाता है, वह सुन्नतों का मुतलाशी बन जाता है, जैसे दुल्हन जिस्म के अअ़ज़ा को ज़ेवरात से सजा लेती है, वह समझती है कि मैं ख़ाविंद की नज़र में खूबसूरत बन जाऊंगी, ऐसे ही मोमिन जिस्म के जिन अअ़ज़ा को सुन्नतों से सजा लेता है, वह अल्लाह की नज़र में खूबसूरत बन जाता है, तो यह दूसरा ज़ीना इल्मे नाफ़ेअ़ है। यह इल्मे नाफ़ेअ़ अदब से मिलता है।

उस्ताज़ के अदब की बरकत

एक वाकिआ सुन लीजिये! हमारे इलाक़े में हज़रत शैख़ुल हिंद रह0 के एक शागिर्द थे, उनका नाम था गुलाम रसूल, इलाक़े का नाम

कोंटा, तो गुलाम रसूल कोंटवी उनके नाम से मशहूर थे, उन्होंने दारुल उलूम देवबंद से हदीसे पाक का इल्म हासिल किया, शैख़ से बड़ी मुहब्बत थी जब दौरए हदीस में थे तो उनको हज़रत शैख़ुल हिंद रह0 से इतनी मुहब्बत थी कि रात के वक़्त वह हज़रत के कमरे से लेकर दारुल हदीस तक का जो रास्ता है, उसमें वह झाड़ू दिया करते थे कि मेरे शैख़ को यहां से चल कर आना है, अल्लाह की शान एक दिन झाड़ू नहीं थी, तो उन्होंने सर का अमामा उतार लिया और उसी से साफ़ करना शुरू कर दिया और अल्लाह की शान कि शैख़ुल हिंद रह0 ने किसी ज़रूरत से खिड़की खोली, दरवाज़ा खोला, तो देख लिया, पूछा कि गुलाम रसूल! क्या कर रहे हो? बताना पड़ा कि हज़रत! आप जिस रास्ते से हदीस पढ़ाने के लिये चल के आते हैं, मेरे दिल में मुहब्बत है, मैं उस रास्ता को साफ़ कर रहा हूं, शैख़ ने दुआ दी, और यह दुआ ऐसी लगी कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनको जबलुल इल्म बना दिया, उनका गांव मेन सड़क से 30 किलोमीटर अंदर था, 300 तलबा उनके पास पढ़ते थे, और हर तालिबे इल्म बस से उतर कर 30 किलोमीटर सर पे सामान रख के पैदल जाता था और पैदल आता था, खाना भी पूरा नहीं मिलता था, जो होता था खा लेते थे, एक मर्तबा ख़ैरुल मदारिस में जलसा हुआ तो हज़रत मौलाना ख़ैर मुहम्मद जालंधरी रह0, जो हज़रत अक़्दस थानवी रह0 के खुलफ़ा में बड़े उलमा में थे, तो हज़रत ने स्टेज पर एलान किया कि शम्सुल नुहात गुलाम रसूल कोंटवी तशरीफ़ ले आएं, पूरे मुल्क के उलमा मौजूद हैं, उनकी मौजूदगी में फ़रमाया। और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनको ऐसा इल्म दिया था कि फ़रमाया करते थे कि अगर शर्ह जामी पूरी दुनिया से ज़ब्त कर ली जाए और कोई तालिबे इल्म मेरे पास आकर कहे कि हज़रत! शर्ह जामी की

ज़रूरत है तो मैं अपनी याददाश्त से उसको दोबारा लिखवा सकता हूं, यह इल्म उस्ताज़ के अदब की वजह से मिला।

हज़रत मुर्शिद आलम रह0 और आदाब की रिआयत

हमारे हज़रत रह0 क़ुर्आन मजीद ऐसा बयान फ़रमाते थे कि सुब्हानल्लाह, एक मर्तबा ख़ुद फ़रमाने लगे कि यह नेअ्मत मुझे बैतुल्लाह से मिली, फिर फ़रमाने लगे कि तुम्हें पता है क्यों? मैंने कहा नहीं, कहने लग कि न मैंने अपने शैख़ का चेहरा कभी बेवज़ू देखा, न मैंने कभी बैतुल्लाह को बेवज़ू देखा, यह उसकी बरकत थी कि अल्लाह ने किताबुल्लाह का इल्म मुझे अता फ़रमा दिया था।

अल्लामा अनवर शाह कशमीरी रह0 और आदाब की रिआयत

एक मर्तबा हज़रत मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह ने तलबा से पूछा कि अल्लामा अनवर शाह कशमीरी रह0 अनवर शाह कशमीरी कैसे बने? तो किसी ने कहा कि बड़े मुफ़स्सिर थे, किसी ने कहा बड़े मुहद्दिस थे, किसी ने कहा अख़्लाक़ बड़े आला थे, हज़रत ख़ामोश हो गए, तलबा ने कहा हज़रत! आप बताएं, फ़रमाया कि एक मर्तबा किसी ने हज़रत कशमीरी रह0 से यह सवाल किया कि आप अल्लामा अनवर शाह कशमीरी कैसे बने? फ़रमाने लगे कि किताबों के अदब की वजह से अल्लाह ने मुझे अनवर शाह कशमीरी बना दिया, पूछा कि कैसा अदब? फ़रमाने लगे कि मैं क़ुर्आन मजीद के ऊपर तफ़सीर की किताबों को नहीं रखता था, तफ़सीर के ऊपर हदीस की किताबों को नहीं रखता था, हदीसे पाक की किताबों के ऊपर फ़िक़्ह की किताबों को नहीं रखता था, फ़िक़्ह के ऊपर तारीख़ को नहीं रखता था, किताबों के रखने में भी मैं उनके दर्जे का ख़्याल रखता था, और किताब को पकड़ते हुए हमेशा मैं बावज़ू हुआ करता था।

तीसरा ज़ीनाः अमले सालेह

और फिर इस पर तीसरी नेअ़मत मिलती है, जिसको अमले सालेह कहते हैं, इल्मे नाफ़ेअ़ जब भी मिलेगा अमल की तौफ़ीक़ साथ होगी, अमल के बग़ैर चैन नहीं आएगा, "اَلْعِلْمُ بِلَا عَمَلٍ كَالشَّجَرِ بِلَا ثَمَرٍ"

चौथा ज़ीनाः हिक्मत

और जब इंसान अमले सालेह करता है तो फिर अल्लाह तआला उस पर एक और नेअ़मत अता फ़रमा देते हैं जिसको हिक्मत कहते हैं "وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا"- "اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ" ऐसी हिक्मत नसीब हो जाती है कि फिर इंसान की सोच वहां पहुंचती है जहां दूसरे बंदे की परवाज़ भी नहीं हो सकती।

इमाम अबू हनीफ़ा रह0 की हिक्मत व फ़रासत

अब वाक़िआत तो बहुत हैं, लेकिन एक दो वाक़िआत अर्ज़ कर दता हूं, इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह0 के पास एक बूढ़ा आया, कहने लगा "वाव" औ "वावैन" हज़रत ने फ़रमायाः "वावैन" अब वह जो 40 हज़रात मसाइल के इस्तिन्बात में शरीक थे, जिनमें इमाम अबू यूसुफ़ रह0 भी हैं, इमाम मुहम्मद रह0, इमाम ज़ुफ़र रह0, दाऊद ताई रह0 जैसे तक़्वे के पहाड़ हैं, किसी की कुछ समझ में नहीं आया, सारा दिन सोचते रहे कि बूढ़े ने क्या कहा और हज़रत ने क्या कहा, हज़रत ने फ़रमायाः "वावैन" तो बूढ़ा कह के चला गयाः "لَا وَلَا" अब यह सब हैरान हुए तो इन्होंने इमाम साहब से पूछा कि हज़रत! यह इशारे समझ में नहीं आए, बता दीजिये, फ़रमाया कि उसने मुझ से सवाल पूछा कि मैं अत्तहिय्यात को एक वाव से पढ़ूं या दो वाव से? हम अहनाफ़ जो हैं वह दो वाव से पढ़ते हैंः "اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ

"وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ" तो वह यह मुझ से पूछने आया था, और मैंने कह दियाः "वावैन" यअ़नी दो वाव से पढ़ लो, फिर पूछा कि हज़रत! वह जाते हुए "لَاوَلَا" क्या कह गया, फ़रमाया कि वह दुआ दे के चला गया, पूछा हज़रत! यह "لَاوَلَا" तो कोई दुआ नहीं है, फ़रमाने लगे कि वह कुर्आन मजीद की आयत से इशारा कर गया कि अल्लाह! अबू हनीफ़ा के इल्म को इतना फ़ैला दे कि "لَاشَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ" (मशरिक़ व मग़रिब का कोई फ़र्क़ न रह जाए)।

एक आदमी ने आकर कहा कि हज़रत! मेरी बीवी की आदत थी हंडिया चाटने की, और मैंने उसे बड़ा मना किया और गुस्से में क़सम खा ली कि हंडिया चाटेगी तो तलाक़ दे दूंगा, कुछ दिन तो वह बाज़ रही, फिर हंड़िया चाटने लगी, अब तलाक़ वाक़ेअ़ हुई कि नहीं हुई, जिससे पूछते हैं कहते हैं कि तलाक़ वाक़ेअ़ हो गई, हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह० के पास आया, और पूछा, तो हज़रत ने फ़रमाया कि अपनी बीवी को लाओ, मैं एक सवाल पूछुंगा, बीवी को ले आया, हज़रत ने पूछा कि तुम ने हंडिया कैसे चाटी थी? उसने कहा कि हज़रत! मैंने यूं उंगली उसमें डाली और जो सालन आया मैंने उसे चाट लिया, फ़रमाया, तुमने हंडिया नहीं चाटी, तुमने उंगली चाटी है, तुम्हें तलाक़ वाक़ेअ़ नहीं हुई, यह हिक्मत होती है।

इसी तरह फ़ुक़हा के नज़दीक एक मस्ला छिड़ा कि अगर कोई इंसान चार रकअ़त फ़र्ज़ अदा कर रहा हो और पहली अत्तहिय्यात में "عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ" तक पढ़े फिर भूल जाए (और दरूद शरीफ़ शुरू कर दे) तो किसी ने कहा कि "اَللّٰهُمَّ" पढ़ लिया फिर खड़ा हो गया तो कोई हरज नहीं, किसी ने कहा "صَلِّ" पढ़ लिया फिर भी कोई हरज नहीं, किसी ने कहा "عَلٰى" भी पढ़ लिया और खड़ा हो गया तो भी कोई हरज नहीं, इमाम साहब ने फ़त्वा दिया कि अगर "اَللّٰهُمَّ"

"مُحَمَّدٍ" صَلِّ عَلٰى का लफ़्ज़ भी अदा कर लिया तो अब सज्दा सह्व वाजिब हो गया क्योंकि ताख़ीर हो गई, अब यह बड़ा अजीब मस्ला था, ख़्वाब में नबी सल्ल0 की ज़ियारत नसीब हुई, नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः नोअ़मान! तुमने मेरा नाम लेने पर सज्दए सह्व करने का हुक्म दिया? तो अर्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! मैंने यह फ़त्वा दिया कि जो शख़्स भूल कर ग़फ़लत से आपका नाम ले, उस पर सज्दए सह्व करने का हुक्म है तो नबी सल्ल0 मुस्कुराए कि तुमने अच्छा जवाब दिया, इसको हिक्मत कहते हैं।

शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रह0 की हिक्मत

क़रीब के ज़माने में हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ रह0 की मुबारक ज़िंदगी को पढ़ें, आपको एक एक बात में हिक्मत नज़र आएगी। और क़रीब के ज़माने में हज़रत अक़्दस थानवी रह0 की ज़िंदगी को पढ़ लीजिये, ऐसी नुक्ता आफ़रीनी कि सब हैरान हो जाएं, यह हिक्मत है जो अल्लाह की तरफ़ से मिलती है। शाह अब्दुल अज़ीज़ रह0 के पास एक अंग्रेज़ आया, अपने बच्चे को ले के कहने लगा कि मदरसे में आप लोग बस अरबी पढ़ाते रहते हैं तो आप के बच्चे बहुत ही Narrow Mind (तंग ज़ह्न) बन जाते हैं, और हम अपने बच्चों को साइंस पढ़ाते हैं, यह मेरे बच्चे को देखो मैं साइंस पढ़ा रहा हूं, आप देखिये कितना Intelligent (अक़्लमंद) है, हज़रत ने उस बच्चे को बुला कर पूछा कि यह वज़ू करने का जो तालाब है बताओ कि इस तालाब में कितने प्याले पानी होंगे? अब तालाब में तो हज़ारों लीटर पानी होता है, अब उसमें कितने प्याले पानी है?? यह कैसे मालूम होगा?--उसने कुछ देर सोचने के बाद कहा कि मुझे तो पता नहीं, तो हज़रत ने उसके हम उम्र एक तालिबे इल्म को बुलाया वह मंतिक़ पढ़ने वाला था, उस तालिबे इल्म से

कहा कि बताओ कि इस तालाब में कितने प्याले पानी हैं? उसने कहा हज़रत! अगर उस तालाब के मुक़ाबले आधे साइज़ का प्याला हो, तो दो (2) प्याले पानी और अगर उस तालाब के बराबर साइज़ का प्याला हो तो एक (1) प्याला पानी।

पांचवां ज़ीनाः ज़ुहूद फ़िद्दुन्या

फिर हिक्मत जब इंसान को मिल जाए तो फिर उसको दुनिया की हक़ीक़त मालूम हो जाती है और फिर उस इंसान को ज़ुहूद फ़िद्दुन्या नसीब हो जाता है।

ज़ुहूद फ़िद्दुन्या की हक़ीक़त

ज़ुहूद फ़िद्दुन्या, तर्के दुनिया को नहीं कहते, तर्के लज़्ज़ाते दुनिया को ज़ुहूद कहते हैं, याद रखना जिसको अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की हक़ीक़त का पता चल गय वह अल्लाह से जुड़े बग़ैर रह नहीं सकता, जिस को दुनिया की हक़ीक़त क पता चल गया वह दुनिया से कटे बग़ैर रह नहीं सकता, तो जब हिक्मत मिलती है तो फिर ज़ुहूद फ़िद्दुन्या खुद नसीब हो जाती है।

फ़ुक़हा में एक मस्ला चला कि अगर एक आदमी फ़ौत हो जाए और वसियत कर जाए कि मेरी विरासत मुतवक्किलीन में तक़सीम कर देना तो क्या करेंगे, किसी ने कुछ जवाब दिया, किसी ने कुछ दिया, इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह0 ने फ़रमाया कि उसको हम काश्तकारों में तक़सीम करेंगे। लागों ने पूछा क्यों? फ़रमाने लगे कि यह बेचारे हल चलाते हैं, बीज डालते हैं, पानी देते हैं, इसके बाद फिर अल्लाह पर नज़र रखते हैं कि अल्लाह! हमारा काम तो बीज डालने तक था, अब आगे खेती तो आप को करनी है, तो फ़रमाया कि यह अहूले तवक्कुल लोग हैं, उनमें तक़सीम करेंगे।

फिर एक बात छिड़ी कि अगर कोई वसियत करे कि मेरी

विरासत दाना अक़्लमंद लोगों में तक़सीम कर दो, तो किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ, हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह0 से पूछा गया, हज़रत ने फ़रमाया कि अगर यह उसने वसियत की तो अब उसकी विरासत को ज़ाहिदीन में तक़सीम करेंगे, क्योंकि ज़ाहिद इंसान अक़्लमंद इंसान होता है, तो हिक्मत से इंसान को ज़ुहद फ़िदुन्या की नेअ़मत्त मिली।

छटा ज़ीनाः इनाबते इलल्लाह

जब ज़ुह्द इंसान को मिल जाए तो फिर इनाबते इलल्लाह की एक नई नेअ़मत मिलती है, इसको कहते हैं: اَلتَّجافِى عَن دارِالغرورِ والإنــابةُ اِلـى دارِ الـخلودِ واستعدا دٌللموتِ قبلَ نُزُولِه" (धोका के घर दुनिया से बेरग़बती और हमेशगी के ठिकाने आख़िरत की तरफ़ रुजूअ़, नीज़ मौत से पहले मौत की तैयारी) और इस इनाबत की वजह से उस बंदे का हर हर अमल इख़्लास वाला और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ वाला बन जाता है, इसलिये क़ुर्आन मजीद में फ़रमायाः "اَفَـلَمْ يَـنْـظُرُوْ اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ . وَالْاَرْضَ مَـدَدْنٰهَـا وَاَلْـقَيْـنَـا فِيْهَـا رَوَاسِيَ وَاَنْبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيْــجٍ تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ۔ इसी सूरत में आगे चल कर फ़रमाया-- وَجَـآءَ بِـقَـلْـبٍ مُّنِيْبٍ۔ कि यह बंदा फिर अब्द मुनीब बन जाता है, अल्लाह को यह इनाबत बहुत पसंद है, तो ज़ुह्द फ़िदुन्या से एक छटी नेअ़मत मिली जिसको इनाबते इलल्लाह कहते हैं।

सातवां ज़ीनाः क़ुर्बे इलाही

और जो शख़्स इनाबते इलल्लाह की ज़िंदगी गुज़ारता है, उसको अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपना क़ुर्ब अता फ़रमाते हैं तो इब्तिदा अदब है और इंतिहा क़ुर्ब है और जो मुक़र्रिबीन होंगे सुब्हानल्लाह फ़रमायाः "يتـقـرب الـیّ عبـدی بـالنوافل" मेरा बंदा नवाफ़िल के ज़रीआ मेरा

ऐसा कुर्ब पा लेता है "حَتّٰى اُحِبَّهٗ" मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूं। कितनी खुशनसीबी की बात है कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त बंदे से मुहब्बत फ़रमाने लगते हैं, सुब्हानल्लाह।

इसी लिये जन्नत में तीन तरह के मेहमान होंगे, एक मेहमान तो वह होंगे ज़िनके लिये सबील होगी, चश्मे होंगे और वहां से पियेंगे, एक यह दर्जा कुर्ब का "عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ" और एक वह होंगे जिनको गुलमानं यअ़नी खुद्दाम पिलाएंगे, وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ--- जैसा घर में होता है कि मेहमान तीन दर्जे के होते हैं, कुछ मेहमान ऐसे आते हैं कि उनके लिये पहले से जग गिलास रखा होता है कि ज़रूरत हो तो आप पी लीजिये। और कुछ मेहमान होते हैं कि जिनके लिये आप घर के बच्चे को भेजते हैं कि जाओ मेहमान को पानी पिलाओ वह निकाल के देता है और पिलाता है। और कुछ मेहमान इतने अ़ज़ीम होते हैं कि आप खुद जग गिलास ले के आते हैं, अपने हाथ से निकाल के पिलाते हैं तो जन्नत में भी तीन तरह के मुक़र्रिबीन होंगे, एक वह जिनके लिये चश्मे होंगे और उनसे वह पियेंगे। और दूसरे दर्जे के वह लोग होंगे कि जिनके लिये गुलमान होंगे और वह उनको पिलाएंगे और तीसरे मुक़र्रिबीन वह होंगे "وَسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا" परवरगिार इनको शराब पिलाएगा, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हमें अपने मुक़र्रब बंदों में शामिल फ़रमाए।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

☆☆☆

आइंदा सफ़्हात पर आप जो ख़िताब मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, यह ख़िताब नई देहली के, ओखला के ज़ाकिर नगर की "जामा मस्जिद" में 10 अप्रेल 2011 बरोज़ इतवार, बअ़द नमाज़े इशा हुआ था, जिसमें सामिईन की तादाद का अंदाज़ा आठ से दस हज़ार का बताया जा रहा है।

इस्लामी शरीअत की ख़ूबसूरती

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد

اعوذ بالله من الشيطان الرجيم، بسم الله الرحمٰن الرحيم

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَکَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا اُمَّةً مُسْلِمَةً لَکَ

وقالَ رسولُ اللهِ ﷺ: المُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِسانِهٖ ويَدِهٖ

سبحان ربک رَبِّ العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العلمين

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارک وسلم

मुसलमान की तारीफ़

जो मख़्लूक़ सरापा ख़ैर है, वह फ़रिशते हैं, जो सरापा शर है, वह शैतान है, जो ख़ैर और शर का मज्मूआ है, वह हज़रत इंसान, हर इंसान के अंदर ख़ैर भी है और शर भी है, लेकिन दस्तूर यह है कि जिस बंदे में ख़ैर ग़ालिब हो वह अच्छा इंसान है, जिसमें शर ग़ालिब हो वह बुरा इंसान। दीने इस्लाम ने एक ख़ूबसूरत दस्तरू बता दिया कि "اَلْمُسْلِمُ मुसलमान वह है..........यह मुसलमान की Definition (तारीफ़) की जा रही है, जैसे आप कहते हैं कि फ़लां चीज़ को Define (पहचान बताना) करो, बताओ, तो नबी सल्ल0 ने मुसलमान की Definition (तारीफ़) बताई। مَنْ سَلِمَ" "اَلْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِسانِهٖ وَيَدِهٖ" कि दूसरे मुसलमान जिसकी ज़बान से और हाथों से सलामती में हों, वह महफ़ूज़ हों, समझ लीजिये कि गोया मुसलमान की बुन्याद दो बातें बताई गईं, दो तरह से इंसान

किसी को नुक़्सान पहुंचा सकता है, या अमली या ज़बानी व कलामी, तो फ़रमाया कि जिसकी ज़बान से भी दूसरे महफ़ूज़ हों और जिसके हाथ से भी दूसरे महफ़ूज़ हों।

ज़बान का नुक़्सान हाथ के नुक़्सान से बढ़ कर

इसमें ज़बान को मुक़द्दम किया गया, इसको पहले बताया गया, इसकी वजह यह है कि हाथ से किसी को नुक़्सान पहुंचाना, यह तो ताक़तवर बंदे का काम होता है, और ज़बान से तो ताक़तवर भी बात कर सकता है, कमज़ोर भी बात कर सकता है, दूसरी बात कि इंसान ज़बान से फ़क़त ज़िंदों को ही नहीं, मुर्दों को भी लपेट में ले सकता है, अपने से पहले गुज़रे हुए लोगों की भी ग़ीबत कर सकता है, ईज़ा पहुंचा सकता है, जब कि हाथ से तो उनको ईज़ा नहीं पहुंचा सकता और तीसरी बात यह कि हाथ से लगा हुआ ज़ख़्म बिलआख़िर मुंदमिल हो जाता है, ज़बान से लगा हुआ ज़ख़्म कभी मुंदमिल नहीं होता, वह हमेशा याद रहता है, इसलिये नबी सल्ल0 ने ज़बान का तज़किरा पहले फ़रमाया कि ज़बान का नुक़्सान हाथ के नुक़्सान से ज़्यादा बुरा है।

इंसान में ख़ैर और शर का माद्दा

नबी सल्ल0 ने इसको मज़ीद वाज़ेह फ़रमा दिया, मुस्लिम की रिवायत है कि नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "تَكُفُّ شَرَّكَ عَنِ النَّاسِ" तुम, लोगों को अपने शर से बचाओ, हर बंदे में ख़ैर और शर है, अच्छे मूड में है तो ख़ैर, वही बंदा गुस्से में आ जाए तो आप देखें कि आंखें कैसी हो जाएंगी, चेहरा कैसा हो जाएगा, क्या अलफ़ाज़ बोलने लग जाएगा, हाथ उठाएगा, वही जो शुरू में इतना अच्छा लग रहा था अब वह बिल्कुल जानवर बन जाएगा, तो मालूम हुआ कि इंसान के इख़्तियार में है कि अगर वह अपने ऊपर Control (क़ाबू) कर ले

तो अपने शर से लोगों को बचा सकता है।

अपने शर से दूसरों को बचाने का सवाब

बल्कि शरीअत ने इस सिलसिला में बड़ा ख़ूबसूरत उसूल बतलाया कि अगर इंसान के दिल में ख़्याल आए कि मैं दूसरे को ईज़ा पहुंचाऊं, मसलन मजलिस लगी हुई है और उसका जी चाहता है कि किसी का मज़ाक़ उड़ाए, लोगों के सामने उसकी Insult (बेइज़्ज़ती) करे, लेकिन वह अपनी Temptation (तक़ाज़े) को Control (क़ाबू) करता है, मज़ाक़ नहीं उड़ाता, किसी की दिल आज़ारी नहीं करता तो शरीअत कहती है कि अपने जज़्बे को कंट्रोल करने पर तुम को सद्क़े करने का सवाब दिया जाएगा। अब देखिये! उसने किया तो कुछ नहीं लेकिन इसमें तीन फ़ाइदे हो गए: एक तो वह इंसान गुनाहों से बचा, दूसरा अल्लाह तआला के अज़ाब से बचा, और तीसरा उसके नामए आमाल में नेकी लिखी गई। हदीसे पाक में है: "فَإِنَّهَا صَدَقَةٌ مِنْكَ عَلَى نَفْسِكَ" कि अगर तुमने दूसरों को अपने शर से बचाया तो यह तुम्हारे लिये सद्क़े का सवाब बन जाएगा।

तीन अहम नसीहतें

हमारे बुज़ुर्गों ने तीन बातें बताईं, फ़राया कि देखो अगर किसी इंसान को ख़ुशी न दे सको तो उस बंदे को ग़म भी न दो, अगर तुम्हारी औक़ात और हिम्मत इतनी नहीं कि तुम दूसरे को ख़ुशी पहुंचा सको तो कम अज़ कम दूसरे को ग़म भी न दो, और अगर तुम किसी के साथ दोस्ती नहीं निभा सकते तो उसके साथ दुश्मनी तो न करो, और तीरी बात फ़रमाई कि अगर तुम किसी की तारीफ़ नहीं कर सकते तो कम अज़ कम उसकी बुराई भी न करो। अगर हम इन बातों पर अमल करें तो देखिये हम दूसरे के कितने क़रीबी

दोस्त हो जाएंगे।

अच्छे इंसान की पहचान

अच्छा इंसान और अच्छा मुसलमान वही है जिसके दिल में दूसरे इंसानों के साथ हमदर्दी और मुहब्बत हो। सुनिये! एक हदीसे मुबारक है, जिसको इब्ने असाकिर ने रिवायत किया, नबी सल्ल0 इर्शाद फ़रमाते हैं: "خَابَ وَخَسِرَ مَنْ لَمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ فِي قَلْبِهِ رحمةً لِلْبَشَرِ" वह इंसान बरबाद हो गया जिसके दिल में अल्लाह ने बशर के लिये रहमत न रखी हो। यहां बशर से मुराद हर इंसान है। मालूम हुआ कि हमारा दिल ऐसा होना चाहिये कि दूसरों के ग़म को अपना ग़म समझें और दूसरों की तकलीफ़ को अपनी तकलीफ़ समझें, जो बंदा समझे कि मुझको तो बिल्कुल किसी पर तरस नहीं आता इसका मतलब कि वह मुसलमान की बुन्यादी Definition (तारीफ़) को ही पूरा नहीं कर रहा, जो कहे कि मुझे रहम नहीं आता तो मुसलमान की Definition (तारीफ़) ही पूरी नहीं हो रही है, नाम का मुसलमान होगा, उसके अंदर मुसलमानी वाली अलामात नहीं होंगी।

दिल आज़ारी सबसे बड़ी बीमारी

चुनांचे एक उसूली बात समझ लीजिये कि बीमारियों में सबसे बुरी दिल की बीमारी है, किसी की आंख ख़राब हो तो परेशानी ज़्यादा नहीं होती, नज़ला जुकाम हो तो परेशानी ज़्यादा नहीं होती, कोई और अज़्व की बीमारी हो तो परेशानी ज़्यादा नहीं होती, किसी को कह दें कि यह Cardic problem (दिल की बीमारी) है तो हर बंदा परेशान हो जाता है कि यह तो बड़ी Serious (संजीदा) बात है, तो मालूम हुआ कि बीमारियों में सबसे बुरी दिल की बीमारी है, और दिल की बीमारियों में सबसे बुरी दिल आज़ारी है कि इंसान दूसरों के दिल को तकलीफ़ पहुंचाए।

किसी को तकलीफ़ पहुंचाने की चंद सूरतें

फिर तकलीफ़ पहुंचाने की कई सूरतें हैं, एक तो यह कि ज़बान से ही कोई ऐसा लफ़्ज़ बोल दिया कि सामने वाले का दिल जल गया, सामने वाले को तकलीफ़ पहुंच गई, कोई बात कह दी, कोई लफ़्ज़ बोल दिया, मज़ाक़ उड़ा दिया, या फिर किसी की ग़ीबत कर दी, शरीअत ने इस बारे में मुस्तक़िल एक मज़मून बयान किया, फ़रमायाः "وَيْلٌ لِكُلِّ هُمَزَةٍ لُمَزَةٍ" कि जहन्नम के अंदर एक Special department (मख़्सूस शोअ़बा) होगा, एक वादी होगी, जिस का नाम वैल होगा, यह उन लोगों के लिये होगा, जो "ऐब जू" हों और "ऐब गो" हों, यह दो अलग अलग बीमारियां होती हैं, बअज़ बंदों की नज़र इतनी मैली होती है कि उन्हें हर बंदे में ऐब नज़र आते हैं, जिसका नाम ले लो उसमें ऐब निकाल देंगे, ऐसे बंदे को "ऐब जू" कहते हैं यअ़नी ऐब तलाश करने वाला। और बअज़ बंदों की आदत होती है कि उनको किसी की बात का पता चल जाए तो बस हर मजलिस और महफ़िल में उसको कहते हैं, इनको "ऐब गो" कहते हैं, ऐब जू होना अलग बीमारी है और ऐब गो होना अलग बीमारी, और बअ़ज़ लोगों में दोनों बीमारियां होती हैं, वह ऐब जू भी होते हैं, ऐब गो भी होते हैं, क़ुर्आन मजीद में "هُمَزَة" और "لُمَزَة" दोनों इस्तेमाल की गई हैं कि दोनों में से जो बीमारी भी होगी उसके लिये वैल है।

ऐब लगाने वालों और ग़ीबत करने वालों का अंजाम

وَيْل क्या है? यह जहन्नम को एक Area (इलाक़ा) है, जिसमें उन लोगों को भेजा जाएगा जो ग़ीबत करते होंगे लोगों का दिल दुखाते होंगे, ज़बान से दूसरों को तकलीफ़ पहुंचाते होंगे और फिर वहां पर आग के बने हुए सुतून होंगे, इन सुतूनों के साथ उनको बांध

दिया जाएगा और बांधने के बाद वहां पर आग होगी, उस आग के अंगारे ऊपर उठेंगे और उस बंदे के दिल के ऊपर जा लगेंगे "نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ" यह दिलों को Target (निशाना लगाना) करेंगे, यह दूसरों के दिल को तकलीफ़ पहुंचाता था, अब आग उसके दिल को Target करेगी, जैसा अमल वैसी जज़ा, इसको कहते الجزاء من جنس العمل कि दुनिया में यह लोगों के दिल दिखाते थे, लिहाज़ा आख़िरत में जिस्म को तो आग जलाएगी ही, लेकिन दिल को बिलख़ुसूस जलाएगी, तो मालूम हुआ कि इन लोगों को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस नौइयत का अज़ाब देंगे जिस नौईयत का यह दुनिया में गुनाह किया करते थे।

दूसरों को तकलीफ़ से बचाने का सवाब

शरीअत ने दूसरों की तकलीफ़ का सबब न बनने के लिये हमें बड़े ख़ूबसूरत उसूल बताए हैं मसलन अगर रास्ते में कोई रोड़ा पड़ा है और आप महसूस करते हैं कि किसी को ठोकर लग सकती है, पांव ज़ख़्मी हो सकता है, आप उस पत्थर को उठा कर रास्ते के किनारे डाल दें, तो इतना करने पर सद्क़ा करने का सवाब मिल जाएगा, इसको कहते हैं "إِمَاطَةُ الْأَذٰى عَنِ الطَّرِيْقِ" रास्ते में कांटों वाली कोई चीज़ पड़ी है, या पत्थर ऐसा पड़ा है कि जिस से राहगीरों को नुक़्सान हो सकता है, उसको हटा देने पर भी सद्क़ा का सवाब मिलता है।

नमाज़ियों को फलांद कर अगली सफ़ में जाना

इर्शाद फ़रमाया कि एक बंदा अगर मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिये आता है तो सबसे अफ़्ज़ल तो यह है कि पहली सफ़ में नमाज़ पढ़े, पहली सफ़ का अज्र सबसे ज़्यादा है, लेकिन वह Feel (महसूस) करता कि पहली सफ़ में भीड़ हो गई, अब मैं आगे पहुंचने

की कोशिश करूंगा तो लोगों को तकलीफ़ होगी, और इस वजह से वह दूसरी या तीसरी सफ़ में पढ़ लेता है तो हदीसे मुबारक सुन लीजिये "مَنْ تَرَكَ الصَّفَّ الْاَولَ مخافة اَنْ يُوذِىَ مُسلمًا فقام فِى السفِّ الثَانِى أوِ الثالثِ ضعّف اللّٰهُ أجرَ الصفِّ الاولِ" जो बंदा पहली सफ़ को छोड़ कर दूसरी या तीसरी में खड़ा हो गया ताकि अगली सफ़ वाले को तकलीफ़ न पहुंचे और उसने दूसरी या तीसरी सफ़ में नमाज़ पढ़ ली तो अल्लाह पहली सफ़ के अज्र को कई गुना ज़्यादा करके उसको अता फ़रमा देंगे, अगर्चे पहली सफ़ का सवाब सबसे आला और सबसे ज़्यादा मगर शरीअत की रूह को समझिये, शरीअत कहती है कि उस वक़्त सबसे ज़्यादा अजर है जब किसी को तकलीफ़ न हो और किसी को तकलीफ़ का अंदेशा है तो तुम पीछे पढ़ लो, हम सवाब तुम्हें वहां से भी ज़्यादा देंगे, तो मालूम हुआ कि हमें दूसरों की तकलीफ़ का बहुत ज़्यादा ख़्याल रखना चाहिये।

हदीसे पाक में है कि जुम्आ से जुम्आ तक जितने गुनाह होते हैं, अल्लाह तआला जुम्आ की नमाज़ पढ़ने पर सब गुनाह मुआफ़ कर देते हैं, मगर इसमें शर्त है कि बंदे ने नमाज़े जुम्आ इस तरह पढ़ी हो कि लोगों के कंधों से फलांग के आगे न गया हो, और कंधे से फलांगेगा तो किसी को पांव लगेगा, किसी को तकलीफ़ होगी, परेशानी होगी, तो फ़रमाया कि अगर कंधे फलांग कर जाएगा तो सवाब नहीं देंगे, क्योंकि उसने दूसरों को ईज़ा पहुंचाई, अगर इस तरह जुम्आ पढ़े कि किसी को तकलीफ़ न पहुंचे तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि तुमने इतना बड़ा अमल किया कि पिछले जुम्आ से लेकर इस जुम्आ तक तुम्हारे जितने गुनाह थे, हमने सब गुनाह को मुआफ़ कर दिया।

बीमारी की वजह से घर पर नमाज़ पढ़ने में जमाअत का सवाब

फिर शरीअत ने कहा कि बअ़ज़ लोग बीमार होते हैं, अगर उनकी बीमारी ऐसी है कि दूसरे लोगों की तवज्जो बटती है, तकलीफ़ होती है, तो फ़रमाया कि तुम मस्जिद में जाने के बजाए घर में नमाज़ पढ़ लो, फ़ुक़हा ने मस्ला लिखा है कि एक बंदा बर्स का मरीज़ है, जिसमें चेहरे के ऊपर दाग़ होते हैं, अगर उसकी कैफ़ियत ऐसी है कि दूसरे बंदे को देख के अजीब सा महसूस होता है तो फ़रमाया कि तुम मस्जिद में जमाअत में इस तरह मत जाओ, अलग पढ़ लोगे तो तुम्हें जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का सवाब अता कर देंगे, तुम बीमार हो, दूसरों की तकलीफ़ का सबब न बनो।

कच्ची प्याज़ या लहसुन खाकर मस्जिद में आने की मुमानिअत

इसलिये शरीअत ने क़हा कि इंसान कोई ऐसा अमल न करे, जिससे दूसरों को तकलीफ़ पहुंचे, मिसाल के तौर पर कच्चा प्याज़ किसी ने खा लिया, तो कच्चा प्याज़ खाने से मुंह से महक आती है, अब या तो उसका टूथपेस्ट करे ताकि महक ही ख़त्म हो जाए और अगर महक आ रही हैं तो शरीअत ने कहा: ”مَنْ أَكَلَ ثُوْمًا أَوْبَصَلًا فَلْيَعْتَزِلْ مسجدَنا“ जो बंदा कच्चा प्याज़ लहसुन वग़ैरा खाए और मुंह को सही तरह साफ़ न करे, तो उसको चाहिये कि वह फिर मस्जिद में न आए, क्योंकि तुम्हारे मुंह की गंदी बदबू से दूसरों को तकलीफ़ पहुंचेगी। शरीअत का हुस्न व जमाल देखिये! यह कितनी खूबसूरत शरीअत है, यह कितना प्यारा दीन है कि दूसरों की तकलीफ़ का इतना ख़्याल रखा जा रहा है कि तुम अपना मुंह साफ़ करो, मुंह की बदबू से दूसरों को नुक़्सान न पहुंचाओ।

गंदे कपड़े पहन कर मस्जिद में आने की मुमानिअत

इसी तरह शरीअत ने कहा कि जो बंदा मज़दूरी कर रहा हो और

पसीना वाले कपड़े पहने हो, या यह मैकेनिक (Mechanic) लोग काम करते हैं तो उनके जिस्म के कपड़ों पर डीज़ल बहुत अजीब लगा हुआ होता है, फ़रमाया कि इस हालत में मस्जिद में मत आओ, नमाज़ अलग पढ़ लो, क्योंकि तुम्हारे आने से और तुम्हारे कपड़ों से दूसरों को तकलीफ़ पहुंचेगी। शरीअत ने इस बात का ख़्याल रखा कि एक बंदे के अमल से दूसरों को तकलीफ़ न पहुंचे।

मिलावट करने वालों को वारनिंग

इसी तरह फ़रमाया "مَنْ غَشَّ فَلَيْسَ مِنَّا" जो बंदा माल में मिलावट करता है वह हम में से ही नहीं है, दूसरे तो पैसे पूरे देंगे लेकिन उनको मिलावट वाली चीज़ मिले तो फ़रमाया कि यह छोटा गुनाह नहीं है, यह धोका देना, दूसरे के दिल को तकलीफ़ देना, दूसरे के दिल को परेशान करना, यह इतना बड़ा गुनाह है कि तुम अगर अपने माल में मिलावट करके बेचोगे तो तुम हमारे ही में से नहीं हो, आप अंदाज़ा लगा सकते हैं यह कितनी बड़ी तंबीह है, अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 का यह फ़रमा देना कि वह हम में से नहीं, जिनकी शफ़ाअत की हम दिल में तमन्ना रखते हैं, और उम्मीदें लगा के बैठे हैं कि अल्लाह के हबीब सल्ल0 की शफ़ाअत से हमारी मग़फ़िरत होगी, अगर अल्लाह के हबीब सल्ल0 फ़रमा रहे हैं कि हम में से नहीं है तो शफ़ाअत कैसे मिलेगी?

दिल आज़ारी करने वालों का अंजाम

शरीअत ने हर उस अमल को मना कर दिया जिससे दूसरों के दिल को तकलीफ़ पहुंचे, दूसरों की दिल आज़ारी हो और जो दूसरों की दिल आज़ारी करेगा क़्यामत के दिन अज़ाब क्या होगा? सुनिये! नबी सल्ल0 ने फ़रमाया "لَمَّا عُرِجَ بِيْ مَرَرْتُ بِقَوْمٍ لَهُمْ أَظْفَارٌ مِنْ نُحَاسٍ يَخْمِشُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَصُدُوْرَهُمْ" जब मुझे मेअ़राज पर ले

जाया गया तो मैंने वहां जहन्नम के मंज़र देखे, तो एक मंज़र ऐसा भी देखा कि लोगों के नाखुन बड़े बड़े थे, वह अपने चेहरों को और सीनों को अपने नाखुनों से ज़ख़्मी कर रहे थे तो मैंने पूछा जिब्रईल! यह कौन लोग हैं तो मुझे बताया गया कि यह लोग दुनिया में दूसरों के दिल दुखाते थे, अब इनको यह सज़ा मिली कि अपने हाथों से अपने चेहरों और अपने सीनों को दुखा रहे हैं।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 का अपने घर वालों के आराम की फ़िक्र करना

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के हबीब सल्ल0 इस चीज़ का बड़ा ख़्याल करते थे कि दूसरों को राहत मिले दूसरों को तकलीफ़ न पहुंचे, हम अल्लाह के बंदों के लिये राहते जान बनें, वबाले जान न बनें, ज़रा सुनिये! सय्यदा आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि मैं सोई हुई थी, अल्लाह के रसूल सल्ल0 तहज्जुद के लिये बेदार हुए और बड़े आहिस्ता आहिस्ता बिस्तर से उठने लगे और जूता पहने बग़ैर नंगे पांव चल पड़े, मेरी आंख खुल गई थी, मैंने पूछाः ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0! आप ऐसे क्यों चल रहे हैं? फ़रमायाः आइशा! मैंने सोचा कि तुम सोई हुई हो, कहीं मेरे उठने की वजह से तुम्हारी आंख न खुल जाए, हालांकि बीवी हैं अगर उठ भी जाएं और बीवी की आंख खुल जाए तो कोई बड़ी बात नहीं समझी जाती, लेकिन अल्लाह के हबीब सल्ल0 इतनी रिआयत फ़रमा रहे हैं कि मेरे अमल की वजह से कहीं उसकी नींद ख़राब न हो जाए और आप सल्ल0 ने जूते नहीं पहने, नंगे पांव चलने लग गए।

सहाबए किराम रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम अज्मईन में मख़्लूक़ की ख़िदमत का जज़्बा

यही अमल सहाबा रज़ि0 की ज़िंदगियों में नज़र आता है, चुनांचे

हज़रत उमर रज़ि0 एक मर्तबा सय्यदना सिद्दीक़े अक्बर रज़ि0 को मिलने के लिये आए, यह ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी का ज़माना है, उन्होंने एक काग़ज़ पड़ा देखा, जिस पर Society (मुआशरा) के जो बूढ़े थे, Senior citizen (उम्र रसीदा) Handicapped (मअ़जूर) थे, उनके नाम लिखे हुए थे कि फ़लां बंदा मअ़जूर है, उसको ख़िदमत दरकार है, फ़लां बूढ़े को ख़िदमत दरकार है, और फिर जिस बंदा ने ख़िदमत अपने ज़िम्मा ली थी उनका भी नाम लिखा हुआ था, तो उमर रज़ि0 ने पूरी लिस्ट देखी तो एक जगह एक बूढ़ी औरत का नाम लिखा था और आगे जगह ख़ाली थी, तो उमर रज़ि0 ने कहा कि मैं उनका Address (पता) नोट कर लेता हूं, उनकी ख़िदमत मैं करूंगा, ज़रा सोचिये वह कैसा माहौल था कि मुआशरा में कोई बंदा जिसको मदद की ज़रूरत होती थी सहाबा रज़ि0 अपने ज़िम्मे लेते थे कि हम उनकी ख़िदमत करेंगे, आज तो मां और बाप की ख़िदमत नौजवान नहीं कर पाते, अपने घर के बड़े बूढ़ों की ख़िदमत नहीं कर पाते, एक वह ज़माना था, अब उमर रज़ि0 ने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी और उस बूढ़ी औरत के घर गए, दरवाज़ा खटखटाया, उसने पूछाः कौन? बताया कि मैं उमर फ़ारूक़ हूं और आप की ख़िदमत के लिये आया हूं, उन्होंने कहाः मेरी ख़िदमत तो कोई बंदा पहले से करता है, वह आया और करके चला गया, पूछा कि वह बंदा कौन है? उस बूढ़ी ने कहाः न मैंने कभी नाम पूछा, न उसने बताया, फिर पूछाः अम्मा! वह है कैसा है? बूढ़ा है, जवान है, मोटा है, पतला है, उसने कहाः बेटे! वह बाहर आवाज़ देता है कि पर्दा कर लो, मैं कमरा में चली जाती हूं, जब काम हो जाता है तो वह कहता है कि पर्दा ख़त्म हो गया, वह निकल जाता है, मैं बाहर आ जाती हूं, मैंने आज तक उसका चेहरा भी नहीं देखा, उस ज़माने

में घरों में पानी का इंतेज़ाम नहीं होता था, बाहर कुंवों पे या चश्मा पे पानी होता था, वहां से मुश्क में पानी भर के लाते थे और घर के बर्तन पानी से भर देते थे, जो धोने वाले बर्तन होते वह धो देते थे, झाड़ू दे देते थे, बस यही ख़िदमत होती थी। अब जब उमर रज़ि0 को पता चला कि कोई बंदा आता भी है, ख़िदमत भी करके जाता है और उस बूढ़ी औरत को पता भी नहीं, उन्होंने सोचा कि मैं कल फ़ज्र से पहले आ जाऊंगा, उमर रज़ि0 अगले दिन तहज्जुद पढ़ के उस बुढ़िया के घर आ गए, पूछाः अम्मा! मैं आप की ख़िदमत के लिये हाज़िर हूं, उसने कहाः ख़िदमत करने वाला आया था और ख़िदमत करके रात को चला गया, उमर रज़ि0 ने कहा अच्छा मैं अगले दिन देखता हूं, उन्होंने इशा की नमाज़ पढ़ी, और जाकर उस बुढ़िया के घर के दरवाज़े के क़रीब छिप कर बैठ गए, कि मैं सारी रात जागूंगा और मैं देखूंगा कि कौन ख़िदमत के लिये आता है, फ़रमाते हैं कि जब रात गहरी हो गई Pin drop silence (मुकम्मल ख़ामोशी) हर तरफ़ तारीकी छा गई, लोग नींद की आग़ोश में चले गए, उस वक़्त मैंने देखा कि एक आदमी बहुत आहिस्ता आहिस्ता पांव रखता हुआ, उस बुढ़िया के दरवाज़े के क़रीब आया, जब क़रीब आया तो मैं खड़ा हुआ, मैंने पूछाः "مَنْ أَنْتَ" आप कौन हैं? तो जवाब में अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 की आवाज़ आई कि मैं अबू बक्र हूं, मैंने कहाः अमीरुल मोमिनीन! उस बुढ़िया की ख़िदमत आप करते हैं और आपने अपना नाम भी नहीं लिखा कि किसी को पता भी न चले कि ख़िदमत कौन करता है और उमर रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि सिद्दीक़े अक्बर रज़ि0 के पांव में जूते नहीं थे, मैंने कहाः अमीरुल मोमिनीन! क्या आप के पास जूते नहीं थे? या जूते घर छोड़ के आए? तो सिद्दीक़े अक्बर रज़ि0 ने जवाब दिया कि

यह रात का वक़्त है, अल्लाह के बंदे और अल्लह की बंदियां उस वक़्त सो रहे होते हैं, मैंने इरादतन अपने जूते घर उतार दिये कि मेरे पांव की आहट की वजह से किसी की नींद में ख़लल न आ जाए। यह वक़्त के अमीर हैं और यह उनका अमल है, सहाबा रज़ि0 दूसरों की दिल आज़ारी का इतना ख़्याल रखते थे।

सहाबा रज़ि0 का अपने साथी को शर्मिंदगी से बचाने का निराला तरीक़ा

इंसान इंसान है, कुछ चीज़ें बस में नहीं होतीं और अगर हो जाएं तो शर्मिंदगी भी होती है, चुनांचे एक क़िस्सा किताबों में लिखा हुआ है कि चंद सहाबा बैठे हुए थे, अचानक महसूस हुआ कि किसी का वजू टूट गया, बू महसूस हुई, अब साफ़ ज़ाहिर है कि जिसका वजू टूटा अगर वह उठता और वजू के लिये जाता तो उसको शर्मिंदगी होती तो इब्ने अब्बास रज़ि0 ने नबी सल्ल0 से अर्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0! अगर आप इजाज़त दें तो हम सब के सब दुबारा वजू करके आएं, फ़रमायाः जाओ, जितने सहाबा थे सब गए, इसलिये वजू करके आए कि जिसका वजू टूटा उसको कहीं शर्मिंदगी न उठानी पड़ जाए। ज़रा अंदाज़ा कीजिये कि वह कितना ख़्याल रखते थे कि दूसरे बंदे के दिल को तकलीफ़ न पहुंचे।

पड़ोसी को तकलीफ़ पहुंचाने वालों का अंजाम

एक हदीसे मुबारक सुनिये! "خَرَجَ رَسُولُ اللّٰهِ ﷺ فِي غَزَاةٍ فَقَالَ" नबी सल्ल0 एक मर्तबा सफ़र पे जा रहे थे, तो सफ़र पे जाने से पहले आप सल्ल0 ने फ़रमाया "لَا يَصْحَبُنَا الْيَوْمَ مَنْ اٰذٰى جَارَهٗ" वह बंदा हमारे साथ सफ़र पे न जाए जिसने अपने पड़ोसी को तकलीफ़ दी, "فَقَالَ رَجُلٌ" एक आदमी खड़ा हुआ, उसने कहा "أَنَا بُلْتُ فِي أَصْلِ حَائِطِ جَارِي" मैंने आज अपने पड़ोसी की दीवार

की बुन्याद में पेशाब किया था, यअ़नी दीवार के क़रीब पेशाब किया और पेशाब दीवार की बुन्याद में चला गया, "فَقَالَ" नबी सल्ल० ने फ़रमायाः "لَا تَصْحَبْنَا الْيَوْمَ" तू आज हमारे साथ सफ़र नहीं कर सकता, इसलिये कि तूने पड़ोसी को तकलीफ़ पहुंचाई, ज़रा ग़ौर करें! जो पड़ोसी के दीवार के क़रीब पेशाब क़र दे, अल्लाह के हबीब सल्ल० उसे सफ़र पे साथ नहीं ले के जा रहे हैं, जो लोगों के दिल दुखाता होगा अल्लाह के हबीब सल्ल० अपने साथ जन्नत में कैसे लेके जाएंगे? और हम दिल भी किसके दुखाते हैं? जो अपने हैं, बीवी का दिल दुखाया, मां बाप का दिल दुखाया, भाई का दिल दुखाया, बहन का और पड़ोसी का दिल दुखाया, हमें इस चीज़ की अहमियत को समझने की ज़रूरत है।

और अजीब बात आप देखें कि कितने पढ़े लिखे और मास्टर डिग्री की हुई है लेकिन ग़लत पार्किंग करके चले जाते हैं, अब भई इतनी अच्छी तालीम का क्या फ़ाइदा हुआ कि आप ने यूनीवर्सिटी भी पढ़ ली, या मदरसा में भी पढ़ लिया और आप ने पार्किंग करते हुए यह ख़्याल न किया कि मेरी वजह से किसी को तकलीफ़ होगी या न होगी, लोग परेशान, Traffic Block (गाड़ियों की आमद व रफ़्त बंद होना) हो जाता है, इस क़िस्म का कोई भी काम जिससे दूसरे बंदों को तकलीफ़ पहुंचे, शरीअ़त ने उसको मना फ़रमा दिया।

दस्तरख़्वान समेटने का अनोखा तरीक़ा

हमारे अकाबिर कैसे बचते थे, ज़रा एक दो वाक़िआत सुन लीजिये, हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ीअ़ साहब रह० फ़रमाते हैं कि जब मेरा ज़मानए तालिबे इल्मी ख़त्म हुआ तो मैं इफ़्ता कर चुका था, मुफ़्ती बन चुका था, तो मैंने दिल में सोचा कि मैं बुज़ुर्गों के पास कुछ वक़्त गुज़ारूं तो मैं मियां असग़र हुसैन देवबंदी रह० की ख़िदमत

में हाज़िर हुआ, जब उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने दस्तरख़्वान लगवाया, खाना खिलाया, खाना खा कर मैंने कहा कि हज़रत! इजाज़त हो तो मैं दस्तरख़्वान समेट लूं, तो हज़रत ने फ़रमाया कि तुमने दस्तरख़्वान समेटना किसी से सीखा है? ज़रा सुनिये! वह मुफ़्ती बन चुके हैं, उनसे Question (सवाल) कर रहे हैं कि तुमने दस्तरख़्वान समेटना किसी से सीखा है? तो मैंने कह दिया कि हज़रत! आप सिखा दीजिये, फ़रमाने लगे कि मैं तो इस तरह समेटता हूं कि जो रोटी और खाने के टुक्ड़े बचे होते हैं, उनको मैं अलग कर लेता हूं, और बची हुई सालन रोटी घर में पहुंचा देता हूं, ताकि दूसरे वक़्त इस्तेमाल हो जाएं, फिर कुछ छोटे छोटे टुक्ड़े बचे होते हैं, मैं उन टुक्ड़ों को उठा के मज़ीद छोटा कर देता हूं और वह मैं बाहर परिंदों को डाल देता हूं, ताकि उनको भी रिज़्क़ मिल जाए, फिर दस्तरख़्वान के ऊपर बिल्कुल छोटे टुक्ड़े होते हैं, जिन को ज़र्रे कहते हैं, मैं उन सारे ज़र्रात को इकट्ठा करता हूं और बाहर जहां च्यूंटियां होती हैं, मैं उन टुक्ड़ों को वहां डाल देता हूं, ताकि च्यूंटियों की ग़िज़ा बन जाए फिर दस्तरख़्वान पर जो हड्डियां पड़ी होती हैं मैं, उनको अलग करता हूं और गली में फ़लां जगह पर कुत्ते गुज़रते हैं, मैं उन हड्डियों को फ़लां जगह डाल देता हूं, ताकि वह कुत्तों की ग़िज़ा बन जाए और देखो तुमने अभी आम खाए हैं तो उनकी जो गुठलियां हैं, मैं उन गुठलियों को उठा कर के फ़लां जगह जहां बच्चे शाम को खेलते हैं, मैं उस ग्राउंड के क़रीब जा के डाल देता हूं तो बच्चों को आम की गुठलियां मिल जाती हैं, वह गुठलियों से खेलते हैं, उनके दिल ख़ुश होते हैं, और यह जो आम के छिल्के बचे हैं, मैं उनको बाहर गली में ढेर की शक्ल में नहीं डालता, क्योंकि पड़ोस में ग़रीब बंदा रहता है, उसका बच्चा देखेगा कि उन्होंने तो आम खाए

और हमें तो खाने को रोटी भी न मिली, उनको तकलीफ़ पहुंचेगी, और उस तकलीफ़ का सबब मैं बनूंगा, फ़रमाने लगे कि मैं यह छिल्के लेके बाहर निकल पड़ता हूं, एक छिल्का यहां कूड़े की जगह पे डाल देता हूं, फिर दस क़दम चल के दूसरा छिल्का वहां कूड़े में, अलग अलग करके छिल्के डालता हूं, ताकि क़रीब की आबादी को पता भी न चले कि किसी ने फल खाए हैं या नहीं खाए हैं। दस्तरख़्वान समेटने की यह तरतीब तो हम में से अक्सर लोगों ने सुनी भी नहीं थी, हमारे अकाबिर दूसरों के दिल की तकलीफ़ का इतना ख़्याल फ़रमाते थे।

एक फ़ाहिशा औरत की तकलीफ़ का ख़्याल

चुनांचे फ़रमाते हैं कि मैंने इशा की नमाज़ मस्जिद में पढ़ी और फिर हज़रत के घर जाने लगा, रास्ते में एक जगह हज़रत ने जूते उतार लिये और नंगे पांव चलने लग गए और दस बीस क़दम नंगे पांव चल के फिर जूते पहन लिये, मुझे बड़ी हैरत हुई, पूछाः हज़रत! यह दर्मियान में कोई मस्जिद का टुक्ड़ा तो आया नहीं था कि आप ने जूते उतार लिये और नंगे पांव चले, और न तू इतनी साफ़ जगह थी, बल्कि आम गली थी, तो हज़रत ने फ़रमाया कि उस जगह पर जो घर है वह एक ग़ैर मुस्लिम औरत का है, जो जिस्म फ़रोशी का काम किया करती थी, अब बूढ़ी हो गई, अब उसके पास Customer (ख़रीदार) थोड़े आते हैं, मैं जब यहां से गुज़रता हूं तो रात का वक़्त होता है, मुझे ख़्याल होता है कि कहीं वह किसी के इंतेज़ार में न बैठी हो और मर्द के जूतों की आवाज़ सुन के उम्मीद हो कि कोई मेरे पास आया होगा, मैं जूते उतार लेता हूं कि उसको मर्द के क़रीब से गुज़रने का पता ही न चले और मेरी वजह से उसको तकलीफ़ न पहुंचे, ग़ैर मुस्लिम औरत का भी इतना ख़्याल!

अल्लाहु अक्बर कबीरा

أُولٰئِكَ آبَائِیْ فَجِئْنِیْ بِمِثْلِهِمْ اِذَا جَمَعَتْنَا يَا جَرِيْرُ الْمَجَامِعُ

यह थे हमारे अकाबिर, यह थे जिनको अल्लाह ने अख़्लाक़े मुहम्मदी सल्ल० का नमूना बनाया हुआ था, वह दूसरों के दिलों को राहत पहुंचाते थे, उनको तकलीफ़ नहीं पहुंचाते थे, इंसान तो इंसान, वह जानदार को भी तकलीफ़ नहीं देते थे।

च्यूंटी को भी तकलीफ़ पहुंचाने से परहेज़

चुनांचे सुनिये एक बुज़ुर्ग थे, बीवी ने कहा कि बाज़ार से मेरे लिये कपड़ा ले आएं, उन्होंने कहा बहुत अच्छा, वह गए और बाज़ार से कपड़े के थान ले आए और ला के कपड़े दिये, तो बीवी ने कहा बड़ा अच्छा कपड़ा है, मुझे पसंद आया, उन्होंने कहाः अच्छा यह थान अभी मैं ले आता हूं, वह थान ले के गए और कुछ देर बाद वापस आ गए, बीवी ने पूछा थान बदला तो नहीं, क्यों लेके गए थे? कहने लगेः मैंने उस थान पर एक च्यूंटी को चलते हुए देखा और यह च्यूंटी मैंने उस दूकान पर च्यूंटियों को कपड़े के पास चलते हुए देखा था, मुझे लगा कि यह च्यूंटी वहां से थान के साथ घर आ गई, अब यह अपने ख़ानदान से अलग हो गई, मैं थान लेकर गया, च्यूंटी को वहां छोड़ कर थान को वापस ले आया, हमारे बुज़ुर्ग अगर च्यूंटी की अज़ियत का ख़्याल रखते थे तो क्या अल्लाह के बंदों की अज़ियत का हम ख़्याल नहीं रख सकते, हम क़्यामत के दिन अल्लाह को क्या जवाब देंगे, आज तो हम में से बअ़ज़ दोस्त ऐसे हैं जैसे बे सींग के बकरे होते हैं, इधर हो गया तो उसको सींग लगा दिया, उधर हो गया तो इधर सींग लगा दिया, ज़रा सी बात पे झगड़ा कर लेते हैं, उलझ पड़ते हैं, हाथ उठा लेते हैं, गालियां निकालनी शुरू कर देते हैं और कई मर्तबा तो ज़िंदगी भर का बैर कमा लेते हैं, यह इंसान कहां से

हुए, यह इंसान नहीं, यह तो जानवरों में से बल्कि फ़रमाया "أُولٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ" यह जानवर हैं बल्कि जानवर से भी बदतर हैं "أُولٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُوْنَ"

बिल्ली को आराम पहुंचाने का सिला

हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रह0 यह समरक़ंद के रहने वाले थे, जो रशिया उज़्बेकिस्तान की आज़ाद रियासतें हैं, चूंकि वहां सर्दी बहुत होती है साईबेरिया की ठंडी हवाएं आती हैं Chiller air (शीत लहर या सर्द लहर) की वजह से बहुत ठंड होती है, बअ़ज़ मर्तबा तो 20 Degree Celsius टेम्परेचर हो जाता है, हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रह0 ने एक मर्तबा तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी, जब नमाज़ अदा कर ली तो ठंड भी लग रही थी, बावजूद इसके कि कम्बल ली हुई थी, तो सोचा कि मैं जल्दी से बिस्तर पे आ जाऊं, जब बिस्तर की तरफ़ आए तो देखा कि एक बिल्ली जो कहीं थी वह आ के रज़ाई में घुस गई थी, सोचा कि बिल्ली को भी ठंड लग रही है, और वह रज़ाई में घुस गई, अगर मैं रज़ाई में सोऊंगा तो बिल्ली की नींद ख़राब होगी, तो हज़रत उठकर वापस मुसल्ले पे आए, सर्दी बर्दाश्त करते रहे हत्ता कि फ़ज्र हो गई, बिल्ली चली गई तब बिस्तर पे आए, इस वाक़िआ पर उनके शैख़ को इल्हाम हुआ कि उनसे कहिये कि यहां से यह हिंदुस्तान की तरफ़ जाएं, उनको एक बड़ा शहबाज़ मिलेगा, चुनांचे शैख़ के हुक्म पर ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रह0 समरक़ंद से हिज्रत करके देहली आए, और यहां उनके मुरीद हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ सानी रह0 बने। एक बिल्ली की तकलीफ़ का ख़्याल करने पर अल्लाह ने देखो उनको कैसा शागिर्द अता फ़रमा दिया।

परिंदों को तकलीफ़ पहुंचाने से परहेज़

अम्र बिन आस रज़ि0 का मशहूर वाक़िआ है, वह मिस्र के

फ़ातेह थे, उनके ख़ेमे लगे हुए थे और कई दिन को वहां मसरूफ़ रहना पड़ा, जब काम मुकम्मल हो गया तो उन्होंने अपने लोगों को हुक्म दिया कि ख़ेमे समेटो और अब शहर में जाके रहो, जब अपना ख़ेमा समेटने के लिये आए तो देखा कि ख़ेमे के अंदर एक कबूतरी ने अंडे दिये हुए हैं तो सोचा कि अगर मैं ख़ेमा यहां से हटाऊंगा तो इस पर परिंदे को तकलीफ़ होगी, मैं बग़ैर ख़ेमे के सो लिया करूंगा मगर मैं इस ख़ेमे को यहीं रहने देता हूं, चुनांचे सारे लोग चले गए, वह ख़ेमा वहीं रहा, ख़ेमा को अरबी में फ़ुस्तात कहते हैं, आज इस जगह पर फ़ुस्तात नाम से एक पूरा शहर आबाद हो चुका है, जो हमें याद दिलाता है कि हमारे बड़े, इंसान तो इंसान, परिंदों और छोटे जानदारों की राहत व तकलीफ़ का इतना ख़्याल किया करते हैं।

एक साहबी रज़ि0 नबी सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर होना चाहते हैं, उनको एक दरख़्त के ऊपर छोटे छोटे परिंदे के बच्चे नज़र आए, जो बड़े ख़ूबसूरत थे, उन्होंने वह बच्चे उठा लिये और लेकर चल पड़े, अभी रास्ते में थे उन्होंने देखा कि उन परिंदों की मां आ गई, वह कहीं दाना चुनने गई हुई होगी, और उसने उनके सर के ऊपर चक्कर लगाने शुरू कर दिये, यह सहाबी उसके Message (पैग़ाम) को नहीं समझे कि यह मां क्या चाहती है, यह बच्चों को लेकर चलते रहे चलते रहे, कुछ देर बाद वह चिड़या बिलआख़िर उनके कंधे के ऊपर आके बैठ गई तो उन्होंने उसको भी पकड़ लिया, सहाबा रज़ि0 की एक बड़ी ख़ूबसूरत बात यह थी कि हर पेश आने वाली नई बात को वह नबी सल्ल0 के सामने पेश करते थे, पूछते थे कि शरीअत का हुक्म क्या है, चुनांचे नबी सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0! मेरे साथ यह वाक़िआ पेश आया, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि देखो मां कहीं गई

हुई थी, तुमने छोटे बच्चें को उठा लिया, जब वापस आई तो उसने देख कि घौंसला ख़ाली है, वह परेशान होकर तलाश में निकली, तुम्हारे हाथ में बच्चे देखे, वह तुम्हारे सर पर चक्कर लगाती रही, आवाज़ें निकालती रही, वह तुम से फ़रयाद कर रही थी कि मुझे मेरे बच्चों से दूर मत करो, मुझे अपने बच्चों से जुदाई बर्दाश्त न हो सकेगी, लेकिन तुम उसका Message (पैग़ाम) नहीं समझे तो फिर वह मां थी, उसने कहा अच्छा अगर तुम मेरे बच्चों को नहीं छोड़ते तो फिर मुझे भी गिरफ़्तार कर लो, मैं गिरफ़्तार तो हो जाऊं लेकिन बच्चों के साथ इकट्ठी तो हो जाऊंगी, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि यह मां है, इसके दिल में अल्लाह ने औलाद की ऐसी मुहब्बत रखी है, फिर नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि जाओ मां और बच्चों को उसी घौंसला में वापस छोड़ कर आओ, अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने एक परिंदे की तकलीफ़ का ख़्याल फ़रमाया।

प्यासी मक्खी की प्यास बुझाने पर मग़फ़िरत

बल्कि एक इससे आगे की बात सुन लीजिये, एक मुहद्दिस थे, उन्होंने बड़ी हदीस की ख़िदमत की, वफ़ात हो गई, किसी को ख़्वाब में नज़र आए, उसने पूछा कि हज़रत! क्या बना? उन्होंने कहा कि मग़फ़िरत हो गई, उसने कहा कि मग़फ़िरत तो होनी थी, आपने तो इतनी हदीस की ख़िदमत की, वह कहने लगे कि हदीस की ख़िदमत की वजह से मग़फ़िरत नहीं हुई, पूछा हज़रत! किस वजह से हुई? फ़रमाने लगे कि एक ऐसा अमल जो मुझे याद भी नहीं था, पूछाः हज़रत! कौनसा अमल? फ़रमाने लगे मैं बैठा हदीसे मुबारक लिख रहा था, मैंने दवात के अंदर क़लम डाली और निकाल ली, तो सियाही लगी हुई थी उसके ऊपर मक्खी आ के बैठ गई, मेरे दिल में ख़्याल आया कि यह मक्खी प्यासी हो गई और यह सियाही पीना

चाहती है तो मैंने चंद सिकेण्ड के लिये अपनी क़लम को वहीं पकड़े रखा कि वह तसल्ली से पी ले, वह एक दो सिकेण्ड के बाद उड़ के चली गई, मैंने फिर हदीस लिखनी शुरू कर दी, अल्लाह करीम ने फ़रमाया कि तुमने एक मक्खी की प्यास का ख़्याल करते हुए अपने हाथ को एक जगह रोका था, हमने इस अमल पर जहन्नम की आग को तुझ पर हराम कर दिया।

हमें अपना जाइज़ा लेते रहना चाहिये

हम ज़रा अपने गिरेबान में झांक के देखें Where do we stand (हमारा क्या हाल है) हम तो अल्लाह के बंदों का दिल दुखाते हैं, घरों में बीवियां रो रही होती हैं और साहब मोबाइल पे लगे हुए होते हैं, उनको ज़ुलेख़ाएं नहीं भूलतीं, पीछे भाग रहे होते हैं, गुनाहों की ज़िंदगी में लगे हुए होते हैं और घर में अपनी बीवी आंसू बहा रही होती है, उसको रातों को नींद नहीं आती, छोटी छोटी बातों पर परेशान करते हैं, इसको तो गोया इंसान ही नहीं समझते, तो मालूम हुआ कि हमको अपनी ज़िंदगी में बहुत सारी तबदीली लाने की ज़रूरत है, हमारे दिल बेहिस हो गए हैं, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त बेहिस इंसान को पसंद नहीं फ़रमाते, इसको हस्सास बनाना पड़ेगा।

बिल्ली को भूका प्यासा रखने पर जहन्नम का फ़ैसला

ज़रा हदीसे मुबारक सुनिये "عُذِّبَتْ امْرَأَةٌ فِي هِرَّةٍ سَجَنَتْهَا حَتَّى مَاتَتْ فَدَخَلَتْ فِيهَا النَّارَ" एक नेक औरत थी बिल्ली कभी कभी दूध पी लेती थी, उसने उस बिल्ली को बांध दिया और खाना पीना भी न दिया, हत्ता कि वह बिल्ली मर गई, हदीसे पाक में है कि इस गुनाह पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने सब इबादतों को ठुकरा कर उसको जहन्नम में भेज दिया कि तुमने बिल्ली को क्यों भूका प्यासा मारा।

अगर किसी की दिल आज़ारी की, तो अब क्या करें?

अब एक सवाल पैदा होता है कि अगर दूसरे के दिल की अज़ियत अल्लाह को इतनी नापसंद है तो हम तो पता नहीं कितनों को अज़ियत पहुंचा चुके, अब क्या करें? तो इसके लिये दो काम करना पड़ेगा, एक तो यह कि जिनके बारे में पता है कि हमने उनकी ग़ीबत की, हमने उनका दिल दुखाया, हमने झगड़ा किया, उनसे मुआफ़ी मांग ली जाए और मुआफ़ी मांगने में शर्म महसूस न करें, मां बाप से मांगें, भाई बहन से मांगें, बीवी से मांगें, बीवी ख़ाविंद से मांगे, पड़ोसी पड़ोसी से मांगे, मुआफ़ी मांगने में कभी भी शर्म महसूस न करें, यहां मुआफ़ी मिलनी आसान और क़्यामत के दिन मुआफ़ी मिलनी मुश्किल काम।

मुआफ़ी मांगने का ग़लत तरीक़ा

हमने देखा है कि जब कोई आदमी फ़ौत होता है तो जनाज़ा पढ़ने से पहले एलान कर देते हैं कि भाई! अगर किसी का लेन देन हो तो विर्सा से राबता करो और अगर किसी का दिल दुखाया हो तो मुआफ़ कर दो, है तो बज़ाहिर यह बड़ी अच्छी आदत, लेकिन इतना Question (सवाल) है कि जिन जिनके दिल उस मरने वाले ने दुखाए होंगे, क्या वह सब जनाज़ा पढ़ने आए होंगे? अगर नहीं तो फिर एलान का क्या फ़ाइदा? लिहाज़ा मरने के बाद एलान के इंतेज़ार में न रहें, अपनी ज़िंदगी में हमें अच्छी तरह पता है कि हमने किसके साथ क्या सुलूक किया है, किसके साथ बदसुलूकी की, हम अपनी ज़िंदगी में उनसे मुआफ़ी मांग लें।

मुआफ़ी मांगने का आसान तरीक़ा

इसका आसान तरीक़ा यह है, उलमा ने लिखा कि यह नहीं कि आप जाके Detail (तफ़सील) बताएं कि मैंने यह किया यह किया,

बस इतना कह दें कि भाई! आप के मेरे ऊपर हुकूक़ आते हैं, मैं अदा नहीं कर सका, आप मुझे अल्लाह के लिये मुआफ़ कर दें, अगले ने अगर ज़बान से कह दिया कि मैंने मुआफ़ कर दिया तो भी मुआफ़ी हो जाएगी और अगर यह बात सुन के अगला मुस्कुरा पड़ा तो उसकी मुस्कुराहट भी मुआफ़ी में शुमार की जाएगी। हमारे एक बुज़ुर्ग थे, माशा अल्लाह उनकी बड़ी खूबसूरत आदत थी कि वह जब किसी से मिलते थे तो मिलने के बाद जुदा होते हुए कहते कि भाई! आप के मेरे ऊपर बड़े हुकूक़ हैं मैं कमज़ोर हूं, मैं पूरे नहीं कर सका, मुझे अल्लाह के लिये मुआफ़ कर दें, वह हर किसी को कहते थे, क्या छोटा क्या बड़ा, क्या पुराना क्या नया, थोड़ी देर की मुलाक़ात होती तो भी उसको कहते आप के तो मेरे ऊपर बड़े हुकूक़ हैं, मैं रिआयत न कर सका, आप मुझे मुआफ़ कर दें। हमें भी दुनिया ही में अपने हुकूक मुआफ़ करा लेने चाहियें, वर्ना क़्यामत के दिन कोई नहीं मुआफ़ करेगा।

एक वाक़िआ सुन लीजिये! मलिक शाह एक बादशाह गुज़रा है, वह एक मर्तबा शिकार के लिये निकला, उसको हिरन का शिकार करना था, उसके साथ उसके क़ाफ़िले के लोग भी थे, अब उस क़ाफ़िला के लोगों ने वहां एक गाए या भैंस देखी, उनको खाने पीने की ज़रूरत थी, उन्होंने उसको ज़ब्ह किया और उसका उन्होंने सालन बनाया, गोश्त और कबाब बना के खा लिया, वह एक बूढ़ी औरत की थी, उसने आके कहा कि इसी के दूध से मेरा गुज़रान होता था, मुझे लस्सी मिलती थी, मुझे मक्खन मिलता था, मेरा गुज़रान चलता था, आप लोगों ने उसका कबाब बना के खा लिया तो मुझे क़ीमत दे दो, मैं दूसरी भैंस ख़रीद लूंगी, उन्होंने कहा कि पैसे नहीं, वह बड़ी परेशान हुई, उसने कहा कि अच्छा मुझे बादशाह से ज़रा बात करने

दो, मैं उनसे मांग लूंगी, उन्होंने कहाः नहीं, तुझे आगे भी जाने की इजाज़त नहीं, अब वह परेशान कि मैं क्या करूं, किसी ने मशवरा दिया कि मलिक शाह अच्छा इंसान है और यह एक दिन के बाद वापस जाएगा, रास्ते में एक दरिया पड़ता है, दरिया में एक ही पुल है, दूसरा रास्ता वापसी का नहीं है, तो आप चली जाओ और पुल के ऊपर बैठ जाओ, जब बादशाह की सवारी गुज़रेगी तो अपनी बात कह देना, बादशाह आपको भैंस की क़ीमत दे देगा, वह बूढ़ी औरत वहां पहुंच गई, दूसरे दिन जब बादशाह की सवारी आई तो जब पुल पे पहुंची तो बूढ़ी औरत खड़ी हुई और बूढ़ी औरत ने बादशाह की सवारी की लगाम पकड़ी, मलिक शाह कहने लगाः अम्मां! क्यों सवारी रोकी है? तो बूढ़ी औरत ने जवाब दिया कि मलिक शाह! मेरा और तेरा एक मुआमला है, मैं तुझसे यह पूछना चाहती हूं कि उस पुल पे फ़ैसला करना चाहता है या क़्यामत के दिन पुल सिरात पे करना चाहता है? कहते हैं कि जब उस बूढ़ी ने यह अल्फ़ाज़ कहे तो मलिक शाह कांप उठा, सवारी से नीचे उतरा, बात पूछी, और सात जानवरों की क़ीमत उसको दी, सात जानवरों की क़ीमत दे के उससे कहाः अम्मां! इसी पुल पे मुआफ़ कर दो, मैं पुल सिरात पे हिसाब देने के क़ाबिल नहीं हूं। तो हम भी यह सोचें कि हमको भी जो मुआफ़ियां मांगनी हैं, इसी दुनिया में मांग लें, चे जाए कि कल हमें कोई पुल सिरात पे पकड़ के खड़ा हो, आज वक़्त है कि हम मुआफ़ी मांग लें। दूसरी बात कि आइंदा हम दूसरों का दिल दुखाने से तौबा कर लें। और तीसरी बात कि आइंदा अल्लाह के बंदों का दिल ख़ुश करने की ज़िंदगी गुज़ारें, अच्छे अख़्लाक़ से, अच्छी आदात से, अच्छे मुआमलात से हम अल्लाह के बंदों का दिल ख़ुश करें कि या अल्लाह! जैसा गुनाह पहले करते थे, अब उसी जिंस की नेकी कर

रहे हैं, अल्लाह के बंदों को ख़ुश कर रहे हैं।

ज़रा सुनिये! सहाबा रज़ि0 का अमल क्या था, अस्लम रज़ि0 एक सहाबी हैं जो उमर फ़ारूक़ रज़ि0 के गुलाम थे, वह कहते हैं कि मुझे उमर रज़ि0 ने फ़रमाया कि अस्लम! चलो आज मदीना में ज़रा चक्कर लगाते हैं, देखते हैं कि लोग किस हाल में हैं, तो हमने मदीना में चक्कर लगा लिया, फ़रमाने लगे कि सुना है बाहर एक क़ाफ़िला आया है, चलो ज़रा उन क़ाफ़िला वालों का हाल भी पता करके आएं, कहने लगे कि वहां गए तो क़ाफ़िले के लोग सो रहे थे, अलबत्ता एक जगह आग जल रही थी और एक औरत थी और कुछ बच्चे पास थे, जब उनके पास गए तो देखा कि बच्चे रो रहे हैं तो उमर रज़ि0 ने पूछा कि ऐ ख़ातून! तू इन बच्चों को क्यों रुला रही है? उसने कहाः मैं क्या बताऊं, मेरे बच्चे भूक से रो रहे हैं, और मेरे सीने में दूध भी नहीं कि मैं पिलाऊं और बच्चों को खिलाने के लिये कोई चीज़ भी नहीं, मैंने बच्चों को सुलाने का यह तरीक़ा अपनाया कि आग जलाई और चूल्हे पे हंडिया में सिर्फ़ पानी डाल दिया कि बच्चों को उम्मीद लग जाएगी कि कुछ बन रहा है और यह बेचारे सो जाएंगे, मैं बेवा औरत हूं, अब इस बात को सुन के उमर रज़ि0 का दिल डर गया कि यह बेवा औरत है और इस तकलीफ़ में है, उसी वक़्त वापस आए, बैतुल माल का दरवाज़ा खुलवाया, घी निकाला, चीनी, निकाली, आटा निकाला, और अस्लम को कहा कि अस्लम! मेरी पीठ पे लाद दो, अस्लम ने कहाः मैं आप का ख़ादिम आप का गुलाम, मैं पीठ पे लेके जाता हूं, फ़रमायाः अस्लम! क़यामत के दिन उमर का बोझ उमर ही उठाएगा “وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَى” कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा, यह मेरी ज़िम्मेदारी थी कि इनको खाना मिलता, नहीं मिला तो यह मेरा कुसूर है, अस्लम! मेरे कंधे पे

रखो, अस्लम कहते हैं मैं गुलाम होकर मैंने बोरी उठा के उमर रज़ि0 के कंधे पे रखी और वह मशक़्क़त के साथ उठा के चल रहे थे, वहां पहुंचे तो उस औरत को कहा कि देखो यह आटा है और यह घी है और यह चीनी है, तुम हल्वा सा बना दो और बच्चों को खिला दो, उसने कहा ठीक है, उमर रज़ि0 ने कहा कि तुम बर्तन तैयार करो, मैं आग जला देता हूं, चुनांचे अमीरुल मोमिनीन ने लकड़ियां डालीं, आग जलाने लगे, लकड़ियां गीली थीं, आग जलती नहीं थी, अब उमर रज़ि0 फूंकें मार रहे, फूंकें मार रहे हैं और आग बिल आख़िर उन्होंने जलाई और आग पे हंडियां रखी, बर्तन रखा, आटा घी जो भी था डाल के एक हल्वा सा बना दिया, जब हल्वा बना दिया तो बच्चे ख़ुश हो गए कि खाने को मिला, मैंने कहा हज़रत! चलें काम तो मुकम्मल हो गया, फ़रमायाः नहीं, अस्लम! ज़रा थोड़ी देर बैठो, हम बैठ गए, थोड़ी देर के बाद वह हल्वा ठंडा हुआ और बच्चों ने खाना शुरू किया और बच्चे भूके थे, बड़े शौक़ से उन्होंने खाया और खाने के बाद बच्चे हंसने लगे, खेलने लगे, उमर रज़ि0 उन बच्चों को बैठे देख रहे हैं, काफ़ी देर के बाद उठे और चलने लगे, मैंने कहाः अमीरुल मोमिनीन! आप इतनी देर क्यों बैठे इसी जगह पर बच्चों को खेलते देखते रहे? फ़रमाने लगे अस्लम! मैंने उन बच्चों को रोते हुए देखा था, मेरा जी चाहा कि उनको हंसते हुए मैं देख लूं।

अल्लाह के बंदों का दिल ख़ुश करने का इन्आम

आज तक अगर हमने अपनी बीवी को रुलाया है तो अब मुहब्बत प्यार और हदिया देकर उसको ख़ुश भी देखें, मां बाप को ख़ुश देखें, पड़ोसी को ख़ुश देखें, दोस्त व अहबाब को ख़ुश देखें, तो एक काम यह कि जिन के दिल दुखाए अब उनको ख़ुश भी करें और एक आम दस्तूर बनाएं कि हम अल्लाह के बंदों का दिल ख़ुश करेंगे।

यह मोमिन के दिल को खुश करना सुब्हानल्लाह! एक किताब में पढ़ा ख़्वाजा मअ़सूम रह0 ने अपने मक्तूबात में नक़्ल किया है, वह फ़रमाते हैं कि जब कोई बंदा किसी मोमिन के दिल को ख़ुश करता है अल्लाह तआला उस ख़ुशी से एक फ़रिशता पैदा फ़रमाता है, वह फ़रिशता क़्यामत तक अल्लाह की इबादत करता है, उस इबादत का सवाब उस बंदा के नामए आमाल में लिखा जाता है। मोमिन के दिल को ख़ुश करने की इतनी फ़ज़ीलत है।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 एक मुहद्दिस हैं, अल्लाह ने उनको दुनिया का माल भी बहुत दिया था, एक बंदा उनके पास आकर कहता है हज़रत! मेरे ऊपर सात सौ दीनार क़र्ज़ है, अगर आप मुझे हदया में दे दें तो मैं Payoff (क़र्ज़ अदा कर दू) कर दूंगा, टेन्शन ख़त्म हो जाएगा, मुझे हर वक़्त फ़िक्र लगी रहती है कि सर पे क़र्ज़ा है, हज़रत ने छिट्टी ली और अपने मुंशी को लिखा कि उसको Pay (अदा) कर दो, उसने जाके ख़ुशी ख़ुशी वह चिठ उस मुहासिब को दिखाई कि हज़रत ने Pay (अदा) करने के लिये चिठ लिख दी और मेरे तो सात सौ दीनार क़र्ज़ा है, मुंशी ने जब चिठ देखी तो चिठ के ऊपर लिखा हुआ था सात हज़ार दीनार, वह सोच में पड़ गया कि ज़रूरत उसको सात सौ की है और हज़रत ने सात हज़ार लिखे, लगता है कोई Digit (हिंदसा) ज़्यादा पड़ गई, ग़लती हो गई, उसने कहा मैं हज़रत से ज़रा Clarify (वज़ाहत) कर लूं, मैं पूछ के आता हूं, वह आया, और पूछा कि हज़रत! इसको सात सौ दीनार की ज़रूरत थी, शायद आपने सात सौ लिखे हों, मगर लिखे हुए सात हज़ार हैं, हज़रत ने फ़रमाया कि चिठ लाओ, चिठ दी तो हज़रत ने सात हज़ार काट के चौदह हज़ार लिख दिया, अब उसने आके चौदह हज़ार की अदाइगी तो कर दी लेकिन बड़ा हैरान हुआ, उसने कहा

कि हज़रत! हमें तो समझ में नहीं आई कि ज़रूरत सात सौ की थी, तो सात हज़ार लिखे, और मैंने पूछा तो चौदह हज़ार कर दिया, क्या मस्ला है? हज़रत ने फ़रमाया कि देखो मैंने इरादतन सात हज़ार लिखे थे कि सात सौ की Expectation (उम्मीद) कर रहा है, जब ख़िलाफ़े तवक़्क़ो उसको यह सात हज़ार मिलेंगे तो उसका दिल खुश होगा, तुम ने मेरा काम ख़राब कर दिया कि Disclose (राज़ फ़ाश) कर दिया कि सात हज़ार लिखा है, अब अगर उसको मैं सात हज़ार भी दे देता तो उसको ख़ुशी न होती तो मैंने काट के चौदह हज़ार लिखा कि तवक़्क़ो थी कि सात हज़ार मिलेगा, लेकिन चौदह हज़ार मिल गया तो उसका दिल खुश होगा, उसने पूछाः हज़रत! यह दिल खुश होने का क्या मअ़नी? फ़रमाने लगे कि मैंने नबी सल्ल0 की यह हदीसे मुबारक पढ़ी है कि जब कोई इंसान मोमिन के दिल को ऐसी खुशी पहुंचाता है, जिसकी वह तवक़्क़ो भी नहीं करता, तो इस खुशी के पहुंचाने पर अल्लाह उस बंदे के पिछले सब गुनाह मुआफ़ फ़रमा देते हैं। आप सोचिये कि किसी अल्लाह के बंदे का दिल खुश करना कितना अल्लाह को पसंद है।

बीवी की ग़लती को मुआफ़ कर देने पर मग़फ़िरत

हज़रत अक़्दस थानवी रह0 ने एक वाक़िआ लिखा है, फ़रमाते हैं कि एक आदमी था, जिसकी बीवी से कोई ग़लत Decision (फ़ैसला) हो गया, जिसकी वजह से ख़्वाह मख़्वाह लोगों ने बातें सुनाईं कि नुक़्सान हुआ, और नुक़्सान ऐसा था कि अगर वह चाहता तो बीवी को घर भेज देता, तलाक़ दे देता, सज़ा देता, जो करता ठीक था, मगर उसने Feel (महसूस) किया कि यह शर्मिंदा है कि मैंने ग़लत Decision (फ़ैसला) किया, मैं ग़लती कर गई, Repent (नादिम होना) कर रही है, उसने कहा चलो कोई बात

नहीं, अल्लाह की बंदी तो है, चलो मैं मुआफ़ कर देता हूं, अब यह बंदा कुछ अर्से के बाद फ़ौत हो गया, किसी ने ख़्वाब में देखा, पूछा कि सुनाएं भाई क्या हुआ, उसने कहा कि अल्लाह ने मग़फ़िरत कर दी, पूछा भाई! किस अमल की बजह से? उसने कहा बीवी से कोताही हो गई थी, मैं चाहता तो सज़ा देता, तलाक़ देता, जो चाहता करता, मगर मैंने उसे अल्लाह की बंदा समझ के मुआफ़ कर दिया, जब मेरी अल्लाह के सामने पेशी हुई, तो अल्लाह ने फ़रमायाः चल मैंने भी तुझे अपना बंदा समझ के मुआफ़ कर दिया। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को देखो यह अमल कितना पसंद है।

हज़रत मुर्शिद आलम रह० का बीवी से मुआफ़ी मांगना

हमारे पीर व मुर्शिद हज़रत मुर्शिद आलम रह० अपनी ज़िंदगी का वाक़िआ खुद सुनाते हैं, फ़रमाते हैं कि मैं वज़ू कर रहा था और अह्लियां पानी डाल रही थीं, वज़ू करवा रही थीं, वज़ू का पानी डालने में उससे थोड़ी सी कोताही हुई, मैंने उनको गुस्से से डांटा कि किधर है तुम्हारा ध्यान, वह ख़ामोश हो गई, वज़ू तो मैंने कर लिया, अब वज़ू करने के बाद मैं घर से मस्जिद की तरफ़ चला कि मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ाऊं, हमारे हज़रत मुर्शिद आलम मस्जिद की इमामत खुद फ़रमाते थे, फ़रमाते हैं कि जब मैं घर से निकला, सामने मस्जिद का दरवाज़ा था, मेरे दिल में ख़्याल आया कि तुम जाके मुसल्ले पे इमामत करवाओगे और तुम ने घर में बीवी को बेजा डांटा है, तुम्हारी नमाज़ क़बूल कैसे होगी, फ़रमाते हैं मैंने छोटे बच्चे को पैग़ाम दे के भेजा कि जाओ नमाज़ का वक़्त हो चुका, लोगों को कहें कि मेरा इंतेज़ार करें मैं आता हूं और मैं वहीं से वापस लौटा और मैंने आके बीवी से मुआफ़ी मांगी कि मुझसे बेजा बात निकल गई, आप का दिल दुखा होगा, मुआफ़ कर दे, वह मुस्कुरा के कहने लगी

कि मैंने तो कुछ नहीं महसूस किया, जब मैंने उसको मुस्कुराता देखा तब मैंने आके इमामत करवाई कि अब मेरी और नमाज़ियों की नमाज़ अल्लाह के यहां क़बूल होगी, इसमें मेरे और आप के लिये बहुत Eye Opener (अहम सबक़) है कि हमें ज़िंदगी कैसे गुज़ारनी है।

हमारे अकाबिर के अख़्लाक़ को देख कर ग़ैर मुस्लिम मुसलमान होते थे

नबी सल्ल0 ने ऐसी अख़्लाक़ भरी ज़िंदगी गुज़ारने की तालीम दी कि अगर हम गुज़ारना शुरू कर दें तो हम अपने साथ वालों के लिये राहते जान बन जाएं। अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 का वाक़िआ है, एक यहूदी था, उससे कोई मकान ख़रीदने आया, मकान की क़ीमत एक हज़ार दीनार थी; यहूदी ने दो हज़ार दीनार मांगे तो वह बंदा कहने लगा कि भाई! इस Locality (इलाक़ा) में एक हज़ार दीनार का मकान होता है, तुम तो डबल Price (क़ीमत) मांग रहे हो, तो यहूदी ने जवाब दिया कि एक हज़ार दीनार क़ीमतुद्दार यअ़नी घर की क़ीमत है, और दूसरा हज़ार दीनार क़ीमतुलजवार यअ़नी अब्दुल्लाह बिन मुबारक के पड़ोस की क़ीमत है। वह बंदा चला गया, अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 को पता चल गया, आप आए और आपने कहा कि देखो भाई तुम्हारा मकान दूगनी क़ीमत पे बिक रहा था तुमने नहीं बेचा, फ़िक्र न करो, यह एक हज़ार दीनार मेरी तरफ़ से हदया, लो तुम मेरे पड़ोसी बने रहो, जब आप ने उसको एक हज़ार दीनार दिये, चेहरा देखा तो उसके दोनों रुख़्सारों पे आंसू थे, पूछाः क्यों रो रहे हो? कहने लगा कि तुम्हारे अख़्लाक़ ने मुझे कलिमा पढ़ने पर मजबूर कर दिया है। हमारे अकाबिर इतनी खुश अख़्लाक़ ज़िंदगी गुज़ारने वाले थे कि उनके मुआमलात को देख कर लोग

कलिमा पढ़ लिया करते थे।

मुर्ग़ियों को दाना पानी देना भूल जाने की सज़ा

हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने अपना एक अजीब वाक़िआ लिखा है, उलमा व तलबा ज़रा तवज्जो से सुनें, फ़रमाते हैं कि मेरे घर वालों को अपने ख़ानदान में किसी निकाह शादी की तक़रीब में जाना ज़रूरी था और घर में उन्होंने कुछ मुर्ग़ियां रखी हुई थीं, तो मुझे जाते हुए वह कह गए कि इन मुर्ग़ियों को इतने इतने बजे पानी दे देना, दाना डाल देना, मैंने कहा बहुत अच्छा, चुनांचे पहले एक दिन तो मैंने एहतिमाम से चीज़ें डाल दीं, दूसरे दिन तफ़सीर बयानुल कुर्आन जब मैं लिखने के लिये बैठा तो मेरे ज़ह्न में कोई नुक्ता ही नहीं आ रहा था, तबीअत ही नहीं चल रही थी, मैंने अहादीस को देखा, तफ़ासीर को देखा, ग़ौर किया कि इस आयत की तफ़सीर में क्या लिखूं, लेकिन जैसे तबीअत बंद हो गई हो, मैं बड़ा हैरान सोचता रहा कि आज मेरी तबीअत कुर्आन की तफ़सीर लिखने में क्यों नहीं चल रही है, अचानक मेरे ज़ह्न में ख़्याल आया कि कुछ मुझसे गुनाह तो सरज़द नहीं हुआ कि जिसकी नहूसत की वजह से अल्लाह ने उलूम व मआरिफ़ को रोक दिया हो, फ़रमाने लगे कि मैं बराबर सोचता रहा कि कोई भी काम तो मैंने ख़िलाफ़े शर्अ नहीं किया था, मैं हैरान हुआ कि यह क्या हुआ, कहने लगे कि अचानक मुझे ख़्याल आया कि ओ हो! चूंकि इन मुर्ग़ियों को दाना डालना रोज़ का तो मेरा काम नहीं था, और उस दिन मुझे ख़्याल न रहा, दोपहर हो गई थी और वह मुर्ग़ियां घर में भूकी प्यासी थीं, मैं उसी वक़्त उठा और जाके मैंने मुर्ग़ियों को दाने डाले, पानी दिया, जब मुसल्ले पर आकर बैठा तो फिर अल्लाह ने उलूम व तफ़सीर की बारिश फ़रमा दी, अगर घर में मुर्ग़ियां भूकी प्यासी है, इस पर उलूम व मआरिफ़ को रोक

दिया जाता है, तो अगर घर में मां भूकी होगी, बाप का दिल दुखा होगा, भाई बहन का दिल दुखा होगा, रिश्तादार और पड़ोसी का दिल दुखा होगा तो हमें उलूम व मआरिफ़ कैसे मिलेंगे?

प्यासे कुत्ते को पानी पिलाने पर मग़फ़िरत का फ़ैसला

नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि जो मुसलमान होता है, उसकी ज़बान और उसके हाथ से दूसरे मुसलमान सलामती में होते हैं, और जो दूसरे की तकलीफ़ को ख़त्म कर देता है अल्लाह क़यामत के दिन उसकी तकलीफ़ों को ख़त्म फ़रमाएंगे। चुनांचे हदीसे पाक में है "عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَة رضى الله عنه قَالَ مَرَّ رَجُل عَلى كَلْبٍ مُضْطجع عِنْدَ قَلِيْبٍ قَدْ كَادَ يَمُوتُ مِنَ الْعطشِ فلَمْ يجدُ ماءً ايَسقِيه فنزَع خَفَّهٗ فَجَعَلَ يَغْرِفُ لهٗ ويَسْقِيهِ فحاسَبَهٗ اللّٰهُ بِه فأَدْخَلَهٗ الْجَنَّةَ" एक बंदा था, उसने एक कुत्ते को देखा कि वह प्यासा है और प्यास की शिद्दत की वजह से वह मरने के क़रीब था, अब उसके पास पानी नहीं था, उसने देखा क़रीब में कोई कुंवां था, उसने जूता उतारा और जूते के अंदर उसने वहां से पानी निकाला और कुत्ते को पिलाया, कुत्ते को जब पानी मिला तो उसने ख़ुशी की आवाज़ निकाली, ख़ुशी की आवाज़ निकालने पर अल्लाह ने उसके लिये जन्नत का फ़ैसला फ़रमा दिया और बिल्ली को भूका प्यासा मारने पर जहन्नम का फ़ैसला।

आप सोचिये अगर इन जानवरों के साथ मुआमला करने पे यह है, तो इंसानों के साथ मुआमला करने पे फिर क्या होगा, लिहाज़ा हमें चाहिये कि ज़िंदगी में अब तक जो ख़ताएं कर चुके उन पर नदामत और उनसे मुआफ़ी और आईंदा अल्लाह के बंदों के लिये बाइसे रहमत बन कर ज़िंदगी गुज़ारने का इरादा करें, अपने गुस्से को क़ाबू में करें, अपनी शह्वत को क़ाबू में करें, अपनी हिर्स व हसद क़ाबू में करें और अल्लाह के बंदों को तकलीफ़ न पहुंचाए, जान,

माल, इज़्ज़त आबरू, हर चीज़ की हिफ़ाज़त रहे, ताकि हम मुआशरे का एक अच्छा इंसान बन के ज़िंदगी गुज़ारें, अपने नामए आमाल में जहां इतनी ख़ताएं लिखवा बैठे, कोई ज़ख़ीरा भी जमा कर लें, जो क़्यामत के दिन अल्लाह के सामने पेश कर सकें, हमारे अकाबिर अल्लाह के सामने अपने आमाल को पेश करने के लिये आमाल को जमा रखते थे।

खोटे सिक्के लेकर आमाल की क़बूलियत की उम्मीद करना

चुनांचे किताबों में वाक़िआ लिखा है, ख़ैर आबाद एक जगह है, वहां पर उस्मान ख़ैर आबादी रह0 एक बुज़ुर्ग थे, किराने की दूकान थी, उस ज़माने में यह चांदी के रूपये होते थे, काग़ज़ के नोट नहीं होते थे, तो जो रूपये ज़्यादा इस्तेमाल में रहते, जिनके ऊपर का Print (छपाई) घुस जाता था तो लोग कह देते थे कि यह खोटा है, उनके पास अगर कोई Customer (ख़रीदार) आता जिसके पास ऐसा खोटा सिक्का होता, वह पहचान भी लेते, मगर ले लेते, सौदा भी दे देते, वापस नहीं करते थे, सारी ज़िंदगी यही मामूल रहा कि खोटे सिक्के लेते रहे, सौदा देते रहे, कहते हैं कि जब उनकी वफ़ात का वक़्त क़रीब आया, आख़िरी लम्हा था, लेटे हुए थे, उठ कर बैठ गए, और दुआ मांगने लगे कि अल्लाह! मैं सारी ज़िंदगी तेरे बंदों से खोटे सिक्कों को क़बूल करता रहा, अल्लाह तू भी मेरे खोटे अमलों को क़बूल कर ले। हमारे बुज़ुर्ग ऐसे अमल जमा करते थे, कि शायद कोई अमल अल्लाह को पसंद आ जाए।

तो आज के बाद हम अहद करें कि हम भी दूसरों के दिल ख़ुश करेंगे, दूसरों को राहत पहुंचाएंगे, दूसरों की तकलीफ़ को अपनी तकलीफ़ समझेंगे, हम कोई ऐसा काम नहीं करेंगे कि जिससे दूसरों को तकलीफ़ पहुंचे और उम्मीद करेंगे कि अल्लाह तआला क़्यामत के

दिन हमारी तकलीफ़ों को भी ख़त्म फ़रमाएंगे और ईमान वाले अल्लाह के बंदों के दिल खुश करने की वजह से अल्लाह क़ियामत के दिन हमारे दिलों को भी खुश फ़रमा देंगे।

وآخرُ دَعوانا أنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ربِّ الْعالَمِين

☆☆☆

अब जो ख़िताब आप मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, यह ख़िताब दारुल उलूम देवबंद के "दफ्तरे एहतिमाम" में 11 अप्रेल 2011 ई0 बरोज़ दो शंबा, बअ़द नमाज़े जुह्र हुआ था, जिस में सिर्फ़ अरबाबे एहतिमाम और दारुल उलूम के उस्ताज़ए किराम शरीक थे। इस मजलिस में मजलिसे शूरा के मुअ़क्क़र रुक्न हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद मंज़ूर मज़ाहिरी भी मौजूद थे।

अकाबिरे देवबंद और यक़ीं मुहकम

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد

وَمَنْ يَّتَوَكَّل عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُه

दारुल उलूम की हाज़िरी अल्लाह का ख़ुसूसी एहसान

इस आजिज़ के लिये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के करम का एक और मौक़ा है कि अपने अकाबिर की इस इल्मी यादगार दारुल उलूम देवबंद में हाज़िरी नसीब हुई, यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के एहसानात में से एक बड़ा एहसान है। हर बेटे को बाप से मुहब्बत होती है, हर शागिर्द को उस्ताज़ से मुहब्बत होती है, तो एक इल्मी रिशता होने की वजह से दिल में मुहब्बत तो बहुत अर्से से थी, आज के दिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस इल्मी दर्सगाह में, इस मादरे इल्मी में पहुंचा दिया और आप हज़रात की ज़ियारत नसीब हुई, इस आजिज़ का दिल इस पर बहुत खुश है, और अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार है।

दारुल उलूम की एक इंफ़िरादी ख़ुसूसियत

आज हम अगर देखें तो दुनिया में कलिमा पढ़ने वाले बहुत हैं, लेकिन यह देखें कि यक़ीन वाले कितने हैं तो बहुत थोड़े मिलेंगे, जिनका यक़ीन मुहकम हो कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को सिफ़ात के साथ अपना ख़ुदा मानें, अस्बाब पे नज़र न हो, अल्लाह रब्बुल की ज़ात पे नज़र हो, दारुल उलूम देवबंद की एक ख़ुसूसियत यह भी है कि उसके बानी हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानूतवी रह0 ने जब उसूले हश्तगाना बनाए तो उन्होंने एक उसूल यह भी रखा कि दारुल

उलूम के लिये मुस्तकि़ल आमदनी का कोई ज़रीआ क़बूल नहीं किया जाएगा, हालांकि कितने मदारिस बनाने वाले और चलाने वाले लोग हैं जो चाहते हैं कि अल्लाह करे कि कोई मुस्तकि़ल ज़रीआ बन जाए और रोज़ रोज़ की यह फ़िक्र ख़त्म हो।

एहतिमाम तो निकला ही है "हम" से, अगर वह अरबी का "हम" हो तो इसका मअ़नी ग़म, फ़िक्र है, और जब यह उर्दू का "हम" बन जाए तो काम ख़राब होता है जब यह उर्दू का "हम" बन जाता है, फिर मुहतमिम यह समझता है कि हम ही हैं बस, अगर अरबी का लफ़्ज़ "हम" है जिससे एहतिमाम का लफ़्ज़ निकला तो यह तो 24 घंटे की फ़िक्र है और इसी फ़िक्र पर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की मदद होती है।

मौलाना क़ासिम नानूतवी रह0 का यक़ीने मुहकम

हमारा हाल तो यह है कि हम मुस्तकि़ल आमदनी के ज़रीआ की दुआएं मांगते हैं और हज़रत नानूतवी रह0 यह फ़रमा रहे हैं कि मुस्तकि़ल आमदनी का ज़रीआ क़बूल नहीं किया जाएगा, वजह क्या थी? वजह यह थी कि उनका यक़ीन बना हुआ था और यही चीज़ सहाबए किराम सल्ल0 की ज़िंदगियों से मिलती है, माख़ज़ तो हमारा वही है, चुनांचे सय्यदुना उमर रज़ि0 का ज़माना है, ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 जहां जाते हैं फ़तह होती है, बहुत कामियाब सिपह सालार थे, उनका तूती बोलता था, कुफ़्फ़ार के दिलों पे दहशत होती थी, ख़ौफ़ होता था, और अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने उनको कामियाबी अता फ़रमाई थी, वह सैफ़ुल्लाह थे, अल्लाह की तलवार थे, सय्यदुना उमर रज़ि0 ने उनको एक ख़त भेजा कि जो ख़त लाने वाले हैं ख़त के बाद यह अमीर होंगे और आप के लिये दो Option (तज्वीज़) हैं, अगर आप वापस आना चाहें तो मेरे पास मदीना में आ जाएं,

और अगर वहीं रह कर उस रास्ते में काम करना चाहें तो आप एक आम सिपाही की हैसियत से काम कर सकते हैं। अब यह बड़ा मुश्किल मुआमला था कि जो वक़्त का सिपह सालार हो, वह बग़ैर किसी ख़ास ग़लती और क़ाबिले ज़िक्र कोताही के मअ़ज़ूल कर दिया जाए और वह एक आम सिपाही की तरह काम करे, ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 ने जवाब दिया कि मैं मदीना तय्यिबा वापस नहीं जाऊंगा, मैं यहीं पर एक आम सिपाही की तरह अल्लाह के रास्ते में सफ़र करूंगा। इसके बाद किसी ने ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 से सवाल किया कि हज़रत! यह तो बड़ा मुश्किल मुआमला था कि एक सिपहसालार को एक हुक्म के ज़रीआ बग़ैर किसी वजह के मअ़ज़ूल भी कर दिया जाए और वह फिर एक आम सिपाही की तरह ख़ुशी के साथ, तीबे नफ़्स के साथ काम करने पे रज़ामंद भी हो, तो ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 ने जवाब दिया कि कोई मुश्किल नहीं था, जब मैं सिपहसालार था तब भी मुझे इसी अल्लाह की रज़ा मतलूब थी, जब सिपाही बना तब भी मुझे इसी अल्लाह की रज़ा मतलूब थी, तो मेरा मक़्सद तो पहले भी वहीं था, बअ़द में भी वही है, तो मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा। किसी ने उमर रज़ि0 से सवाल किया कि अमीरुल मोमिनीन! आपने उम्मत को इतने बड़े सिपह सालार की क़्यादत से महरूम कर दिया, तो उमर रज़ि0 ने जवाब दिया कि हां! उम्मत उनकी क़्यादत से तो महरूम हो गई, मगर उसने उम्मत का ईमान बचा लिया, उसने पूछा यह कैसे? फ़रमाया कि लोगों का यह यक़ीन बनने जा रहा था कि जिधर ख़ालिद जाएगा, फ़तह होगी, तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त से नज़र हट के अस्बाब पे आ रही थी, मैंने उनको मअ़ज़ूल किया कि अब जो भी फ़ुतूहात होंगी तो मख़्लूक़ पर नज़र के बजाए अल्लाह की ज़ात पर नज़र रहेगी, तो सहाबा रज़ि0 में

भी इसका बड़ा एहतिमाम था कि नज़र अल्लाह की ज़ात पे रहे, यह वही ख़ैर है जो चलता हुआ इस उम्मत में आ रहा है और हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम रज़ि0 को अल्लाह ने वही नेअ़मत दी थी, वह यक़ीन मुहकम, वह यक़ीने कामिल, जिसको हम तवक्कुल यक़ीन कहते हैं, वह समझते थे कि दीन का काम करना, हाथ पांव हिलाना हमारा काम है और आगे अस्बाब का मुहय्या करना उस परवरदिगार का काम है, इसलिये उन्होंने कहा कि मुस्तक़िल आमदनी का कोई ज़रीआ क़बूल नहीं किया जाएगा, कि कहीं तवज्जो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की तरफ़ से हट के अस्बाब पर न हो जाए और बंदे के यक़ीन के साथ अल्लाह का मुआमला है, जैसा यक़ीन वैसा ईमान, यक़ीन बना हो तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की मदद शामिल हो जाती है।

हमारे अकाबिर को यक़ीन का यह मक़ाम कैसे मिला?

इस दुनिया में यक़ीन का बनाना एक मुश्किल काम है, हमारे अकाबिर का यक़ीन इसलिये बना था कि वह साहिबे इल्म भी थे, और साहिबे ज़िक्र भी थे, चुनांचे इन हज़रात को देखो कि यह मस्नदे हदीस पे बैठते थे तो अस्क़लानी और कस्तलानी की यादें ताज़ा होती थीं और जब यही हज़रात मस्नदे इर्शाद पर बैठते थे तो वक़्त के जुनैद और बायज़ीद नज़र आते थे, वह مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ थे, यह दोनों नेअ़मतें अल्लाह ने उनको दी होती थीं, इल्म भी था, ज़िक्र भी था, एहतिमाम के साथ ज़िक्र करते थे और इस नूर की वजह से अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने उनको वह यक़ीन दिया था कि जिस यक़ीन की वजह से अल्लाह ने उस इदारे को यह क़बूलियत अता फ़रमाई, वह समझते थे कि अस्बाब कुछ नहीं कर सकते, जो होना है मुसब्बबुल अस्बाब की वजह से होना है।

यक़ीन मुहकम के चंद नमूने

आप अगर ज़रा देखें सय्यदुना मूसा अलै० तशरीफ़ लाए तो फ़िरऔन की बहुत मज़बूत हुकूमत थी, उसको बड़ा नाज़ था, वह कहता था "أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَٰذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِن تَحْتِي" और इधर हज़रत मूसा अकेले भी थे और साथ में थे भी तो बनी इस्राईल के चंद लोग थे, फ़िरऔन कहता था: "إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ" कि यह चंद लोग हैं, मगर हज़रत मूसा अलै० का यक़ीन बना हुआ था, नतीजा यह हुआ कि उन्होंने नज़र के रास्ते को नहीं देखा, उन्होंने ख़बर के रास्ते को देखा, चुनांचे आप देखिये कि जादूगरों ने अपनी रस्सियां डालीं "يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِن سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ" अब उस वक़्त जबकि यह रस्सियां सांप बन के चलती महसूस हो रही हैं अक़्ल से सोचें कि क्या करना चाहिये, अक़्ल जवाब देगी कि तुम्हारे हाथ में असा है, उसे मज़बूती से पकड़ लो, जो सांप तुम्हारे क़रीब आए उस सांप के सर पे डंडा लगाओ, तुम्हारे लिये बचने की आख़िरी उम्मीद ही है और ऊपर से हुक्म आ रहा है: "أَلْقِ عَصَاكَ" अपने असा को ज़मीन पे डाल दो, अक़्ल चीख़ती है, चिल्लाती है कि क्या कर रहे हो, यही लाठी तो है तुम्हारे हाथ में, इसको भी हाथ से छोड़ दोगे तो क्या बचेगा? मगर मूसा अलै० का यक़ीन बना हुआ था, उन्होंने अक़्ल को नहीं देखा, लाठी को नीचे डाला "فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ" तो वह अज़्दहा बन गया जिसने सांपों को खा लिया और अल्लाह ने मूसा अलै० को कामियाब फ़रमा दिया।

फिर देखिये कि दरयाए नील के किनारे खड़े हैं, पीछे से फ़िरऔन अपने लशकर को लेकर पहुंच गया "قَالَ أَصْحَابُ مُوسَىٰ إِنَّا لَمُدْرَكُونَ" मूसा के सहाबा घबरा गए कि अब तो हम धर लिये गए, इसलिये कि आगे पानी का दरिया और पीछे यह इंसानों का

दरिया, यअ़नी फ़ौज जो आ गई, अब उस वक़्त "न जाए मान्दन न पाए रफ़तन" वाला मुआमला था, फ़रमायाः "كَلَّا" हरगिज़ नहीं, "اِنَّ مَعِیَ رَبِّیْ سَیَهْدِیْنِ" मेरे साथ मेरा रब है ज़रूर मेरी रहनुमाई करेगा, अल्लाह की ज़ात पर ऐसा यक़ीन होता है, आंख कुछ देख रही है, दिल कुछ और तसदीक़ कर रहा है और यह हज़रात दिल के इस यक़ीन के साथ क़दम उठाते थे, ऐसे वक़्त में अक़्ल से पूछिये कि क्या करना है, अक़्ल कहेगी कि तुम्हारे पास डंडा है, मज़बूती से पकड़ो और जब पीछे वाला लशकर आए तो फ़िरऔन के सर पर डंडा मार दो, हो सकता है कि वह मरे और काम बने, लेकिन ऊपर से देखें कि जवाब आ रहा हैः "اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ" पानी पे डंडा मारो, अक़्ल कहती है कि पानी पे मारने से क्या हो जाएगा, मगर हज़रत मूसा अलै० ने ज़ाहिर को नहीं देखा, बल्कि जो हुक्मे खुदा था उसी पर अमल किया, अल्लाह ने उसी दरिया के अंदर बारह रास्ते बनाए, तो उन्होंने जब पानी पे असा मारा तो अल्लाह तआला ने रास्ते बना दिये और अल्लाह ने बनू इस्राईल को उस दरिया से पार उतार दिया, जब फ़िरऔन और उसका लशकर गुज़रने लगा तो अल्लाह ने उनको ग़र्क़ फ़रमा दिया।

तीसरा वाक़िआ कि आगे मूसा अलै० की क़ौम एक ऐसी वादी में है कि जिसमें पानी नहीं था, लोग कहते हैं कि हज़रत! पीने को पानी चाहिये, जीने के लिये पानी चाहिये, अब ऐसे वक़्त में अक़्ल से पूछें कि क्या करें? अक़्ल कहेगी कि तुम्हारे पास एक असा है, डंडा है, मज़बूती से पकड़ो और तुम पानी के लिये ज़मीन को खोदना शुरू करो, मगर ख़्याल रखना कि असा टूटने न पाए, अगर यह टूट गया तो उम्मीद की आख़िरी किरन भी ख़त्म हो जाएगी, लेकिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से पैग़ाम आ रहा है "اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ

"اَلْحَجَرَ" पत्थर पे असा मारो, अक़्ल चीख़ती है, चिल्लाती है कि पत्थर पे मारने से क्या होता है, डंडा भी टूट जाएगा, तुम कुंवा भी नहीं खोद सकोगे, तो मूसा अलै0 ने ज़ाहिर को नहीं देखा, जो हुक्मे ख़ुदा था उसी पर अमल किया, चुनांचे अल्लाह तआला ने चश्मे जारी फ़रमा दिये, पानी अता फ़रमा दिया तो जब यक़ीन बना होता है तो इंसान अस्बाब को नहीं देखता, मुसब्बिबुल अस्बाब की तरफ़ निगाह होती है, आज हमारी कोताही यह है कि हमारी नज़र मुसब्बिबुल अस्बाब से हट कर अस्बाब की तरफ़ होती जा रही है, इसी को अल्लामा इक़्बाल ने कहाः

बुतों से तुझको उम्मीदें ख़ुदा से नाउम्मीदी
मुझे बता तो सही और काफ़िरी क्या है

हमारी नाकामी की बुन्यादी वजहः यक़ीने कामिल की कमी

हमारी गिरावट की बुन्यादी वजह ही यही है कि वह जो यक़ीन वाली कैफ़ियत थी वह नहीं आ रही है, कुछ ज़ाहिरी अस्बाब हैं, दुनिया भी चल रही है, हम भी साथ चल रहे हैं तो यह देखें कि यक़ीन वाले लोग कितने हैं, क़ासिमुल उलूम वलबरकात हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानूतवी रह0 को वाक़ई अल्लाह ने यक़ीने कामिल दिया था और उसूले हश्तगाना में यह कह देना, यह बताता है कि उनके दिल की कैफ़ियत क्या है, जैसी करनी वैसी भरनी, अगर अल्लाह की ज़ात पर नज़र रहेगी तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त नुक़सान की चीज़ों में से नफ़्आ निकाल देंगे, ज़िल्लत के नक़्शे में से इज़्ज़त निकाल देंगे।

यक़ीने कामिल हो तो, नाकामी के अस्बाब में कामियाबी मिल जाती है

बल्कि सच्ची बात तो यह है कि जो सबब ज़ाहिर में नाकामी

का नज़र आएगा, अल्लाह उसी को कामियाबी का सबब बना देंगे, जो ज़िल्लत का सबब नज़र आएगा उसको इज़्ज़त का सबब बना देंगे, आप ग़ौर कीजिये कि हज़रत मूसा अलै0 की वालिदा को हुक्म क्या हुआः "وَاَوْحَيْنَا اِلٰى اُمِّ مُوْسٰى اَنْ اَرْضِعِيْهِ" और हमने वह्य की, इल्हाम किया मूसा की वालिदा को कि उसको दूध पिलाए "فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ" और अगर आप को डर हो कि फ़िरऔन के फ़ौजी पकड़ के ले जाएंगे "فَاَلْقِيْهِ فِى الْيَمِّ" उसको लाके दरिया में डाल दें, और फिर अगली बात भी बता दी "فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّىْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ" कि उसको वह पकड़ेगा जो उसका भी दुशमन होगा और मेरा भी दुशमन, मां औलाद के बारे में कितनी हस्सास होती है और मां को यह ख़बर भी हो जाए तो अब मां कितनी परेशान होगी कि मेरा बेटा एक ऐसे बंदे के हाथ में जाएगा जो मेरा भी दुशमन, खुदा का भी दुशमन, तो ग़म की इंतिहा होगी, मगर इसी के साथ तसल्ली भी दीः "تَخَافِىْ وَلَا تَحْزَنِىْ" कि ख़ौफ़ नहीं खाना, ग़मज़दा भी न होना, "اِنَّا رَادُّوْهُ اِلَيْكِ" हम इसे तुम्हारे पास लौटाएंगे "وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ" और हमें उसे रसूलों में से बनाना है, यह वादा बता दिया, मगर यहां यक़ीन का मुआमला है, और औरत ज़ात कमज़ोर भी होती है, मगर अल्लाह की ज़ात पर उनका पक्का यक़ीन था, चुनांचे नतीजा क्या हुआ, वक़्त आया, बेटे को दरिया में डाल दिया, अब अक़्ल कहती है कि तेरा बेटा नहीं बच सकता, इसलिये कि उसको तुमने लकड़ी के एक बक्से में डाला है, अब अगर बक्से में सूराख़ रखो कि हवा जाए तो उसमें पानी भर जाएगा, बच्चा डूब के मरेगा, और अगर पानी को रोकने के लिये वाटर टाइट करें तो हवा बंद हो जाएगी, वह सांस नहीं ले सकेगा, घुट के मरेगा, तो बच्चा नहीं बचता, ज़ाहिरी नज़र बता रही है कि बच्चे का बचना

नामुम्किन, मगर उस औरत का अल्लाह के वादे पर यक़ीन था, चुनांचे उसने अपने बच्चे को डाल दिया कि मेरे अल्लाह का वादा है। अब अल्लाह की शान देखें कि फ़िरऔन अपनी बीवी के साथ दरिया के किनारे था, वह बक्सा आता हुआ मिला, तो गुलाम पकड़ के ले आया, और उसे खोला, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं "وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّي" मूसा! हमने तेरे ऊपर मुहब्बत की तजल्ली डाल दी थी, चुनांचे जब उसकी बीवी ने देखा तो कहाः "لَا تَقْتُلُوهُ" बच्चे को क़त्ल मत करना, "عَسَىٰ أَن يَنفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا" हम अपना बेटा बनाएंगे और इससे फ़ाइदा उठाएंगे। अब बताएं कि वह फ़िरऔन जो हज़ारों बच्चों को क़त्ल कर चुका था, वह अपनी बीवी की बात मानता है कि ठीक है, मैं उसको क़त्ल नहीं करता,--दुनिया कहती है कि बीवी की बात कोई नहीं मानता, यहां तो बड़े बड़े फ़िरऔन अपनी बीवियों की बातें मानते रहे हैं--फ़िरऔन को अक़्ल ने धोका दिया, अक़्ल से उसने यह सोचा कि जब मैं उसको घर में पालूंगा, यह मेरा बेटा बनेगा तो यह क्या मुझसे ताज छीनेगा, इसलिये उसने उसको क़त्ल न करने पर आमादगी का इज़्हार कर दिया, घर ले आया, अब उस ज़माने में फ़ीडर की मां तो होती नहीं थी कि दूध का फ़ीडर दे दो, औरतें दूध पिलाती थीं, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِن قَبْلُ" अल्लाह तआला ने आम औरतों का दूध उन पर हराम कर दिया, मना कर दिया, फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि औरतों को बुलाओ, उसको दूध पिलाएं, अब जो औरत पिलाने लगती है बच्चा दूध नहीं पीता, मगर भूक भी है, बच्चा रोता भी है और अब चूंकि अपनाने का इरादा कर लिया तो मुहब्बत भी हो गई तो आंसू भी बर्दाश्त नहीं हो रहे हैं, फ़िरऔन परेशान है, किसी और को बुलाओ, किसी और को बुलाओ, किसी और को

बुलाओ, सारी रात यही मस्ला चलता रहा।

और दूसरी तरफ़ हाल देखिये कि हज़रत मूसा अलै0 की वालिदा माजिदा बच्चा को दरिया में डाल के घर तो आ गईं, मगर मां थी, दिल टूटा हुआ था, ग़मज़दा था, मां की मामता ही ऐसी होती है, "وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فَارِغًا اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِىْ بِهٖ لَوْلَا اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا" अल्लाह फ़रमाते हैं कि अगर हम उनके दिल को गिरह न देते, तसल्ली न देते, तो वह रो पड़ती फिर सारा राज़ खोल बैठती, हमने उसको रोने से रोक लिया, उसके दिल को गिरह दे दिया, बेटी से कहने लगीः बेटी! ज़रा जाओ, पता करो कि भाई किस हाल में है, तो बेटी गई, अब जाके उसने देखा तो महल में नक़्शा ही अजीब था, बच्चा दूध चाहता है, औरत दूध पिलाती है, बच्चा पीता नहीं, लोग परेशान हैं, उस वक़्त उसने यह हाल देखा तो कहने लगीः "هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ نَاصِحُوْنَ" मैं तुम्हें ऐसे घर वालों के बारे में न बताऊं जो दूध पिलाएंगे और बड़े ख़ैर ख़्वाह होंगे।

मुफ़स्सिरीन ने नुक्ता लिखा है कि फ़िरऔन के दिल में बात खटकी कि यह क्यों कह रही है कि यह उसके लिये बड़े ख़ैरख़्वाह होंगे, उसने पूछा कि तुम यह क्यों कह रही हो? वह भी मूसा अलै0 की बहन थी, कहने लगी कि हम आप की रिआया हैं, हम आप की ख़ैर ख़्वाही नहीं करेंगे तो कौन करेगा? कहता है हां ठीक है, लाओ किसको लाती हो, वह आई और कहने लगी कि अम्मी! चलो, अब मूसा अलै0 की वालिदा आ गईं, बच्चे को दूध पिलाती हैं तो बच्चा दूध पी लेता है, फ़िरऔन को ख़बर मिली कि एक औरत का दूध पी लिया, वह रात का जागा हुआ था, नींद आ रही थी, परेशान था, उसने कहा चलो मस्ला हल हुआ, और कहा कि मैं सोता हूं, उस

औरत को जाने न देना, उन्होंने कहा मैं तो यहां नहीं रहती, मैं तो अपने घर जाऊंगी, अपना घौंसला अपना, कच्चा हो या पक्का, मुझे महल में नहीं रहना है तो फ़िरऔन कहने लगाः तुम जा रही हो तो बच्चे को ले जाओ और दूध पिलाने की जो तुम्हारी तन्ख़्वाह होगी वह हम तुम्हारे धर भेजवा देंगे। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "فَرَدَدْنَاهُ اِلٰى اُمِّهٖ" हमने लौटा दिया उसको उसाकी मां के पास "كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ" ताकि उसकी आंखें ठंडी ठंडी हों और उसका दिल ग़मगीन न हो "وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ" और वह जान ले कि अल्लाह के वादे सच्चे हैं। असल यही है कि "اَنَّ وعدَاللّٰهِ" "حَقٌّ" जिस दिल में यह चीज़ उतर जाती है उसका यक़ीन कामिल होता है, अस्बाब को मत देखें यह तो मुसब्बिबुल अस्बाब के हाथ में हैं, जब वह चाहते हैं अस्बाब को अपने हुक्म के मुताबिक़ इस्तेमाल कर लेते हैं, यह यक़ीन अगर बन जाए कि चीज़ों में हमारी कामियाबी नहीं है, इज़्ज़त और ज़िल्लत उसमें नहीं है, फ़ैसला अल्लाह की तरफ़ से है, इनाबते इलल्लाह, रुजू इलल्लाह, तवज्जो इलल्लाह, यह कैफ़ियत अगर हमारे अंदर आ जाए तो यक़ीन पुख़्ता हो जाएगा।

यक़ीने कामिल हो तो, ग़म के अस्बाब ख़ुशी के अस्बाब बन जाते हैं

जब इंसान यक़ीने कामिल कर ले तो जो सबब इंसान के ग़म का होता है, अल्लाह उसी को ख़ुशी का सबब बना देते हैं। क़ुर्आन पाक में इसकी मिसाल मौजूद है, फ़िरऔन पानी में डूब के मरा, अल्लाह तआला क़ादिर थे, अगर्चे चाहते तो क़ारून की तरह ज़मीन में धंसा देते, मगर उसके मरने का और काई ज़रीआ नहीं बना, न ज़मीन में धंसा, न उस पर कोई आग उतरी, न हवा चली, हां पानी

में डुबोया गया, वजह यह थी कि मूसा अलै0 की वालिदा ने जब बेटे को पानी में डाला था तो पानी उनके दिल के ग़मज़दा होने का सबब बना था लेकिन उन्होंने नज़र अल्लाह की ज़ात पर रखी, तो अब अल्लाह ने पानी को ही उनकी ख़ुशी का सबब बना दिया कि देखो! उसी पानी में मैं फ़िरऔन को डुबो के दिखाता हूं, जो सबब तुम्हारे ग़म का बन रहा है, वही सबब तुम्हारे लिये ख़ुशी का बन रहा है, और यही नुक्ता मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि फ़िरऔन को, अस्बाब पर बड़ा नाज़ था, वह बड़े फ़ख़्र से कहता था: "هٰـذِهِ الْاَنْهَارُ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِىْ" अल्लाह ने उसी नहर के अंदर डुबो के दिखला दिया कि तुम बड़ा उन पर भरोसा करते हो हम इसी में तुम्हें डुबो के दिखा देंगे

जिन पे तकिया था वही पत्ते हवा देने लगे

यूसुफ़ अलै0 का वाक़िआ है, उनके भाई अपने वालिद के पास आए, इर्शाद हुआ "وَجَـآءُوْ اَبَـاهُـمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ" क्या लेके आए? "عَـلٰى قَـمِيْـصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ" यूसुफ़ अलै0 की क़मीस पर झूटा ख़ून लगा के लाए तो याकूब अलै0 को जो ग़म मिला वह क़मीस को देख कर मिला, अब क़मीस सबब बन रहा है ग़म के मिलने का, मगर याकूब अलै0 की तवज्जो अल्लाह की तरफ़ रही, अल्लाह के सामने उन्होंने सब्र किया, बिलआख़िर कहा: "اِنَّـمَا اَشْكُوْ بَثِّىْ وَحُزْنِىْ اِلَى اللّٰهِ" तो फिर नतीजा यह निकला कि जब यूसुफ़ अलै0 की मुलाक़ात भाइयों से हुई तो उन्होंने कहा: "اِذْهَبُـوْا بِـقَـمِيْصِىْ" कि मेरा क़मीस लेके जाओ, वह यह भी तो कह सकते थे कि मैं दुआ करता हूं कि बीनाई ठीक हो जाए, लेकिन नहीं, क़मीस भेजा, वजह यह थी कि यही क़मीस उनके ग़म का सबब बना था, अब यही क़मीस उनके लिये बेटे के मिलने की ख़ुशी का सबब बनेगा, तो यह दस्तूर है कि जो सबब ग़म का होगा, अगर अल्लाह की ज़ात पर नज़र होगी, तो

अल्लाह इसी में से बंदे के लिये ख़ुशी निकाल देंगे, ज़िल्लत के नक़्शे में से इज़्ज़त निकाल देंगे, यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां दस्तूर है, जैसा बंदे का यक़ीन वैसा मुआमला।

बंदे के मुआमला के मुताबिक़ अल्लाह का मुआमला

और अल्लाह के यहां तो एक दस्तूर है: "اَلْجَزَاءُ مِنْ جِنْسِ الْعَمَلِ" जैसा मुआमला बंदा अल्लाह के साथ करेगा अल्लाह वैसा मुआमला बंदे के साथ करेगा। इसकी मिसाल: बनी इस्राईल को तौबा के लिये अपने जिस्म पे छुरी चलानी पड़ी थी, चुनांचे जब वह कहने लगे कि हम तौबा करना चाहते हैं तो फ़रमाया कि अच्छा हम ऊपर से बादलों के ज़रीआ से अंधेरा कर देंगे "فَاقْتُلُوْا اَنْفُسَكُمْ" तुम ज़रा अपने आप को मारो, छुरियों से ज़ख़्म लगाओ, तब तुम्हारी तौबा को क़बूल करेंगे, तो उनकी तौबा की क़बूलियत के लिये जिस्म को ज़ख़्म लगा कर दुखाना पड़ता था तब तौबा की क़बूलियत होती थी, इस उम्मत के साथ अल्लाह का मुआमला देखो कि ज़बान से भी बोलने की ज़रूरत नहीं है, फ़रमाया: "اَلنَّدَمُ تَوْبَةٌ" कि दिल की नदामत यही अल्लाह के नज़दीक तौबा के मानिंद है। आख़िर यह फ़र्क़ क्यों है? तो मुफ़स्सिरीन ने इसका फ़र्क़ लिखा कि बनी इस्राईल के सामने अल्लाह तआला के एक पैग़म्बर अलै0 ने अल्लाह का तज़किरा किया तो कहने लगे: "لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً" क़ौम ने मुतालबा किया था कि हम उस वक़्त तक नहीं मानेंगे जब तक वाज़ेह तौर पर अल्लाह को नहीं देख लेंगे, चूंकि उन्होंने वाज़ेह देखने के लिये कहा था तो अल्लाह ने उनकी तौबा के लिये फ़रमा दिया कि जब तक हम वाज़ेह ज़ख़्म नहीं देखेंगे तुम्हारी तौबा क़बूल नहीं करेंगे, और इस उम्मत के साथ यह मुआमला कि जब नबी सल्ल0 ने इस उम्मत के सामने अल्लाह को पेश किया तो कोई दलील नहीं मांगी,

सिद्दीके अक्बर रज़ि० ने फ़ौरन ईमान क़बूल कर लिया, चूंकि बदूने दलील के क़बूल कर लिया, लिहाज़ा अब इस उम्मत की तौबा क़बूल करने के लिये सबूत की ज़रूरत नहीं है, बस तुम्हारे दिल में अगर नदामत आ गई तो मैं जानता हूं, मैं इसी पर तुम्हारी तौबा को क़बूल कर लूंगा।

जन्नत की क़ीमत एक खजूर

आप देखिये कि जन्नत की क़ीमत है एक ख़जूर, हदीसे मुबारक में आता है कि अगर एक खजूर के सद्क़े के बदले भी जन्नत में जाना पड़े तो तुम जाओ, वजह क्या है? जन्नत तो बहुत ऊंची है और उसकी क़ीमत एक खजूर कि उसके बदले भी जन्नत मिल जाए? फ़रमायाः, इसलिये कि अल्लाह तआला ने आदम अलै० को जन्नत से निकाला था तो गंदुम के चंद दाने खाने की वजह से निकाला था तो अल्लाह ने कहा कि अब मैं इसकी क़ीमत नहीं बढ़ाउंगा, तुम वापस आना चाहो तो एक खजूर के बदले भी मैं जन्नत दे दूंगा, अल्लाहु अक्बर कबीरा।

और देखिये कि अब्रहा अपना लशकर लेकर बैतुल्लाह को गिराने के लिये आया, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने छोटे छोटे परिंदों को मुतअय्यन फ़रमा दिया, "طَيۡرًا أَبَابِيلَ تَرۡمِيهِم بِحِجَارَةٍ" उन्होंने छोटी छोटी कंकरिया फैंकीं,, लशकर को उन्होंने खाए हुए भूसे की तरह बना के रख दिया, अब ऐसा क्यों हुआ? मुफ़स्सिरीन ने उसका बड़ा ख़ूबसूरत जवाब दिया, बअ़ज़ ने तो इसका यह जवाब दिया कि देखो अब्रहा जानवरों में जो सबसे ज़्यादा ताक़तवर जानवर हाथी है, उसको लेकर आया था, तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने फ़रमाया कि अच्छा तुम सबसे ताक़तवर जानवर को लाए हो तो हम इसके मुक़ाबले में सबसे

कमज़ोर जानवर को लेकर आएंगे, चुनांचे एक कमज़ोर परिंदा के ज़रीआ अल्लाह ने ताक़तवर को मरवाया था और यह अल्लाह का दस्तूर है कि चिड़यों से बाज़ को मरवा देते हैं, "كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللّٰهِ ط وَاللّٰهُ مَعَ الصَّابِرِينَ" यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का दस्तूर है।

लेकिन बअ़ज़ मुफ़स्सिरीन ने एक अजीब तहक़ीक़ी जवाब लिखा, वह फ़रमाते हैं कि वजह यह थी कि अब्रहा चला था अल्लाह की बनाई हुई तरतीब को उलटने की नियत से कि बैतुल्लाह जो इज़्ज़त वाला घर है, मैं उसे गिरा के ख़त्म कर दूं और ख़ुद अपना एक अलग मर्कज़ बनाऊं, जिसको दुनिया में इज़्ज़त मिल जाए, यअ़नी जिसकी कुछ इज़्ज़त नहीं उसको इज़्ज़त दिलाना चाहता था, जो इज़्ज़त वाला घर है उसको मिटाना चाहता था, तो अल्लाह की बनाई हुई तरतीब को उलटने की नियत से चला था, अल्लाह ने फ़रमायाः अच्छा, आज हम भी अपनी तरतीब उलटते हैं, वह इस तरह कि हमेशा इंसान सय्याद होता है, और परिंदे सैद होते हैं, आज हम तरतीब बदल देते हैं, देखो इंसान सैद बनेंगे और परिंदे सय्याद बनेंगे, "تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ"-

अल्लाह बड़ा अज़ीम है, बहुत बड़ा है, अगर इसका यक़ीन दिल में उतर जाए तो यह अस्बाब तो अल्लाह के इशारे पर चलते हैं, हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानूतवी रह० के दिल में यह यक़ीने कामिल था, जिसकी वजह से अल्लाह ने फिर इस इदारे को एक क़बूलियत आम्मा ताम्मा अता फ़रमा दी, इतनी क़बूलियत कि सुब्हानल्लाह! इंसान हैरान होता है, अल्लाह के मुक़र्रब बंदों की एक जमाअत यहां से खड़ी हुई और पूरी दुनिया के अंदर आज उन्होंने

दीन का काम किया, उस आजिज़ को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस दीन की निस्बत से अलहम्दु लिल्लाह शायद 50 से ऊपर मुल्कों का सफ़र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई, मश्रिक़ भी देखा, मग़रिब भी देखा, अमरीका भी देखा, अफ़रीक़ा भी देखा, ऐसी जगह पे भी जाना हुआ कि जहां 6 महीने के दिन और 6 महीने की रात होती है, ऐसी जगहों पे भी जाना हुआ जहां साइपेरिया की बर्फ़ ही बर्फ़, कि वज़ू करते थे तो बर्फ़ को तोड़ के नीचे से पानी निकाल के वज़ू करते थे और बर्फ़ के ऊपर नमाज़ पढ़ते थे और नमाज़ पढ़ने के बावजूद नीचे की बर्फ़ पिघलती नहीं थी, इतनी ठंडी होती थी, ऐसी जगह पे भी अल्लाह ने जाने की तौफ़ीक़ दी, जहां घर बर्फ़ के बने हुए हैं, दीवारें बर्फ़ की, छत बर्फ़ की, दरवाज़ा बर्फ़ का, वहां खाने के लिये टिरे लेके ओते हैं तो वह भी बर्फ़ का बना हुआ, टूरिस्ट हज़ारों लाखों डालर लगा के वहां चंद दिन गुज़ारने के लिये जाते हैं, अल्लाह ने दीन की निस्बत पे वहां भी पहुंचा दिया, एक ऐसी जगह भी अल्लाह ने पहुंचाया जिस को END OF THE WORLD (दुनिया का आख़िरी किनारा) कहते हैं, साइंसदानों ने लिख के लगाया हुआ है कि यह दुनिया का आख़िरी किनारा है, वह इस तरह कि साल में एक दिन वहां ऐसा आता है कि सूरज गुरूब होने के लिये आता है और गुरूब होने के बजाए वहीं से तुलूअ़ होना शुरू हो जाता है, इस वक़्त साइंसदानों ने मुत्तफ़िक़ा तौर पर इसको दुनिया का आख़िरी किनारा क़रार दिया है, मगर इतनी जगहों पर जाने के बाद यह आजिज़ इस नतीजा पर पहुंचा कि जहां भी यह आजिज़ गया, वहां पर पहले से कोई न कोई उलमाए देवबंद का रूहानी फ़रज़ंद बैठा दीन का काम करता नज़र आया।

यह इल्म व हुनर का गहवारा तारीख़ का वह शह पारा है
हर फूल यहां एक शोला है हर सरू यहां मिनारा है
आबिद के यक़ीं से रौशन है सादात का सच्चा साफ़ अमल
आंखों ने कहां देखा होगा इख़्लास का ऐसा ताजमहल

यह इख़्लास का ताजमहल था जो बना के चले गए, इसकी बुनियादों में वह यक़ीन है, वह इख़्लास है, वह लिल्लाहियत है, वह तवज्जो इलल्लाह है, वह इनाबाते इलल्लाह, वह तक़्वा, वह तहारत, वह नियतें हैं कि जिनकी वजह से अल्लाह की तरफ़ से क़बूलियत मिली, अलहम्दु लिल्लाह अपने इस मादरे इल्मी में आज इस आजिज़ को हाज़िरी की तौफ़ीक़ हुई, यह आजिज़ आप सब हज़रात का भी शुक्रगुज़ार है कि आप ने इस आजिज़ को यह सआदत दी कि आप सब हज़रत मिले, हक़ तो यह था कि सबके कमरों में अलग अलग जाता, सबकी वहां जाकर ज़ियारत करता, अल्लाह तआला इन मुहब्बतों को सलामत रखे और हमें अपने अकाबिर की वही इल्मी निस्बत, वही ज़िक्र वाली निस्बत, वह रुजूअ़ इलल्लाह, इनाबते इलल्लाह वाली, वही यक़ीन वाली निस्बत अल्लाह हमें भी अता फ़रमाए और अल्लाह इस इदारे को मज़ीद दिन दूगनी रात चौगनी तरक़्क़ी नसीब फ़रमाए।

"दिन दूगनी रात चौगुनी तरक़्क़ी" का मतलब

दिन दूगनी से मुराद कि दिन में अस्बाब होते हैं और रात चौगनी से क्या मुराद? रात को तो अस्बाब नहीं होते? इससे मुराद रात को तहज्जुद में अल्लाह से मांगना है यअ़नी अपने अमल से जो तरक़्क़ी होगी वह दूगनी होगी और जो अल्लाह से तअल्लुक़ जोड़ने में होगी वह चार गुना तरक़्क़ी होगी, यह अल्फ़ाज़ ही बता रहे हैं कि

तरक़्क़ी तो तब होगी जब अल्लाह का तअल्लुक़ होगा, अल्लाह तआला इस आजिज़ की हाज़िरी को क़बूल फ़रमाए, आप हज़रात अपनी दुआओं में इस आजिज़ को याद रखिये।

جَزاكم اللّٰهُ اَحْسَنَ الْجَزاء

وآخر دعوانا أن الحمدُ للّٰهِ ربِّ العالمين

☆☆☆

अगले सफ्हात पर जो ख़िताब आप के पेशे नज़र होगा, यह ख़िताब दारुल उलूम की पुरशिक्वा मस्जिद, "मस्जिदे रशीद" में 11 अप्रेल 2011 बरोज़ दो शंबा, बअ़द नमाज़े इशा हुआ था, हाज़िरीने मजलिस में दारुल उलूम के उहदेदाराने इहतिमाम और असातिज़ा व तलबा के अलावा दारुल उलूम (वक्फ़) और देवबंद और कुर्ब व जवार के इख़्लास से आने वाले हज़ारों उलमा, तलबा और अवाम भी थे।

बारगाहे ख़ुदावंदी में क़ाबिलियत से ज़्यादा क़बूलियत का एतिबार

الحمد للّٰہ و کفی و سلام علی عبادہ الذین اصطفی، اما بعد

اعوذ باللّٰہ من الشیطان الرجیم، بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم

اِنَّمَا یَتَقَبَّلُ اللّٰہُ مِنَ الْمُتَّقِیْنَ

وقالَ رسولُ اللّٰہ ﷺ: اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِسانِہٖ ویَدِہٖ

سبحان ربک رَبِّ العزۃ عما یصفون، وسلام علی المرسلین، والحمد للّٰہ رب العلمین

اللھم صل علی سیدنا محمد و علی اٰل سیدنا محمد وبارک وسلم

اللھم صل علی سیدنا محمد و علی اٰل سیدنا محمد وبارک وسلم

اللھم صل علی سیدنا محمد و علی اٰل سیدنا محمد وبارک وسلم

क़बूलियत का मतलब

اِنَّمَا یَتَقَبَّلُ اللّٰہُ مِنَ الْمُتَّقِیْنَ، बेशक अल्लाह तआला मुत्तक़ियों ही से क़बूल फ़रमाता है अल्लामा राग़िब अस्फ़हानी ने मुफ़रिदातुल क़ुर्आन में लिखा है कि تَقَبُّل باب تَفَعُّل से है और इसका मअ़नी है: "قَبُوْلُ شَیْءٍ عَلٰی وَجْہٍ یَقْتَضِی ثَوابًا کَالْھَدِیَۃِ" किसी चीज़ का क़बूल कर लेना और उसके बदले उसको कुछ देना जैसे हदिया होता है, हमारी ज़बान में क़बूलियत का मअ़नी यह होता है कि आदमी को कोई चीज़ अच्छी लग जाए, पसंद आ जाए।

क़बूलियत की दो बुन्यादें

आम तौर पर पसंद होने की दो वजूहात होती हैं कि वह ख़ूबसूरत हो और ख़ूब सीरत हो, ऐसी कोई भी चीज़ जो ख़ूबसूरत भी हो और ख़ूब सीरत भी हो, देखने वाले को अच्छी लगती है, कोई

शख़्सियत हो, मकान हो, लिबास हो, कोई मंज़र हो, जो भी खूबसूरत और खूब सीरत चीज़ होगी वह अच्छी लगेगी, उमूमी तौर पर दस्तूर यही है, ताहम यह हर्फ़े आख़िर नहीं है।

हर अच्छी चीज़ का मक्बूल होना ज़रूरी नहीं

ऐसा भी देखा गया कि बअ़ज़ मर्तबा चीज़ इतनी अच्छी नहीं होती फिर भी पसंद आ जाती है, इसकी दलील कुर्आन अज़ीमुश्शान में है, सय्यदुना मूसा अलै0 और सय्यदुना हारून अलै0 दोनों पैग़म्बर हैं, लेकिन हज़रत मूसा अलै0 को बोलने में दुशवारी होती थी, इसलिये उन्होंने दुआ मांगी थी "رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي يَفْقَهُوا قَوْلِي" और इनके मुक़ाबले में हारून अलै0 फ़सीहुल लिसान थे, कुर्आन मजीद में उनके बारे में फ़रमायाः "هُوَ أَفْصَحُ مِنِّي لِسَانًا" तो फ़सीहुल लिसान हारून अलै0 थे, मगर अल्लाह तआला ने हमकलामी के लिये किस को पसंद फ़रमाया? "وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا" पसंद आना, यह तो पसंद करने वाले की मर्ज़ी हुआ करती है।

आप देखें पूरी दुनिया में कितने सरसब्ज़ पहाड़ हैं, हमने बअ़ज़ ऐसे पहाड़ देखे कि उस मंज़र को देख के इंसान का जी चाहता है कि बस खड़ा होकर उस मंज़र को देखता ही रहे, लेकिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हमकलामी के लिये तूर का इंतिख़ाब फ़रमाया, क़सम भी खाई कूहे तूर की, और कूहे तूर वह पहाड़ है जहां उमूमी तौर पे सब्ज़े का नाम व निशान नहीं है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने हबीब सल्ल0 के लिये पहला पैग़ाम जबले नूर पर भेजा, जहां सब्ज़े का नाम व निशान नहीं है। अपने हबीब सल्ल0 के लिये दोस्त जबले उहुद को पसंद किया, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "أُحُدٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ" यह उहुद पहाड़ हम से मुहब्बत करता है हम इससे मुहब्बत करते हैं,

और इस पर भी देखिये कि सब्ज़ा नहीं है, तो सब्ज़े वाले और खूबसूरत मनाज़िर वाले सारे पहाड़, एक तरफ़ और अल्लाह को पसंदीदा जगहें आईं कि जहां सब्ज़े का निशान नज़र नहीं आता।

कहते हैं कि मजनूं को लैला के साथ बहुत मुहब्बत थी, हालांकि वह रंग की काली थी और काला होने की निस्बत से मां बाप ने उसका नाम लैल से लैला रखा था, एक हाकिमे वक़्त ने सोचा कि मैंने लैला के बहुत तज़किरे सुने हैं, ज़रा देखूं तो सही यह कैसी हूर परी है, उसने लैला को बुलाया तो देखा कि वह आम औरतों की तरह एक औरत थी, उसने कहाः

अज़ दिगर खूबां तू अफ़ज़ूं नेस्ती

कि बाक़ी हसीनाओं से कोई बढ़ के तो हसीन नहीं है

गुफ़्त ख़ामश चूं तू मजनूं नेस्ती

तो लैला ने जवाब दिया कि तुम ख़ामोश रहो, इसलिये कि मजनूं की आंख तेरे पास नहीं है, अगर तू मजनूं की आंख से मुझे देखता तो दुनिया में मुझसे ज़्यादा खूबसूरत कोई नज़र नहीं आता।

मालूम हुआ कि जो चीज़ खूबसूरत हो और खूब सीरत भी हो उमूमी तौर पर वह पसंद आती है, लेकिन यह कोई हत्मी क़ाइदा नहीं है, कोई भी चीज़ पसंद आ सकती है, चुनांचे हम देखते हैं कि बअज़ मर्तबा अच्छी चीज़ भी पसंद नहीं आती, मिसाल के तौर पे आप दूकान पर फल लेने के लिये गए, आप कहते हैं मुझे अंगूर चाहिये, दूकानदार कहता हैः केले बहुत अच्छे हैं, वह अच्छे भी हैं, खूबसूरत भी हैं, Taste (ज़ाएक़ा) वाले भी हैं, आप एक नज़र डाल के कहते हैं मुझे नहीं चाहिये। आपने Reject (मुस्तरद) कर दिया, हालांकि वह क्वालिटी में बेहतरीन थे, क्योंकि आप को नहीं चाहिये। हमने देखा बहुत सी खूबसूरत औरतें होती हैं लेकिन तलाक़ हो जाती है,

क्योंकि ख़ाविंद को नहीं पसंद आती। तो क़बूलियत के बारे में यह याद रखें कि उमूमी तौर पर वह चीज़ पसंद आती है जो ख़ूबसूरत हो और ख़ूब सीरत भी हो, मगर यह क़ाएदए कुल्लिया नहीं है, यह क़बूल करने वाले की अपनी मंशा पे मुन्हसिर है, उसको कोई भी चीज़ पसंद आ जाए।

कभी इबादत का दरवाज़ा तो खुल जाता है मगर क़बूलियत का नहीं

इब्ने अता अस्कंदरी रह० एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, उनकी किताब "الحكم" के नाम से बहुत मअरूफ़ है, शायद इस उम्मत के लुक़्मान हकीम कहे जाने के यह क़ाबिल हों, और जामिया अज़हर को पूरी दुनिया में जो शोहरत मिली वह ऐसे असातिज़ा की वजह से मिली, बहुत साहिबे निस्बत बुज़ुर्ग थे, वह अपनी किताब में लिखते हैं: "رُبَّمَا فَتَحَ لَكَ بَابُ الطَّاعَةِ وَمَا فَتَحَ لَكَ بَابُ الْقَبُوْلِ" कि ऐसा भी होता है कि कभी अल्लाह तआला इताअत का दरवाज़ा तो खोल देते हैं मगर क़बूलियत का दरवाज़ा नहीं खोलते तो ज़ाहिर में तो बंदा अच्छे अमल कर रहा होता है, मगर वह अमल अल्लाह के यहां क़बूल नहीं होते।

इसकी मिसाल देखना चाहें तो आप शैतान की मिसाल देखिये, उसने हज़ारों साल सज्दे किये हत्ता कि यह ताऊसुल मलाइका कहा जाता था, मगर अंजाम क्या हुआ? रब्बे करीम ने फ़रमाया: "فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيْمٌ" दफ़ा हो जा यहां से तू मरदूद है, उसको इतनी इबादत के बाद क़बूलियत फिर भी न मिल पाई।

क़रीब के ज़माने में देखें तो बलअम बाऊर को देख लीजिये, 400 साल इबादत की हत्ता कि मुस्तजाबुद्दअ़वात बना, ज़रा सोचिये कि मुस्तजाबुद्दअ़वात बनना कोई आसान काम तो नहीं है, लेकिन ऐसी कोताही हुई कि बिलआख़िर रांदए दरगाह हुआ, इर्शाद फ़रमाया:

"وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَٰكِنَّهُ أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ، فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ الْكَلْبِ" इसकी मिसाल कुत्ते के मानिंद है, जब क़ुर्आन मजीद का यह लफ़्ज़ पढ़ते हैं तो कांप जाते हैं कि या अल्लाह चार सौ साल तो उसने सज्दे किये थे, इबादत गुज़ार तो था मगर आख़िर में अंजाम कितना बुरा हुआ, यह पढ़ के इंसान घबरा जाता है कि जो आमाल हम कर रहे हैं जब तक यह अल्लाह के यहां क़बूल न हो जाएं इनका कोई एतिबार नहीं। इसलिये फ़रमायाः "لا عِبْرَةَ بِالطَّاعَةِ إذا لَمْ يَصْحَبْهَا قَبول" सिर्फ़ इताअत का कोई एतिबार नहीं जब तक वह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां क़बूल न हो जाए।

क्या हर इबादत क़बूल हो जाती है?

फिर क्या हर इबादत क़बूल हो जाती है? फ़रमायाः "لَيْسَ كُلُّ طاعَةٍ سبيلا الىٰ مثوبة اللّٰهِ ورضوانِه" बंदे की हर इबादत क़बूल नहीं होती, हां यह तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की अपनी मर्ज़ी है कि वह क़बूल फ़रमा लें। अगर हक़ीक़त की बात करें तो फ़रमायाः "لَوْلَا جَمِيلُ سَتْرِهِ لَمْ يَكُنْ عَمَلُ أهلاً لِلْقَبول" अगर अल्लाह तआला की सत्तारी का मुआमला न होता तो बंदे का कोई अमल क़बूलियत के क़ाबिल हो ही नहीं सकता था।

इसको इमाम रब्बानी हज़रत मुजद्दिद अल्फ़सानी रह0 ने अपने मक्तूबात में बड़ी तफ़सील से लिखा है, वह फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला की शान इतनी बुलंद है कि बंदा जितना चाहे बना संवार के नमाज़ें पढ़े, जितनी भी अच्छी इबादत कर ले "وهو سبحانه وتعالىٰ وراء الورء ثمّ وراء الوراء ثمّ وراء الوراء" उस परवरदिगार की बुलंदी व किब्रियाई इतनी है कि यह सब इबादतें उसकी शान के पर्दों से नीचे रह जाती हैं, वह परवरदिगार उससे भी बुलंद, उससे भी बुलंद, उससे भी बुलंद। यही तो वजह थी कि अल्लाह के प्यारे हबीब

सल्ल0 ने कैसी इबादत भरी ज़िंदगी गुज़ारी, मगर अख़ीर में फ़रमा दिया कि "مَا عَبَدْنَاكَ حَقَّ عِبَادَتِكَ" ऐ अल्लाह! जो इबादत का हक़ था हक़ अदा नहीं कर सका।

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह0 के बारे में आता है कि इशा के वज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने का 40 साल तक मामूल था, फिर इसके बाद उम्रे के लिये तशरीफ़ ले गए, मक़ामे इब्राहीम पे दो रकअत में क़ुर्आन मजीद तिलावत किया और इसके बाद हाथ उठा के दुआ मांगे तो दुआ में यही कहा "مَا عَبَدْنَاكَ حَقَّ عِبَادَتِكَ" ऐ अल्लाह! जैसी तेरी इबादत का हक़ था वह हक़ अदा नहीं कर सके। जब यह अकाबिर भी मान रहे हैं कि हम हक़ अदा नहीं कर सके तो फिर हम किस खेत के गाजर मूली हैं, हमारे आमाल क्या औक़ात रखते हैं।

सवालात और उसके जवाबात

यहां तालिबे इल्म के ज़ह्न में एक सवाल पैदा होता है कि अगर हम ऐसी इबादत कर ही नहीं सकते जो अल्लाह की शान के मुताबिक़ हो तो फिर इबादत पर अज्र कैसे मिलेगा? तो सुनिये! इसकी तफ़सील भी हमारे अकाबिर ने बता दी है, इसकी तफ़सील यह है कि बाप अपने बच्चे को पहले दिन स्कूल में या मदरसे में दाख़िल करा के आता है, छटी के बाद वह बच्चा आता है, हाथ पे सियाही लगी होती है, कपड़े पे सियाही लगी होती है और आके कहता है अब्बू! आज मैंने लिखना सीखा है, तो वालिद कहता है बेटा! बताओ, वह तख़्ती दिखाता है, धब्बे लगे हुए हैं, टेढ़ी टेढ़ी लकीरें बनी हुई हैं, कुछ समझ में नहीं आता है, मगर वह अपने बच्चे को Encourage (हिम्मत अफ़ज़ाई) करने के लिये, उसका दिल रखने के लिये उस बच्चे को इन्आम निकाल के दे देता है, वह

इन्आम उस बच्चे को खुश ख़ती का नहीं मिल रहा है, बाप की मुहब्बत का इज़्हार है कि बच्चे ने टेढ़ी मेढ़ी लकीरें बना दीं, चूंकि बाप मेहरबान है इसलिये वह इन्आम दे देता है। हमारी इबादात का मुआमला ऐसा ही है, यक़ीनन वह अल्लाह तआला की शायाने शान नहीं हैं, मगर "إِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَؤُوفٌ رَّحِيمٌ" अल्लाह तआला बंदों पर रऊफ़ुर्रहीम है, वह उनकी टेढ़ी मेढ़ी इबादतों पर भी उनको अज्र अता फ़रमा देते हैं।

यहां पर तलबा के ज़ह्न में एक बात और आती है कि भाई अगर हमारे अमल ही इस क़ाबिल नहीं तो अमल पर अज्र कैसे मिलेगा जबकि कुर्आन मजीद में फ़रमायाः "تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ" आयत तो बता रही है कि जन्नत तो मिलेगी अमलों की वजह से, दूसरी जगह फ़रमाया "اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ" जन्नत तो अमलों के बदले यहां से महसूस होती है? इसकी तफ़सीर उलमाए किराम ने बहुत खूबसूरत बयान की है। वह फ़रमाते हैं कि देखें अमल की वजह से जन्नत नहीं मिलेगी, हदीसे मुबार है: "لَنْ يَدْخُلَ أَحَدَ الْجَنَّةَ بِعَمَلِهِ" तुम में से किसी बंदे को उसके अमल की वजह से जन्नत नहीं मिलेगी। और बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है, जाबिर रज़ि० इसके रावी हैं कि नबी सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया "لَا يُدْخِلُ أَحَدًا مِنْكُمْ عَمَلُهُ الْجَنَّةَ وَلَا يُجِيرُهُ مِنَ النَّارِ وَلَا أَنَا إِلَّا بِرَحْمَةٍ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى" और दूसरी हदीसे मुबारक बुख़ारी शरीफ़ की है "لَنْ يُنْجِيَ أَحَدًا مِنْكُم عَمَلُهُ" जब नबी सल्ल० ने यह फ़रमाया तो सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया "قَالُوا: وَلَا أَنْتَ يَا رَسُولَ اللّٰهِ؟ قَالَ: وَلَا أَنَا إِلَّا أَنْ يَتَعَمَّدَنِيَ اللّٰهُ بِغُفْرَانِهِ" हां मुझे भी जन्नत अमल की वजह से नहीं मिलेगी हां अल्लाह की मग़फ़िरत अगर मुझे ढांप ले तो मुझे भी नसीब हो जाएगी, तो यहां से महसूस

होता है कि अमल की वजह से जन्नत नहीं मिलेगी।

एक और हदीसे मुबारक है: "اِنَّ اللّٰهَ عَزَّوجلَ يَقُولُ لِلْجَنَّةِ" अल्लाह तआला जन्नत से फ़रमाएंगे "اَنْتِ رَحْمَتِى" तू मेरी रहमत है "اَرْحَمُ بِكِ مَنْ اَشَاءُ مِنْ عِبَادِى" मैं तेरे ज़रीआ अपने बंदों में से जिस पर चाहूंगा रहमत फ़रमाऊंगा।

जन्नत अल्लाह की रहमत से मिलेगी

फिर जन्नत मिलेगी कैसे? इसकी तफ़सील में इब्ने रजब हंबली रह० ने यह अजीब बात लिखी फ़रमाते हैं: "اِنَّ عَمَلَ الاِنْسَانِ لا يُنْجِيهِ مِنَ النَّارِ ولا يُدْخِلُهُ الْجَنَّةَ واِنَّ ذٰلِكَ كُلَّهُ اِنَّما يَحْصُلُ بِمَغْفِرَةِ اللّٰهِ ورَحْمَتِهٖ" इब्ने जौज़ी रह० ने इसकी एक आम फ़हम दलील दी है कि बंदे को कैसे जन्नत मिलेगी, वह फ़रमाते हैं "اِنَّ تَوْفِيقَ الْعَمَلِ مِنْ رَحْمَةِ اللّٰهِ السَّابِقَةُ مَا حصَلَ الاِيمانُ ولا الطَّاعَةُ الَّتِى يَحْصُلُ بِهَا النَّجاةُ" अगर अल्लाह की वह तौफ़ीक़ न होती न ईमान मिलता न अमल की तौफ़ीक़, तो मालूम हुआ कि अगर अमल की तौफ़ीक़ मिली तो रहमत उसी की हुई, लिहाज़ा जन्नत भी मिलेगी तो अल्लाह की रहमत से मिलेगी।

दूसरी दलील देते हैं "اِنَّ مَنَافِعَ الْعَبْدِ لِسَيِّدِهٖ فَعَمَلُه مُستحقٌّ لِمَوْلاهُ" अगर कोई गुलाम हो तो गुलाम जो भी अमल करता है उस अमल की उज्रत उसको नहीं मिलती वह तो गुलाम है, उसके जो मुनाफ़े होते हैं वह उसके मालिक के होते हैं तो मालूम हुआ कि हम अगर इबादत करते हैं तो फिर इबादत के मुनाफ़े मौला के लिये होंगे, अब अगर हमें वह कुछ दे देता है तो हमारा हक़ नहीं बनता, यह जो कुछ मिल रहा है यह हमें अल्लाह की रहमत से मिल रहा है। चुनांचे हाकिम ने एक हदीसे मुबारक रिवायत की जो इस बात को बिल्कुल साफ़ कर देती है, ज़रा सुनिये! जाबिर रज़ि० से यह मरफ़ूअ़ रिवायत

है कि जिब्रईल अलै0 ने नबी सल्ल0 को यह बात बताई कि "إِنَّ عَابِدًا عَبَدَ اللّٰهَ عَلٰى رَأْسِ الْجَبَلِ فِى الْبَحْرِ خمس مِائَةِ سَنَةٍ" एक इबादत गुज़ारने एक पहाड़ की चोटी पर दरिया के अंदर अल्लाह की पांच सौ साल इबादत की "ثُمَّ سَئَلَ رَبَّهُ أَنْ يَقْبِضَهُ ساجدًا" फिर उसने दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! मेरी रूह सज्दे की हालत में क़ब्ज़ हो, "قال جبرئيل" जिब्रईल अलै0 ने बताया कि सज्दे की हालत में उसकी मौत आई, "فنحنُ نَمُرُّ عليهِ إذ هَبطنَا وإذ عَرَجنا" कि जहां वह मदफ़ून था उसके क़रीब से ऊपर आसमान पर हम जाते और नीचे उतरते "ونجدُ فِى العِلْمِ" और यह बात हमारे इल्म में आई "أنَّهُ يُبعثُ يوم القِيٰمةِ فيُوقَفُ بين يَدَيِ اللّٰهِ عزّوجلَّ" कि यह बंदा क़्यामत के दिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामने खड़ा किया जाएगा "فيقولُ الربُّ" अल्लाह तआला उस बंदे के बारे में फ़रमाएंगे "أدخِلُوا عبدِى الجنّة" मेरे बंदे को जन्नत में दाख़िल करो "بِرَحْمَتِي" मेरी रहमत के सबब "فيقولُ العبدُ" वह बंदा कहेगा "يا رَبِّ! بِعَمَلِى" अल्लाह! मेरी इबादत की वजह से मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमाइये "يُفعَلُ ذٰلِكَ ثلٰثَ مَرَّات" यह तीन मर्तबा होगा कि अल्लाह तआला फ़रमाएंगे मेरी रहमत के सबब दाख़िल करो, वह कहेगा अल्लाफ मेरे अमलों के सबब "ثُمَّ يَقُولُ اللّٰهُ لِلْمَلٰئِكةِ" फिर अल्लाह तआला फ़रिशतों से फ़रमाएंगे "قَايِسُوا عَبدِى بِالنِّعَمِ عَلَيهِ وبِعَمَلِهِ" मेरे बंदे का हिसाब करो उसके अमल कितन हैं और उस पर मेरी नेअ़मतें कितनी हैं "فيجدُونَ نِعمَةَ البَصرِ قد أحاطَتْ بِعِبادةِ خمسِ مِائَةِ سنةٍ" जब हिसाब किया जाएगा तो बनीनाई की नेअ़मत उसकी पांच सौ साल की इबादत के बराबर हो जाएगी "وبَقِيَتْ نِعَمُ الجسدِ لَهُ" और बाक़ी जिस्म की नेअ़मतें इसके अलावा वह होंगी, "فيقولُ" अल्लाह तआला फ़रमाएंगे "أدخِلُوا عَبدِى النّارَ" मेरे बंदे

को जहन्नम में दाख़िल कर दो, उसने तो मेरी सारी नेअ़मतों का शुक्र भी अदा नहीं किया, "فَيُجَرُّ إِلَى النَّارِ" उस बंदे को फ़रिश्ते आग की तरफ़ घसीटेंगे "فَيُنَادِي" वह बंदा फिर पुकारेगाः "بِرَحْمَتِكَ أَدْخِلْنِي الْجَنَّةَ" अल्लाह! अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल कर दीजिये "فَيُدْخِلُهُ الْجَنَّةَ" फिर अल्लाह तआला अपनी रहमत से उसको जन्नत में दाख़िल करेंगे "قَالَ جِبْرَئِيلُ" जिब्राईल अलै0 ने बताया "يَا مُحَمَّدُ! إِنَّمَا الْأَشْيَاءُ بِرَحْمَةِ اللَّهِ" ऐ मुहम्मद यह सारा मुआमला अल्लाह की रहमत के बदौलत ही होगा।

चुनांचे क़ुर्आन मजीद की आयत है "وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا" अगर अल्लाह तआला बंदों का उनके अमलों पर मुआख़ज़ा फ़रमाते "مَا تَرَكَ عَلَى ظَهْرِهَا مِنْ دَابَّةٍ" ज़मीन के ऊपर कोई जानदार भी ज़िंदा न रहता लेकिन अल्लाह तआला नहीं मुआख़ज़ा फ़रमाते और अपनी रहमत से जन्नत दे देते हैं, तो मालूम हुआ कि यह अमलों का बदला नहीं, बल्कि यह अल्लाह तआला की रहमत का मुआमला है। इसी लिये फ़रमायाः "لَو أَنَّ اللَّهَ عَذَّبَ أَهلَ السمٰوَاتِ وأرضِه لَعَذَّبَهُمْ وهو غيرُ ظالمٍ لَهُم ولَو رَحِمَهُم كانتْ رحمتُهُ خيراً لهم" अगर अल्लाह तआला आसमान और ज़मीन के हर इंसान ज़ी रूह को जहन्नम के अंदर डाल दें तो यह अल्लाह का ज़ुल्म नहीं होगा, हां वह जन्नत अता फ़रमा दे तो यह अल्लाह की रहमत से है।

जन्नत में दरजात आमाल के हिसाब से मिलेंगे

चुनांचे उलमा ने फ़रमाया कि "دُخولُ الْجَنَّةِ بِفَضْلِهِ" जन्नत में जो दाख़िल होना होगा यह अल्लाह के फ़ज़्ल से होगा, "وَدَرَجَاتُهُ بِحَسَبِ الأَعْمَالِ" जो जन्नत के दर्जे होंगे वह अमलों के हिसाब से होंगे "وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِمَّا عَمِلُوا" लेकिन जन्नत में जो दाख़िला

होगा यह अल्लाह के फ़ज़्ल से ही होगा, अब जब मुआमला अल्लाह के फ़ज़्ल पर है तो कोई अपने अमल पर नाज़ कर सकता है? हरगिज़ नहीं कर सकता, इसलिये जो भी हम अमल करें नज़र अल्लाह की रहमत पर रखें कि ऐ अल्लाह! जो मैं कर सका मैंने तो किया मगर क़बूल तो आप को फ़रमाना है, इसलिये अमल करके भी इंसान रोए।

अल्लाह तआला की शान बेनियाज़ी और अकाबिर का ख़ौफ़

हमारे अकाबिर करते भी थे डरते भी थे कि मालूम नहीं अल्लाह के यहां क़बूल होगा या नहीं, सुफ़ियान सौरी रह0 एक मर्तबा बहुत ज़ार व क़तार रो रहे थे, उनके एक दोस्त आए और कहने लगे कि मालूम होता है कि कोई ग़लती हो गई, कोई गुनाह सरज़द हो गया, उनके सामने गंदुम का एक दाना पड़ा था उन्होंने गंदुम का वह दाना उठा कर दिखाया और अपने दोस्त से कहने लगे कि देखो मैंने अपनी ज़िंदगी में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की इरादे के साथ इतनी भी नाफ़रमानी नहीं की जितना गंदुम का दाना है, उसने कहा फिर रोते क्यों हैं? कहने लगे रोता इस बात पर हूं कि जो नेअ़मत अल्लाह ने मुझे अता की है पता नहीं वह मौत तक महफ़ूज़ भी रहेगी यह नहीं रहेगी इस बात पर रो रहा हूं तो हमारे अकाबिर डरते थे कि अल्लाह रबबुल इज़्ज़त बेनियाज़ हैं कहीं बेनियाज़ी वाला मुआमला न फ़रमा दें, इसलिये वह करते भी थे और डरते भी थे, और दुआएं मांगते थे कि ऐ अल्लाह! जो कुछ हुआ उसको क़बूल फ़रमा लीजिये।

आमाल की क़बूलियत की चंद अलामतें

अब क़बूलियत की अलामात क्या हैं? ज़रा तवज्जो फ़रमाइये "مِنْ عَلاماتِ قَبولِ الأعْمالِ" जो आमाल अल्लाह के यहां मक़्बूल होते हैं उनकी अलामात यह हैं।

पहली अलामत

सब से पहले "مُوافَقَةُ الْعَمَلِ لِمَا جَاءَ بِهِ الشَّرْعُ وصَحَّتْ بِهِ السُّنَّةُ" अमल की क़बूलियत के लिये पहली शर्त यह है कि वह शरीअत व सुन्नत के बिल्कुल मुताबिक़ हो, अगर शरीअत के मुताबिक़ नहीं तो क़बूलियत नहीं हो सकती। अब एक सूफ़ी साहब कहें कि बड़ी कैफ़ियत बनी हुई है, मैं फ़ज्र की चार रक्अत पढूंगा तो उसकी फ़ज्र की नमाज़ क़बूल नहीं होगी, इसलिये कि शरीअत ही के मुताबिक़ नहीं है, इसको कहते हैं: "مِيزانُ الأعْمالِ فِى ظاهِرِها" ज़ाहिर में अमल की क़बूलियत की कसौटी, वह कसौटी क्या है कि अमल शरीअत के मुताबिक़ होना चाहिये, अगर शरीअत से हट कर होगा तो "مَنْ أَحْدَثَ فِى أَمْرِنَا هٰذا مَا لَيس فيه فهورَدٌّ" वह अमल रद्द कर दिया जाएगा जो भी शरीअत से हट कर होगा। लिहाज़ा हम अगर चाहते हैं कि हमारे आमाल भी अल्लाह के यहां क़बूल हो जाएं तो हमें चाहिये कि अमल को बिल्कुल शरीअत के मुताबिक़ करें, हर छोटा बड़ा अमल नबी सल्ल0 की सुन्नत के मुताबिक़ हो।

पाकीज़ा ग़िज़ा की बरकात

इसके लियें इंसान को चाहिये कि उसका अमल भी साफ़ हो और उसका खाना पीना भी साफ़, खाने पीने में अगर थोड़ी सी भी मिलावट होगी तो अल्लाह के यहां वह अमल क़बूल नहीं होगा, इर्शाद फ़रमाया "يَـٰٓأَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوا صالِحًا" पाकीज़ा

खाना खाइये नेक अमल कीजिये, हमारे अकाबिर मुशतबा चीज़ से बहुत ज़्यादा बचते थे, बहुत एहतिमाम करते थे। चुनांचे इमाम मालिक रह0 के यहां इमाम शाफ़ई रह0 अपनी जवानी की उम्र में गए, उन्होंने खाना दिया तो उन्होंने ख़ूब निकाल के खाया, फिर इसके बाद सोने का वक़्त आ गया तो इमाम शाफ़ई रह0 बिस्तर पर लेट गए, इमाम मालिक रह0 की बेटियों ने मेहमान के लिये पानी भी रख दिया था कि रात में उठेंगे, वज़ू करेंगे, तहज्जुद पढ़ेंगे, अब जब सुब्ह का वक़्त हुआ तो इमाम मालिक रह0 ने उनको कहा कि फ़ज्र की नमाज़ लिये चलिये। इमाम शाफ़ई रह0 फ़ज्र की नमाज़ अदा करने चले गए, जब इमाम मालिक रह0 वापस आए तो इमाम मालिक रह0 की बेटियों ने कहा कि यह आप का मेहमान तो अजीब है, एक तो इसने बहुत ज़्यादा खाया, हालांकि जो अह्ले अल्लाह होते हैं वह थोड़ा खाते हैं, और दूसरी बात यह कि हमने तहज्जुद में वज़ू के लिये पानी भर के रखा था, इसने इस्तेमाल ही नहीं किया, महसूस होता है कि तहज्जुद भी नहीं पढ़ी, तो इमाम मालिक रह0 ने आकर इमाम शाफ़ई रह0 को यह बात बताई कि मेरी बेटियों के ज़ह्न में यह इशकाल वारिद हो रहा है, तो इमाम शाफ़ई रह0 ने जवाब दिया हज़रत! एक बात तो यह कि जब मैंने आप के दस्तरख़्वान पे खाया, तो इतना हलाल, तय्यब, पाकीज़ा खाना मुझे क़िस्मत से मिला, लिहाज़ा मैंने खूब जी भर के खा लिया कि यह हलाल और पाकीज़ा खाना मेरे जिस्म का हिस्सा बन जाए, फ़रमाया अच्छा तो फिर तहज्जुद का पानी इसी तरह पड़ा रहा? फ़रमाया हज़रत! आप को तो लगा कि मैं बिस्तर पे आकर लेट गया, मगर मेरी नींद तो ग़ाइब थी, मैं तो क़ुर्आन मजीद की आयत में ग़ौर करता रहा और एक आयत से मैंने आज की रात एक सौ पचास मसाइल का इस्तिन्बात कर

लिया और मेरा चूंकि वजू नहीं टूटा था तो मैंने उसी वजू के साथ फ़ज्र की नमाज़ पढ़ ली। मालूम हुआ कि यह पाकीज़ा खाना इंसान के दिल को मुनव्वर कर देता है कि इस पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से उलूम व मआरिफ़ की बारिश हुआ करती है।

हज़रत अक्दस थानवी रह० ने एक वाक़िआ लिखा है कि अकाबिर उलमाए देवबंद के यहां एक बुज़ुर्ग थे, मुन्ने शाह के नाम से मअरूफ़ थे, वह घास काटते थे, मगर थोड़ा थोड़ा पैसा वह बचाते रहते थे और इतना पैसा पूरे साल में जाकर वह बचा लेते थे कि जितने उलमा व असातिज़ा थे उनकी एक दिन वह दावत किया करते थे, तो हज़रत फ़रमाते हैं कि इन असातिज़ा को उनकी दावत का इंतेज़ार रहता था, वजह क्या थी कि जिस दिन उनके यहां खाना खाकर आते थे चालीस दिन तक जो नमाज़ होती थी उनकी हज़ूरी बढ़ जाया करती थी, ऐसा खाना उनके यहां मिलता था।

मुशतबा खाने की नहूसत

हमने अपनी ज़िंदगी में हलाल, तय्यब और पाकीज़ा चीज़ खाने का वाक़ई कई मर्तबा तर्जबा किया, एक वाक़िआ तलबा की ख़िदमत में अर्ज़ कर दें, बैरून मुल्क में हमारा एक मदरसा है, यह आजिज़ एक दिन उन तलबा की तालीमी Progress (सरगर्मी) जाइज़ा ले रहा था, एक तालिबे इल्म के बारे में देखा कि उस तालिबे इल्म ने पूरे साल में एक सफ़्हा भी कुर्आन मजीद का मुकम्मल न पढ़ा, मुझे बड़ी हैरत हुई, मैंने उस्ताज़ को बुला के पूछा कि भाई पूरे साल में एक सफ़्हा भी न पढ़ा, क्या मस्ला है? उस्ताज़ ने कहा कि जनाब! मैंने इस शागिर्द पर बड़ी मेहनत की, वैसे यह बच्चा है भी समझदार, मेहनती भी है, पढ़ता भी है, मैंने पढ़ाने में कमी नहीं की, मगर क्या करूं कि पढ़ाता हूं तो पीछे से भूल जाता है, आगे दौड़ और पीछे

छोड़, इसका यही सिलसिला है, ज़रा आगे पढ़ता हूं और पीछे का सुनता हूं तो कुछ भी याद नहीं रहता तो बार बार इसको पीछे से शुरू कराने की वजह से उसका सफ़्हा भी ख़त्म नहीं हुआ। हमें बड़ी हैरत हुई, हमने तालिबे इल्म को बुला लिया, उससे पूछा कि यह तेरा क्या मस्ला है? तालिबे इल्म ने कहा कि जनाब मैं स्कूल के अंदर हमेशा First (अव्वल) आता हूं और मैं साइंस में इतना क़ाबिल हूं कि मेरा नाम सदारती इन्आम वाले बच्चों में शामिल किया गया है, समझ में मुझे भी नहीं आता कि मैं यहां आके अरबी पढ़ता हूं तो मेरा ज़ह्न ही नहीं चलता, आगे से पढ़ता हूं तो पीछे से भूल जाता हूं, मेहनत भी करता हूं, जब क्लास के बच्चों ने भी बताया कि वह वाक़ई यह बच्चा बहुत मेहनत करता है, वक़्त ज़ाए नहीं करता तो हमारी फ़िक्र और बढ़ गई कि या अल्लाह यह मस्ला क्या है, कई दिन अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जो रहे, दुआ मांगते रहे कि अल्लाह असल हक़ीक़त क्या है वह खोल दीजिये, एक दिन ख़्याल आया कि बच्चे को बुला के पूछें तो सही, हमने बच्चे को बुलाया और उससे पूछा कि बच्चे! यह बताओ कि तुम्हें खाने में क्या क्या पसंद है, बच्चे ने बड़ी खुल के बात बताई कि मेरे अब्बू डाक्टर हैं, शाम को आते हैं तो अम्मी और अब्बू दोनों बाहर सैर के लिये जाते हैं और मुझे भी साथ लेके जाते हैं तो शाम का खाना हम बाहर ही रेस्टोरेंट पे खाते हैं, उसने तीन चार नाम लिये MC-donalds का खाना, फ़लां खाना, फ़लां खाना, जो ग़ैर मुस्लिमों के रेस्टोरेंट में होते हैं उसने उनका नाम लिया, हमें बात समझ में आ गई, हमने एक दिन उसके वालिदैन को बुला लिया, हमने उनसे कहा कि देखें आप डाक्टर हैं, आप का माल हलाल का माल है, मेहनत करते हैं, लेकिन अपने बच्चे को बाहर जा के जो खाना खिलाते हैं वह तो ग़ैर मुस्लिम लोगों

के हाथ की बनी हुई चीज़ें होती हैं, पता नहीं उन्होंने क्या डाला क्या नहीं डाला, अगर आप बच्चे को कुर्आन पढ़ाना चाहते हैं तो हमारे साथ वादा करें कि आज के बाद यह बच्चा बाहर के होटलों की बनी हुई चीज़ नहीं खाएगा, फ़क्त घर का खाना इसको खिलाएं, आपकी बीवी मुसलमान है, नमाज़ी है, वह घर में खाना खिलाए, अगर आप ऐसा नहीं कर सकते तो अपने बच्चे को साथ ले जाएं, हम उसे नहीं पढ़ा सकते, न आप के बच्चे का वक़्त ज़ाए हो, न हमारे उस्ताज़ का, जब इतनी सख़्ती की तो वह घबरा गए, कहने लगे हज़रत! हम वादा करते हैं कि अब इसको बाहर का खाना नहीं खिलाएंगे, आप बच्चे को अपने मदरसे में रखिये, पढ़ाइये, हमने उस बच्चे को रखा, अगले एक साल में उस बच्चे ने अलहम्दु से लेकर वन्नास तक पूरा कुर्आन पाक पढ़ लिया, जिस बचचे ने एक साल में एक सफ़्हा नहीं पढ़ा था, आने वाले साल में फ़क्त उसने घर का हलाल खाया, बाहर के खाने छोड़े, सोचिये! एक साल में पूरा कुर्आन मजीद उसने मुकम्मल पढ़ लिया, यह बाहर के खानों की इतनी ज़ुल्मत होती है और आज देखते हैं कि तलबा को बाज़ार की पकी हुई चीज़ों के खाने का बड़ा शौक़ होता है, हलाल माल के साथ ऐसी चीज़ें खा लेते हैं, जो दिल को सियाह कर देती हैं, इसलिये ज़रूरत है कि माल भी हलाल हो और पकी हुई चीज़ भी हलाल तरीक़े की हो, इन दोनों बातों का ख़्याल रखें, जब दोनों बातों का ख़्याल रखेंगे तो दिल मुनव्वर होगा और अमल अल्लाह तआला के यहां क़बूल होगा।

दूसरी अलामत

एक दूसरी अलामत भी है, वह "اِبْتِغَاءِ وَجْهِ اللّٰهِ بِالْعَمَلِ" कि अमल अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के लिये करे, इंसान भले अमल सुन्नत के मुताबिक़ करे, अच्छे तरीक़े से करे, मगर नियत खोटी हो तो फिर

भी अमल क़बूल न होगा, इसको कहते हैं "مِيزَانُ الْأَعْمَالِ فِي بَاطِنِهَا" एक तो था ज़ाहिर की कसौटी कि अमल सुन्नत के मुताबिक़ हो, यह बातिन की कसौटी है कि अमल भी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के लिये हो। चुनांचे तबरानी शरीफ़ की रिवायत है "إِنَّ اللَّهَ يَقْبَلُ مِنَ الْعَمَلِ إِلَّا مَا كَانَ خَالِصًا وَابْتُغِيَ بِهِ وَجْهُهُ" अल्लाह तआला सिर्फ़ उसी अमल को क़बूल करते हैं जिस अमल का मक़्सद ख़ालिस अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रज़ा हो।

तीसरी अलामत

क़बूल होने की तीसरी अलामत "مَنْ وَجَدَ ثَمَرَةَ عَمَلِهِ عَاجِلًا فَهُوَ دَلِيلٌ عَلَى وجودِ الْقَبولِ آجلا" कि जिस अमल में इंसान बाद में कैफ़ियत महसूस करता है यह क़बूलियत की अलामत हुआ करती है। "إِيقَاظُ الْهِمَم" इब्ने उजैबा की एक किताब है, उसमें लिखा हुआ है कि "مِنْ عَلَائِمِ قَبولِ اللَّهِ لِلصَّلوٰةِ" कि नमाज़ की क़बूलियत की अलामत यह है "أَنْ يَشْعُرَ الْمُصَلِّي فِيها بِلَذِّ الإقبالِ عَلَى اللَّهِ" कि नमाज़ पढ़ते हुए बंदे की कैफ़ियत ऐसी बने जैसे कि बिलकुल अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर है, अगर यह कैफ़ियत बन गई तो यह दलील है कि यह नमाज़ अल्लाह के यहां क़बूल होगी, "وَمِنْ عَلَائِمِ قَبولِ اللَّهِ لِمَنَاسِكِ الْحَجِّ" हज पर इंसान गया तो हज क़बूल हुआ कि नहीं, फ़रमाते हैं "أَنْ تَقْطَعَهُ عَنْ مَشَاغِلِ الدُّنْيا وَهُمُومِها" कि अगर वहां जाकर इंसान दुनिया के तमाम ख़्यालात व तफ़क्कुरात से बिल्कुल हट कट के अल्लाह की मुहब्बत में डूब जाता है और इन आमाल को करता है तो यह इस बात की दलील है कि उसका हज अल्लाह के यहां क़बूल है। फिर फ़रमाया "وَمِنْ عَلَائِمِ قَبولِ اللَّهِ لِتِلَاوَةِ الْقُرْآنِ" तिलावते कुर्आन के क़बूलियत की अलामत यह है

"أَنْ يَشْعُرَ أَنَّهُ وَاصِلٌ بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ" कि तिलावत करने वाले की कैफ़ियत ऐसी हो जैसे अल्लाह के सामने है, अल्लाह से हमकलामी कर रहा हो। इन अलामात से पता चलता है कि इंसान का यह अमल अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां क़बूल होगा।

चौथी अलामत

एक चौथी अलामत "اَلْمُدَاوَمَةُ عَلَى الْعَمَلِ" कि जो अमल अल्लाह के यहां क़बूल होता है इंसान को उसके ऊपर मदावमत नसीब होती है। हमारे बुज़ुर्गों ने आसान लफ़्ज़ों में कहा कि ऐ दोस्त! तेरा एक नमाज़ पढ़ने के बाद दूसरी नमाज़ के लिये मस्जिद में आ जाना तेरी पहली नमाज़ के क़बूल होने की दलील है, अगर क़बूल न होती तो उसको पास नहीं आने देते, दूर ही रखते हैं, इसी तरह अगर अल्लाह तआला को किसी की नमाज़ क़बूल नहीं करना होता तो मस्जिद के अंदर दाख़िल नहीं होने देते। यह वही वाली बात है कि मालिम ने गुलाम से कहा कि जल्दी से नमाज़ पढ़ के आओ, और गुलाम को नमाज़ पढ़ने में देर लग गई, तो मालिक ने कहा कि अरे! कौन तुझे बाहर नहीं आने देता? तो गुलाम ने जवाब दिया जनाब! जो आप को अंदर नहीं आने देता वह मुझे बाहर नहीं जाने देता। तो अगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को क़बूल न करनी हो तो क़रीब न आने देता, एक नमाज़ पढ़ने के बाद दूसरी नमाज़ के लिये आने की जब तौफ़ीक़ दे दी तो यह पहली नमाज़ के क़बूल होने की पक्की अलामत है।

अंबिया किराम अलै० और क़बूलियत की दुआ का एहतिमाम

ताहम यह क़बूलियत ऐसी बात है कि अंबिया किराम भी डरा करते थे और वह भी दुआएं मांगते थे कि अल्लाह हमारे अमलों को क़बूल कर लीजिये, ज़रा ग़ौर कीजिये! इब्राहीम अलै० ने बैतुल्लाह को

"وإذ يرفع إبراهيم القواعد من البيت وإسمعيل، ربنا تقبل منا" बनाया फिर क्या कहा देखिये इब्राहीम अलै0 क़बूलियत की दुआ मांग रहे हैं, फिर फ़रमाते हैं "رب اجعلني مقيم الصلوة ومن ذريتي ربنا وتقبل دعاء، ربنا اغفرلي ولوالدي وللمؤمنين يوم يقوم الحساب" तो देखिये यहां भी क़बूलियत के लिये दुआ मांग रहे हैं।

इसी तरह अल्लाह ने इमरान अलै0 की बीवी को उम्मीद लगाई तो अभी बच्चा हुआ नहीं मगर वह पहले ही से दुआ मांग रही हैं "إذ قالت امرأة عمران رب إني نذرت لك ما في بطني محررا فتقبل مني" और फिर अल्लाह तआला ने जवाब दिया "فتقبلها ربها بقبول حسن وأنبتها نباتا حسنا" तो मालूम हुआ कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम को भी इस बात की फ़िक्र रहती थी कि हम जो आमाल कर रहे हैं अल्लाह इसको क़बूल फ़रमा ले, उम्मत को समझाने के लिये उन्होंने दुआएं मांगें।

चुनांचे नबी सल्ल0 की क़बूलियत के बारे में कई दुआएं हैं, सबसे पहले तो आप सल्ल0 जानवर ज़ब्ह करते हुए फ़रमाते थे "بسم الله، اللهم تقبل من محمد ومن أمة محمد ﷺ" यहां क़बूलियत की दुआ मांगी। इब्ने अब्बास रज़ि0 की रिवायत है कि नबी सल्ल0 ने दुआ मांगी "رب أعني وتقبل توبتي وأجب دعوتي"- इब्ने अब्बास रज़ि0 की एक और रिवायत है कि नबी सल्ल0 ने दुआ मांगी "اللهم لك صمت وعلى رزقك أفطرت فتقبل مني" उम्मे सलमा रज़ि0 रिवायत फ़रमाती हैं कि नबी सल्ल0 ने दुआ मांगी "اللهم تقبل حسناتي" अल्लाह! मेरे नेक अमलों को क़बूल फ़रमा लीजिये। उम्मे सलमा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि नबी सल्ल0 ने दुआ मांगी "اللهم إني أسئلك علما نافعا ورزقا طيبا وعملا متقبلا" तो देखिये आमाल की क़बूलियत की दुआ मांग रहे हैं, गोया उम्मत

को यह तालीम दी कि अमल करके नाज़ में न पड़ जाना, अपने आप को कुछ समझने न लग जाना, बल्कि अल्लाह तआला की शाने बेनियाज़ी से डरते रहना, पता तो तब चलेगा जब अल्लाह तआला के यहां अमल पेश होगा।

कौन मक़्बूल है कौन मरदूद है	बेख़बर क्या ख़बर तुझको क्या कौन है
जब तुलेंगे अमल सबके मीज़ान पर	तब खुलेगा कि खोटा खरा कौन है

यह खोटा खरा तो क़्यामत के दिन जाकर पता चलेगा जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त किसी बंदे के अमलों को क़बूल फ़रमा लेंगे।

आमाल की क़बूलियत के चंद अस्बाब

ताहम कुछ अस्बाब हैं जिनको इख़्तियार किया जाए तो आमाल क़बूल हो जाते हैं।

पहला सबबः दुआ

इनमें से पहला अमल "दुआ" कि अमल करें फिर क़बूलियत की दुआ मांगें कि ऐ अल्लाह! मुझ से यह अमल क़बूल फ़रमा लीजिये, जैसे इमरान अलै० की बीवी ने दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! जो बच्चा मेरे बतन में है उसे क़बूल फ़रमा लीजिये तो अल्लाह ने क़बूल कर लिया।

दूसरा सबबः तक़्वा

दूसरी चीज़ है "तक़्वा" कि जो इंसान तक़्वा भरी ज़िंदगी गुज़ारेगा अल्लाह तआला उसके अमलों को क़बूल फ़रमाएंगे, इसलिये इर्शाद फ़रमाया "إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ" कि अल्लाह तआला मुत्तक़ियों ही के आमाल क़बूल करते हैं।

तीसरा सबबः इख़्लास

तीसरा सबब "इख़्लास" कि इंसान के अंदर इख़्लास हो,

दिखावा न हो, फ़क़ीह अबू अललैस समरक़ंदी से किसी ने पूछा कि हज़रत! इख़्लास के बारे में यह अल्फ़ाज़ तो हम बहुत पढ़ते रहते हैं, हमें मिसाल देकर समझाएं कि इख़्लास होता क्या है? उन्होंने फ़रमाया कि अच्छा यह बताओ तुमने कभी चरवाहे को देखा हैं जो बकरियों के दर्मियान बैठ के नमाज़ अदा करे? उसने कहा हज़रत! देखा है, फ़रमाया बकरियों के दर्मियान बैठ के जब नमाज़ पढ़ता है तो नमाज़ पढ़ने के बाद उसके दिल में ख़्याल आता है कि बकरियां मेरी तारीफ़ करेंगी? उसने कहा उसके दिल में तो ख़्याल भी नहीं आता, फिर फ़रमायाः जो मुख़्लिस इंसान होता है वह इंसानों के दर्मियान बैठ कर अल्लाह की इबादत करता है, मगर किसी बंदे से उसको तारीफ़ की कोई तवक़्क़ो नहीं हुआ करती, तमअ़ ही नहीं होती कि कोई मेरी तारीफ़ करे, तो ऐसे इख़्लास के साथ अगर हम अमल करें तो यक़ीनन वह अमल अल्लाह तआला के यहां क़बूल होगा।

बुख़ारी शरीफ़ की क़बूलियत

देखिये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने बुख़ारी शरीफ़ को क़बूलियत अता फ़रमाई, क्योंकि इमाम बुख़ारी रह0 ने इस किताब को बड़े इख़्लास के साथ लिखा, आप जानते हैं कि हर हदीसे मुबारक को लिखने से पहले गुस्ल करते थे, दो रक्अत नमाज़ अदा करते थे, फिर हदीसे मुबारक लिखा करते थे, तो मालूम हुआ कि दो दो रक्अत पढ़कर दुआ मांगते कि अल्लाह! क़बूल कर लीजिये, अल्लाह! क़बूल कर लीजिये। और आज इसकी क़बूलियत देखिये कि जब तक कोई इस किताब को न पढ़े वह आलिम कहलाने का हक़दार नहीं हो सकता, यह अल्लाह के यहां क़बूलियत है।

मुअत्ता इमाम मालिक रह0 की क़बूलियत

इमाम मालिक रह0 ने मुअत्ता लिखी, उसी ज़माने में एक बुज़ुर्ग

थे इब्ने अबी ज़ुऐब रह0, उन्होंने भी मुअत्ता के नाम से किताब लिखी और वह इससे ज़ख़ीम भी थी, तो लोगों ने इमाम मालिक रह0 से फ़रमाया "مَاالْفَائِدَةُ فِی تَصْنِیْفِهٖ" कि उन्होंने इसी नाम से इतनी मोटी किताब लिख दी तो आपकी यह पतली सी मुअत्ता लिखने का क्या फ़ाइदा? तो इमाम साहब ने जवाब में फ़रमाया "مَا كَانَ لِلّٰهِ يَبْقٰى" कि दोनों में से जो अल्लाह के लिये होगी बाक़ी रहेगी, आज इब्ने अबी ज़ुऐब की मुअत्ता को वह मक़ाम हासिल नहीं हुआ, और इमाम मालिक रह0 की मुअत्ता आज हर दौरए हदीस में पढ़ाई जाती है। मालूम हुआ कि यह इख़्लास के ऊपर मुंहसिर है।

फ़िक़ह हन्फ़ी की क़बूलियत

जैसे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह0 को क़बूलियत अता फ़रमाई, फ़िक़ह हन्फ़ी को अल्लाह ने ऐसी क़बूलियत दी कि इंसान हैरान होता है, लोग समझते हैं कि फ़िक़ह हन्फ़ी इसलिये दुनिया में फैली कि क़ाज़ी अबू यूसुफ़ रह0 Chief justice (क़ाज़ियुल क़ज़ा) बन गए थे, उनके ज़रीआ से यह फ़िक़ह फैली, हालांकि ऐसी बात नहीं है। हारून रशीद ने अपने ज़माने में उलमा को दीवारे चीन देखने के लिये या उसके हालात मालूम करने को भेजा, उन्होंने आकर कहा कि हम जहां गए फ़िक़ह हन्फ़ी का इल्म हमसे पहले वहां पहुंचा हुआ था और आज देखिये पूरी दुनिया के अंदर फ़िक़ह हन्फ़ी के ऊपर अमल सबसे ज़्यादा हो रहा है, पाकिस्तान, हिंदुस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, इसके बाद जितनी Russia (रूस) की रियासतें हैं सब के अंदर फ़िक़ह हन्फ़ी पर अमल हो रहा है, फिर अगर इससे आगे चले जाएं तुर्की के अंदर देखें, शाम के अंदर देखें तो आपको अल्लाह की बहुत मख़्लूक़ नज़र आएगी जो इस फ़िक़ह के ऊपर अमल करके आज ज़िंदगी गुज़ार रही है।

इबादात में फ़िक़ह ग़ैर हन्फ़ी पर अमल और मुक़द्दमात में फ़िक़ह हन्फ़ी पर अमल

बल्कि इसमें एक मज़े की बात सुनिये! एक मर्तबा हवाई जहाज़ में मेरे क़रीब की सीट पे सूडान के एक जस्टिस बैठ गए थे, वह आलिम भी थे और अपने इलाक़े के जस्टिस भी थे, उनसे बातचीत होती रही तो बातचीत में मैंने उनसे पूछा कि आप के यहां किस फ़िक़ह के ऊपर अमल होता है? वह कहने लगे कि हमारे यहां इबादात इमाम मालिक रह0 के क़ौल पर होती हैं, लेकिन अदालतों के जितने मुक़द्दमे हैं वह सब के सब फ़िक़ह हन्फ़ी के मुताबिक़ फ़ैसले होते हैं, मैंने पूछा ऐसा क्यों? कहने लगे इससे ज़्यादा अच्छी फ़िक़ह की तदवीन और कहीं है ही नहीं, मेरे ज़ह्न में बात आई कि मुम्किन है यह उनके अपने Comments (तब्सिरे) हों मगर एक दूसरा वाक़िआ पेश आया कि एक मर्तबा मिस्र जाना हुआ तो वहां अलअज़हर में जो मुफ़्तिये आज़म थे, उनसे हमारे एक दोस्त ने सवाल पूछा कि हज़रत यहां तो सब शाफ़ई तरीक़े से इबादत करते हैं? तो मुफ़्तिये आज़म ने कहा कि मुझे हक़ बात कहने में कोई झिझक नहीं, हमारे यहां अगर्चे इबादात इमाम शाफ़ई रह0 के तरीक़े पर करते हैं, लेकिन हमारी अदालतों के सब मुक़द्दमात अब भी फ़िक़ह हन्फ़ी के मुताबिक़ फ़ैसले होते हैं, तो मालूम हुआ कि जहां इबादात किसी और इमाम के क़ौल पर हो रही हैं, वहां भी अदालतों के सारे फ़ैसले फ़िक़ह हन्फ़ी के मुताबिक़ होते हैं, यह क्या चीज़ है? यह अल्लाह के यहां मक़्बूलियत है जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने फ़िक़ह हन्फ़ी को अता फ़रमाई।

अगर इसकी कोई और मिसाल देखनी है कि अल्लाह के यहां क़बूलियत जब होती है तो अल्लाह तआला उस अमल को जारी व

सारी फ़रमा देते हैं, ज़रा ग़ौर कीजिये कि इब्राहीम अलै0 ने बच्चे को अल्लाह के नाम पर कुर्बान किया, अल्लाह के यहां वह अमल क़बूल हुआ, चुनांचे अल्लाह फ़रमाते हैं "وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ" हमने आने वालों में भी इस अमल को जारी फ़रमा दिया, आज भी सय्यदुना इब्राहीम अलै0 के इस अमल को साल में एक दिन ताज़ा किया जाता है, ज़िंदा किया जाता है, इस सुन्नत पर अमल किया जाता है। बीबी हाजरा सफ़ा और मरवा के दर्मियान भागीं, अल्लाह तआला को वह अमल पसंद आ गया, अल्लाह तआला ने इस सई को हज का एक हिस्सा बना दिया, आज कोई भी शैख़, मुफ़्ती, आलिम जाए उसका हज मुकम्मल नहीं हो सकता जब तक वह सफ़ा और मरवा के दर्मियान दौड़ेंगे नहीं, तो मालूम हुआ कि अमल की कबूलियत यह भी होती है कि अल्लाह अमल को आईंदा जारी फ़रमा देते हैं, अमल का फ़ैज़ जारी फ़रमा देते हैं।

दारुल उलूम देवबंद की क़बूलियत

एक ताज़ा मिसाल हमारे सामने इस दारुल उलूम देवबंद की है कि हज़रत मौलाना क़ासिम नानूतवी रह0 ने इतने इख़्लास के साथ उसकी बुन्याद रखी कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस इदारा के फ़ैज़ को पूरी दुनिया के अंदर पहुंचा दिया, इस आजिज़ को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपनी रहमत से शायद 50 से ज़्यादा मुल्कों में दीन की की निस्बत पर सफ़र करने की तौफ़ीक़ बख़्शी, मुझे अपनी ज़िंदगी में कोई जगह ऐसी नहीं मिली जहां यह आजिज़ पहुंचा हो और वहां पहले ही से उलमाए देवबंद का कोई न कोई रूहानी फ़रज़ंद काम करता नज़र न आया हो, अल्लाह के यहां क्या क़बूलियत है

कुहसार यहां दब जाते हैं तो तूफ़ान यहां रुक जाते हैं
इस काख़ फ़क़ीरी के आगे शाहों के महल झुक जाते हैं

यह इल्म व हुनर का गहवारा तारीख़ का वह शहपारा है
वह फूल यहां एक शोला है हर सरू यहां मीनारा है

अल्लाह ने कहां कहां इसका फ़ैज़ पहुंचाया, हम इसका अंदाज़ा नहीं लगा सकते, बल्कि जितनी मक्बूल हस्तियां यहां से उठीं हैं दुनिया में कोई दूसरी जगह नहीं नज़र आती, हां मदीना तो मर्कज़ था और इब्तिदा थी, फिर इसके बाद अगर आप उन मक़ामात का शुमार करें जहां से मक्बूल हस्तियां उठी हों, तो इस फ़ेहरिस्त में आप को यह देवबंद और उसमें क़ाइम यह दारुल उलूम ज़रूर ही शामिल करना पड़ेगा। इस इदारा को अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने वह क़बूलियत अता फ़रमाई।

उलमाए देवबंद की जबलालते शान

हमारे अकाबिर की इल्मी हैसियत क्या थी,? उम्मीद है कि तलबा ज़रा तवज्जो के साथ सुनेंगे कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने उनको सफ़ाइये बातिन और और तामीरे ज़ाहिर की वजह से क्या इल्मी मक़ाम अता फ़रमाया था।

अकाबिर उलमा के नज़दीक हज़रत गंगोही रह0 और अल्लामा अन्वर शाह कशमीरी रह0 और हज़रत नानूतवी रह0 का इल्मी मक़ाम

अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रह0 की इलमियत के अरब के उलमा भी क़ाइल, अजम के उलमा भी क़ाइल, उन्होंने जो हदीसे पाक के ऊपर लिखा उसकी वजह से अरब के उलमा भी उनकी इलमियत के क़ाइल हैं, उनका लोहा मानते हैं चुनांचे उन्होंने "فتح الملهم" शर्ह मुस्लिम के अंदर अपने शैख़ अल्लामा अनवर शाह कशमीरी रह0 के बारे में लिखा, ज़रा सुनियेगा, लिखने वाले हैं अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रह0, जिनको अरब व अजम के

उलमा मानते हैं कि वाकई ठोस इल्म वाली शख़्सियत थी, वह अपने शैख़ के बारे में فتح الملهم में फ़रमाते हैं "سَأَلْتُ الْعلامةَ النَّقِيَّ التَّقِيَّ الذِىْ لَمْ تَرَ الْعُيونُ مِثْلَهٗ وَلَمْ يَرَهُوَ مِثْلَهٗ" कि मैंने पूछा अपने उस्ताज़ से जो मुत्तक़ी थे, पाक थे, जिनकी मिस्ल न मेरी आंखों ने देखा, न उन्होंने अपना कोई मिस्ल देखा "ولَو كَانَ فِىْ سَالِفِ زَمانٍ لَكانَ لهٗ شأنٌ فِى طبَقةِ اَهلِ الْعِلْمِ عَظِيمٌ وهو سيّدُنا ومولانا الأنوَر الكشميرى" कितने अज़ीम अल्फ़ाज़ उन्होंने कहे, इससे अल्लामा अनवर शाह कशमीरी रह० की इलमियत और जलालते शान का पता चलता है, अब यह अल्लामा अनवर शाह कशमीरी रह० लिखते हैं, फ़रमाते हैं कि "ابن نُجَيم المصرى" जो साहिबे बहरुल राइक़ हैं "أَفْقَهُ عِنْدِى مِنَ الشَّامِى" अल्लामा अनवर शाह कशमी रह० फ़रमाते हैं कि ابن نُجَيم मेरी नज़र में अल्लामा शामी रह० से ज़्यादा बड़े फ़क़ीह थे "لِأَنَّ أماراتِ الْفقهِ تلوحُ مِنْهُ" इसलिये कि उनकी इबादरात से फ़िक़ह की शान और उसका नूर चमकता नज़र आता है, "وكذلك الشاه عبد العزيز المحدث الدهوى" और ऐसे ही शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी वह भी मेरे नज़दीक अल्लामा शामी से ज़्यादा फ़क़ीह थे, 'وكذلك شيخُ مشائخنا رشيد أحمد الغنغوهى افقه عندى من الشامى" और इसी तरह मेरे नज़दीक रशीद अहमद गंगोही रह० अल्लामा शामी रह० से ज़्यादा फ़क़ीह थे यह Comments (तब्सिरे) कोई आम बंदा नहीं दे रहा है, यह Comments अल्लामा अनवर शाह कशमीरी रह० दे रहे हैं और अल्लामा कशमीरी रह० के मुतअल्लिक़ अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी ऐसी बात कर रहे हैं, तो साचिये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने क्या उनको इल्मी शान अता फ़रमाई होगी।

इसीलिये हज़रत हाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० ने

ज़ियाउल कुलूब में लिखा कि जो लो मुझसे तअल्लुक़ रखते हैं, वह मौलवी क़ासिम और मौलवी रशीद अहमद को मेरी जगह बल्कि मुझ से आला समझें और उनके वजूद को ग़नीमत समझें, अब ऐसे लोग पैदा नहीं होते, اللہ اکبر کبیرا۔ हाजी साहब रह0 का एक और क़ौल है, फ़रमाते हैं कि जिस तरह शम्से तबरेज़ की ज़बान मौलाना रूम बने, ऐसे ही मौलवी क़ासिम की ज़बान व क़लम से अदा करवा देते हैं।

अब अगली बात सुनिये! हज़रत नानूतवी रह0 शाहजहां पूर मुबाहिसा के लिये गए, जहां मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के लोग आए हुए थे और हर एक को अपने मज़हब की सदाक़त को साबित करना था, तो हज़रत नानूतवी रह0 ने अलहम्दु लिल्लाह दीने इस्लाम की सदाक़त को ऐसा वाज़ेह किया कि सब लोगों ने माना कि वाक़ई उनकी बात सबसे आला है, जब उन्होंने मज़ाहिबे बातिला का बुतलान साबित कर दिया और हज़रत गंगोही रह0 को इस कामियाबी का इल्म हुआ तो हज़रत गंगोही रह0 की आंखों में आंसू आ पड़े, पूछा हज़रत! कामियाबी की बात सुन के रो क्यों पड़े? तो हज़रत गंगोही रह0 ने फ़रमाया, मुझे लगता है कि मेरा दोस्त अब मुझसे जुदा हो जाएगा और फिर फ़रमायाः उसे जिस काम के लिये अल्लाह ने पैदा किया था वह काम उन्होंने कर दिया, अल्लाह की शान कि उसी साल हज़रत मौलाना क़ासिम नानूतवी रह0 का इंतेक़ाल हो गया। यह तो इन हज़रात को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से क़बूलियत थी।

हज़रत गंगोही रह0 के मुतअल्लिक़ अह्ले कश्फ़ के अक़्वाल

अब ज़रा हज़रत गंगोही रह0 के बारे में सुन लीजिये, इनके बारे में बुज़ुर्ग क्या फ़रमाते हैं, चुनांचे साईं तवक्कुल शाह अंबालवी रह0

जो मज्जूब थे, वह हज़रत गंगोही रह0 के बारे में फ़रमाया करते थेः मैंने उनको मजलिसे नबवी में मस्नदे अफ़्ता पर फ़ाइज़ बैठे देखा है, यह तवक्कुल शाह अंबालवी रह0 फ़रमाते थे। मियां अब्दुर्रहीम विलायती रह0 फ़रमाते थेः हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही के बारे में कि इस शख़्स का क़लम अर्शे इलाही को देख कर चलता है, यह अल्फ़ाज़ कहे।

हज़रत गंगोही रह0 का मक़ाम मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रह0 की नज़र में

हज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रह0 जो साहिबे कश्फ़ बुज़ुर्ग थे और उनका कश्फ़ इतना मअ़रूफ़ था कि एक मर्तबा मौलाना अब्दुल हयी रह0 उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और सफ़र में क़स्र पढ़ी, उनके पास पहुंचे तो बग़ैर बताए उनको पता चल गया कि नमाज़ कैसे पढ़ी और डांट पड़ी उनके पास एक मर्तबा मौलना अहमद अली मुहद्दिस सहारनपूरी रह0---हमारे अकाबिर उलमाए देवबंद में इल्मे हदीस में जितना मक़ाम उनका बुलंद था वह दूसरों का नज़र नहीं आता, और आज भी बुख़ारी शरीफ़ पर उनका हाशिया लिखा हुआ मौजूद है, हज़रत मौलाना अहमद अली सहारनपूरी रह0 ने 25 पारे का हाशिया लिखा और बाक़ी 5 पारे जो थे उनकी वफ़ात के बाद हज़रत क़ासिम नानूतवी रह0 ने उसको मुकम्मल किया—यह हज़रत मौलाना अहमद अली सहारनपूरी रह0 मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रह0 को मिलने के लिये आए तो हज़रत ने पूछा कि आप ने हाशिया लिखा है? कहाः जी, फ़रमाया तुम्हारे हाशिया में फ़लां जगह पर ग़लती है, कशफ़न पता चल गया, देखा तो वाक़ई उस जगह पर किताबत की ग़लती थी, हज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रह0 के बारे में क्या फ़रमाते हैं जो बड़े बड़ों को डांट

देते थे, एक दफ़आ हज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रह० का ख़ादिम हज़रत गंगोही रह० को मिलने के लिये आ गया, जब वापस जाने लगा तो हज़रत गंगोही रह० ने कहा कि अपने पैर से कहना कि ख़ुल्क़े मुहम्मदी इख़्तियार करें, वजह यह थी कि हज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रह० के पास अक्सर जो लोग जातो थे डांट खाके जाते थे, हर आने वाले को डांट पड़ती थी, इस पर हज़रत गंगोही रह० ने उनके ख़ादिम को यह पैग़ाम दे दिया, अब वह आया और हज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी को मिला, उन्हें कशफ़न पता चल गया था, पूछा भाई! उन्होंने आते हुए क्या कहा? पहले तो उसने छिपाने की कोशिश की, मगर अल्लाह वाले तो جَوَاسِيْسُ الْقُلُوْب होते हैं, उसको पता चल गया कि मुझे बताना पड़ेगा, उसने कहाः उन्होंने आते हुए मुझे फ़रमाया कि अपने पीर से कहना कि ख़ुल्क़े मुहम्मदी इख़्तियार करें, तो उन्होंने आगे से कहा कि पहली बात तो सुन लो कि लोग मुझ से दीन सीखने नहीं आते, फ़क़त दम व तावीज़ करवाने आते हैं, दुनिया के लिये आते हैं, इसलिये मैं डांटता हूं, पहले तो बात को ज़रा खोल दिया और फिर फ़रमाया कि मैं उस साहबज़ादे जैसा ज़र्फ़ कहां से लाऊं, यह हज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान गंज मुरादाबादी रह० हज़रत गंगोही रह० के बारे में फ़रमाते हैं कि मैं उस साहबज़ादे जैसा ज़र्फ़ कहां से लाऊं जो समंदर का समंदर पिये बैठा है और डकार भी नहीं लेता, अब देखिये कि हज़रत मौलाना क़ासिम नानूतवी रह० और हज़रत गंगोही रह० को अल्लाह ने क्या इल्मी शान दी थी, हज़रत कशमीरी रह० को क्या शान दी थी।

हज़रत थानवी रह० का इल्मी मक़ाम

हज़रत थानवी रह० सुब्हानल्लाह! दो हज़ार (2000) से ज़्यादा

किताबें लिखीं, अगर उनके इल्मी मक़ाम को देखना हो तो उनकी तफ़सीर बयानुल क़ुर्आन को पढ़ लीजिये, कहते हैं कि हज़रत अल्लामा अनवार शाह कशमीरी रह० तलबा को उर्दू तफ़ासीर पढ़ने से मना फ़रमाते थे कि भाई! अगर उर्दू की तफ़ासीर पढ़ोगे तो तुम्हारी इस्तिदाद नहीं बढ़ेगी, अरबी तफ़ासीर पढ़ा करो, जब उनके सामने तफ़सीर बयानुल कुर्आन आई और उन्होंने पढ़ा तो उस दिन के बाद उर्दू तफ़सीर पढ़ने से जो मना करते थे इस बात को उन्होंने ख़त्म कर दिया, फ़रमाने लगे कि इस तफ़सीर को देखने के बाद पता चलता है कि अब उर्दू ज़बान में भी इल्म मुंतक़िल हो चुका है, ऐसी इल्मी शान थी। फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने देखिये इल्म भी उनके ज़रीए से फैलाया और ज़िक्र भी उनके ज़रीआ से फैलाया, वाक़ई वह हकीमुल उम्मत थे, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनको इल्मी शान अता फ़रमाई थी।

हज़रत मदनी रह० का इल्मी मक़ाम

फिर आगे देखिये, हज़रत मदनी रह० को कि 18 साल मस्जिदे नबवी में गुंबदे ख़ज़्रा के क़रीब बैठ कर उन्होंने हदीसे पाक का दर्स दिया, मुहद्दिस हदीस पढ़ाते हैं तो "قال قال ﷺ" पढ़ाते हैं और हज़रत मदनी पढ़ाते थे तो इशारा करके कहते थे: "قال هذا النبي ﷺ" मस्जिदे नबवी में 18 साल दर्स देना कोई मामूली बात तो नहीं। और कोई एक दो मज़मून नहीं पढ़ाते थे, अरब के लोग उनसे इतना इल्म हासिल करते थे कि एक दिन में ग्यारह ग्यारह मर्तबा दर्स होता था, फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनको यहां पहुंचाया और उन्होंने यहां बैठ के जो हदीस की ख़िदमत की तो आज जितने बड़े बड़े मदारिस में हदीस के असातिज़ा हैं वह तो हज़रत अक़्दस थ्रानवी रह० के शार्गिद हैं या हज़रत मदनी रह० के शागिर्द हैं, अल्लाह

तआला ने पूरी दुनिया में उनके ज़रीआ इस इल्म को फैला दिया।

मौलाना अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह0 का क़ौल अकाबिरे देवबंद के बारे में

कैसे हमारे अकाबिर थे? अमीरे शरीअत हज़रत मौलाना अताउल्लाह शाह बुख़ारी अकाबिरे उलमा देवबंद के बारे में फ़रमाया करते थे कि लोगो! सहाबा का क़ाफ़िला जा रहा था, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रहमत ने पसंद किया कि मुतअख़्ख़िरीन को पता ही नहीं चलेगा कि मेरे महबूब सल्ल0 की जमाअत कैसी थी, अल्लाह ने कुछ लोगों को पीछे रख लिया और उस ज़माने में पैदा फ़रमा दिया और उनके नाम क़ासिम नानूतवी, रशीद अहमद गंगोही, अशरफ़ अली थानवी थे, फ़रमाते थे यह इस क़ाफ़िले से बिछड़ी हुई रूहें थीं जिनको अल्लाह ने उस ज़माने में बेदार फ़रमा दिया

أُولٰئِكَ آبائِی فجِئنِی بِمِثْلِهِم　　اِذَا جَمَعَتْنَا یا جریرُ الْمَجامِعُ

कुफ़्र नाचा जिनके आगे बारहा तगनी का नाच
जिस तरह जलते तवे पर नाच करता है सफ़न
उनमें क़ासिम हो कि अनवर शाह कि महमूदुल हसन
सबके दिल थे दर्दमंद और सबकी फ़ितरत अर्जमंद

हज़रत शैख़ुल हिंद रह0 की एक इंफ़िरादी ख़ुसूसियत

हज़रत शैख़ुल हिंद रह0, अल्लाह के यहां क्या मक़्बूल शख़्सियत थी, देखिये शागिर्द तो बहुत सों के होते हैं, आप में से असातिज़ा होंगे, जिनसे सैकड़ों तलबा पढ़ चुके होंगे, अगर सवाल पूछा जाए कि उन सैकड़ों में से कौन दीन के लिये क़बूल हुआ? तो उनमें से बहुत ही थोड़े होंगे, वर्ना पढ़ने वाले तो बहुत से कहीं दुनिया के काम में लगे हुए हैं और कहीं अधूरा काम कर रहे हैं और बाक़ी वैसे ही ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं, हज़रत शैख़ुल हिंद रह0 को अल्लाह रब्बुल

इज़्ज़त ने वह मक़ाम दिया था कि जिस शख़्स ने उनसे इल्म पढ़ा एक शागिर्द भी ऐसा नहीं दिखा सकते जिसने दीन का काम न किया हो, ऐसी क़बूलियत थी अल्लाह के यहां कि उनकी शार्गिदी में जितने तलबा निकले सबके सब दीन का काम करने वाले थे, यह क्या वजह थी? यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की उनके ऊपर रहमत थी, यह उनका इख़्लास था।

माल्टा में हज़रत शैख़ुल हिंद रह0 पर अंग्रेज़ का ज़ुल्म

वह हज़रत शैख़ुल हिंद रह0, उनकी आजिज़ी के वाक़िआत आप उनके हालाते ज़िंदगी में पढ़ते ही रहते हैं, एक बात बताता हूं कि उनको भी अपनी क़बूलियत की कितनी फ़िक्र रहती थी, ज़रा तवज्जो फ़रमाइये, जब हज़रत शैख़ुल हिंद रह0 की वफ़ात हुई तो हज़र मदनी कलकत्ता गए हुए थे, वहां से उनको ख़बर मिली और वह अपने शैख़ की नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत के लिये वापस तशरीफ़ लाए, जब जनाज़ा अदा हो गया तो जो गुस्ल देने वाला था उसने पूछा कि मैंने हज़रत शैख़ुल हिंद रह0 की कमर के ऊपर निशान देखे हैं, वह निशान आम नहीं होते, पता नहीं यह कैसे निशान थे, ज़रा पता करें, घर वालों से पता किया तो घर वालों को भी पता नहीं था, क्योंकि हज़रत की आदत थी कि घर में भी हमेशा बनियान में रहते थे, किसी ने हज़रत मदनी रह0 से पूछा कि हज़रत! आप को मालूम है कि हज़रत शैख़ुल हिंद रह0 की पुश्त पे यह निशान कैसे थे? तो हज़रत मदनी रह0 की आंखों में आंसू आ गए, फ़रमाने लगे कि यह मेरे शैख़ का राज़ था और उन्होंने मुझे फ़रमाया हुआ था कि मेरी ज़िंदगी में तुम किसी को न बताना और मैंने आज तक नहीं बताया, अब चूंकि वफ़ात पा चुके, इसलिए अब मैं बताता हूं कि जब हम माल्टा में क़ैद थे, उस वक़्त फ़िरंगी ने एक मर्तबा शैख़ुल हिंद रह0

को बुलाया और फ़रमाया कि तुम यह कहो कि तुम हमारे साथ हो, हज़रत ने फ़रमाया मैं नहीं कह सकता, तो उसने अंगारे गर्म करवाए, आग जलवाई और कहा कि तुम्हें इन अंगारों पर लिटाऊंगा, हज़रत ने फ़रमाया मैं नहीं कह सकता, अंगारों पर लिटाया गया, पीछे ज़ख़्म हुए, बदन जला, यह उन ज़ख़्मों के निशानात हैं, और जब यह सज़ा देने के बाद हज़रत कमरे में आए तो रात में सोया नहीं जा रहा था, बैठे थे, हम शार्गिद थे, हम से हज़रत की यह तक्लीफ़ बर्दाश्त नहीं होती थी, हम ने उस वक़्त अर्ज़ किया हज़रत! आख़िर इमाम मुहम्मद रह० ने كِتَابُ الْحِيَل लिखी, हीला तो शरीअत में जाइज़ है, अपनी जान बचाने के लिये इंसान कुछ न कुछ कर सकता है, आप कोई ज़ू मअ़नी लफ़्ज़ बोल दें कि जिस से जान भी छूट जाए और यह ज़ालिम हट भी जाएं, जान बचाने के लिये तो इजाज़त होगी, फ़रमाने लगे जब मैंने यह अल्फ़ाज़ कहे तो हज़रत शैख़ुल हिंद रह० ने फ़रमायाः मदनी! क्या समझते हो, मैं रूहानी बेटा हूं हज़रत बिलाल रज़ि० का, मैं रूहानी बेटा हूं हज़रत ख़ुबैब रज़ि० का, मैं रूहानी बेटा हूं इमाम मालिक रह० का, मैं रूहानी फ़रज़ंद हूं इमामे आज़म रह० का, मैं रूहानी बेटा हूं शाह वली अल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० का,—हुसैन अहमद! यह मेरे जिस्म से जान निकाल सकते हैं, यह मेरे दिल से ईमान नहीं निकाल सकते, कैसी अल्लाह ने उनको इस्तिक़ामत अता फ़रमाई थी।

हज़रत शैख़ुल हिंद रह० पर ख़ुदा की शाने बेनियाज़ी का असर

अब सुनिये! एक मर्तबा वहां के जो अफ़्सरान थे उन्होंने हज़रत शैख़ुल हिंद रह० के बारे में फ़ैसला किया कि उनको फांसी दो, और क़िस्सा ही ख़त्म करो, जब हज़रत को फ़ांसी की ख़बर मिली तो हज़रत की आंखों में आंसू आ गए, बहुत रो रहे हैं, ज़ार व क़तार रो

रहे हैं, शार्गिद हैरान हैं कि हज़रत इस मौक़ा पर तो ख़ुश होना चाहिये था, फांसी लटका देंगे जान छूट जाएगी, मक़्सदे ज़िंदगी पूरा हो जाएगा, मगर हम देख रहे थे कि शैख़ुल हिंद रह0 के चेहरा पे ख़ौफ़ है और ज़ार व क़तार आंसू गिर रहे हैं, फिर हम दो तीन शार्गिद क़रीब हुए, हमने कहा कि हज़रत! यह फांसी की ख़बर तो ख़ुशी की ख़बर है, आप क्यों घबरा रहे हैं? आप क्यों रो रहे हैं? फ़रमाने लगे हज़रत ने आंख उठा के देखा, आंखों से आंसू टपके, फ़रमाने लगे हुसैन अहमद! मैं मौत से नहीं डर रहा हूं, मुझे अल्लाह की शाने बेनियाज़ी रुला रही है, वह कभी कभी बंदे की जान भी ले लिया करता है और क़बूल भी नहीं किया करता, इसलिये रो रहा हूं कि जान भी ले लें और क़बूल भी न करें।

उनका अल्लाह की शाने बेनियाज़ी रुलाती थी और वाक़ई जिसको पता हो कि वह कितनी बेनियाज़ ज़ात है वह हमेशा रोता है, हमेशा अल्लाह से मांगता है, यही वजह तो थी कि सिद्दीक़े अक्बर रज़ि0 रोया करते थे, आइशा रज़ि0 रात को रोया करती थीं, हज़रत उमर ख़त्ताब रज़ि0 रोया करते थे, हज़रत अली रज़ि0 रोया करते थे, इन सब हज़रात को अल्लाह की शाने बेनियाज़ी रुलाया करती थी, वह डरते थे कि पता नहीं अंजामे आख़िर हमारे साथ क्या होगा, करते भी थे और डरते भी थे।

क्या क्या न अपने ज़ुहद व इताअत पे नाज़ था
बस दम निकल गया जो सुना बेनियाज़ है

अगर बंदे को यक़ीन हो जाए कि वह ज़ात बेनियाज़ है तो अपनी इलमियत पे कभी फ़ख़्र नहीं कर सकता, कोई अपने आप को बड़ा नहीं समझ सकता, इसलिये कि बेनियाज़ ज़ात के साथ मुआमला है, हमारी इबादतें क्या हैं, हमारी इल्मी कोशिशें क्या हैं।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० पर ख़ुदा की शाने बेनियाज़ी का असर

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० हदीसे मुबारक का दर्स देते थे, किताबों में लिखा है कि एक वक़्त में चालीस हज़ार तलबा उनसे हदीसे मुबारक पढ़ा करते थे, शैख़ुल हदीस मौलाना ज़करिया रह० ने लिखा कि उनकी हदीस सुनकर आगे आवाज़ पहुंचाने के लिये जो मुकब्बिर थे उनकी तादाद ग्यारह सौ होती थी, मुकब्बिर ग्यारह सौ थे तो मज्मा कितना होगा, पचास पचास हज़ार आदमियों का मज्मा एक वक़्त में हदीस पढ़ने आता है, उनके बारे में आता है कि जब आख़िरी वक़्त आया तो शार्गिदों को फ़रमाया कि मुझे चारपाई से उठा के ज़मीन पे लिटा दो, शार्गिदों ने हुक्म की तामील की, मगर उनकी चीख़ निकल गई, क्योंकि अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० अपने रुख़्सार को ज़मीन पे रगड़ने लगे और अपनी डाढ़ी को पकड़ के कहने लगे अल्लाह! अब्दुल्लाह के बुढ़ापे पे रह्म फ़रमा, नहीं कहा कि मैं मुहद्दिस हूं, नहीं कहा कि मैं बड़ा उस्ताज़ हूं, नहीं कहा कि मैंने हज़ारों की ज़िंदगी बदली, कोई अमल अल्लाह के सामने पेश नहीं किया, वह जानते थे कि अमल पेश नहीं कर सकते, बस अपनी डाढ़ी को पकड़ और अपने सफ़ेद बालों को पेश किया कि अल्लाह! अब्दुल्लाह के बुढ़ापे पे रहम फ़रमा दे। हमारे अकाबिर को अल्लाह की शाने बेनियाज़ी रुलाया करती थी।

अल्लाह से क़बूलियत की दुआ मांगते रहना चाहिये

हमें भी चाहिये कि जो कुछ हम यहां कर रहे हैं, बस अल्लाह से क़बूलियत की दुआ मांगें कि मेरे मालिक! हमारे बड़ों को भी आप ने क़बूल किया, हम ज़ाहिरी इल्मी निस्बत तो रखते हैं, अल्लाह! हमें हक़ीक़त में भी उनका रूहानी वारिस बना दीजिये, अल्लाह से यह दुआ मांगनी पड़ेगी, तब जाके यह निस्बत मुंतक़िल होगी, तब जाके

यह नूर सीने में आएगा, उसकी शाने बेनियाज़ी अजीब है, अमल करने वाले गुरूर नहीं कर सकते और बेअमल मायूस भी नहीं हो सकते, यह भी अजीब बात है, लिहाज़ा जब मुआमला क़बूलियत का है तो फिर अल्लाह के सामने मांगें, आजिज़ी करें कि अल्लाह! हम जैसे भी हैं बस आप क़बूल फ़रमा लीजिये, मुआमला तो क़बूलियत के ऊपर है।

अल्लाह के यहां क़बूलियत न मिली तो सब बेकार है

एक नौजवान लड़की थी, उसको दुल्हन बनाया जा रहा था, जब उसको सब ज़ेवरात पहना दिये गए, कपड़े सजा दिये गए, किसी ने तारीफ़ कर दी कि तुम बड़ी ख़ूबसूरत लग रही हो, जब तारीफ़ करने वाले ने तारीफ़ की तो दुल्हन की आंखों में आंसू आ गए, वह घबरा गई कि मैंने अगर कोई ग़लत बात कर दी हो तो मुआफ़ कर दें तो दुल्हन ने कहाः मेरे दिल में ख़्याल आया कि तुम जिस ख़ाविंद के लिये मुझे तैयार कर रही हो तुम तो इतनी तारीफ़ें कर रही हो कि मैं ख़ूबसूरत लग रही हूं, अगर मैं उसके पास पहुंची और उसको पसंद नहीं आई तो तुम्हारी तारीफ़ें मेरे किस काम की? बात तो ऐसी ही है, लोग दुनिया में आलिम कह दें, हदीस का उस्ताज़ कह दें, फ़िक़ह का उस्ताज़ कह दें, सूफ़ी कह दें, पीर कह दें, जो चाहें कह दें, लोगों की तारीफ़ें तो अपनी जगह, अगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां हम पेश हुए और वहां क़बूलियत न हुई तो लोगों के यह अल्फ़ाज़ हमें क्या काम आएंगे? मुआमला तो क़बूलियत पे है, लिहाज़ा हम अल्लाह के सामने बस आजिज़ी करें कि अल्लाह! आप हमें क़बूल फ़रमा लीजिये और अमल तो है नहीं कि जो अमल अल्लाह के यहां पेश कर सकें, लिहाज़ा हमारे पास फ़क़त आजिज़ी व ज़ारी के सिवा कुछ नहीं।

एक ख़ाविंद अपनी बीवी पे गुस्सा हुआ और उसने कहा कि न

तू खूबसूरत है, न पढ़ी लिखी है, न बड़े घराने की है, तेरे अंदर कोई भी तो खूबी नहीं, बता तू क्या है? जब उसने इतना उसको कहा और डांटा तो उसकी आंखों में आंसू आ गए और बीवी कहने लगी हमारी इलाक़ाई ज़बान में शेअ़र है जिसका तर्जुमा यह है:

"कि मेरे अंदर कोई क़ाबिलियत नहीं है, मैं तसलीम करती हूं, मगर इतनी बात तो है कि मैं जैसी भी हूं, हूं तो सरकार की, मैं हूं तो आप की"

इस मौक़ा पर हम यही कह सकते हैं कि अल्लाह! कोई क़ाबिलियत नहीं है, कोई खूबी नहीं है, कोई अमल पेश करने के क़ाबिल नहीं है, मगर ऐ अल्लाह! हैं तो आप ही के, आप ही को तो हमने इलाह माना, खुदा माना, हम क़सम खाकर कहते हैं हम आपके सिवा किसी को खुदा नहीं मानते, अल्लाह! कलिमा पढ़ते पढ़ते अब तो बाल भी सफ़ेद हो गए, ऐ अल्लाह! हैं तो आप के, तो बस आप क़बूल कर लीजिये कि हम आप के हैं, आप मेहरबानी फ़रमा दीजिये, हम अपने अल्लाह से यह दुआ करें कि ऐ परवरदिगारे आलम, हमने जो आमाल किये वह ग़फ़लत भरे थे, न हुज़ूरी थी, न सही तरीक़े से हमने आमाल किये, लेकिन ऐ अल्लाह! आपके यहां फ़क़त क़ाबिलियत को तो नहीं देखा जाता, क़बूलियत का मुआमला है, जब क़बूलियत का मुआमला है तो ऐ अल्लाह! बस आप क़बूल फ़रमा लीजिये। उस वक़्त एक दुआ अपनी ज़िंदगी में रोज़ नमाज़ों के बाद मांगा करें कि ऐ अल्लाह! हमें ऐसा बना दीजिये कि आप को पसंद आ जाएं, हम तो नहीं बन सकते, कोशिशों के बावजूद भी नहीं बन सकते, हमारे बड़ों को भी आप ही ने बनाया, अल्लाह! हमें भी आप बना दीजिये, ऐ अल्लाह! उन बड़ों को यह निस्बतें, यह नूर, यह इल्म, यह मआरिफ़, सब आप ने अता फ़रमाए थे, आपकी रहमत की नज़रह हो गई थी।

असातिज़ा व तलबाए दारुल उलूम पर अकाबिर की दुआओं का साया

दारुल उलूम देवबंद के तमाम असातिज़ा भी मुबारक बाद के लाइक़ हैं, और तमाम तलबा भी मुबारकबाद के लाइक़ हैं, आप इस मादिरे इल्मी से निस्बत रखते हैं, मालूम नहीं उनके लिये उन अकाबिर ने तहज्जुद के वक़्त में क्या क्या दुआएं की होंगी, इतनी बात अर्ज़ करता हूं, छोटा सा एक इदारा है, इस आजिज़ को इतनी फ़िक्र रहती है कि अल्लाह ने दर्जनों मर्तबा मुलतज़िम के साथ लिपट कर दुआ मांगने की तौफ़ीक़ दी, अपनी औलाद के साथ हमेशा उन तलबा की क़बूलियत की दुआ मांगता हूं, एक फ़िक्र होती है और दिल में सोचता हूं कि या अल्लाह! अगर अपने तलबा की इतनी दिल के अंदर फ़िक्र है, तो हमारे अकाबिर ने आने वाले वक़्त में जो तलबा होंगे उनके लिये क्या क्या मक़्बूल औक़ात में दुआएं मांगी होंगी, आप वह तलबा हैं कि आप के सरों के ऊपर उन अकाबिर की दुआओं का साया है।

एक अहम नसीहत

बस एक काम कर लीजिये कि जो पढ़ते हैं उस पर अमल भी कर लीजिये और तक़्वा के साथ ज़िंदगी गुज़रिये, गुनाहों की ज़िल्लत से अपने आप को बचा लीजिये, फिर देखिये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त आप को दीन के लिये कैसा क़बूल करते हैं, दुआ है अल्लाह तआला यहां के उलमा व तलबा का फ़ैज़ फिर ऐ मर्तबा इसी तरह पूरी दुनिया में फैलाए जैसे हमारे अकाबिर के ज़रीआ फैला था, अल्लाह तआला आज की इस मजलिस को हमारी बख़्शिश का और हमारी क़बूलियत का सबब बना दे।

وآخرُ دعوانا أن الحمدُ للهِ ربِّ العالمين

अगले सफ्हात से आप जिस ख़िताक का मुतालआ करेंगे, यह ख़िताब देवबंद के शहरियों की तरफ़ से मुन्अक़िदा इजलास में हुआ था मक़ाम "अअ़ज़मी मंज़िल" था। तारीख़: 12 अप्रेल 2011 ई0 बरोज़ सह शंबा, वक़्तः बअ़द नमाज़े इशा। इस महफ़िल में भी उलमा तलबा और अवाम का ज़बरदस्त हुजूम था।

इश्क़े नबी सल्ल0
और
उसके तक़ाज़े

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد
اعوذ بالله من الشيطان الرجيم، بسم الله الرحمٰن الرحيم
النَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ
وقالَ رسولُ اللهِ ﷺ: اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ

سبحان ربک رَبِّ العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العلمين
اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارک وسلم
اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارک وسلم
اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارک وسلم

हुज़ूर सल्ल0 से कामिल मुहब्बत किये बग़ैर ईमान नामुकम्मल

नबी अलै0 का इर्शादे गिरामी है: "أَحِبُّوا اللّٰهَ لِمَا يَغْذُوكُمْ بِهٖ مِنْ نِعَمِهٖ" तुम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से मुहब्बत करो कि उसने तुम्हें खाने के लिये क्या क्या नेअ़मतें अता फ़रमाई "وَأَحِبُّوْنِيْ لِحُبِّ اللّٰهِ" और मुझ से मुहब्बत करो कि मैं अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का महबूब हूं, अल्लाह मुझ से मुहब्बत फ़रमाते हैं, नबी सल्ल0 की मुहब्बत ईमान का हिस्सा है, इसके बग़ैर कोई इंसान मोमिन नहीं हो सकता

न जब तक कट मरूं मैं ख़्वाजए यसरिब की इज़्ज़त पर
ख़ुदा शाहिद है कामिल मेरा ईमां हो नहीं सकता

नमाज़ अच्छी है हज अच्छा ज़कात अच्छी है सौम अच्छा
मगर मैं बावजूद इसके मुसलमां हो नहीं सकता

नबी सल्ल0 के साथ एक क़ल्बी मुहब्बत का होना, यह हर मोमिन की सिफ़त होती है।

नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया: "لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتّٰى أَكُوْنَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ وَالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ" कि तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसको उसके वालिद, औलाद और दुनिया के तमाम इंसानों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊं।

एक हदीसे पाक में इर्शाद फ़रमाया: "ثَلٰثٌ مَنْ كُنَّ فِيْهِ وَجَدَ حَلَاوَةَ الْإِيْمَانِ" तीन चीज़ें ऐसी हैं कि जिस बंदे में होंगी उसको ईमान की हलावत मिलेगी, इनमें से एक "اَنْ يَكُوْنَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا" कि अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 तमाम जहान से ज़्यादा उसको महबूब हो जाएं।

सय्यदुना उमर बिन ख़त्ताब रज़ि0 हाज़िर हुए, कहा: ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0! मुझे आप सब से ज़्यादा महबूब हैं, सिवाए अपनी जान के, तो नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि उस वक़्त तक कोई बंदा कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उसे उसकी जान से भी ज़्यादा महबूब न हो जाऊं "فَقَالَ" उमर रज़ि0 ने जवाब में अर्ज़ किया "وَالَّذِىْ أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ لَأَنْتَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ نَفْسِي الَّتِىْ بَيْنَ جَنْبَىْ" कि अब आप मुझे अपनी जान से भी ज़्यादा महबूब हैं "فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ" नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया "اَلْآنَ يَا عُمَر" ऐ उमर! अब तुम्हें ईमाने कामिल रुत्बा नसीब हो गया।

हुज़ूर सल्ल0 से मुहब्बत का इन्आम

तालिबे इल्म के ज़ह्न में सवाल आता है कि हम अगर नबी

सल्ल0 से इस क़द्र टूट कर मुहब्बत करें कि वह हमें सारी दुनिया से ज़्यादा अज़ीज़ हो जाएं तो इस पर क्या मिलेगा? हदीसे मुबारक है: "عَنْ أَنَسٍ ﷺ أَنَّ رَجُلاً أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ مَتَى السَّاعَةُ" एक नौजवान नबी सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आके उसने यह Question (सवाल) पूछा कि ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! क़्यामत कब आएगी? "فَقَالَ" नबी सल्ल0 ने पूछा: "مَا أَعْدَدْتَ لَهَا" तुमने क़्यामत के लिये क्या तैयारी कर रखी है? "قَالَ" उसने जवाब में अर्ज़ किया: "مَا أَعْدَدْتُ لَهَا مِنْ كَثِيرِ صَلٰوةٍ ولا صومٍ ولا صدقةٍ ولٰكِنِّي أُحِبُّ اللّٰهَ وَرسولَه" ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! बहुत ज़्यादा नमाज़ें और रोज़े और सदक़े वाली इबादतें तो मैंने नहीं कीं, हां इतनी बात पक्की है कि अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करता हूं, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया: "أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ" तो जन्नत में उसी के साथ होगी जिससे तुझ को मुहब्बत है। सहाबा रज़ि0 कहते हैं कि इस हदीसे पाक को सुन कर हमें इतनी खुशी हुई कि इतनी खुशी हमें किसी और बात पर नहीं हुई थी।

सहाबा रजि0 के दिलों में हुजूर सल्ल0 की मुहब्बत

चुनांचे एक और सहाबी आए, कहने लगे: "لَأَنْتَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَهْلِي وَمَالِي" आप मुझ मेरे अह्ले ख़ाना और मेरे माल से ज़्यादा महबूब हैं "وَإِنِّي لَأَذْكُرُكَ" और जब कभी मैं आपको याद करता हूं "فَمَا أَصْبِرُ حَتَّى أَجِيءَ فَأَنْظُرَ إِلَيْكَ" मुझ से रहा नहीं जाता, आप की याद तड़पाती है तो आपकी ख़िदमत में हाज़िर होता हूं और आपकी ज़ियारत से आंखों को मैं ठंडा कर लेता हूं "وَإِنِّي ذَكَرْتُ مَوْتِي وَموتَكَ" और मैं यह भी सोचता हूं कि एक दिन मुझे भी मौत आनी है और एक दिन आप को भी पर्दा फ़रमाना है "فَعَرَفْتُ أَنَّكَ"

"اِذا دَخَلْتَ الْجنة رُفِعْتَ مع النبيين" और मैं यह भी सोचता हूं कि आप जन्नत में जाएं तो आपका दर्जा तो अंबिया के साथ जन्नत में ऊंचा होगा, और मैं पहुंच गया तो मेरा दर्जा तो नीचे होगा। कहने का मक़्सद यह था कि ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! नीचे वाला तो ऊपर जा नहीं सकता, अगर मैं जन्नत में आप का दीदार नहीं कर सकूंगा तो मुझे जन्नत में मज़ा ही क्या आएगा। इससे अंदाज़ा लगाइये कि सहाबा रज़ि0 के दिलों में नबी सल्ल0 की कैसी मुहब्बत थी, आत तो हूर व क़ुसूर के नाम पर ही नौजवान ख़ुश फिरते हैं और सहाबा रज़ि0 की हालत यह थी कि वह कहते थे कि जन्नत में अगर आक़ा सल्ल0 का दीदार न कर सके तो जन्नत में मज़ा ही क्या आएगा। तो यह बहुत बड़ा अज्र है कि इस मुहब्बत की वजह से इंसान को नबी सल्ल0 के क़दमों में जगह मिलेगी।

हुज़ूर सल्ल0 से मुहब्बत का पहला तक़ाज़ा:

अब अगली बात सुनें कि नबी सल्ल0 के साथ ऐसी मुहब्बत के कुछ तक़ाज़े हैं, यह नहीं कि फ़क़त ज़बान से इंसान कहे कि मुझे मुहब्बत है, इसकी कोई दलील भी होनी चाहिये। चुनांचे उलमा ने इसकी चंद बातें खोल कर बयान की हैं, सब से पहली बात "تَوْقِيْرُهٗ وَتَقْدِيْرُهٗ عليهِ الصلوٰة والسلام" अगर किसी को नबी सल्ल0 से मुहब्बत है तो सबसे पहली बात यह कि वह शख़्स नबी सल्ल0 की बहुत ज़्यादा इज़्ज़त करे, इकराम करे, अदब करे। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं: "اِنَّا اَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيرًا لِتُؤْمِنُوا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا"- चुनांचे सहाबा रज़ि0 का यह हाल था कि नबी सल्ल0 की सोहबत में इतने अदब के साथ बैठते थे कि एक सहाबी रज़ि0 कहते हैं: "اَتَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَأَصْحَابُهٗ حَوْلَهٗ كَاَنَّمَا عَلٰى رُؤُوْسِهِمُ الطَّيْرُ" कि सहाबा रज़ि0 नबी

सल्ल0 के गिर्द इस तरह बा अदब बैठे थे कि जैसे उनके सरों के ऊपर कोई परिंदा बैठा हुआ है। "قَالَ اَبو اِبْرَاهِيمْ" अबू इब्राहीम रह0 एक बुर्ज़ुग हैं, वह फ़रमाते हैं कि "وَاجِبٌ عَلٰى كُلِّ مُؤمِنٍ" हर मोमिन पर यह वाजिब है "مَتٰى ذَكَرَهٗ أَوْ ذُكِرَ عِنْدَهٗ" कि जब वह खुद तज़किरा करे या उसके पास नबी सल्ल0 का ज़िक्रे मुबारक हो "أَنْ يَخْضَعَ وَيَخْشٰى وَيَتَوَقَّرَ وَيَسْكُنَ مِنْ حَرَكَتِهٖ وَيَأْخُذَ فِيْ هَيْبَتِهٖ وَاِجْلَالِهٖ" कि उसकी तबीअत के ऊपर असर महसूस होना चाहिये कि उसके सामने अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 का ज़िक्रे मुबारक किया गया है।

आदाबे अहादीस के चंद सबक़ आमूज़ नमूने

चुनांचे मुतरफ़ कहते हैं कि इमाम मालिक रह0 के पास लोग आते तो वह अपनी बांदी को कहते कि पूछो किस लिये आए हैं? अगर वह कहते कि हम फ़िक़्ह के मसाइल सीखने के लिये आए हैं तो इमाम मालिक रह0 उसी वक़्त आ जाते और अगर वह कहते कि हम हदीसे मुबारक की रिवायत लेने आए हैं तो इमाम मालिक रह0 गुस्ल फ़रमाते, साफ़ सुथरे कपड़े ज़ेब तन फ़रमाते, इत्र लगाते, फिर एक तख़्त बनाया हुआ था, अमामा बांध कर उस तख़्त के ऊपर तशरीफ़ फ़रमा होते और फिर नबी सल्ल0 की बात को आगे नक़्ल फ़रमाते, उनके अमल से भी यह साबित होता था कि वाक़ई किसी ज़ी शान हस्ती की बात यह आगे बयान करेंगे।

सईद बिन अल मुसय्यब रह0 का आख़िरी वक़्त था, किसी ने हदीस की बात पूछ ली, उस वक़्त में जबकि जान कुनी का आलम है और इंसान तकलीफ़ में होता है, उस वक़्त में भी हदीसे मुबारक का तज़किरा आया तो वह उठ कर बैठे और उन्होंने हदीस बयान की और आख़िरी लफ़्ज़ जब निकला तो नीचे गिरे और रूह क़ब्ज़ हो गई,

आख़िरी लम्हे में भी हदीसे मुबारक का ऐसा अदब था। चुनांचे वह लोग जो नबी सल्ल0 की सोहबत में थे वह तो आप सल्ल0 के सामने अदब से बैठते थे, आज हमारे सामने अगर हदीसे मुबारक का दर्स हो या तिलावत हो तो हमें चाहिये कि इसी तरह अदब से बैठें जिस तरह कि सहाबा रज़ि0 नबी सल्ल0 की सोहबत में बैठते थे।

अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रह0 बड़े मुहद्दिस गुज़रे हैं, इमामे आज़म रह0 के ख़ुसूसी शागिर्द थे, उनसे अगर चलते हुए हदीसे मुबारक के बारे में कोई पूछा करता था तो वह इसका जवाब नहीं देते थे, फ़रमाया करते थे कि हदीसे मुबारक की शान है कि इंसान सुकून व इतमीनान के साथ बैठ कर उस बात को नक़्ल करे।

इमाम मालिक रह0 हदीसे मुबारक का इतना अदब करते थे कि एक मर्तबा बिच्छू ने उन्हें कई मर्तबा डंक लगाया, चेहरे का रंग मुतग़य्यर होता रहा, मगर उन्होंने मजलिस बरख़ास्त नहीं की, हदीसे मुबारक को दर्मियान में नहीं छोड़ा, पूरा मुकम्मल किया, लोग हैरान थे कि बिच्छू के डंक लगाने की तकलीफ़ तो बहुत ज़्यादा होती है, उसको बर्दाश्त कर लिया, मगर हदीसे मुबारक के अदब में फ़र्क़ नहीं आने दिया। उस अदब का यह इन्आम मिला कि इमाम मालिक रह0 के हालाते ज़िंदगी में लिखा है कि उनकी हदीसे मुबारक की ख़िदमत की ज़िंदगी में एक रात के सिवा बाक़ी हर रात उनको नबी सल्ल0 का दीदार होता था।

हमने अपने क़रीबी अहबाब में देखा है कि जिन दोस्तों को हदीसे मुबारक के साथ बहुत मुहब्बत है और इस इल्म के साथ उनको शग़फ़ है, अक्सर व बेशतर उनको हफ़्ते में एक या दो मर्तबा नबी सल्ल0 का दीदार होता है और जो बच्चे दौरए हदीस में हों, वह अगर दौरा का साल गुनाहों से बच कर तक़्वा और अदब के साथ

गुज़ारें तो उमूमी तौर पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के हबीब सल्ल0 का साल में दीदार ज़रूर होता है।

इमाम जाफ़र सादिक़ रह0 बड़े हंसमुख थे, ख़ुश तबई भी कर लेते थे, जब उनके सामने हदीसे मुबारक का तज़किरा आता तो उनका चेहरा ऐसे होता था जैसे किसी ने उनके ख़ून को निचौड़ लिया हो। किसी ने इमाम मालिक रह0 से कहा कि आप बहुत ज़्यादा हदीसे पाक का अदब करते हैं, तो फ़रमाने लगे कि मैंने सय्यदुल कुर्रा मुहम्मद बिन अलमुन्कदिर रह0 को देखा कि उनके सामने हदीसे मुबारक का तज़किरा होता था तो वह इस तरह रोते थे कि हमें उनकी हालत देख कर उन पर तरस आने लग जाता था।

हुज़ूर सल्ल0 से मुहब्बत का दूसरा तक़ाज़ा:

मुहब्बत का दूसरा तक़ाज़ा "عَدَمُ التَّقْدِيْمِ بَيْنَ يَدَيْهِ وَغَضُّ الصَّوْتِ عِنْدَهٗ" कि नबी सल्ल0 से इंसान तक़द्दुम न करे, और उनकी आवाज़ से अपनी आवाज़ को बुलंद न करे। चुनांचे सहाबा रज़ि0 इसका बहुत लिहाज़ करते और अपनी आवाज़ों को पस्त रखते थे, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने कुर्आन मजीद में फ़रमायाः "لَا تَرْفَعُوْا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ" कि अगर तुम्हारी आवाज़ मेरे महबूब सल्ल0 की आवाज़ से बुलंद हो गई तो हम तुम्हारे किये हुए अमलों को ज़ाए कर देंगे और तुम्हें इसका पता भी नहीं चलेगा। चुनांचे आज भी यह अदब अपनी जगह मौजूद है, आप मवाजा शरीफ़ पर जाएं तो उस वक़्त भी यह आयत लिखी हुई हैः-

"لَا تَرْفَعُوْا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ"-

किसी मुआमला में नबी सल्ल0 के फ़रमान पर अपनी मर्ज़ी को मुक़द्दम कर देना, इसको तक़द्दुम कहा जाता है, हमारे अकाबिर तो

इसका इतना ख़्याल फ़रमाते थे कि इमाम मालिक रह0 ने फ़रमाया कि अगर मेरे किसी फ़त्वा के मुक़ाबले में किसी शख़्स को नबी सल्ल0 की कोई ज़ईफ़ हदीस भी मिल जाए तो उसको चाहिये कि मेरे क़ौल को छोड़ महबूब सल्ल0 की उस हदीस पर अमल करे।

हुज़ूर सल्ल0 से मुहब्बत का तीसरा तक़ाज़ा

तीसरा तक़ाज़ा "اِعْدامُ جَميعِ أسْبابِهٖ وإكرامُ مشاهِدِهٖ وأمْكِنَتِهٖ مِنَ مَكَّةَ والْمَدِيْنَةِ" कि जब किसी से मुहब्बत होती है तो उसके मुतअल्लिक़ जो भी चीज़ें होती हैं उनसे भी मुहब्बत होती है। कहते हैं कि मजनूं एक मर्तबा कुत्ते के पांव चूम रहा था, किसी ने पूछा कि क्यों चूम रहे हो? कहने लगा कि यह लैला की गली से होके आया है, तो अगर दुनिया के मजनून ऐसे हैं तो नबी सल्ल0 की मुहब्बत तो इससे भी ज़्यादा होनी चाहिये। लिहाज़ा हमें इन शहरों और इन चीज़ों से मुहब्बत होनी चाहिये जो नबी सल्ल0 के इस्तेमाल में रहें, या जिनको किसी भी तरह से नबी सल्ल0 के साथ कोई तअल्लुक़ बनता है।

इमाम मालिक रह0 का यह हाल था कि "كانَ مالِكٌ ﷺ لَايَرْكَبُ بِالْمدينةِ دابةً وكان يَقولُ أستَحْيِى مِنَ اللهِ أنْ أطَأتُرْبَةً فِيهَا رسولُ اللهِ ﷺ بِحافِرِ دَابَّةٍ" मुझे ज़ेब नहीं देता कि मदीना के जिन रास्तों पर मेरे आक़ा सल्ल0 चले हों, मालिक अपनी सवारी के सिमों से उसको पामाल करे, चुनांचे मदीना तय्यबा में सवारी पे सवार भी नहीं हुआ करते थे।

हज़रत मौलाना क़ासिम नानूतवी रह0 के हालाते ज़िंदगी में लिखा है कि जब हज के लिये तशरीफ़ ले गए तो बेअरे अली, जो मदीना तय्यबा के बाहर एक जगह है, वहीं पर जूते उतार दिये, किसी ने कहा कि हज़रत! संगलाख़ ज़मीन है और आप का जिस्म नाज़ुक

है, पांव ज़ख़्मी हो जाएंगे, फ़रमाया कि ज़ख़्मों की तकलीफ़ बर्दाश्त कर लूंगा, मैं अपने आक़ा सल्ल0 की इस ज़मीन पर जूतों के साथ चलना पसंद नहीं करता।

अल्लामा अनवर शाह कशमीरी रह0 का अहादीसे मुबारिका का इतना अदब था कि बेवज़ू हाथ नहीं लगाया करते थे, एक मर्तबा मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह रह0 ने अपने शागिर्दों से पूछा कि बताओ अल्लामा अनवर शाह कशमीरी रह0 अनवर शाह कशमीरी कैसे बने हैं? तो जिन तलबा को तफ़सीर से लगाव था वह कहने लगे कि बड़े मुफ़स्सिर थे, जिनको हदीस से शग़फ़ ज़्यादा था वह कहने लगे कि बड़े मुहद्दिस थे, जिनको शेअ़र व सुख़न से लगाव था वह कहने लगे कि उनका शेअ़री कलाम बहुत आला था, हज़रत ख़ामोश रहे, फिर आख़िर में मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह रह0 ने फ़रमाया कि यह सवाल एक मर्तबा किसी ने खुद अल्लामा अनवर शाह कशमीरी रह0 से पूछ लिया कि हज़रत! आप इल्म के इस मर्तबा तक कैसे पहुंचे? तो उन्होंने जवाब दिया कि मुझे अल्लाह ने इतना अदब दिया कि मैं बेवज़ू कभी हदीसे पाक की किताब को हाथ नहीं लगाता, और किताबों के रखने में भी उनके दर्जे का ख़्याल रखता हूं, क़ुर्आन पाक पर इसकी तफ़सीर को नहीं रखता, तफ़सीर पर हदीस को नहीं रखता, हदीस पर फ़िक़्ह की किताब को नहीं रखता, और फ़िक़्ह की किताब के ऊपर तारीख़ की किताबें नहीं रखता, मैं रखने में भी उनके मदारिज का ख़्याल रखता हूं, फिर फ़रमाने लगे कि अक्सर लोग बुख़ारी शरीफ़ का हाशिया पढ़ने के लिये बुख़ारी शरीफ़ किताब को अपना तख़्त बनाते हैं, फ़रमाने लगे कि मैं बुख़ारी शरीफ़ जब बैठ कर पढ़ता हूं तो जब सीधा हाशिया पढ़ लेता हूं और दूसरी तरफ़ पढ़ना होता है तो मैं उठ के खुद दूसरी तरफ़ जाता हूं और वहां से

बैठ के हाशिया पढ़ता हूं, इसी वजह से उनको कसरत के साथ नबी सल्ल0 की ज़ियारत होती थी। एक मर्तबा इस्हाल लग गए, किसी ने कहा कि हज़रत! आप ने खाने में कोई ऐसी चीज़ खा ली होगी? फ़रमाने लगे कि चंद दिन से ज़ियारत नहीं हुई, इस ख़ौफ़ से इस्हाल लग गए कि मेरी किसी कोताही की वजह से इस नेअ़मत से मुझे महरूम न किया गया हो।

हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह0 ने अट्ठारह साल मस्जिदे नबवी में बैठ के हदीस का दर्स दिया, एक एक दिन में ग्यारह ग्यारह अस्बाक़ पढ़ाते थे, एक मर्तबा रोज़ए अनवर खोला गया और आप को रोज़ए अनवर के अंदर जाने का मौक़ा मिला तो नीचे फ़र्श की जो जगह थी वहां जाकर आप ने अपनी रीश से उसको साफ़ करना शुरू कर दिया, तो किसी ने पूछा कि रीश से सफ़ाई कर रहे हैं? तो फ़रमाने लगे कि जिसकी सुन्नत है उसी की हुर्मत पे कुर्बान कर रहा हूं, क्या मुहब्बत उनके दिल में होगी!! اللہ اکبر کبیرا

इमाम मालिक रह0 को किसी ने आकर एक कमान दिखाई और यह कहा कि यह क़मान नबी सल्ल0 के इस्तेमाल में रही है "قَالَ مَالِكٌ" इमाम मालिक रह0 फ़रमाते हैं: "مَا مَسَسْتُ الْقَوْسَ بِيَدِىْ اِلَّا عَلٰى طَهَارَةٍ مُنْذُ بَلَغَنِىْ اَنَّ النَّبِىَّ ﷺ أَخَذَ الْقَوْسَ بِيَدِهٖ" कि जब से मुझे पता चला कि नबी सल्ल0 ने उस कमान को अपने हाथों में पकड़ा है, मैंने उस कमान को कभी बेवज़ू हाथ नहीं लगाया।

हुज़ूर सल्ल0 से मुहब्बत का चौथा तक़ाज़ा:

चौथा तक़ाज़ा "حُبُّ الصَّحَابَةِ وَأَهْلِ بَيْتِهٖ" कि नबी सल्ल0 के अह्ले बैत और आप के सहाबए किराम रज़ि0 से इंसान मुहब्बत करे। नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया: "اَللّٰهَ اَللّٰهَ فِىْ أَصْحَابِىْ لَا تَتَّخِذُوْهُمْ مِنْ بَعْدِىْ غَرَضًا فَمَنْ أَحَبَّهُمْ فَبِحُبِّىْ أَحَبَّهُمْ" जो मेरे

सहाबा से मुहब्बत करेगा, वह मेरी मुहब्बत की वजह से उनसे मुहब्बत करेगा। तो सहाबा रज़ि0 से और अह्ले बैत से मुहब्बत करनी है, क्योंकि "مَنْ أَحَبَّ شَيْئًا أَحَبَّ مَنْ يُحِبُّ" बंदा जब किसी से मुहब्बत करता है तो जो चीज़ें उसको महबूब होती हैं वह उनसे भी मुहब्बत करता है। चुनांचे हदीसे मुबारक में है: "آيَةُ الْإِيمَانِ حُبُّ الْأَنْصَارِ وَآيَةُ النِّفَاقِ بُغْضُهُمْ" कि अंसार से मुहब्बत करना ईमान की अलामत है और उनके साथ बुग्ज़ रखना निफ़ाक़ की अलामत है। अनस रज़ि0 रिवायत करते हैं कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया: "مَثَلُ أَصْحَابِي كَمَثَلِ الْمِلْحِ فِي الطَّعَامِ لَا يَصْلُحُ الطَّعَامُ إِلَّا بِهِ" जैसे खाने के अंदर नमक होती है कि उसके बग़ैर खाना बेज़ाइक़ा होती है, मेरे सहाबा रज़ि0 की मुहब्बत नमक के मानिंद है, इसके बग़ैर इंसान का ईमान बे ज़ाइक़ा होता है। एक और हदीसे मुबारक में नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया: "مَنْ حَفِظَنِي فِي أَصْحَابِي وَرَدَ عَلَى الْحَوْضِ" जो मेरे सहाबा की इज़्ज़त व हुर्मत की हिफ़ाज़त करे उसको चाहिये कि वह हौज़े कौसर पर मेरे पास आए "وَمَنْ لَمْ يَحْفَظْنِي فِي أَصْحَابِي لَمْ يَرِدْ عَلَى الْحَوْضِ" और जो मेरे सहाबा रज़ि0 की इज़्ज़त व हुर्मत की हिफ़ाज़त न करे, उसको चाहिये कि हौज़े कौसर पर मेरे सामने ही न आए।

सय्यदुना हसन रज़ि0 फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया: "لِكُلِّ شَيْءٍ أَسَاسٌ" हर चीज़ की एक बुन्याद होती है "وَأَسَاسُ الْإِسْلَامِ حُبُّ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ" और इस्लाम की बुन्याद नबी सल्ल0 के अस्हाब अह्ले बैत के साथ मुहब्बत करना है। अय्यूब सख़्तियानी रज़ि0 फ़रमाते थे: "مَنْ أَحَبَّ أَبَا بَكْرٍ فَقَدْ أَقَامَ الدِّينَ" जिसने अबू बक्र से मुहब्बत की उसने दीन को क़ाइम कर लिया "وَمَنْ أَحَبَّ عُمَرَ فَقَدْ أَوْضَحَ السَّبِيلَ" जिस ने उमर से

मुहब्बत की उसके ऊपर रास्ते वाज़ेह हो गया "وَمَنْ أَحَبَّ عُثْمَانَ فَقَدِ اسْتَضَاءَ بِنُورِ اللّٰه" जिसन उस्मान से मुहब्बत की उसने अल्लाह के नूर से नूर पा लिया "وَمَنْ أَحَبَّ عَلِيًّا" और जिसने अली से मुहब्बत की "فَقَدْ أَخَذَ بِالْعُروةِ الْوُثْقٰى" उसने मज़बूत रस्सी को पकड़ लिया "وَمَنْ أَحْسَنَ الثَّنَاءَ عَلٰى أَصْحَابِ محمد ﷺ" और जो शख़्स सहाबा किराम की खूब तारीफ़ करे "فَقَدْ بَرِءَ مِنَ النِّفَاقِ" वह शख़्स निफ़ाक़ से बरी हो गया। रिज़वानल्लाहि अलैहिमु अजमईन

हुज़ूर सल्ल0 से मुहब्बत का पांचवां तक़ाज़ाः

पांचवां तक़ाज़ा "الاقتداءُ بِه" कि इंसान नबी सल्ल0 के साथ मुहब्बत करे तो उसका सबूत यह है कि अब वह नबी सल्ल0 की सुन्नत की पैरवी करे। अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 फ़रमाते हैं:

تَعْصِى الْإِلٰهَ وأَنْتَ تَزْعَمُ حُبَّهٗ   هٰذا لَعمرِىْ فِى الْقِياسِ بَدِيع
لَو كَانَ حُبُّكَ صَادِقًا لَأَطَعْتَهٗ   اِنَّ الْمُحِبَّ لِمَنْ يُحِب مُطِيْع

कि अगर तू मुहब्बत में सच्चा होता तो इताअत करता, इसलिये कि मुहिब्ब जिससे मुहब्बत करता है उसकी इताअत करता है।

सहाबए किराम रज़ि0 में हुज़ूर सल्ल0 की मुकम्मल इताअत के चंद नमूने

सहाबा रज़ि0 इताअत करने में इतने कामिल थे कि इंसान हैरान होता है, चुनांचे इब्ने उमर रज़ि0 उम्रे और हज के सफ़र पे जा रहे हैं, रास्ते में एक जगह सवारी खड़ी की, सवारी से नीचे उतरे और क़रीब में दरख़्तों की जगह थी, वहां पर गए और इस तरह बैठे कि जैसे क़ज़ाए हाजत के लिये इंसान बैठता है, मगर फ़ारिग़ नहीं हुए, वैसे ही उठ के वापस आए और सफ़र शुरू कर दिया, रुफ़क़ाए सफ़र ने पूछा कि हज़रत! अगर हाजत नहीं थी तो आप खुद भी रुके, हमारा भी वक़्त लगवाया? तो फ़रमाया कि मुझे ज़रूरत तो नहीं थी, मगर एक

मर्तबा नबी सल्ल0 के साथ सफ़र करते हुए मैंने देखा कि मेरे आक़ा सल्ल0 यहां रुके और क़ज़ाए हाजत के लिये यहां आकर बैठे, अगर्चे ज़रूरत नहीं थी, लेकिन मेरा जी चाहा कि मैं वही अमल करूं जो मेरे आक़ा सल्ल0 ने किया, क्या वालिहाना मुहब्बत थी उनके अंदर!!

एक सहाबी रज़ि0 के हालाते ज़िंदगी में लिखा है कि वह अफ़रीक़न मुल्क के थे, जिनके बाल आम तौर पर Cruel (काफ़ी सख़्त) होते हैं, सख़्त होते हैं, तो उनकी मांग नहीं निकलती थी, जबकि नबी सल्ल0 दर्मियान में से मांग निकालते थे, सर्दी का मौसम था, एक दिन वह आग सैंक रहे थे, उनके पास लोहे की कोई राड थी, जिससे वह आग को ठीक कर रहे थे, वह गर्म गर्म उन्होंने यहां सर पर फैर ली, तो सर की जिल्द जली, ज़ख़्म बन गया, लोगों ने पूछा कि आप ने यह क्या किया? ख़्वाह मख़्वाह आपने अपने आप को इतनी तकलीफ़ दी? तो कहने लगे कि मेरी तकलीफ़ तो ख़त्म हो गई, मगर इस बात की ख़ुशी बाक़ी है कि अब देखने से मेरे सर के दर्मियान मांग नज़र आएगी, मुझे अपने आक़ा सल्ल0 से मुशाबहत हासिल हो गई।

सय्यदुना हुज़ैफ़ा रज़ि0 ईरान फ़तह होने के बाद जब वहां तशरीफ़ लाए तो दस्तरख़्वान पे लुक़्मा गिरा और उन्होंने उठा के खा लिया, साथ वाले ने कहा कि यहां के लोग इसको मअ़यूब समझते हैं, तो देखिये उन्होंने क्या आशिक़ाना जवाब दिया, फ़रमायाः "أَأَتْرُكُ سُنَّةَ حَبِيْبِي لِهٰؤُلَاءِ الْحُمَقَاءِ" इन अहमक़ों की ख़ातिर क्या मैं अपने हबीब सल्ल0 की सुन्नत को छोड़ दूंगा? इससे पता चलता है कि उनके दिल में सुन्नत की क्या अज़्मत हुआ करती थी, बस पता चलने की देर होती थी कि यह नबी सल्ल0 की सुन्नत है।

ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी का वाक़िआ है, जब बारिश होती तो मस्जिदे

नबवी के सिहन में पानी भर जाता था, इसकी वजह यह थी कि इब्ने अब्बास रज़ि0 का घर करीब था और उनकी छत का परनाला मस्जिदे नबवी के सिहन में आता था, तो सारा पानी मस्जिद के सिहन में आने की वजह से कीचड़ हो जाता, लोगों को तकलीफ़ होती, चुनांचे सय्यदुना उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने जब देखा कि सब नमाज़ियों को तकलीफ़ होती है तो उन्होंने हुक्म दिया कि इस परनाला को यहां से हटा दिया जाए, बड़े फ़ाइदे की ख़ातिर छोटे नुक़्सान उठा लेने चाहियें, यह शरीअ़त का उसूल है, अब जब इब्ने अब्बास रज़ि0 को पता चला तो उन्होंने इब्ने कअ़ब रज़ि0 की अदालत में मुक़द्दमा दाइर कर दिया, इब्ने कअ़ब रज़ि0 ने बुला लिया, आप देखिये कि अमीरुल मोमिनीन भी वहीं खड़े हैं और इब्ने अब्बास रज़ि0 भी वहां खड़े हैं, पूछा क्या बात है? उमर रज़ि0 ने बताया कि लोगों के उमूमी फ़ाइदे की ख़ातिर मैंने इस तरह का हुक्म दिया है, क्योंकि मैं लोगों को तकलीफ़ से बचाने का ज़िम्मेदार हूं।

इब्ने अब्बास रज़ि0 ने जवाब में कहा कि आप की बात अपनी जगह, मस्ला यह है कि अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने अपने मुबारक हाथों से उस परनाला को यहां लगाया था, मेरा जी चाहता है कि मैं इस परनाला को उसी जगह देखूं, इतना सुनना था कि उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने कहा इब्ने कअ़ब! आप फ़ैसला कर दीजिये कि परनाला अपनी जगह पर लगेगा, मगर फ़र्क़ यह होगा कि अब उमर फ़ारूक़ वहां जाएगा और रुकूअ़ की हालत में खड़ा होगा और इब्ने अब्बास मेरी कमर पर सवार होकर उस परनाला को फ़िट करें, जिसको मेरे आक़ा सल्ल0 ने फ़िट किया था, चुनांचे ऐसे ही हुआ, इब्ने अब्बास रज़ि0 ने परनाला लगाया और नीचे उतर के कहा कि बस मैंने उसको एक दफ़्आ देख लिया, अब मैं पूरा मकान मस्जिदे नबवी के अंदर

शामिल कर देता हूं, क्या मुहब्बत थी उन सहाबा रज़ि० को, नबी सल्ल० की एक एक सुन्नत के आशिक़ थे।

इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल० ने एक मर्तबा फ़रमाया कि फ़लां दरवाज़ा अगर औरतों के लिये Separate, मख़्सूस कर दिया जाए तो बहुत अच्छा होगा, इसको बाबुन्निसा कहा जाता था, फ़रमाते हैं कि सल्ल० का यह फ़रमान सुनने के बाद मैं पूरी ज़िंदगी उस बाबुन्निसा से कभी मस्जिद में दाख़िल नहीं हुआ, क्योंकि मेरे आक़ा सल्ल० ने फ़रमा दिया कि यह औरतों के लिये अलग कर दिया जाए।

एक सहाबी रज़ि० आते हैं, एक पांव मस्जिद के अंदर है, एक पांव दरवाज़े के बाहर है, उस वक़्त जो लोग मस्जिद में थे नबी सल्ल० उनको फ़रमाते हैं कि "اِجْلِسُوْا" और यह लफ़्ज़ उनके कान में पड़ गया और वह सहाबी रज़ि० वहीं बैठ गए, बाद में आने वाले ने पूछा कि यह कोई बैठने की जगह है? एक पांव अंदर एक पांव बाहर दहलीज़ पे? तो कहने लगे कि मेरा एक पांव अंदर था, इतने में मेरे आक़ा सल्ल० का फ़रमान कान में पड़ा "اِجْلِسُوْا" अब मेरे लिये तामील के सिवा चारा न था। उन सहाबा के दिलों में सुन्नत की कितनी वक़अत और अज़्मत थी कि इसलिये एक एक सुन्नत पर बड़े एहतिमाम के साथ अमल करते थे।

हमारे क़रीब के ज़माने में अकाबिर उलमाए देवबंद अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने यह शान अता फ़रमाई, वह भी सुन्नत के आशिक़ थे, चुनांचे अकाबिर उलमाए देवबंद में से एक एक की ज़िंदगी को पढ़ लीजिये, आप को उनका ज़ाहिर सुन्नत से बिल्कुल मुज़य्यन नज़र आएगा, हर छोटी बड़ी सुन्नत के ऊपर अमल करना, यह उनका

महबूब मशग़ला होता था, वह लुत्फ़ उठाते थे, जैसे बच्चा कोई लफ़्ज़ बोले मसलन दूध को दुद्धू कह दे तो मां भी कहती हैः अभी दुद्धू देती हूं, हालांकि वह दूध कह सकती है, मगर नहीं, उसको बच्चे से प्यार है, बच्चे ने जिस लफ़्ज़ को जैसे कहा मुहब्बत तक़ाज़ा करती है कि उस लफ़्ज़ को वैसे ही बोलें, सहाबा रज़ि0 का बिल्कुल यही हाल था और हमारे अकाबिर उलमाए देवबंद का भी यही हाल था, एक एक अमल में नबी सल्ल0 की सुन्नत पर अमल किया करते थे।

हज़रत मौलाना क़ासिम नानूतवी रह0 के बारे में फ़िरंगी ने वारंट जारी कर दिये कि उनको गिरफ़्तार करके फांसी पे लटका दो, हज़रत को इत्तिला मिली तो हज़रत रूपोश हो गए, तीन दिन के बाद फिर बाहर नज़र आने लगे, किसी ने कहा कि आप की तो फांसी का हुक्म है, ज़िंदगी का मस्ला है, बेहतर है कि आप छिप जाएं तो हज़रत नानूतवी रह0 ने जवाब दिया कि मैंने नबी सल्ल0 की मुबारक ज़िंदगी को देखा, मुझे ग़ारे सौर की तीन रातें रूपोशी की हालत में गुज़ारती हुई सुन्नत नज़र आई, मैंने उस सुन्नत पर अमल कर लिया, मैं बाहर आ गया हूं, अब अगर कोई मुझे फांसी भी चढ़ा देगा तो मैं चढ़ने को तैयार हूं। الله اكبر كبيرا

हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह0 की आख़िरी उम्र में मोतिया बिंद आ जाने की वजह से बीनाई चली गई थी, मगर हज़रत उन दिनों भी बाक़ाइदगी के साथ सुर्मा इस्तेमाल करते थे, आम लोग यह समझते हैं कि बीनाई तेज़ करने के लिये सुर्मा लगाया जाता है, चुनांचे एक आदमी ने कहा कि हज़रत! आप की तो बीनाई भी नहीं और आप सुर्मा लगाते हैं? फ़रमाया कि मैं बीनाई की नियत से नहीं, अपने आक़ा सल्ल0 की सुन्नत पर अमल करने की नियत से रोज़ाना सुर्मा लगाता हूं।

हुजूर सल्ल0 से मुहब्बत का छटा तक़ाज़ाः

छटा तक़ाज़ा "بُغْضُ مَنْ أَبْغَضَ اللّٰه رسولَهٗ" जो बंदा अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 से बुग्ज़ रखे तो दिल में उनके ख़िलाफ़ बुग्ज़ रखना, मुहब्बत करने वालों से मुहब्बत करना। इसकी आसान सी मिसाल है कि जब किसी औरत के यहां बेटा हो तो उसकी मुहब्बत के पैमाने बदल जाते हैं, पहले उसकी मुहब्बत का और हिसाब था, अब उसकी मुहब्बत बच्चे की बुन्याद पे है, जो बच्चे से मुहब्बत करे, उससे वह मुहब्बत करती है, जो बच्चे से नफ़रत करे, उससे वह नफ़रत करने लग जाती है, तो मां अगर बच्चे की बजह से नफ़रत करती है या मुहब्बत करती है तो फिर मोमिन का भी यही मुआमला है, जो नबी सल्ल0 से मुहब्बत करे, उनके साथ मुहब्बत का तअल्लुक़ रखना और जो नफ़रत करे, उनके साथ नफ़रत का मुआमला करना। उम्मे हबीबा रज़ि0 नबी सल्ल0 की ज़ौजा हैं, उनके वालिद मक्का मुकर्रमा से कोई पैग़ाम लेकर आते हैं, सोचने लगे कि चलो मैं बेटी के यहां उतर जाऊं, वह आए, जब बिस्तर पर बैठने लगे तो उम्मे हबीब रज़ि0 ने फ़ौरन बिस्तर को लपेट दिया, तो बाप ने कहाः बेटी! बाप के आने पे बिस्तर बिछाया करते हैं, बिस्तर लपेटा नहीं करते, तुमने यह क्या किया? तो उन्होंने जवाब दिया आप की बात अपनी जगह सच्ची है, मगर मुझे ज़ेब नहीं देता कि यह मेरे आक़ा सल्ल0 का बिस्तर हो और उसके ऊपर एक मुश्रिक आकर बैठ जाए।

हुजूर सल्ल0 से मुहब्बत का सातवां तक़ाज़ाः

सातवां तक़ाज़ा "كَثْرَةُ ذِكْرِهٖ" जब मुहब्बत होती है, तो इंसान याद भी बहुत कसरत से करता है, हर वक़्त यही ख़्याल रहता है "مَنْ أَحَبَّ شَيْئًا أَكْثَرَ ذِكْرَهٗ" जो जिस से मुहब्बत करता है, उसकी दलील क़ुर्आने अज़ीमुश्शान में है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को नबी

सल्ल0 के साथ मुहब्बत है तो कुर्आन मजीद में देखिये कि अल्लाह ने अपने हबीब सल्ल0 का कितना तज़किरा किया है, जगह जगह तज़किरा नज़र आता है, बल्कि हज़रत नानूतवी रह0 फ़रमाते थे कि एक एक आयत नबी सल्ल0 की शान बतलाती है, इतनी कसरत के साथ अल्लाह के हबीब सल्ल0 का तज़किरा है, मालूम हुआ कि जब मुहब्बत होती है तो इंसान कसरत से याद करता है।

सय्यदुना सिद्दीक़े अक्बर रज़ि0 के बारे में आता है कि जब ख़लीफ़ा बने तो जुम्आ का ख़ुत्बा देने के लिये खड़े हुए और कहाः "سَمِعْتُ رَسولَ اللّٰهِ ﷺ العَامَ الاوَّلَ فَبَكىٰ" कि मैंने नबी सल्ल0 से पिछले साल सुना और इतने लफ़्ज़ कहे कि रोना शुरू कर दिये, फिर वह दोबारा आंसू पोंछ के बात शुरू की और फिर रोना शुरू कर दिया, फिर दूसरी मर्तबा आंसू पोंछे और तीसरी मर्तबा बात कही और तीसरी मर्तबा भी रोना शुरू कर दिया, बात बात पे उनकी आंखों से आंसू छलक पड़ते थे, नबी सल्ल0 की याद उनके दिलों को मचला के रख दिया करती थी।

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 बैठे हुए हैं, पांव सो गया, जैसे उठते हुए पांव सो जाता है, सुन्न हो जाता है, तो किसी ने कहा कि "اُذْكُرْ أَحَبَّ النَّاسِ اِلَيْكَ يَزِلْ عَنْكَ" आप को जिससे सबसे ज़्यादा मुहब्बत है उसका नाम लीजिये तो यह कैफ़ियत ख़त्म हो जाएगी "فَصَاحَ يَا مُحَمَّدَاهُ فَانْتَشَرَتْ" फ़ौरन कहने लगेः ऐ मुहम्मद सल्ल0, और उसी वक़्त उनका पांव बिल्कुल ठीक हो गया, बेइख़्तियार ज़बान से दो लफ़्ज़ निकला जिससे वाक़ई उनको बहुत मुहब्बत थी।

सहाबा रज़ि0 जब एक दूसरे से मिलते थे तो वह नबी सल्ल0 की बातें इस तरह सुनाते थे जैसे आजकल क़े दौर में लोग मिलते हैं तो एक दूसरे को आईस क्रीम की पेशकश किया करते हैं, उनके

नज़दीक नबी सल्ल0 का तज़किरा करना इस तरह महबूब हुआ करता था, आप सल्ल0 की बातें एक दूसरे को सुनाना उनका महबूब काम हुआ करता था।

हुजूर सल्ल0 से मुहब्बत का आठवां तक़ाज़ाः

आठवीं चीज़ "كَثْرَةُ شَوْقِهٖ اِلٰى لِقَائِهٖ" कि जब नबी सल्ल0 के साथ मुहब्बत है तो उनसे मुलाक़ात की तमन्ना भी होती है, जब भी मुहब्बत हो तो दिल मुलाक़ात करने को चाहता है। सहाबा रज़ि0 की अजीब कैफ़ियत थी, नबी सल्ल0 ने एक बूढ़े मियां को देखा कि वह आते हैं, ख़ामोशी के साथ बैठे रहते हैं, फिर उठ के चले जाते हैं, पूछा कि आपका क्या हाल है? कहाः ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! मैं अपने घर में होता हूं और जब मुझे आप की याद आती है तो मैं आके मजलिस में हाज़िर होकर बैठता हूं, आप के चेहरए अनवर का जी भर के दीदार करता हूं और फिर ख़ामोशी से उठ के वापस चला जाता हूं, मैं आता ही हूं दीदार करने के लिये।

चुनांचे कई सहाबा रज़ि0 थे कि नबी सल्ल0 के पर्दा फ़रमाने के बाद उन्होंने दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! यह आंखें तो थीं आक़ा सल्ल0 के दीदार के लिये, जब उन्होंने पर्दा कर लिया तो अल्लाह हमारी बीनाई को ज़ाइल कर दीजिये। बअ़ज़ सहाबा ने क़समें खाईं हुई थीं कि हम सुब्ह उठेंगे तो सबसे पहले नबी सल्ल0 का दीदार करेंगे, मालूम नहीं उन्होंने क़समें कैसे पूरी की होंगी, इतनी मुहब्बत थी उनको नबी सल्ल0 से।

एक मर्तबा नबी सल्ल0 ने दुआ मांगीः अल्लाह! मुझे मेरे अहिब्बा से जल्दी मिला देना, सौबान रज़ि0 आप के गुलाम, अर्ज़ करने लगेः ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! हम आपके गुलाम हैं, हर वक़्त हाज़िरे ख़िदमत हैं, आप किन के लिये यह दुआ मांग रहे थे कि

अल्लाह! मेरे अहिब्बा से जल्दी मिला देना, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः सौबान! तुम्हारी मुहब्बत बड़ी क़द्र व क़ीमत वाली है, मगर तुमने मेरा दीदार किया, तुमने जिब्रईल अलै0 को उतरते देखा, कुर्आन को उतरते देखा, सौबान! मैं जिनके लिये दुआ कर रहा थ यह वह लोग हैं जो कुर्बे क़यामत में पैदा होंगे, उन्होंने मुझे नहीं देखा होगा, हां उन्होंने अपने उलमा से मेरे तज़किरे सुने होंगे और फ़क़त तज़किरे सुन कर उनको मुझ से इतनी मुहब्बत होगी कि अगर उनको इख़्तियार दिया जाता कि अपनी औलाद बेच कर मेरा दीदार करते तो वह ऐसा कर गुज़रते, मैं उनके लिये दुआ कर रहा हूं कि अल्लाह! मुझे इन अहिब्बा से जल्दी मिला दे।

अबू हुरैरा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल0 ने फ़रमाया "مِنْ أَشَدِّ أُمَّتِى لِى حُبًّا نَاس يَكُونُونَ بَعدِى يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَو رَآنِى بِأَهلِهِ وَمَالِهِ" (मेरे बाद मेरी उम्मत में मुझ से मुहब्बत करने वाले ऐसे भी लोग होंगे जो तमन्ना करेंगे काश मैं अपने घर वालों और अपने मां के बदले आप सल्ल0 का दीदार कर लेता) वाक़ई जिनको मुहब्बत होती है उनका ऐसा ही दस्तूर है।

अब्दह रज़ि0 एक सहाबिया हैं, फ़रमाती हैं कि मेरे वालिद ख़ालिद बिन मअ्दान जब रात को बिस्तर पे सोने के लिये आते तो नबी सल्ल0 और सहाबा को याद करते और कहते कि "هُمْ أَصْلِى وَفَصْلِى وَإِلَيهِمْ يَحْنُو قَلْبِى، طَالَ شَوْقِى إِلَيهِم فَعَجِّلْ رَبِّ قَبْضِى إِلَيهِم" वह मेरे अस्ल और फ़स्ल थे, मेरा दिल उदास है, अल्लाह! जल्दी मेरी रूह को क़ब्ज़ करके मुझे उनके साथ वासिल फ़रमा, इंसान को ऐसी मुहब्बत हो जातीं है।

चुनांचे सय्यदुना उमर रज़ि0 की मुहब्बत का अंदाज़ा लगाइये कि एक मर्तबा रात का वक़्त है और वह मदीना तय्यबा की गलियों में

राउंड कर रहे थे, एक दरवाज़े पर उनको थोड़ी आवाज़ आई, सुनने के लिये खड़े हो गए, महसूस हुआ कि कोई बड़ी उम्र की औरत है और वह नबी सल्ल0 की मुहब्बत में अशआर पढ़ रही है, सुनते रहे सुनते रहे, दिल मचल उठा, जब बूढ़ी औरत ने अशआर मुकम्मल किये तो उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने दरवाज़ा खटखटाया, बूढ़ी औरत ने पूछा कि किसने दरवाज़ा खटखटाया? जवाब दिया उमर फ़ारूक़, बोलीः अमीरुल मोमिनीन! रात के इस वक़्त में मुझ बुढ़िया के दरवाज़े पर आप कैसे आए? फ़रमाने लगे कि मैं एक तमन्ना और फ़रियाद ले के आया हूं, तुम इसको पूरा कर सकती हो, बूढ़ी औरत ने दरवाज़ा खोला, कहा कि अमीरुल मोमिनीन! तशरीफ़ लाइये, उमर फ़ारूक़ रज़ि0 दाख़िल होते हैं और ज़मीन पर बैठ जाते हैं, बुढ़िया कहती है बिस्तर पे बैठें, फ़रमाते हैं, जब तक आप मेरी तमन्ना न पूरी करेंगी मैं बिस्तर पर नहीं बैठूंगा, उसने कहाः मैं बूढ़ी औरत, किस तमन्ना को पूरा कर सकती हूं? तो कहा कि आप अभी नबी सल्ल0 की मुहब्बत में जो अशआर पढ़ रही थी, उसके आख़िरी शेअ़र के मअ़नी यह थे कि अल्लाह! मुझे जन्नत में अपने महबूब सल्ल0 के साथ इकट्ठा कर देना, मेरी फ़रियाद है कि अपने शेअ़र में थोड़ी सी तरमीम करके यूं पढ़ दोः अल्लाह! मुझे और उमर फ़ारूक़ को जन्नत में अपने महबूब के साथ इकट्ठा कर देना, क्या मुहब्बत थी उनके दिलों में नबी सल्ल0 की!! अल्लाहु अक्बर कबीरा

कहते हैं कि महबूब सल्ल0 के पर्दा फ़रमाने के बाद बिलाल रज़ि0 ने सिर्फ़ दो मर्तबा बाद में अज़ान दी, एक जब बैतुल मुक़द्दस फ़तह हुआ तो उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने कहा कि जी चाहता है कि आप नबी सल्ल0 के मुअज़्ज़िन, आप इस क़िब्ला में भी वही अज़ान सुनाएं, तो अमीरुल मोमिनीन के हुक्म की वजह से वहां अज़ान दी,

और दूसरा मौक़ा जब सय्यदुना बिलाल रज़ि0 मुल्के शाम में एक रात अपने घर में सोए हुए थे, नबी सल्ल0 का दीदार हुआ, आप सल्ल0 ने फ़रमायाः बिलाल! सर्द मुहरी है, इतना अर्सा हुआ मुलाक़ात को नहीं आते? उसी वक़्त उठे, बीवी से कहा कि फ़ौरन तैयारी करो, चुनांचे सफ़र पे चल पड़े, अल्लाह की शान कि वह बिलआख़िर मदीना तय्यबा पहुंचे, नबी सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िरी दी, सलाम पढ़ा, मुवाजह शरीफ़ पर नमाज़ का वक़्त हो गया, नमाज़ के वक़्त सहाबा रज़ि0 ने कहा कि आप अज़ान दें, फ़रमाने लगे कि जब मैं अज़ान देता था और जब "أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّداً رسولُ الله" कहता था तो आक़ा सल्ल0 के चेहरए अनवर का दीदार करता था, अब अगर पढूंगा और मैं दीदार न कर सकूंगा तो मुझसे यह बर्दाश्त नहीं हो सकेगा, लिहाज़ा मैं अज़ान नहीं देता, सहाबा से तो इंकार कर दिया, इतने में शहज़ादे हसन व हुसैन रज़ि0 आ गया, उन्होंने कहा कि जी चाहता है कि नाना जान के ज़माने की अज़ान सुनें, अब उनकी फ़रमाइश ऐसी थी कि इंकार की गुंजाइश नहीं थी, चुनांचे बिलाल रज़ि0 अज़ान देने मस्जिदे नबवी में खड़े हुए, वह आवाज़ जिसको सहाबा रज़ि0 सुनते थे और आक़ा सल्ल0 का दीदार करते थे, आज वही अज़ान की आवाज़ आ रही थी, सहाबा हैरान हैं, महबूब की याद ने दिलों को तड़पा के रख दिया, मर्द भी रो रहे हैं, क़रीब के घरों में आवाज़ गई तो औरतें भी हैरान हुईं कि यह आवाज़ कहां से आ गई, उन्होंने अपने सरों पे बुर्क़े लिये चादरें लीं और वह भी आ गईं, अब औरतें गली में उस आवाज़ को सुनके रो रही हैं, मर्द मस्जिद में रो रहे हैं और जब अज़ान ख़त्म हुई तो अजीब मुआमला उस वक़्त हुआ, एक औरत के बेटे ने अपनी मां से सवाल किया, अम्मां!! इतने अर्से के बाद बिलाल रज़ि0 तो वापस आ गए, यह

बताएं कि नबी सल्ल0 कब वापस आएंगे? सहाबा रज़ि0 इस तरह याद करते थे और इस तरह रोया करते थे। जब बिलाल रज़ि0 की वफ़ात का वक़्त हुआ तो उनकी बीवी ने कहा: "واحزناه" फ़ौरन कहने लगे: "واطرباه غدا ألقى محمد أو حزبه" कितनी ख़ुशी की बात है कल नबी सल्ल0 और उनके सहाबा रज़ि0 के साथ मेरी मुलाक़ात हो जाएगी।

हुज़ूर सल्ल0 से मुहब्बत का नवां तक़ाज़ा:

नवां तक़ाज़ा "الشفقة على أمته والسعي في مصالحهم كما كان ﷺ بالمؤمنين رؤفا رحيما" मुहब्बत का एक तक़ाज़ा यह भी है कि नबी सल्ल0 को उम्मत के साथ मुहब्बत थी, आप उम्मत के लिये रऊफ़ुर्रहीम थे, लिहाज़ा राफ़्त और रहमत उस बंदे के दिल में भी होनी चाहिये जो नबी सल्ल0 के साथ मुहब्बत करता है। इसका नतीजा यह होगा कि दुन्यावी कामों में भी हमें लोगों के काम आना चाहिये और नेकी की तलक़ीन करने में उनका ख़्याल रखना चाहिये, वह ग़म जो नबी सल्ल0 के सीनए अनवर में था, जिसकी वजह से आप रातों को रोते थे, इतनी लम्बी तहज्जुद पढ़ते थे "حتى تتورم قدماه" कि क़दमैन मुबारक मुतवर्रिम हो जाते थे। आइशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा अल्लाह के बनी सल्ल0 ने इतना लम्बा सज्दा किया कि मेरे दिल में शक आने लगा कि पता नहीं कहीं रूह ही न परवाज़ कर गई हो, मैं उठी और मैंने पांव के अंगूठे को हिलाया, तब मुझे अंदाज़ा हुआ कि नहीं, आप सल्ल0 की रूह अभी मौजूद है, इतना लम्बा सज्दा उम्मत के लिये फ़रमाते थे, क्योंकि आप को मुहब्बत थी। चुनांचे नबी सल्ल0 का वह ग़म जो आज के दौर में अपने दिल में रखेगा और अम्र बिलमअ़रूफ़ और नह्य अनिल मुन्कर के लिये ज़िंदगी को वक़्फ़ करेगा, अल्लाह के नबी सल्ल0 का वह

महबूब बनेगा।

ज़रा सुनिये! एक अजीब हदीसे मुबारक है, अनस रज़ि0 इसके रावी हैं फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया: "أَلَا أُخْبِرُكُمْ عَنْ أَقْوَامٍ لَيْسُوا بِأَنْبِيَاءَ وَلَا شُهَدَاءَ" क्या मैं तुम्हें ऐसे लोगों के बारे में न बताऊं जो न अंबिया होंगे, न वह शुहदा होंगे "يَغْبِطُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ الْأَنْبِيَاءُ وَالشُّهَدَاءُ" क़्यामत के दिन उन पर अंबिया और शुहदा रश्क कर रहे होंगे, सुब्हानल्लाह! क्या शान वाले लोग हैं कि वह अंबिया नहीं, शुहदा नहीं, मगर उनको अल्लाह वह मक़ाम देंगे, वह इक्राम अता करेंगे कि अंबिया और शुहदा उनके ऊपर रश्क करेंगे "بِمَنَازِلِهِمْ مِنَ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ عَلٰى مَنَابِرَ مِنْ نُوْرٍ" नूर के मिंबरों पर होंगे, "يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهَا، قَالُوْا: وَمَنْ هُمْ" सहाबा ने पूछा: ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0! वह कौन होंगे? "قَالَ" नबी सल्ल0 ने फ़रमाया: "الَّذِيْنَ يُحَبِّبُوْنَ عِبَادَ اللّٰهِ إِلَى اللّٰهِ وَيُحَبِّبُوْنَ اللّٰهَ إِلٰى عِبَادِهٖ وَهُمْ يَمْشُوْنَ عَلَى الْأَرْضِ نُصَحَاءَ" कि जो बंदों को अल्लाह का महबूब बनाते हैं, और अल्लाह को बंदों का महबूब बनाते हैं, और वह दुनिया में लोगों को नसीहत की बात करने वाले हैं, सहाबा रज़ि0 ने पूछा: ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! यह तो समझ में आता है कि अल्लाह को बंदों का महबूब बनाते हैं, यह बात समझ में नहीं आती कि बंदों को अल्लाह का महबूब बनाते हैं? नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि वह लोगों को नसीहत करते हैं, गुनाहों से रोकते हैं, "يَأْمُرُوْنَهُمْ بِحُبِّ اللّٰهِ وَيَنْهَوْنَهُمْ عَمَّا كَرِهَ اللّٰهُ فَإِذَا أَطَاعُوْهُمْ أَحَبَّهُمُ اللّٰهُ" जब बंदे गुनाह छोड़ देते हैं और अल्लाह की फ़रमां बरदारी करते हैं तो वह अल्लाह के महबूब बन जाया करते हैं। अब सोचिये कि नबी सल्ल0 ने जिन लोगों के बारे में यह बतलाया, वह आज उम्मत में हमें अपनी आंखों से नज़र आ सकते हैं।

ज़रा हालाते ज़िंदगी पढ़ कर देखिये, उस अकाबिरे उलमाए देवबंद की जमाअत में आपको एक कमज़ोर सी शख़्सियत मिलेगी, एक कमज़ोर सी शख़्सियत लोगों के दरवाज़े पर जा रही है, लोगो मैं रोटी का सवाल करने नहीं आया, मैं तुम से ज़िंदगी का सवाल करने आया हूं, मैं तुम से वक़्त का सवाल करने आया हूं, कौन हैं? मेरा नाम "इलयास" है, मेरे दिल में अल्लाह ने वही मुहब्बत डाली है, वही ग़म डाला है। मैं सलाम करता हूं उस जमाअत की अज़मत को कि जिन्होंने नबी सल्ल0 के ग़म को अपना ग़म बनाया, आज दुनिया के सैकड़ों मुमालिक के अंदर जो अल्लाह के बंदों को अल्लाह से मिलाते फिर रहे हैं, यह नबी सल्ल0 के महबूब बंदे ज़िंदगियां लगा देते हैं, साल लगा देते हैं, अपना माल अपनी जान अपना सब कुछ सिर्फ़ इसलिये कि अल्लाह से अल्लाह के बंदे जुड़ जाएं, काफ़िर होते हैं उनको मुसलमान बना लेते हैं, जो मुसलमान ग़फ़लत में पड़े होते हैं, उनको जगा देते हैं, उनको अल्लाह से वासिल कर देते हैं, यह नेअ़मत भी अल्लाह ने अकाबिर उलमाए देवबंद को अता फ़रमाई कि नबी सल्ल0 की इस नेअ़मत के वारिस भी यही बने। वह उलमा जो वअ़ज़ व नसीहत का काम करते हैं, वह मशाइख़, वह दाई हज़रात जो वअ़ज़ व नसीहत का काम करते हैं, वह सारे के सारे इसी ख़ुशख़बरी के अंदर शामिल हैं, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला उनसे मुहब्बत फ़रमाते हैं जो अल्लाह के बंदों को अल्लाह का महबूब बनाते हैं और अल्लाह को बंदों का महबूब बना देते हैं।

सच्ची बात तो यह है कि जितनी उम्मत के साथ शफ़क़त नबी सल्ल0 को थी और जितनी मुहब्बत नबी सल्ल0 को थी, ऐसी मुहब्बत का कोई तसव्वुर भी नहीं कर सकता, आप ज़रा ग़ौर कीजिये कि दुनिया में जितनी मुहब्बतें हैं सब ग़र्ज़ वाली मुहब्बतें हैं, मियां

बीवी की मुहब्बत ग़र्ज़ वाली, बीवी को ख़ाविंद की ज़रूरत है ख़ाविंद को बीवी की ज़रूरत है, औलाद मां बाप की मुहबबत ग़र्ज़ वाली, औलाद को मां बाप की ज़रूरत है, मां बाप को औलाद की ज़रूरत है, भाई भाई की मुहब्बत भी ग़र्ज़ वाली, एक दूसरे के Help (तआवुन) की ज़रूरत है, पड़ोसी पड़ोसी की मुहब्बत भी ग़र्ज़ की बुन्याद पे, एक दूसरे की ज़रूरियात होती हैं, हत्ता कि अगर उस्ताज़ शागिर्द की मुहब्बतें हैं तो वह भी ग़र्ज़ वाली, क्योंकि उस्ताज़ पढ़ा रहा है ताकि मुझसे अल्लाह राज़ी हो जाएंगे और शागिर्द पढ़ रहा है ताकि मुझे इल्म मिल जाए, हत्ता कि पीर मुरीद की मुहब्बत भी ग़र्ज़ की मुहब्बत है, क्योंकि मुरीद के दिल में है कि मेरी तरबियत होगी और पीर के दिल में है कि अल्लाह राज़ी हो जाएंगे, तो मालूम हुआ कि मुहब्बत, जैसी भी हो, है तो ग़र्ज़ वाली।

एक मर्तबा ज़ह्न में सोचा कि कोई मुहब्बत दुनिया में बेग़र्ज़ है? तो ज़ह्न ने जवाब दिया कि मख़्लूक़ की मुहब्बत बेग़र्ज़ नहीं हो सकती, कोई न कोई ग़र्ज़ तो लगी ही होगी, फिर सोचा कि कोई तो मुहब्बत बेग़र्ज़ होगी, ज़ह्न ने कहा अगर दुनिया में बेग़र्ज़ मुहब्बत देखनी है तो ज़रा चौदह सौ साल पीछे चले जाओ, रात का अंधेरा होगा तुम एक हस्ती को देखोगे, मुसल्ले के ऊपर सज्दे में है "يَا رَبِّ أُمَّتِي يَا رَبِّ أُمَّتِي" कह रहा है, क्या उस हस्ती को अपने दरजात के बढ़ने की तम्अ़ थी? नहीं, उनको पहले ही अल्लाह ने फ़रमा दिया था: "لِيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ" उनको अल्लाह ने पहले बतला दिया था कि: "وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ" मेरे महबूब! तुझे इतना अता करूंगा कि तू बस बस करने लग जाएगा, फिर वह हस्ती क्यों रो रही है? इतना लम्बा सज्दा कि बीवी पांव हिला के देखती है कि अभी ज़िंदगी तो है या नहीं, यह क्यों रो रहे

हैं? यह उम्मत के ऊपर शफ़क़त की वजह से रो रहे हैं। नबी सल्ल0 को उम्मत के साथ ऐसी मुहब्बत थी इसलिये क़्यामत के दिन अंबिया भी नफ़्सी नफ़्सी पुकारते होंगे, एक अल्लाह के हबीब सल्ल0 होंगे जो उस दिन भी उम्मती उम्मती फ़रमा रहे होंगे, अल्लाह के हबीब सल्ल0 को इस क़दर उम्मत के साथ शफ़क़त व मुहब्बत थी।

हुज़ूर सल्ल0 से मुहब्बत का दसवां तक़ाज़ा

नबी सल्ल0 के साथ मुहब्बत है तो फिर इसका एक तक़ाज़ा यह भी है कि "كَثْرَةُ الصَّلوٰةِ والسَّلامِ عَلَيهِ" नबी सल्ल0 के ऊपर कसरत से सलातु सलाम पढ़ना, दरूद शरीफ़ पढ़ना, चुनांचे क़ुर्आन मजीद में अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं: "اِنَّ اللّٰهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِي يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وسَلِّمُوْا تَسْلِيمًا" हम भी कसरत से दरूद शरीफ़ पढ़ें। اَللّٰهُمَّ صَلِّ على سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

सय्यदुल क़ुर्रा इब्ने कअ़ब रज़ि0 नबी सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए, कहाः ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! मैं आप पर अपने वक़्त का तीसरा हिस्सा दरूद शरीफ़ पढ़ने में लगा दूं? नबी सल्ल0 ने फ़रमाया तू ज़्यादा पढ़ेगा तो तुझे ज़्यादा फ़ाइदा होगा, फिर पूछाः ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! मैं दो तिहाई हिस्सा दरूद शरीफ़ पढ़ा करूं? नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः ज़्यादा पढ़ेगा तो ज़्यादा नफ़ा होगा, उन्होंने कहाः ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! फिर तो मैं पूरा वक़्त ही आप पर दरूद शरीफ़ पढूंगा, قَال नबी सल्ल0 ने इसके जवाब में फ़रमाया कि "اِذاً يُغفَرُ ذَنْبُكَ وتُكفَى هَمُّكَ" अगर तू हर वक़्त मुझ पर दरूद शरीफ़ पढ़ेगा तो अल्लाह तेरे सब गुनाहों को मुआफ़ कर देंगे और तेरे तमाम ग़मों को अल्लाह ख़त्म फ़रमा देंगे।

उमर बिन ख़त्ताब रज़ि0 फ़रमाते थेः "اَلدُّعاءُ والصَّلوٰةُ معلّق

"بيـنَ السَّـمَـاءِ وَالْاَرْضِ" दुआ और नमाज़ आसमान और ज़मीन के दर्मियान मुअल्लिक़ रहती हैं "فَلَا يَـصْـعَـدُ اِلَـى الـلّٰهِ مِنه شيىء حَتّٰى يُـصلّٰى على النبى ﷺ" यह उस वक़्त तक क़बूलियत के लिये ऊपर नहीं जा पाती, जब तक कि उनमें नबी सल्ल० पर दरूद शरीफ़ न पढ़ा गया हो। इसी लिये हर दुआ से पहले भी दरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये, और बअ्द में भी पढ़ना चाहिये। नबी सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया: "الـدُّعَـاءُ بيـنَ الـصَّـلـوتيـنِ لا يُـرَدُّ" कि दरूद शरीफ़ के दर्मियान जो दुआ मांगी जाती है वह दुआ रद्द नहीं की जाती। एक हदीसे मुबारक में नबी सल्ल० ने फ़रमाया: "مَـنْ صَـلّٰى عَـلَـيَّ فِى كِتَـابٍ لَـمْ تَزِلِ الْمَلٰئِكَةُ تَسْتغفِرُ لَهٗ مَا دَامَ اسْمِىُ فِىْ ذٰلِك الْكِتَاب" अगर कोई बंदा लिख रहा हो और लिखते हुए नबी सल्ल० का नाम इस्मे गिरामी आ जाए और वह नाम नामी इस्मे गिरामी के साथ "सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम" लिखे तो नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि जब तक इस किताब में मेरे नाम के साथ यह दरूद शरीफ़ लिखा रहेगा, उस वक़्त तक एक फ़रिशता उसके लिये इस्तिग़फ़ार करता रहेगा।

इब्ने मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया: "اَوْلَى النَّاسِ بِىْ يَومَ الْقِيٰمَةِ أَكْثَرُهُمْ عَلَيَّ صَلوٰةً" कि जो बंदा सबसे ज़्यादा मुझ पर दरूद शरीफ़ पढ़ता होगा, क़्यामत के दिन सबसे ज़्यादा मेरे क़रीब वही बंदा होगा। अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने एक अजीब बात फ़रमाई, फ़रमाते थे कि "الصَّلوٰةُ عَلَى النَّبِيِّ أَمْحَقُ لِلذُّنُوبِ مِنَ الْمَـاءِ الْبَارِدِ لِلنَّار" कि जिस तरह ठंडा पानी आग को जल्दी बुझा देता है, दरूद शरीफ़ का पढ़ना इंसान के गुनाहों को इससे भी ज़्यादा जल्दी बुझा देता है।

अबू हुरैरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया: "مَـنْ

"نَسِیَ الصَّلٰوۃَ عَلَیَّ نَسِیَ طَرِیْقَ الْجَنَّۃ" जो मुझ पर दरूद शरीफ़ पढ़ना भूल गया, वह जन्नत का रास्ता ही भूल गया। अली रज़ि0 ने एक ख़ूबसूरत बात कही, फ़रमाते थेः "لَوْ لا ماذَكَرَ اللّٰهُ ورسولُه فِی فَضْلِ التَّسبِیحِ والتکبیرِ والتحلیلِ والتحمیدِ لَجعلْتُ کُلَّ أنفاسِی صلوۃً عَلٰی رسولِ اللّٰهِ ﷺ" अगर अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 ने तसबीह, तहमीद और तकबीर के फ़ज़ाइल बयान न फ़रमाए होते तो मैं अपनी ज़िंदगी के हर सांस को दरूद शरीफ़ पढ़ने में ही ख़र्च कर देता।

एक और हदीसे मुबारक सुनिये! नबी सल्ल0 के साथ सिद्दीक़े अक्बर रज़ि0 बैठे हुए हैं, एक नौजवान आया, नबी सल्ल0 ने उसे अपने और सिद्दीक़ रज़ि0 के दर्मियान बैठा दिया, फिर फ़रमायाः अबू बक्र! मैंने इसको तेरे और अपने दर्मियान बैठा दिया, इस बात पे हैरत तो हुई होगी? कहाः ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0! बड़ी हैरत हो रही है, फ़रमायाः "اِنَّ هٰذا الْفَتٰی یُصَلِّیْ عَلَیَّ صَلٰوۃً مَا یُصَلِّیْها عَلَیَّ أحدٌ مِنْ أُمَّتِی" मेरा यह नौजवान उम्मती मुझ पर ऐसा दरूद शरीफ़ पढ़ता है कि जो दरूद शरीफ़ मेरी उम्मत में से कोई दूसरा मुझ पर नहीं पढ़ता, उसकी वजह से इसको मैंने अपने क़रीब बैठाया, फिर नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि वह यह दरूद शरीफ़ पढ़ता थाः "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَنْ صَلّٰی عَلَیهِ وصَلِّ علٰی محمَّدٍ عَدَدَ مَنْ لَمْ یُصَلِّ علیه وصلِّ علٰی محمَّدٍ کما أَمَرْتَ بِالصَّلٰوۃِ علیه وصَلِّ علٰی محمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ أنْ یُصلّٰی علیه وصَلِّ علٰی محمدٍ کما یَنْبَغِیْ أنْ یُصلّٰی علیه"

दरूद शरीफ़ पढ़ने के चंद अहम मक़ामात

हमारे अकाबिर उलमाए देवबंद ने बाक़ाएदा तफ़सील लिखी है कि किस किस मौक़ा पर दरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये, "عِنْدَ دُخُولِ

"الْمَسْجِدِ والْخُروج مِنهُ" मस्जिद में दाख़िल होते हुए और मस्जिद से निकलते हुए दरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये। "والتَّشَهُّدُ" अत्तहिय्यात में भी दरूद शरीफ़ सब पढ़ते हैं "وَرُؤيَةِ الْمَسَاجِد" जब मस्जिद पर नज़र पड़े तो उस वक़्त भी दरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये। "وَدُخُولِ الأَسْوَاقِ" बाज़ार में दाख़िल होते हुए दरूद शरीफ़ पढ़े। "وَدُخولِ الْبَيْتِ والْخُرُوْج منه" घर में दाख़िल होते हुए और घर से निकलते हुए भी दरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये "وِنسْيَانِ الْحَاجَة" अगर बंदा कोई चीज़ रख के भूल जाए या कोई बात भूल जाए तो उस वक़्त भी नबी सल्ल० पर दरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये। "وَقْتِ الْفَقْر" तंगदस्ती के वक़्त में भी दरूद शरीफ पढ़े "وفِى الْبِدَايَةِ فِى الْعِلْم" और जब किताब पढ़ने बैठे उस वक़्त भी दरूद शरीफ़ पढ़े। "وفِى الْبِدايَةَ فِى الْخُطَب" जब ख़ुतबा देना हो, बयान करता हो तो भी दरूद शरीफ़ पढ़े "والإِنْتِهاءِ مِنْ مَجالِسِ الْعِلْم" जब इल्म की मजजिस का इख़्तिमाम हो तो भी दरूद शरीफ़ पढ़े। "وفِى لِقَاءِ الاخوان" दो मुसलमान भाई आपस में मिलें तो भी दरूद शरीफ़ पढ़े, "وفِى مُوادَعَتِهِم ومفارقَتِهِم" और एक दूसरे को रुख़्सत करते वक़्त और जुदा होते वक़्त भी दरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये "ومُدارسةً الحديث النبوىّ" नबी सल्ल० की हदीसे मुबारक जब पढ़ाई जाए उस वक़्त भी दरूद शरीफ़ पढ़े "وعندتَذْكرتِهِ ﷺ" नबी सल्ल० का जब तज़किरा हो तो दरूद शरीफ़ पढ़े। "وعندَ ذِكْرِ أَصْحابِهِ" नबी सल्ल० के सहाबा का तज़किरा हो तो उस वक़्त भी दरूद शरीफ़ पढ़े "وعِندَذِكرِ شيىءٍ مِنْ مُعاصِرِه" नबी सल्ल० से निस्बत रखने वाली कोई यादगार चीज़ का तज़किरा हो तो उस वक़्त भी दरूद शरीफ़ पढ़े। "وعندَدُخولِ الْمَدينة" मदीना तय्यबा में दाख़िल होते हुए भी दरूद पढ़े और "عِندَ الْمُرُورِ على قبرِهِ ﷺ" जब नबी सल्ल० के

सामने मुवाजह शरीफ़ पर हाज़िर हो तो उस वक़्त भी दरूद शरीफ़ पढ़े।

दरूद शरीफ़ के फ़वाइद

दरूद शरीफ़ के फ़वाइद क्या हैं? कुछ देर यह भी ज़रा सुन लीजिये, फ़रमाया: "اِنَّهَا سَبَب لِهِدايةِ الْمُصَلِّیْ وحَياةِ قَلْبِهٖ" दरूद शरीफ़ के पढ़ने से दिल ज़िंदा होता है और पढ़ने वाले को अल्लाह हिदायत के ऊपर रखते हैं। "اِنَّهَا سَبَب لِزيادةِ محبّةِ العَبْدِ لِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ" दरूद शरीफ़ के ज़्यादा पढ़ने से नबी सल्ल0 के साथ ज़्यादा मुहब्बत बढ़ जाती है। "اِنَّهَا سَبَب قُرْبِ العَبدِ مِنْ رَبِّهٖ يَومِ الْقِيٰمَةِ" दरूद शरीफ़ का ज़्यादा पढ़ना क़्यामत के दिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के कुर्ब का सबब बनता है। "اِنَّهَا أداءِ لِشَيْئٍ مِنْ حَقِّهٖ ﷺ" नबी सल्ल0 के जो एहसानात हैं दरूद शरीफ़ का ज़्यादा पढ़ना गोया उन एहसानात का बदला चुकाने वाली बात है। "اِنَّهَا سَبَب كِفايةِ اللهِ عَبدَهٗ مَا أهَمَّهٗ" जो परेशानियां होती हैं दरूद शरीफ़ के सद्क़े अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इन परेशानियों को ख़त्म कर देते हैं "اِنَّهَا سَبَبُ اِجَابَةِ الدُّعَاءِ" दुआ की क़बूलियत का यह सबब होता है। "اِنَّهَا سَبَبُ زَكوٰةٍ وطَهارةٍ لِلْمُصَلِّیْ" जो दरूद शरीफ़ पढ़ने वाले का दिल साफ़ होता है, उसका नफ़्स पाक होता है और ऐसे आदमी के बारे में हदीसे पाक में फ़रमाया कि जो दरूद शरीफ़ ज़्यादा पढ़ता है वह बख़ील नहीं होता। फिर जो दरूद शरीफ़ ज़्यादा पढ़ता है वह क़्यामत के दिन की हसरत से बच जाता है। और जो दरूद शरीफ़ ज़्यादा पढ़ता है मलए आला में उस बंदे की तारीफ़ें बहुत होती हैं और उसकी उम्र में और उस वक़्त में अल्लाह बरकतें अता फ़रमा देते हैं और "اِنَّهَا سَبَب لِتَثْبِيْتِ قَدَمِ العبدِ على الصِّراطِ" जो बंदा दरूद शरीफ़ ज़्यादा पढ़ता है क़्यामत के दिन पुल सिरात से गुज़रते हुए

उसके पांव मज़बूत होंगे। एक और बात "اِنَّهَا سَبَبٌ لِثِقَلِ كَفَّةِ الْمِيزَان" कि यह दरूद शरीफ़ मीज़ान के पलड़े के भारी होने का सबब बन जाएगा।

अब इस बारे में एक हदीसे मुबारक है वह ज़रा सुन लीजिये कि दरूद शरीफ़ की क़्यामत के दिन क्या शान होगी। एक हदीसे मुबारक अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रह0 ने "अत्तज़किरा" में इसको ज़िक्र किया है और इब्ने अबिद्दुनया और नुमैरी ने अलएअ़लाम किताब में ज़िक्र किया है, फ़रमाते हैं कि अब्दुल्लाह रज़ि0 इसके रावी हैं कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः "اِنَّ لآدمَ مِنَ اللّٰهِ عزَّ وجلَّ مَوقِفًا فِى فَسْحٍ مِنَ الْعَرش" क़्यामत के दिन आदम अलै0 को अल्लाह तआला अर्श के सामने एक जगह अता फ़रमाएंगे "عَلَيهِ ثَوْبَانِ أخضران" उन पर दो सब्ज़ कपड़े होंगे, यूं समझें कि तहबंद भी सब्ज़ और कुर्ता भी सब्ज़ "كَأَنَّهُ نَخلة سحوقٌ" जैसे खजूर के दरख़्त की शाख़ें कटी हुई हों तो सीधा होता है, इस तरह आदम अलै0 का ऊंचा लम्बा क़द मुबारक होगा "يَنظُر اِلى مَنْ ينطَلَقُ بِهٖ مِنْ ولدِهٖ اِلَى الْجنّةِ ومَنْ يُنطَلَق بِهٖ اِلَى النّار" ऊंचे क़द की वजह से आदम अलै0 देख रहे होंगे उनकी औलाद में से किसको जन्नत ले जाया जा रहा है और किस को जहन्नम में ले जाया जा रहा है "فَبَيْنَا آدمُ عَلى ذٰلِك" आदम अलै0 इस हाल में होंगे "اِذْ نَظَرَ اِلى رجلٍ مِنْ أمةِ محمدٍ ﷺ" कि वह नबी सल0 की उम्मत में एक बंदे को देखेंगे "يُنطَلَقُ بِهٖ اِلَى النّار" कि उसको फ़रिशते घसीट कर जहन्नम की तरफ़ लेके जा रहे होंगे "فَيُنادِىْ آدم" तो आदम अलै0 पुकारेंगे "يا أحمد يا أحمد" नबी सल्ल0 का नाम पुकारेंगे, आप सल्ल0 का नाम मुहम्मद भी और आप सल्ल0 का नाम अहमद भी, "اِسْمُهٗ أحمَد" क़ुर्आन में है, "فَيَقُولُ عليه الصلوٰة والسلام" इस नाम को

सुन कर नबी सल्ल० जवाब में कहेंगे "لَبَّيْكَ يَا أَبَا الْبَشَرِ" ऐ बशर के वालिद मैं हाज़िर हूं "فَيَقُولُ" वह बतलाएंगे "هٰذَا رَجُلٌ مِنْ أُمَّتِكَ" यह आप की उम्मत का एक बंदा है "يُنْطَلَقُ بِهِ إِلَى النَّارِ" उसको जहन्नम की तरफ़ ले जाया जा रहा है "قَالَ ﷺ" नबी सल्ल० ने फ़रमायाः "فَأَشُدُّ الْمِئْزَرَ" मैं अपनी चादर को कस के बांध लूंगा—यह अरबों में एक मक़ौला था, जब उन्हें किसी अहम काम के लिये उठना होता था तो वह कहते ज़रा चादर को कस के बांध लो—तो नबी सल्ल० फ़रमाते हैं कि मैं अपनी चादर को कस के बांध लूंगा "وَأُسْرِعُ فِي أَثَرِ الْمَلَائِكَةِ" और मैं उन फ़रिशतों के पीछे तेज़ी से चलूंगा जो मेरे उम्मती को जहन्नम की तरफ़ ले के जा रहे होंगे "فَأَقُولُ" और मैं कहूंगाः "يَا رُسُلَ رَبِّي" ऐ मेरे रब के नुमाईन्दो! "قِفُوا" रुक जाओ "فَيَقُولُونَ" वह आगे से जवाब देंगे "نَحْنُ الْغِلَاظُ الشِّدَادُ" हम बड़े क़वी और सख़्त गीर हैं "لَا نَعْصِي اللّٰهَ تَعَالٰى مَا أَمَرَنَا" जो अल्लाह हुक्म देता है हम उसकी नाफ़रमानी नहीं करते "نَفْعَلُ مَا نُؤْمَرُ" और हम वह करते हैं जिसका हमें हुक्म मिलता है "فَإِذَا أَيِسَ النَّبِيُّ ﷺ" जब अल्लाह के नबी सल्ल० उनसे मायूस हो जाएंगे कि मेरे कहने के बावजूद यह फ़रिशते ले के जहन्नम की तरफ़ जा रहे हैं, रुक नहीं रहे, तो नबी सल्ल० फ़रमाते हैं "قَبَضَ عَلٰى لِحْيَتِهِ بِيَدِهِ الْيُسْرٰى وَاسْتَقْبَلَ الْعَرْشَ بِوَجْهِهِ" नबी सल्ल० अपने बाईं हाथ से अपनी रीश मुबारक को पकड़ेंगे और अपने चेहरए अनवर को आसमान की तरफ़ करके देखेंगे, अर्श की तरफ़ करके देखेंगे—अरबों में यह एक तरीक़ा है कि जब किसी से मुआफ़ी मांगनी होती, मनाना होता, तो आजिज़ी का तरीक़ा था कि डाढ़ी पे हाथ रख के बड़ी लजाजत के साथ उसकी तरफ़ मुहब्बत से देखते थे, फ़रियाद करते थे कि हम पे रहम खा लो—नबी सल्ल०

जब फ़रिश्तों को देखेंगे कि वह रुक नहीं रहे हैं, मेरे उम्मती को लेकर जहन्नम की तरफ़ जा रहे हैं, आक़ा सल्ल0 फ़रमाते हैं कि मैं अपना बायां हाथ अपनी रीश के ऊपर रखूंगा और मैं अर्श की तरफ़ अपने चेहरए अनवर के साथ देखूंगा "فَيَقُولُ" फिर नबी सल्ल0 फ़रमाएंगेः "يَا رَبِّ قَدْ وَعَدْتَنِيْ أَنْ لَا تُخْزِيَنِيْ فِي أُمَّتِي" ऐ अल्लाह! आपने वादा फ़रमाया था कि मेरी उम्मत के मुआमला में आप मुझे रुसवा नहीं फ़रमाएंगे "فَيَأْتِي النِّدَاءُ مِنْ قِبَلِ الْعَرْشِ" अर्श के ऊपर एक आवाज़ आएगी, "أَطِيْعُوْا مُحَمَّدًا" ओ मेरे फ़रिश्तो! मुहम्मद की इताअत करो "وَرُدُّوْا هٰذَا الْعَبْدَ إِلَى الْمَقَامِ" और उस बंदे को वहां जाकर छोड़ेंगे, अब दोबारा वज़न शुरू होगा "فَيُخْرِجُ ﷺ بِطَاقَةً بَيْضَاءَ" नबी सल्ल0 एक छोटा सा काग़ज़ का पुर्ज़ा निकालेंगे, जो सफ़ेद रंग का होगा, "كَالْأُنْمُلَةِ" जैसे उंगली का पौर होता हैं उसके बराबर होगा "فَيُلْقِيْهَا فِي كَفَّةِ الْمِيْزَانِ الْيُمْنٰى" उस काग़ज़ के टुक्ड़े को को नबी सल्ल0 नेकियों के पलड़े में डाल देंगे "وَهُوَ يَقُوْلُ: بِسْمِ اللّٰهِ" और नबी सल्ल0 डालते हुए बिस्मिल्लाह फ़रमाएंगे "فَتَرْجَحُ الْحَسَنَاتُ عَلَى السَّيِّئَاتِ" नेकियों का पलड़ा भारी हो जाएगा, गुनाहों का पलड़ा हल्का हो जाएगा, "فَيُنَادِي الْمُنَادِي" निदा देने वाला निदा देगा "سَعِدَ وَسَعِدَ جَدُّهٗ" उस बंदे के अज्दादे सईद बनेंगे, "وَثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ" उसकी नेकियां ज़्यादा होंगी "اِنْطَلِقُوْا بِهٖ إِلَى الْجَنَّةِ" अब इसको जन्नत लेकर जाओ "فَيَقُوْلُ: يَا رُسُلَ رَبِّي" जब जन्नत ले के जाने लगेंगे तब वह बंदा कहेगाः ऐ मेरे रब के नुमाईंदा फ़रिश्तो! "قِفُوْا" ज़रा रुक जाओ "حَتّٰى أَسْئَلَ هٰذَا الْعَبْدَ الْكَرِيْمَ عَلٰى رَبِّهٖ" हत्ता कि मैं उस करीम बंदे से ज़रा मालूम तो कर लूं "فيقول" फिर वह यह कहेगाः "بِأَبِيْ أَنْتَ وَأُمِّيْ" आप के ऊपर मेरे मां बाप क़ुर्बान जाएं "مَا أَحْسَنَ وَجْهَكَ" आपका चेहरा कितना

खूबसूरत है, "وَأَحْسَنَ خُلُقُكَ" आप की शख़्सियत Personality कितनी प्यारी है! "مَنْ أَنْتَ" आप कौन हैं? "فَقَدْ أَقَلْتَنِيْ إِثْرَتِيْ" आप ने मेरे गुनाहों को मिटा के रख दिया "وَرَحِمْتَ عَبْرَتِيْ" मेरे लग़ज़िशों को कम कद दिया "فَيَقُوْلُ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ" नबी सल्ल0 जवाब में फ़रमाएंगे: "أَنَا نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ" मैं तेरा नबी मुहम्मद हूं "وَهٰذِهٖ صَلَوَاتُكَ" और यह वह दरूद शरीफ़ है "الَّتِيْ كُنْتَ تُصَلِّيْ عَلَيَّ" जो तू मुझ पर पढ़ा करता था "وَقَيْتُكَهَا" मैंने तुम्हें उनका बदला दिया "أَحْوَجَ مَا تَكُوْنُ إِلَيْهَا" जब तुझे इसकी बहुत ज़रूरत थी। सोचिये! आज नबी सल्ल0 पर दरूद शरीफ़ का पढ़ना कल क़्यामत के दिन मीज़ान में नेकियों के भारी होने का सबब बन जाएगा। दुआ है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें अपने हबीब सल्ल0 की सच्ची मुहब्बत अता फ़रमाए, उनका एहतिराम, उनकी इज़्ज़त, और उनका इक्राम भी दिल में अता फ़रमाए, उनकी सुन्नतों की मुहब्बत के साथ इत्तिबा करने की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और कसरत से दरूद शरीफ़ पढ़ कर नबी सल्ल0 की मुहब्बत दिल में भरने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

وآخر دعوانا أن الحمد لله رب العالمين

अब आप जिस ख़िताब का मुतालआ अगले सफ़्हात पर करेंगे, यह ख़िताब 13 अप्रेल 2011 ई0 बरोज़ बुध, वक़्त बअद नमाज़े फ़ज्र हुआ था। बग़ैर किसी तय शुदा प्रोग्राम के।
बावजूद इसके इस महफ़िल में भी हज़रत मौलाना मुफ्ती अबुल क़ासिम नोअमानी (मोहतमिम दारुल उलूम) और हज़रत मौलाना क़ारी सय्यद मुहम्मद उस्मान मंसूर पूरी नीज़ दीगर असातिज़ा व तलबा कसीर तादाद में मौजूद थे।

कुर्बे इलाही कैसे हासिल होता है?

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد

एक नौजवान की क़ाबिले रश्क अमानतदारी

तुर्की का एक बड़ा मअ़रूफ़ ताजिर था, जिसको अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने रिज़्क़ की बहुत फ़रावानी दी हुई थी, उसने एक बाग़ भी बनाया था, वक़्तन फ़वक़्तन वह उस बाग़ में आ जाया करता था, उस बाग़ में फलों के मुख़्तलिफ़ दरख़्त थे, एक नौजवान को उसकी निगरानी के लिये रखा, जिस का नाम मुबारक था, यह ताजिर एक दिन अपने बाग़ में आया और मुबार को बुला कर कहा कि मेरे लिये अनार का जूस ले आओ, मुबारक एक प्याला में अनार का जूस लाया जो बहुत खट्टा था, उसने उससे कहा कि भाई! यह तो बहुत खट्टा है, पिया नहीं जा रहा है, तुम दूसरे दरख़्त से अनार लेकर उसका जूस लाओ, तो मुबारक गया और दूसरे दरख़्त से जूस लाया, वह पहले से भी ज़्यादा खट्टा था, इतना खट्टा कि पिया नहीं जा रहा था तो वह मालिक उससे नाराज़ होने लगा कि तुझे यहां आए हुए इतने साल गुज़र गए और अभी तक तुझे इतना भी पता नहीं चला कि किस दरख़्त का फल मीठा है और किस दरख़्त का फल खट्टा है, तो मुबारक ने जवाब दिया कि जनाब! आप ने तो मुझे यहां फलों की निगरानी के लिये रखा है, मुझे फल चखने और खाने की तो इजाज़त नहीं, चुनांचे इतने साल में मैंन तो फल चख के भी नहीं देखा कि कौनसा फल मीठा है और कौनसा खट्टा, तो वह तुर्की ताजिर इस बात पे हैरान हुआ कि यह इतना अमीन शख़्स है, इस

क़दर इसके अंदर अमानत का जज़्बा है कि उसने कहा कि मेरी ड्यूटी फ़क़त उनकी निगरानी करना है, मुझे खाने की इजाज़त नहीं है और इस वजह से इतने सालों में इसने कोई फल चखा नहीं, दिल में उसने सोच लिया कि जो नौजवान दिल में इतना ख़ौफ़े ख़ुदा रखता हो और जो इतना अमीन हो, वह मेरी ख़िदमत के बजाए उस मालिकुल मुल्क की ख़िदमत के लिये ज़्यादा मुनासिब है। उसने कहा मुबारक! मैं बाग़ की निगरानी के लिये किसी और बंदे को रख लूंगा, बेहतर है कि तू अल्लाह की इबादत के लिये मशगूल हो जा, मुबारक तो पहले ही चाहता था कि मुझे अल्लाह की इबादत के लिये और ज़्यादा फ़ुर्सत का वक़्त मिले, चुनांचे मुबारक अल्लाह की इबादत के लिये फ़ारिग़ हो गया और उसने बाग़ की निगरानी के लिये दूसरा बंदा तलाश कर लिया, तो चूंकि उस ताजिर को उस नौजवान के साथ अक़ीदत हो गई थी, तो उसने एक मशवरा दिया कि देखो जहां मेरा घर है उसके साथ एक छोटा सा घर है, वह बनाया था घर के मुलाज़िमों के लिये, कितना अच्छा हो कि आप उस में आकर रहें तो मेरी मुलाक़ात आप से पहले से ज़्यादा हुआ करेगी, मुबारक ने इस बात को क़बूल कर लिया, चुनांचे वह उस तुर्की के उस छोटे से मकान में रहने लगा, यह तुर्की ताजिर वक़्तन फ़वक़तन मुबारक के पास आता बैठता, गुफ़्तगू होती, दिल लगी होती।

अमानतदारी का इन्आम

एक मर्तबा तुर्की ताजिर आया तो उसके चेहरे पे अजीब कैफ़ियत थी, लगता था कि जैसे बहुत ग़मज़दा है, तो मुबारक ने उससे पूछा कि आप ग़मज़दा महसूस हो रहे हैं, कहाः हां! मैं बहुत ज़्यादा ग़मज़दा और परेशान हूं, पूछा क्या मस्ला है? उसने कहा कि मेरी बेटी जवानुल उम्र है, अल्लाह ने उसे बहुत अच्छी शक्ल दी है,

अक़्ल दी है और उसके लिये उमरा और वज़रा के बेटों के रिशते आ रहे हैं, हर कोई यही चाहता है कि उसके बेटे से रिशता हो जाए और मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मैं फ़ैसला क्या करूं, तो मुबारक ने उससे कहा कि देखो! हमसे पहले दो उम्मतें गुज़री हैं, एक उम्मत यहूदियों की थी, वह माल के पुजारी थे, उनकी हर बात में माल का अन्सुर ग़ालिब था Money oriented वह दोस्तियां करते तो माल की बिना पर, रिशते करते तो माल की बिना पर, वह माल के पुजारी थे, मिज़ाज के एतिबार से ज़र परस्त थे। फिर इसके बाद एक क़ौम आई जिसको नसारा कहते हैं, यह जमाल परस्त थे, हुस्न के पुजारी थे, हुस्न के पीछे भागते थे, हमारे नबी सल्ल0 जब तशरीफ़ लाए तो उन्होंने हमें समझाया कि न तुम ज़र परस्त बनो, न तुम हुस्न परस्त बनो, बल्कि तुम अपने रिशते दीन की बुन्याद पर करो, चुनांचे हदीसे पाक में आता है कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि लोग अपने रिशते करते हैं ख़ानदान की वजह से, नसब की वजह से, या माल की वजह से, या जमाल की वजह से, या नेकूकारी की वजह से, तो तुम अपने रिशते नेकी की बुन्याद पर किया करो, फिर मुबारक ने उसे बात समझाई कि देखो भाई! यह जितने Proposal (शादी के रिशते) आ रहे हैं तुम्हारे लिये, इन सब में देखो कि नेक कौन है, दीन को बुन्याद बनाओ, नेकी को बुन्याद बनाओ, और नेकी की बिना पर अपनी बेटी के लिये रिशता तलाश करो, तुर्की ताजिर को उसकी बात बहुत अच्छी लगी, वह घर आया तो बीवी को भी यही बात समझाई कि देखो! हमें उनके उहदों को नहीं देखना, माल को नहीं देखना, मकान को नहीं देखना, दुनिया की वाह वाह को नहीं देखना है, हमें तो बस दीन को देखना है, बीवी ने भी कहा कि बात तो बहुत अच्छी है, अब दोनों मियां बीवी बैठ के

आपस में Discuss (तबादलए ख़्याल) करने लगे कि कौनसा Proposal (शादी का रिशता) अच्छा है, तो बीवी ने कहा कि देखें! अगर हमें अल्लाह का ख़ौफ़ ही देखना है और दीन ही देखना है तो उन अमीरों के बेटों से तो यह नौजवान ज़्यादा बेहतर है, उसने मुबारक का नाम ले लिया, ताजिर के दिल में भी ख़्याल अया कि हां वाक़ई बात तो ठीक है, जितना ख़ौफ़े ख़ुदा उस नौजवान में है, जितना मुत्तक़ी यह है, जितना परहेज़गार यह है, उतना कोई दूसरा नौजवान नज़र नहीं आता, और फिर उससे तबीअत के अंदर एक मुहब्बत भी है, चुनांचे बीवी के कहने पर वह तुर्की ताजिर आया और उसने मुबारक से बात की कि भाई! हमें अपनी बेटी का रिशता तो करना ही है, तो अगर हम आपके साथ करना चाहें तो क्या आप क़बूल कर लेंगे? मुबारक ने भी सोचा कि यह लोग मालदार अगर्चे हैं, लेकिन नेकूकार भी तो हैं और मेरे मुहसिन भी है, इन्होंने मुझे इबादत के लिये फ़ारिग़ कर दिया है, और अगर यह अपनी बेटी का रिशता मुझसे करना चाहते हैं तो इससे बेहतर पुर रिशता और क्या हो सकता है, चुनांचे मुबारक ने भी हां कर दी, उस तुर्की ताजिर ने अपनी बेटी का निकाह मुबारक के साथ कर दिया। अब यह लड़की भी बहुत नेक थी, और वह नौजवान भी खुद बहुत नेक था।

वालिदैन की तहज्जुद के आंसूओं का असर

इन दोनों मियां बीवी को अल्लाह ने एक बेटा दिया, जिसका नाम उन्होंने अब्दुल्लाह रखा, वह अब्दुल्लाह घर के अंदर बहुत नाज़ व नेअ़मत में पला, हत्ता कि तुर्की ताजिर फ़ौत हो गया, उसका कोई और बेटा नहीं था, उसकी सारी जाइदाद उसकी बेटी के हिस्से में आ गई, जब बेटी के हिस्से में आई तो मुबारक को भी खुद बखुद मिल गई क्योंकि वह ख़ाविंद था, अब मुबारक भी अपने वक़्त का बहुत

अमीर आदमी बन गया, उसने अपने बेटे की परवरिश के लिये कोशिश तो बहुत अच्छी की, लेकिन बच्चा चूंकि माल व दौलत में पला था, सोने का चम्चा मुंह में लेके पैदा हुआ था, और माल में फ़ाइदे भी बहुत हैं और फ़साद भी बड़े हैं और एक फ़साद उसका यह है कि बंदा तन आसानी का शिकार हो जाता है, यह दुनिया की चकाचौंध इंसान को दुनिया का मतवाला बना देती है, चुनांचे यह नौजवान जब जवान हुआ तो यह अपनी ख़्वाहिशात में लग गया, मां समझाती, बाप समझाता, यह एक कान से सुनता दूसरे से निकाल देता, वह क्या कर सकते थे, थाने दार तो नहीं थे, समझा ही सकते थे, यह अब्दुल्लाह अपने दोस्तों की सोहबत में ऐसा लगा कि उसको शबाब के सिवा कोई काम याद नहीं रहा, मां बाम तहज्जुद में रोते, दुआएं मांगते, मगर अब्दुल्लाह चिकना घड़ा था, उस पर किसी बात का असर होता ही नहीं हुआ—यह बात ज़ह्न में रखिये कि मां बाप की तहज्जुद के जो आंसू हैं वह कभी राइगां नहीं जाया करते, वक़्ती नताइज सामने नज़र न आएं तो कोई बात नहीं, मगर कभी न कभी उनकी दुआएं रंग लाती हैं—चुनांचे अब्दुल्लाह एक दिन सोया हुआ था, उसने ख़्वाब में देखा कि कोई कहने वाला कह रहा है: "اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ" अब्दुल्लाह की आंख खुली, वह सोचने लगा कि मेरे मां बाप इतने नेक और मैं इतना बदकार, अब वक़्त आ गया है कि मैं तौबा करूं और नेक बन जाऊं, चुनांचे उसने अपने दिल में नेक बनने का इरादा कर लिया।

उसने अपने वालिद से कहा कि अब्बू! मैं तिजारत करना चाहता हूं, मुझे कुछ पैसे चाहियें तो वालिद ने उसे तीस हज़ार दिरहम तिजारत के लिये दिये, अब्दुल्लाह ने वह दिरहम लिये और निकल

पड़ा और सीधा उलमा के पास गया, एक आलिम से इल्म हासिल किया, दूसरे से इल्म हासिल किया, तीसरे से इल्म हासिल किया, उस ज़माने में जो बड़े बड़े मशाहीर होते थे, उनके पास जाकर हदीसे मुबारक का इल्म हासिल किया जाता था, चुनांचे अब्दुल्लाह ने ज़िंदगी के दो साल इल्म हासिल करने में लगा दिये, दो साल के बाद जब घर वापस लौटा तो वालिद ने पूछाः बेटा! तुम तो तिजारत के लिये गए थे? अब्बाजान! मैंने वह तिजारत की "تُنۡجِيۡكُمۡ مِّنۡ عَذَابٍ اَلِيۡمٍ" तो तिजारत तुझे अज़ाबे अलीम से नजात दे। अब वालिद को पता चला कि ओफ़्फ़ोह! मेरे बेटे का तो दिल बदल चुका है, उसकी आंखों में आंसू आ गए कि मेरी तो हसरत पूरी हुई, मेरा तो ख़्वाब पूरा हो गया, मेरे बेटे तेरी ज़िंदगी बदल गई तूने इल्म हासिल किया? जी अब्बा जान! आपकी दुआएं रंग लाईं। अल्लाहु अक्बर कबीरा

बुढ़ापे में दीनदार वालिदैन की हसरत व तमन्ना

आप ज़रा सोचें इस बात को कि बच्चा छः सात साल का होता है, उसके मां बाप उस वक़्त से उसको नमाज़ पढ़ाते हैं और वह बच्चा उस वक़्त से दुआ मांगता हैः "رَبِّ اجۡعَلۡنِىۡ مُقِيۡمَ الصَّلٰوةِ وَمِنۡ ذُرِّيَّتِىۡ" अब उसकी औलाद तो कोई नहीं, उस वक़्त तो वह ख़ुद 5,6 साल का है, अभी 7 साल भी पूरा नहीं हुआ, मगर अब्बू ने नमाज़ याद करा दी, तो वह उसके साथ खड़ा होके नमाज़ पढ़ रहा है और दुआ मांग रहा हैः "رَبِّ اجۡعَلۡنِىۡ مُقِيۡمَ الصَّلٰوةِ وَمِنۡ ذُرِّيَّتِىۡ" अभी वह बच्चा है और औलाद के लिये दुआ मांग रहा है, हालांकि उसकी औलाद नहीं है, मगर अल्लाह के इल्म में है कि एक वक़्त आएगा कि यह बच्चा जवानुल उम्र होगा, उसकी शादी होगी, उसकी औलाद होगी, उस होने वाली औलाद के लिये यह दुआ अभी से मांग रहा है, अब वह बच्चा जिसने 6,7 साल की उम्र में औलाद के नेक

होने की दुआ मांगी, वह साठ सत्तर साल की उम्र में पहुंच के जब वह सफ़ेद बालों वाला हो जाए और अपनी औलाद को देखे कि वह दीन से हटी हुई है तो सोच सकते हैं कि उसके दिल पर क्या गुज़र रही होगी? अपनी औलाद को देख के ग़म होता है कि अल्लाह! मैंने तो 6, 7 साल की उम्र से तुझ से दुआएं मांगनी शुरू कीं और अब बाल सफ़ेद हो गए और मेरी औलाद अब भी दीन पे नहीं आ रही है, नौजवान इस बात का अंदाज़ा नहीं लगा सकते, उस बात की हक़ीक़त तो वही समझता है जो बूढ़ा होता है, बूढ़े के दिल में हर वक़्त यह ग़म होता है कि मेरी औलाद कैसे दीनदार हो जाए। यही तवज्जोह थी कि अल्लाह तआला ने फ़रमायाः "اَمۡ كُنۡتُمۡ شُهَدَآءَ اِذۡ حَضَرَ يَعۡقُوۡبَ الۡمَوۡتُ اِذۡ قَالَ لِبَنِيۡهِ مَا تَعۡبُدُوۡنَ مِنۡۢ بَعۡدِىۡ" देखिये मौत का वक़्त है, अब आख़िरी वक़्त में भी फ़िक्र है कि मेरे बेटो! तुम मेरे बाद किस की इबादत करोगे?

चुनांचे अब्दुल्लाह ने जब अपने वालिद से कहा कि अब्बाजान मेरी ज़िंदगी का रुख़ अब बदल गया तो वालिद की ख़ुशी का कोई ठिकाना ही नहीं रहा, उसका तो ख़्वाब पूरा हो गया, उसने बेटे का मुकम्मल तआवुन किया कि बेटा! तुम और इल्म हासिल करो, चुनांचे उसने बीस हज़ार दिरहम और दीनार और दिये कि जाओ सफ़र करो और इल्म हासिल करो, अब्दुल्लाह ने अपने वक़्त के हर बड़े आलिम से इल्म हासिल किया, हत्ता कि किताबों में लिखा है कि अब्दुल्लाह ने अपनी ज़िंदगी में चार हज़ार मुहद्दिसीन से इल्म हासिल किया।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 का मक़ाम व मर्तबा

अब यह जो बच्चा था बड़ा हुआ और यह अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रह0 के नाम से मशहूर हो गया, और अल्लाह ने उसको वह मक़ाम दिया कि यह अब्दुल्लाह जब इमाम अहमद बिन हंबल रह0 के

पास मिलने के लिये जाते थे तो इमाम अहमद बिन हंबल रह० अपनी जगह से उठ जाया करते थे और उनको अपनी जगह पर बैठाते थे और फ़रमाते थे कि मेरे पास मशरिक़ व मग़रिब का आलिम आ गया, इतना अल्लाह ने उनको इल्म दिया।

यह इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह० के ख़ास शागिर्द थे, उनके चालीस शागिर्द थे, जो मसाइल के इस्तिंबात में उनके साथ मिलकर काम करते थे, अब्दुल्लाह बिन मुबारक उन चालीस में से एक थे, उन्होंने फ़ुक़ाहत इमाम अबू हनीफ़ा रह० से सीखी और हदीस का इल्म मुहद्दिसीन से हासिल किया, उनकी तारीफ़ में अस्माउर्रिजाल की कुतुब में जितने अच्छे अल्फ़ाज़ लिखे गये हैं वह दूसरे मुहद्दिसीन के बारे में नहीं लिखे गए हैं, अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीस तक उनको कहा गया है, उनके हदीस का दर्स इतना बढ़ा कि एक वक़्त में चालीस हज़ार तलबा उनसे बैठ कर हदीस पढ़ा करते थे, आज तो दारुल हदीस में कहीं दो सौ, कहीं तीन सौ, कहीं चार सौ, एक मर्तबा हट हज़ारी बंगला देश मेरा जाना हुआ तो वहां की दारुल हदीस में हदीस के आठ सौ तलबा एक वक़्त में पढ़ते थे, दारुल उलूम देवबंद में भी उम्मीद है कि आठ सौ या उसके क़रीब क़रीब तलबा होंगे, तो बड़े दारुल उलूमों में इतने ही तलबा होते हैं, आप सोचें कि उस शख़्स के सामने चालीस हज़ार हदीस के तलबा होते थे, सुब्हानल्लाह! अल्लाह ने उनको वह इल्मी जलालते शान अता फ़रमाई थी। जब वह हदीस बयान करते थे तो उनके मज्मा में सुनने वाले बुलंद आवाज़ से बोलते थे, और वह सुन के आगे बोलते थे, ग्यारह सौ लोग मुकब्बिर हुआ करते थे, इतना मज्मा होता था, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनको क़बूलियते आम्मा और ताम्मा अता फ़रमाई थी।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 की चंद सिफ़ात

पहली सिफ़तः अख़्लाक़े करीमाना

इस अब्दुल्लाह बिन मुबारक के अंदर कुछ ख़ास सिफ़तें थीं, एक सिफ़त तो यह थी कि उनके अख़्लाक़ बड़े आला थे, हर एक के साथ अच्छा सुलूक करते थे, चुनांचे इतने अच्छे अख़्लाक़ थे कि एक आदमी उनके पास आया, उसने कहा कि हज़रत! मेरे ऊपर सात सौ दीनार का क़र्ज़ है, अगर आप सात सौ दीनार मुझे दें तो मेरा क़र्ज़ उतर जाएगा, मेरा टेन्शन ख़त्म हो जाएगा, मैं सुकून के साथ रहूंगा, उन्होंने एक चिठ लिख के दिया कि मेरे मुहासिब के पास ले जाओ और उससे जाके पैसे ले लो, वह ख़ुशी ख़ुशी गया और Accountant (मुहासिब) को कहता है कि अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने चिठ लिख दी है, मेरे ऊपर सात सौ दीनार का क़र्ज़ा है, उसने देखा कि चिट्ठी के ऊपर तो सात हज़ार लिखा है, वह सोच में पड़ गया कि यह बंदा कह रहा है कि मुझे सात सौ की ज़रूरत है, लगता है कि ग़लती से एक Digit (सिफ़र का हिंदरसा) ज़्यादा हो गई, उसने कहाः अच्छा मैं हज़रत से Verify (तसदीक़) कर लूं कि यह कितना है, वह आया, साथ में वह जो मांगने वाला साइल था वह भी आया, मुहासिब ने कहा कि हज़रत! उसको तो सात सौ दीनार की ज़रूरत है और आप ने सात हज़ार लिख दिया? हज़रत ने कहा चिठ लाओ चिठ ली और सात हज़ार को काट के उसकी जगह चौदह हज़ार लिख दिया, अब वह बड़ा हैरान हुआ, ख़ैर उसने चौदह हज़ार Pay (अदा) तो कर दिये, लेकिन जब वह चला गया तो यह हज़रत के पास आया कि हज़रत! मुझे यह बात समझ में नहीं आई कि उसने मांगे थे सात सौ और आप ने लिखे थे सात हज़ार, और

जब मैं पूछने आया तो आप ने काट के चौदह हज़ार कर दिये, क्या मस्ला है? तो हज़रत ने फ़रमाया कि देखो मैं चाहता था कि जितना उसने मांगे मैं उसकी तवक़्क़ो से ज़्यादा उसको दूं, ताकि उसका दिल खुश हो जाए, इसलिये मैंने सात हज़ार लिखे थे, तुमने मेरा काम ख़राब कर दिया कि तुम पूछने आ गए, अब चूंकि उसको पता चल गया था कि सात हज़ार लिखे हैं, अब मैं सात हज़ार दे भी देता तो उसको इतनी ख़ुशी न होती, तो मैंने चौदह हज़ार लिख दिया, उसने कहा हज़रत! आख़िर उसका दिल खुश करने का इतना क्या मस्ला था? तो अब्दुल्लाह मुबारक रह० ने फ़रमाया कि मैंने नबी सल्ल० की हदीसे मुबारक पढ़ी है कि जो शख़्स किसी मोमिन के दिल को अचानक ख़ुशी पहुंचाता है, उस ख़ुशी पहुंचाने पर अल्लाह उसकी ज़िंदगी के पिछले सब गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देंगे, चुनांचे उसने तो सात सौ मुझ से मांगे थे, लेकिन मेरा दिल चाह रहा था कि मैं उसको सात हज़ार दूं, उसका दिल खुश होगा तो अल्लाह मेरे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देंगे, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनको ऐसे अख़्लाक़ दिये थे।

दूसरी सिफ़तः इख़्लास

दूसरी सिफ़त यह थी कि वह जो करते थे अल्लाह की रज़ा के लिये करते थे, ख़ालिसतन लौजुल्लाह करते थे, चुनांचे वह फ़रमाते हैं कि मुझे इमामे आज़म रह० की सोहबत में बार बार कूफ़ा जाना पढ़ता था, रास्ता में एक शहर था, वहां एक सराए थी, एक होटल था, वहां चारपाई बिस्तर मिलता था, मैं रात में वहीं ठहरा करता था, वहां एक नौजवान था जो ख़िदमत करता था, एक दफ़आ अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० आए तो पूछा कि वह नौजवान कहां है? लोगों ने बताया कि वह नौजवान तो गिरफ़्तार हो गया, और वह जेल में है,

पूछा कि क्या वजह थी? बताया गया कि उसने किसी से कर्ज़ लिया था, उसने वक़्त पे दिया नहीं, कर्ज़ वाले ने पुलिस वाले को बता दिया, पुलिस ने उसको गिरफ़्तार कर लिया कि अदा करोगे तो छूटोगे, अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 पुलिस वाले के पास गए, पूछा कि इस तरह का एक नौजवान है, आप ने उसको जेल में डाला है? कहा हां, कैसे छूट सकता है? कहा कि या वह अदा करे या उसकी जगह कोई और अदा कर दे, तो अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 ने फ़रमाया कि Payment (अदाइगी) मैं कर देता हूं, लेकिन एक शर्त है, पूछा कि क्या? कहा कि मेरा नाम न बताना, उसने कहा: मुझे उससे क्या ग़र्ज़ है, मैं नहीं बताऊंगा, अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 ने पैसे दिय, उसने उन बंदों को, जो हक़दार थे, बुला के पैसे दिये और नौजवान को आज़ाद कर दिया, उसने पूछा कि मुझे क्यों छोड़ा जा रहा है? बताया गया कि किसी ने तेरे Payoff कर दिये (चुका दिये)।

इसके बाद अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रह0 हर साल कई मर्तबा होटल में ठहरते रहे और वह नौजवान वाक़िआ सुनाता था कि हज़रत! मेरे ऊपर तो मुसीबत आ गई थी, मैं गिरफ़्तार हो गया था, कोई खुदा का बंदा आया, उसने मेरा क़र्ज़ा दे दिया और मुझे पुलिस ने छोड़ दिया, हज़रत सुनते थे, मगर उसको बताते नहीं थे कि वह क़र्ज़ा अदा करने वाला मैं ही हूं, पूरी ज़िंदगी इसी तरह गुज़र गई, जब अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 की वफ़ात हो गई, तब पुलिस वाले ने बताया कि नौजवान! तेरा क़र्ज़ा तो अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने अदा कर दिया। तो यह दूसरी सिफ़त थी ख़ालिसतन लौजुल्लाह की रज़ा के लिये हर अमल करने वाली।

तीसरी सिफ़तः शोहरत से बचना

इनके अंदर एक तीसरी सिफ़त शोहरत से बचने वाली थी, चुनांचे इतने बड़े बड़े मज्मा को हदीस का दर्स देते थे, फिर एक वक़्त आया कि उन्होंने हदीस का दर्स देना मौकूफ़ किया और "रय" एक शहर था, उसमें जाके एक गुमनाम मक़ाम पे रहने लगे, सारा दिन ख़ल्वत में गुज़रता, दो साल इस तरह वहां रहे कि कोई वाकिफ़ नहीं, कोई जानता पहचानता नहीं, बस अकेले हैं, एक बंदा मिला, उसने कहा कि आप तो चालीस हज़ार बंदों के मज्मओं में हदीस का दर्स देते थे, आप यहां अकेले हैं, आपका दिल उदास नहीं होता? अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रह0 ने जवाब दिया कि मेरा दिल बिल्कुल उदास नहीं होता, उसने कहा क्यों? कहने लगे कि मैंने सोचा कि अब नबी सल्ल0 की सोहबत में वक़्त गुज़ारूं यअ़नी सारा दिन वह जो अहादीसे मुबारिका को याद करते थे, हिफ़्ज़ करते थे, उसको उन्होंने कहा कि मैं तो सारा दिन नबी सल्ल0 की सोहबत में वक़्त गुज़ार रहा हूं।

चौथी सिफ़तः ख़शियते इलाही

एक चौथी सिफ़त उनके अंदर नुमायां और भी थी, वह यह कि उनके दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा बहुत था, उनके एक दोस्त थे, वह कहते कि मुझे बड़ी हैरानी हुई थी कि जो किताबें अब्दुल्लाह ने पढ़ीं वही किताबें मैंने पढ़ीं, जितनी इस्तिदाद उसमें उतनी इस्तिदाद मेरे अंदर, लेकिन जो क़बूलियत अब्दुल्लाह को मिली मुझे कोई पूछता भी नहीं, मुझे समझ में नहीं आता था कि उसमें क्या चीज़ ज़्यादा है, कहने लगे कि एक दिन मैं उनके साथ बैठा हुआ था, कोई इल्मी बात कर रहे थे, अचानक चिराग़ बुझ गया, तो चिराग़ जलाने में चंद मिनट लगे तो जैसे ही चिराग़ जला तो मेरी नज़र अब्दुल्लाह के चेहरे पे पड़ी

तो मैंने कहा अब्दुल्लाह! तुम्हारी आंख में आंसू हैं, कहने लगे कि हां, इस अंधेरे में मुझे क़ब्र का अंधेरा याद आ गया। वह कहने लगे कि तब मुझे पता चला कि मेरे और उनके दर्मियान क्या फ़र्क़ है, अब्दुल्लाह बिन मुबारक के दिल में इतना ख़ौफ़े ख़ुदा था कि ख़ल्वत में और जल्वत में गुनाहों से बचा करता था।

आज का जो तालिबे इल्म चाहे कि मुझे भी अल्लाह का कुर्ब नसीब हो तो अच्छे अख़्लाक़ वाले बनें, हम तो मां बाप के दिलों को सताते हैं, हम तो साथ वालों के दिल दुखाते हैं, वह सब के दिल ख़ुश किया करते थे कि अल्लाह मेरे गुनाह मुआफ़ कर देंगे, उन जैसे अख़्लाक़ पैदा करें, फिर उन जैसी तवाज़ोअ़ पैदा करें, फिर उन जैसा इख़्लास पैदा करें और उन जैसा ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करें, फिर देखें कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की क्या रहमतें बरसती हैं। चुनांचे उनको अल्लाह ने एक ऐसा मक़ाम दिया कि उनके एक साथी कहते हैं कि मैंने अब्दुल्लाह बिन मुबारक की ज़िंदगी को कई साल क़रीब से देखा, और मैं इस नतीजा पर पहुंचा कि अब्दुल्लाह बिन मुबारक में और सहाबए किराम रज़ि0 की ज़िंदगियों में सिर्फ़ एक फ़र्क़ है, कि सहाबा रज़ि0 को नबी सल्ल0 की ज़ियारत का शर्फ़ हासिल था, जो अब्दुल्लाह बिन मुबारक को हासिल नहीं था, उसके सिवा अब्दुल्लाह बिन मुबारक और सहाबए किराम रज़ि0 की ज़िंदगियों में मुझे कोई फ़र्क़ नज़र नहीं आया।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 का आख़िरी वक़्त

वह अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 जब उनकी वफ़ात का वक़्त आया तो शागिर्दों को फ़रमाया कि मुझे चारपाई से उठा के ज़मीन पे लिटा दो, पहले तो शागिर्द थोड़ा घबराए, उस वक़्त क़ालीन के फ़र्श तो होते नहीं थे, उस वक़्त तो यही मिट्टी होती थी, तो शागिर्द थोड़ा

मुतरद्दिद हुए, दोबारा फ़रमाया कि मुझे चारपाई से उठा के ज़मीन पे लिटा दो तो الأمر فوق الأدب के तहत शागिर्दों ने चारपाई से हज़रत को उठाया और ज़मीन पे लिटा दिया, लेकिन शागिर्दों की चीख़ें निकल गईं इसलिये कि अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 को जब ज़मीन पे लिटाया गया तो अपने रुख़्सार को ज़मीन पे रगड़ के कहने लगे कि अल्लाह! अब्दुल्लाह के बुढ़ापे पे रहम फ़रमा, नहीं कहा कि मैं मुहद्दिस हूं, नहीं कहा कि मैं हदीस का उस्ताज़ हूं, नहीं कहा कि मेरे वअ़ज़ व नसीहत से हज़ारों लोगों की ज़िदगियां बदल गईं, जानते थे कि अल्लाह के यहां कोई अमल पेश नहीं कर सकते, उसकी शान बहुत बड़ी है, जो अमलों पे नज़र रखता है अल्लाह उन अमलों पे ठोकर मार देते हैं कि यह अमल किसी क़ाबिल नहीं हैं, जानते थे कि अल्लाह के सामने किसी के अमल की कोई हैसियत नहीं है, आजिज़ी है बंदे के पास।

अज़ीज़ तलबा! हम भी अब दिल लगा के पढ़ें और अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 जैसे अख़्लाक़ अपने अंदर पैदा करें, अल्लाह की ख़शियत पैदा करें और ख़ल्वत और जल्वत में गुनाहों से बचें और अल्लाह के हुज़ूर अपना अमल तो पेश नहीं कर सकते, बिलआख़िर यही कहेंगे कि मौला! बस तू अपना फ़ज़ल फ़रमा दे, अपने फ़ज़्ल से मुआफ़ फ़रमा दे, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें भी अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 जैसी ख़शियत अता फ़रमाए, अपना ख़ौफ़ अता फ़रमाए, अपनी मुहब्बत अता फ़रमाए, इल्म का शौक़ अता फ़रमाए, हमारे सीनों को इल्मे नाफ़ेअ़ के नूर से भर दे।

وآخر دعوانا أن الحمدُ للهِ ربِّ العالمين

☆☆☆

देवबंद के ज़मानए क़याम में एक मख़्सूस मजलिस मस्तूरात के लिये भी मुन्अक़िद की गई थी, जिसका एहतिमाम मौलाना सय्यद महमूद मदनी मद्दज़िल्लुहू की अहलिया मुकर्रमा ने किया था यह मजलिस 13 अप्रेल 2011 ई० बरोज़ बुध, दिन में साढ़े ग्यारह बजे शुरू हुई थी, आइंदा सफ्हात पर आप इसी मजलिस वाला बयान मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे।

अल्लाह कितना मेहरबान है!

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد

اعوذ بالله من الشيطان الرجيم، بسم الله الرحمٰن الرحيم

يَاأَيُّهَاالْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ

سبحان ربک رَبِّ العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العلمين

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

मख़्लूक़ की मुहब्बत दाइरए शरीअ़त में हो तो इबादत

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हर इंसान को एक धड़कता हुआ दिल अता किया है, इंसान जज़्बात और एहसास रखने वाली हस्ती है, चुनांचे इंसान जब क़रीब रहता है तो एक दूसरे से फ़ित्री तौर पर मुहब्बत करता है, यह मुहब्बत का जज़्बा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हर बंदे को अता किया है

दिल बह्रे मुहब्बत है मुहब्बत यह करेगा
लाख उसको बचा तू, यह किसी पर तो मरेगा

मख़्लूक़ में एक दूसरे से मुहब्बत करना अगर दाइरए शरीअ़त के अंदर हो तो यह इबादत है, जैसे मां बाप की मुहब्बत, औलाद की मुहब्बत, मियां बीवी की मुहब्बत, दो भाइयों में आपस की मुहब्बत, बहन भाई की मुहब्बत, यह तमाम मुहब्बतें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की नज़र में इबादत हैं।

मां की मामता

इन मुहब्बतों में एक मुहब्बत सबसे ज़्यादा तबई होती है, इसको मां की मुहब्बत, मां की मामता कहते हैं, हर मख़्लूक़ को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस नेअ़मत से नवाज़ा है कि मां अपनी औलाद से मुहब्बत करती है, इंसान, हैवान, चरिंद परिंद, कोई भी हो, मां को अपनी औलाद से मुहब्बत होगी। आपने कई मर्तबा यह मंज़र देखा होगा कि मुर्ग़ी अपने बच्चों के साथ फिर रही है, दूर से कहीं बिल्ली आती है तो वह मुर्ग़ी बच्चों के सामने अपने पर फैला के खड़ी हो जाती है, इस बिल्ली के साथ मुक़ाबले के लिये तैयार हो जाती है, हालांकि वह मुर्ग़ी जानती है कि मैं बिल्ली के साथ लड़ नहीं सकती, लेकिन वह मां है, वह अपनी आंखों के सामने अपने बच्चों को बिल्ली का शिकार भी होता नहीं देख सकती, लिहाज़ा वह फ़ैसला करती है कि गो मैं मर जाऊंगी, लेकिन पहले तुम मुझसे निमटोगी, फिर मेरे बच्चों को हाथ लगाओगी।

हमने कई मर्तबा देखा होगा कि एक चिड़े ने कमरे में घौंसला बनाया हुआ है और उसमें उसका बच्चा है तो वह चिड़या पानी लेने या दाना लेने के लिये बाहर चली जाती है, कुदरतन कोई आदमी कमरे का दरवाज़ा बंद कर देता है, अब वह मां परेशान होती है, उसकी चौंच में दाना है या पानी का क़तरा है और वह कभी उड़ती हुई इधर बैठती है और कभी उधर बैठती है कि दरवाज़ा खुले और मैं अपने बच्चों को यह पानी पहुंचाऊं, हालांकि बार बार उड़ने से उसको खुद प्यास लगी हुई है और पानी उसकी चौंच में है, मगर वह पानी खुद नहीं पीती, अपने बच्चे के लिये बचा के रखती है और जैसे ही दरवाज़ा खुलता है वह उसी वक़्त अंदर जाकर अपने बच्चे के मुंह में पानी डाल देती है।

हदीसे मुबारक में एक वाक़िआ भी आया है कि एक सहाबी रज़ि0 नबी सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हो रहे थे, उन्होंने रास्ता में एक दरख़्त पर घौंसला देखा, जिसमें छोटे छोटे बड़े ख़ूबसूरत बच्चे थे, उन्होंने चिड़ये के वह बच्चे उठा लिये और चल पड़े, चिड़या कहीं दाना चुगने के लिये गई हुई थी, थोड़ी देर के बाद उन्होंने महसूस किया कि जैसे उनके सर के ऊपर एक चिड़या उड़ रही है और आवाज़ें निकाल रही है, वह उस आवाज़ को न समझे कि यह मुझे क्या पैग़ाम दे रही है, चलते गए, चिड़या भी उनके सर पर चक्कर लगाती रही, आवाज़ निकालती रही, हत्ता कि कुछ देर के बाद वह थकी हुई चिड़या उनके कंधे पर आकर बैठ गई, उन्होंने उस चिड़या को भी पकड़ लिया, फिर उन सब को लेकर वह नबी सल्ल0 की ख़िदमत में आए, सहाबा रज़ि0 की एक ख़ूबसूरत आदत थी कि जब कोई नई बात पेश आती थी तो वह अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 से उनके बारे में पूछते थे, चुनांचे उन सहाबी रज़ि0 ने नबी सल्ल0 की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! मेरे साथ यह वाक़िआ पेश आया, तो नबी सल्ल0 ने उन्हें यह बात समझाई कि देखो! मां दाना चुगने के लिये गई हुई थी, तुमने बच्चों को पकड़ लिया, मां वापस आई तो घौंसला ख़ाली देखा, परेशान होकर वह बच्चों की तलाश में निकली, जब तुम्हारे हाथ में बच्चे देखे तो तुम्हारे सर पर चक्कर लगाती रही, फ़रयाद करती रही कि मुझे मेरे बच्चों से जुदा मत करो, मैं बच्चों के बग़ैर नहीं रह सकूंगी, मगर तुम उसकी बात को न समझे, तो उस चिड़या ने यह फ़ैसला किया कि अगर यह शख़्स मेरे बच्चों को आज़ाद नहीं करता तो फिर मेरा गिरफ़्तार हो जाना ही बेहतर है, मैं क़ैद तो हो जाऊंगी, मगर बच्चे तो मेरे साथ होंगे, इसलिये वह चिड़या तुम्हारे कंधे पर आकर बैठ गई, तुमने उसे

भी पकड़ लिया। फिर नबी सल्ल0 ने उन्हें समझाया कि जाएं और घौंसले में उस मां और बच्चों को दोबारा छोड़कर आएं। अब मुर्ग़ी और चिड़या कितनी नन्ही मुन्नी सी जान है, लेकिन उनमें भी मुहब्बत की यह हद है, तो इंसान तो इंसान है।

एक मां को अपनी औलाद से कितनी मुहब्बत होती है, हर बंदा इस चीज़ का अंदाज़ा नहीं लगा सकता, कहते हैं कि सुलैमान अलै0 के पास दो औरतों का मुक़द्दमा आया, वह दोनों अपने बच्चों को लेकर गांव से शहर की तरफ़ किसी काम के लिये आ रही थीं, रास्ता में भेड़िये ने हमला किया और उनमें से एक औरत के बच्चे को वह लुक़्मा बनाकर ले गया, पहले तो वह औरत रोती रही, फिर मालूम नहीं उसके दिल में क्या ख़्याल आया कि उसने दूसरी औरत से यह कहना शुरू किया कि यह लड़का जो तुम्हारे पास है वह मेरा बेटा है मुझे दे दो, अब दोनों के दर्मियान एक Dispute (तनाज़ा) बन गया, एक कहती कि यह मेरा बच्चा है, दूसरी कहती कि यह मेरा बच्चा है, सुलैमान अलै0 के पास जब मुक़द्दमा आया तो आप हैरान थे कि आख़िर फ़ैसला क्या किया जाए, अल्लाह तआला ने आपको बात की हक़ीक़त समझा दी, चुनांचे आपने फ़रमाया कि उस बच्चे पर दो औरतें मां होने का दावा कर रही हैं, मेरे पास छुरी लाओ, मैं उस बच्चे के दो टुक्ड़े करूंगा, एक टुक्ड़ा एक औरत को दूसरा दूसरी औरत को दूंगा, जब आपने छुरी मंगा ली और उन औरतों को यक़ीन हो गया कि आप उस बच्चे के दो टुक्ड़े कर देंगे, तो उनमें जो असल मां थी वह परेशान हुई, रो कर कहने लगी कि हज़रत! यह बच्चा भले उस दूसरी औरत को देदें, कम अज़कम मैं इस बच्चे को अपनी ज़िंदगी में ज़िंदा तो देख सकूंगी, तो सुलैमान अलै0 को पता चल गया कि असल मां कौन है, लिहाज़ा उन्होंने बच्चा उसी के हवाले कर

दिया।

सय्यदा आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 अपने घर में तशरीफ़ फ़रमा हैं, एक मांगने वाली औरत आई, उसके दो बच्चे थे, आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 ने उसको तीन खजूरें दीं, उसने एक खजूर एक बच्चे को दे दी, दूसरी खजूर दूसरे बच्चे को दे दी, और तीसरी खजूर खुद खाने के बजाए इंतेज़ार करने लग गई, जब दोनों बच्चों ने अपने अपने हिस्से की खजूरें खा लीं तो मां ने अपने हिस्से की खजूर के दो हिस्से किये और आधा टुक्ड़ा एक बच्चे को, आधा दूसरे को दिया, वह खजूर भी बच्चों ने खाई, तो सय्यदा आइशा रज़ि0 बड़ी हैरान हुईं, जब नबी सल्ल0 तशरीफ़ लाए तो उन्होंने बतलाया कि ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! यह वाक़िआ पेश आया, तो फिर नबी सल्ल0 ने बात समझाई कि मां के दिल में बच्चे की ऐसी मुहब्बत होती है कि खाता बच्चा है और उसकी खुशी उसकी मां को हुआ करती है।

यह बिल्कुल वही मुआमला है कि हिज्रत के सफ़र में नबी सल्ल0 उम्मे ऐमन रज़ि0 के घर आए, सिद्दीक़े अक्बर रज़ि0 ने पूछा कि क्या हम आपकी बकरियों के दूध निकाल सकते हैं? उसने कहा कि बकरियां बूढ़ी हैं, दूध नहीं देतीं, उन्होंने कहा कि इजाज़त तो दे दें, उसने इजाज़त दी, सिद्दीक़े अक्बर रज़ि0 बड़े बर्तन लेकर बैठे, बकरी ने दूध देना शुरू किया, तो वह बर्तन भर कर उस पर कपड़ा डाल कर उसको नबी सल्ल0 की ख़िदमत में पेश किया, नबी सल्ल0 ने जब ख़ूब नोश फ़रमाया तो सिद्दीक़े अक्बर रज़ि0 फ़रमाते हैं कि "فَشَرِبَ حَتّٰى رَضِيْتُ" महबूब सल्ल0 ने जी भर कर दूध पिया, हत्ता कि मेरा दिल खुश हो गया, अब दूध तो अल्लाह के हबीब सल्ल0 पी रहे हैं, और दिल सिद्दीक़े अक्बर रज़ि0 का खुश हो रहा है। यही हालत मां की होती है कि बच्चा दूध पीता है और मां का

दिल ख़ुश हो जाता है कि मेरे बच्चे ने ठीक तरीक़ा से दूध को पी लिया।

मां बनना हर औरत की फ़ित्री तमन्ना

यह अजीब बात है कि हर औरत के दिल में अल्लाह तआला ने मां बनने की फ़ित्री ख़्वाहिश रखी है, चुनांचे हमारे एक दोस्त इंजीनियर थे, बहुत खुला रिज़्क़ अल्लाह ने उनको दिया था, बड़ी कोठी थी, कारें थी, दुनिया की बहारें थीं, बहुत ख़ूबसूरत उनका घर था, लेकिन जो औरत उनकी बीवी से मिलने जाती तो उनकी बीवी उदास नज़र आती, हर औरत सोचती कि यह इतनी ख़ूबसूरत लड़की है, लिखी पढ़ी है, ऊंचे ख़ानदान से है, माल व दौलत की कमी नहीं, मुहब्बत करने वाला ख़ाविंद भी मौजूद है, फिर यह क्यों परेशान है, तो जब पूछती तो वह औरत जवाब देती कि अल्लाह ने मुझे हर नेअ़मत दी, कारें दीं, बहारें दीं, रोटी भी दी, बोटी भी दी, बस मेरे दिल की एक तमन्ना है कि मेरा इतना ख़ूबसूरत घर है, अल्लाह मुझे औलाद की नेअ़मत अता करता, कोई मेरा बेटा होता, जो यहां खेलता, मेरी आंखें ठंडी होतीं, चुनांचे दुनिया की तमाम नेअ़मतें मौजूद होने के बावजूद वह औरत इसलिये उदास थी कि उसकी औलाद नहीं थी फिर वह बताती कि मैं नमाज़ पढ़ती हूं तो औलाद की दुआ मांगती हूं, तहज्जुद पढ़ती हूं तो औलाद की दुआ मांगती हूं, क़ुर्आन मजीद की तिलावत करती हूं तो इसके बाद औलाद की दुआ मांगती हूं, मैं रमज़ान के रोज़े इफ़्तार करते हुए औलाद की दुआ मांगती हूं, अगर किसी आलिम या वली की महफ़िल में जाना पड़े तो मैं उस महफ़िल में औलाद की दुआ मांगती हूं, मैं एक मर्तबा उम्रे पे गई, मैंने तवाफ़ करके औलाद की दुआ मांगी, ग़िलाफ़े कअ़बा को पकड़ कर औलाद की दुआ मांगी, मक़ामे इब्राहीम पे दो नफ़िल पढ़ कर

दुआ मांगी, मेरी तो हर वक़्त अल्लाह से एक ही फ़रयाद है कि अल्लाह मुझे औलाद वाली नेअ़मत अता फ़रमा।

हालांकि औरत यह बात जानती है कि जब मुझे औलाद की उम्मीद लगेगी तो 9 महीने मेरे बिल्कुल बीमारी की हालत में गुज़रेंगे, कई औरतों को तो Pregnancy (हमल) के दौरान ब्लड प्रेशर ज़्यादा होने का मर्ज़ होता है। अक्सर औरतों को खाना अच्छा नहीं लगता, गोश्त की Smell (महक) अच्छी नहीं लगती, जिसकी वजह से उनको हर वक़्त उबकाई आती रहती हैं, अब 9 महीने इस बीमारी की हालत में गुज़ारना कि जिस्म हर वक़्त थका हुआ है, कमज़ोरी है, बीमारी है, खाने पीने को जी नहीं चाहता, मगर वह औरत इस तकलीफ़ को बर्दाश्त करने के लिये तैयार है। फिर वह यह भी जानती है कि जब बच्चे की विलादत का वक़्त आएगा तो वह इतना तकलीफ़देह अमल होती है कि ज़िंदगी और मौत का मस्ला होता है लेकिन मां बनने की तमन्ना ऐसी कि वह इस तकलीफ़ को भी बर्दाश्त करने के लिये तैयार है।

वह यह भी जानती है कि जब बच्चे की विलादत हो गई तो फिर कई साल के लिये मुझे चौबीस घंटे की अंथक ख़ादिमा बनना पड़ेगा, मैं पहले उसको पिलाउंगी बाद में खुद पियूंगी, पहले म उसे खिलाउंगी बाद में मैं खुद खाउंगी, मैं पहले उसे सुलाउंगी बाद मैं खुद सोउंगी, मुझे सारी सारी रात बच्चे की ख़ातिर जागना पड़ेगा, मगर वह यह सारी कुर्बानी देने के लिये तैयार है। वह समझती है कि बच्चे होने के बाद ख़ाविंद से मैल मुलाक़ात का वह मुआमला न रहेगा जैसे पहले था, मगर वह अपनी जिंसी ख़्वाहिश को भी दबा देती है और मां बनने की ख़्वाहिश उस पर ग़ालिब आती है, दुआ करवाती है, कहीं से खजूरें दम करवाती है, दवाईयां लेती है, हर वक़्त की यह

तमन्ना होती है कि अल्लाह मुझे औलाद की नेअ़मत अता फ़रमा दे, तो इससे अंदाज़ा लगाइये कि औरत के दिल में फ़ित्री तौर पर मां बनने की तमन्ना कैसी होती है।

मां की मुहब्बत व ममता

और जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसको यह नेअ़मत अता फ़रमा देते हैं तो वह बच्चे को गोद में लेके बैठती है, बच्चे से इतना प्यार होता है कि मां उसका चेहरा देख कर सारी ज़िंदगी का ग़म भूल जाती है, उसे किसी तकलीफ़ का एहसास नहीं होता, उसकी तवज्जो दुनिया में कहीं और नहीं होती, वह तो अपने आप को भी भूल जाती है, बस उसे बच्चा याद होता है, उसकी यह हालत होती है कि जब शादी हुई थी तो वह अपने ख़ाविंद के साथ बाज़ार जाती थी, वह अपने जूते ख़रीदती थी, अपने कपड़े ख़रीदती थी, अपनी ज़रूरत का सामान ख़रीदती थी, अब औलाद होने के बाद उसका अंदाज़ बिल्कुल बदल गया, अब अगर कभी वह ख़ाविंद के साथ जाती भी है छोटी छोटी चीज़ों को ढूंढती फिर रही होती है कि मेरे बच्चे के जूते ऐसे हों, मेरे बच्चे के कपड़े ऐसे हों, मेरे बच्चे का फ़ीडर ऐसा हो, अब उसे अपना आप याद नहीं होता, अब उसके सामने अपना बच्चा होता है, जिसकी ज़रूरत को पूरा करके वह ख़ुश होती है, चुनांचे जब देखो बच्चे में मसरूफ़ है, न उसे सोना याद है, न और कोई काम याद है, अगर बच्चा बीमार हो गया और गोद में ले के बैठना पड़ा तो वह पूरी पूरी रात बैठ के गुज़ार देती है, सारी रात जागती रही, बच्चा सोया रहा, जब उसके सोने का वक़्त आया तो बच्चा उस वक़्त उठ गया तो यह फिर बच्चे को गोद में ले कर बैठ जाती है, उसकी नींद भी क़ुर्बान, खाना पीना भी क़ुर्बान, आराम क़ुर्बान, उसकी ख़्वाहिशात क़ुर्बान, यह मां भी क्या अजीब चीज़ है कि अल्लाह

रब्बुल इज़्ज़त ने उसे मुहब्बतों का एक नमूना बना दिया है कि बच्चे के हंसने से वह हंस पड़ती है और बच्चे के रोने से रो पड़ती है, बच्चा उसके लिये दुनिया की सबसे ज़्यादा अहम शख़्सियत बन जाता है, हत्ता कि उसकी मुहब्तों के पैमाने भी बदल जाते हैं, शादी से पहले उसे अपनी बहन से बड़ा प्यार था, बच्चा हुआ तो अगर उसकी बहन बच्चा से प्यार नहीं करती तो यह उसको भी अच्छा नहीं समझती, जो उसके बच्चे से प्यार करे यह उसे अपना समझती है और जो बच्चे से प्यार न करे यह उसे अपना ग़ैर समझती है।

चुनांचे हमने देखा कि किचन में खड़ी होती है, सालन पका रही होती है, दूसरे कमरे में बच्चा सोया हुआ है, ज़रा खटका हुआ सब कुछ छोड़ छाड़ के भागी जाती है, पहले बच्चे की ज़रूरत पूरी करती है बाद में आके फिर खाना बनाती है। इसी तरह अगर यह किसी दिन घर की सफ़ाईयां करती रही हो, कपड़े धोती रही हो, बहुत थकी हुई हो और चाहती है कि मैं बस इशा के बाद सो जाऊं, मगर इशा के बाद उसका बच्चा किसी बीमारी की वजह से रोना शुरू कर देता है, तो ये मां को सोना भूल गया, फिर यह जाग रही होती है, हालांकि जिस्म टूटा हुआ है, थका हुआ है, नींद की तलब है, आंखें बोझल हो रही हैं, मगर मां भी तो है, अब यह अपनी नींद को कुर्बान करती है और बच्चे को फिर Attend (देखभाल) करती है, गोद में लेकर बैठती है। हमने तो यहां तक वाक़िआत सुने कि पहले वक़्तों में जब मां अपने बच्चे को लेके सोई होती थी तो उस वक़्त तो डाइपर तो होते नहीं थे, अगर बच्चा रात को पेशाब कर देता था तो मां बच्चे को उठा के ख़ुश्क जगह पे लिटा देती थी और ख़ुद उस गीली जगह पे सो जाती थी, हर चीज़ कुर्बान कर देती है, उसको कोई तन्ख़्वाह तो नहीं मिल रही लेकिन उसकी मुहब्बत उसको मजबूर

कर रही है, यह अपनी मुहब्बत की वजह से बच्चे की बांदी बन गई है। चुनांचे उसका बच्चा कभी बीमार हो जाए तो उसकी हालत देखो, न उसे खाना याद, न पीना याद, आंखों में आंसू हैं, डाक्टरों के पास लिये फिर रही है, हकीम से कहती है कि उसको ऐसी दवा दें कि यह बिल्कुल ठीक हो जाए और अगर तबीअत ज़्यादा ख़राब हो जाए तो फिर यह मां बच्चे को गोद में लेके बैठती है, अल्लाह से दुआ मांगती है, जिस मां का बेटा बीमार हो जाए, उसको दुआ मांगना कोई नहीं सिखाता, उसे मुहब्बत दुआ मांगना सिखा देती है, ऐसे तड़प के अल्लाह से मांगती है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस मां की दुआ क़बूल फ़रमा लेते हैं, उस औरत के दिल में बच्चे की मुहब्बत का यह आलम है कि अगर बच्चा उसके बाल नौचता है तो यह उसे मुहब्बत समझती है, बच्चा उसके मुंह पे थप्पड़ मारता है तो मां उसके हाथों को चूम लेती है, आख़िर क्या वजह है? उस मां के दिल में बच्चे की मुहब्बत है।

हमने देखा कि इस दुनिया में हर कोई अच्छों से मुहब्बत करता है, बुरों से मुहब्बत करने वाली मां की ज़ात है, मां की औलाद बुरी हो जाए, सब बुरा बुरा कहने लगें, एक वक़्त आता है कि ख़ाविंद भी बुरा कहता है और धमकियां देता है कि मैं बच्चे को घर से निकाल दूंगा, मगर मां तो मां होती है, रोकर कहती है कि आख़िर मैं तो मां हूं, मेरा तो दिल तड़पता है, औलाद संवर न सकी यह उनके मुक़द्दर थे, मगर मैं इस बच्चे को आंखों से दूर तो नहीं कर सकती, उस मां के दिल में अल्लाह ने औलाद की मुहब्बत रखी है। हम अपने घर में देखा कि अगर कभी कोई बच्चा शरारत करे और मां उसे सख़्ती से समझा दे और वह बच्चा रूठ के घर से बाहर निकल जाए तो मां का चैन और सुकून ख़त्म हो जाता है, वही मां जो थोड़ी देर पहले डांट

रही थी, अब वजू करती है, मुसल्ले पे आके बैठ जाती है, दुआ मांगती है कि अल्लाह! मेरा बेटा किसी बुरे बंदे के हाथ न लग जाए, अल्लाह! मेरे बच्चे की हिफ़ाज़त करना, मेरे बच्चे को वापस पहुंचा देना, अल्लाह! मेरे बच्चे की जान इज़्ज़त आबरू हर चीज़ की हिफ़ाज़त करना, अब यह मां जो आंसू बहा रही है, कोई उससे पूछे कि तुम ही ने तो डांटा था, तो वह जवाब देगी कि डांटा तो इसलिये था कि मैं मां हूं, मैं नहीं समझाऊंगी तो कौन समझाएगा? मगर मेरा दिल यह नहीं चाहता कि मेरा बच्चा मेरी आंखों से दूर हो जाए, चुनांचे खाने का वक़्त हो जाता है, घर के सब लोग पेट भर के खाना खा लेते हैं, मां बहाना कर देती है कि मेरा जी नहीं चाह रहा है, हालांकि उसको भूक लगी होती है, उसका पेट ख़ाली होता है, उसको खाने की तलब होती है, मगर वह मां यह सोचती है कि पता नहीं मेरे बेटे ने खाया होगा कि नहीं, तो मैं कैसे खाऊं, वह मां भूकी रहती है, हत्ता कि जब रात का वक़्त हो जाता है, ख़ाविंद बाहर आफ़िस से घर आता है, वाक़िआ सुनता है तो वह भी बीवी को डांटता है कि तेरी बिला वजह की मुहब्बत ने बच्चे को बिगाड़ दिया, मां की हालत देखो कि ख़ाविंद की डांट भी बर्दाश्त कर रही है, इधर भी बुरी बन रही है, मगर मुहब्बत के हाथों मजबूर है, सब लोग सो जाते हैं, एक मां होती है जिसे नींद नहीं आती, बिस्तर पे करवटें बदल रही होती है, अगर कोई पूछे कि क्यों नहीं सोती, वह जवाब देगी कि पता नहीं मेरा बेटा सोया होगा या नहीं, कैसे नींद आए? वह बच्चा के इंतेज़ार में होती है, हत्ता कि अगर हवा की वजह से दरवाज़ा बंद हो तो मां फ़ौरन कान लगाती है कि कहीं मेरा बेटा आ तो नहीं गया? सोचिये तो सही! उस मां के दिल में अल्लाह ने औलाद की कितनी मुहब्बत रखी है।

आप ज़रा ग़ौर कीजिये कि अगर यह बच्चा किसी वक़्त वापस आए और दरवाज़ा खटखटाए तो मां दरवाज़ा खोलने में देर नहीं लगाती कि मेरे बच्चे को इंतिज़ार न करना पड़ जाए, बच्चा घर में दाख़िल होता है, सीधा कमरे में चला जाता है, मां अपनी बेटी को जगाती है कि बेटी! उठो भाई को खाना दो, बेटी कहती है अम्मी! मेरी नींद डिस्टर्ब हो रही है, वह सुब्ह खा लेगा, मां कहती है बेटी! उसे भूक लगी होगी, बेटी खाना बनाती है, भाई का दरवाज़ा खटखटाती है, वह गुस्सा की वजह से दरवाज़ा बंद करके बैठा है, मां कहती है अच्छा बेटी! सुब्ह ज़रा जल्दी उसको नाश्ता दे देना, बेटी पूछती है अम्मी! आख़िर क्यों आप से यह चीज़ बर्दाश्त नहीं हो रही है, वह कहेगी मेरा तो बेटा है, बिगड़ गया तो मैं क्या करूं, मेरा दिल तड़प रहा है, उसकी भूक मुझसे नहीं देखी जाती, वह मुझसे दूर है, मुझसे दूरी बर्दाश्त नहीं होती, बेटी पूछती है अम्मी! चाहती क्या हैं? मां जवाब देती है बेटी! मेरा दिल चाहता है कि तेरा भाई मेरे पास आए, मुझे आकर Sorry (मुआफ़ी मांगना) कह दे कि अम्मी! मुझसे ग़लती हुई, मैं उसे मुआफ़ कर दूंगी, अब उस मां की हालत देखिये, जो बेटे को मुआफ़ करने पर तुली हुई है, अगर उसका बेटा उसके पास आ जाए और उससे कहे कि अम्मी! मुझे मुआफ़ कर दो, वह पहले ही इंतेज़ार में थी, वह उसी वक़्त मुस्कुराती है, बच्चे का माथा चूमती है, बच्चे को अपने सीने से लगा लेती है कि मेरे बेटे! मैंने तुम्हें मुआफ़ कर दिया और अगर फ़र्ज़ करें कि मां को गुस्सा ज़्यादा है और वह फ़क़त सोरी कहने से खुश नहीं होती तो अगर वह बच्चा आकर उस मां के क़रीब बैठ जाए, उसके पांव पकड़ के कहे कि अम्मी! मुझसे ग़लती हुई, मुआफ़ कर दे, तो मां का गुस्सा ख़त्म हो जाता है, उसी वक़्त कहती है कि बेटे! मेरे पांव मत पकड़ो, मैंने

तुम्हें मुआफ़ कर दिया, अगर बिलग़र्ज़ उसका गुस्सा इससे भी ज़्यादा था और मुआफ़ी मांगते हुए बच्चे की आंखों में आंसू आ जाते हैं तो मां बेटे के आंसू बर्दाश्त नहीं कर सकती, अपने दूपट्टे से आंसू पोंछती है, बच्चे को सीने से लगा के कहती है कि बेटे! रो नहीं, मैंने तुझे मुआफ़ कर दिया, यह मां की मामता है।

रहमते इलाही की वुस्अत

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपनी मुहब्बत का नमूना दिखाने के लिये दुनिया में मां को पैदा किया कि लोगो! मां अपने बच्चे पर कैसे कुर्बान होती है, बच्चों से कितनी मुहब्बत करती है, बच्चों की ग़लतियों को कितना जल्दी मुआफ़ कर देती है, बच्चों के ऐबों पर कैसे पर्दे डालती है, ऐ मेरे बंदो! तुम मेरी मुहब्बत और मेरी रहमत का अंदाज़ा लगाना चाहो तो मैंने सारी मख़्लूक़ के अंदर रहमतों के सौ हिस्से में से एक हिस्सा तक़सीम किया, रहमत का निन्नानवे हिस्सा मेरे पास है, अंदाज़ा लगाओ मुझे अपने बंदे से किती मुहब्बत है, अगर मेरा बंदा, जो दुनिया में ख़ताकार था, गुनहगार था, जो मुझसे पीठ फेर के ज़िंदगी गुज़ारता फ़िरा, मुझे उसका इसी तरह इंतेज़ार रहता है जिस तरह बिछड़े बच्चे का इंतेज़ार उसकी मां को होता है, हमारे उलमा ने लिखा कि मां बिछड़े बेटे का इतना इंतेज़ार करती जितना अल्लाह अपने बिगड़े हुए बंदे का इंतेज़ार करते हैं, इसी लिये तो कुर्आन मजीद में फ़रमायाः "يَـاأَيُّهَـا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَـرِيْـمِ" ऐ इंसान! तुझे तेरे करीम परवरदिगार से किस चीज़ ने धोके मं डाल दिया, जैसे मां बच्चे को समझा रही होती है बेटा! मां से रूठा नहीं करते, मां से दूर नहीं हुआ करते, लगता है कि इस आयते मुबारका में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त बंदों को इसी तरह समझा रहे हैं कि ऐ बंदो! अपने परवरदिगार से रूठा नहीं करते, उससे दूर

नहीं जाया करते, आओ परवरदिगार का दर खुला है, हक़ीक़त तो यह है कि जो रब्बे करीम के दरवाज़े से पीठ फेर के जाता, आदाबे शाहाना का तक़ाज़ा यह था कि बंदे की पुश्त में एक लात लगवा दी जाती और उसके लिये दरवाज़े को बंद कर दिया जाता कि ओ बदबख़्त! मेरे दरवाज़े से पीठ फेर के जा रहा है, अब यह दरवाज़ा हमेशा के लिये बंद कर दिया गया, मगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ऐसा नहीं करते, दरवाज़ा खुला रखते हैं, चाहते हैं कि बंदा मेरे दर पर आए, बल्कि उलमा ने लिखा है कि एक नौजवान जिसने सारी ज़िंदगी शैतानी शहवानी नफ़सानी कामों में गुज़ार दी, हत्ता कि बढ़ापा आ गया, नौकरी न रही, कोई कमाने का ज़रीआ न रहा, औलाद थी नहीं, बीवी भी फ़ौत हो गई, अब वह अकेला किसी रिश्तादार के घर में पड़ा रहता है, तो वह बंदा जिसके पास न माल है, न जमाल है, न दुनिया की कोई और चीज़ है, हर वक़्त खांसता रहा है, उसको रिश्तादार भी कहता है कि ऐ बूढ़े! तुम्हारे खांसने की वजह से मेरे बच्चे परेशान होते हैं, यहां से चले जाओ, उसने भी धक्का दे दिया, उस वक़्त वह बूढ़ा उस घर से निकलता है, हाथ में लाठी पकड़ी हुई है, कमर टेढ़ी हो गई, अब वह हांपता कांपता हुआ चलता हुआ सोचता है कि कहां मैं जाऊं, कोई दर नहीं, कोई घर नहीं, मुहब्बत करने वाली बीवी नहीं, औलाद नहीं, मैं अकेला हूं, बेसहारा हूं, उस वक़्त उसे ख़ुदा का दर याद आता है कि चलो मैं अल्लाह के घर जाता हूं, अब यह बंदा जब मस्जिद में आता है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसे तअ़ना नहीं देते कि जब जवानी थी तुझे मस्जिद उस वक़्त क्यों न याद आई, जब माल था तो तुझे मस्जिद क्यों न याद आई, पेट में आंत नहीं, अब तुझे मेरे पास आने का वक़्ता आया? अल्लाह तआला उस बूढ़े को भी कोई तअ़ना नहीं देते, जब वह उस

बुढ़ापे में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के घर की तरफ़ आता है, अल्लाह फ़रमाते हैं कि मेरे बंदे तूने ज़िंदगी में एहसास तो कर लिया कि कोई तेरा परवरदिगार है, कोई तो तेरा है जिसे तू अपना कह सकता है, ऐ मेरे बंदे! आ, तू एक बालिश्त आएगा, मेरी रहमत तेरी तरफ़ दो बालिश्त चलेगी "وَإِنْ أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً" तू चल के आएगा मेरी रहमत तेरी तरफ़ दौड़ के जाएगी, उस अल्लाह की रहमतों पे कुर्बान जाएं जो अपने बंदे का इस हद तक इंतेज़ार फ़रमाते हैं।

चुनांचे उलमा ने लिखा है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपनी रहमत के एक हज़ार हिस्से किये, एक हिस्सा उसने दुनिया में उतारा, उस हिस्से की वजह से तुम आपस में मुहब्बतें देखते हो, रहमत के नौ सौ निन्नानवे हिस्से क़्यामत के दिन ईमान वालों के लिये ज़ाहिर हो गए, अब अगर मां को कहा जाए कि तेरे बच्चे को तकलीफ़ देते हैं तो मां कभी गवारा नहीं कर सकती। मशहूर वाक़िआ है कि एक मर्तबा नबी सल्ल0 को इत्तिला मिली कि अलक़मा रज़ि0 नौजवान सहाबी हैं, रूह क़ब्ज़ नहीं हो रही है, नबी सल्ल0 बिलाल और सुहैब रज़ि0 को साथ लेकर उनके पास आए, पता चला किसी वजह से मां नाराज़ है, नबी सल्ल0 ने उसकी वालिदा को कहा कि आप बच्चे से राज़ी हो जाएं, वह कहने लगी कि मैं हरगिज़ नहीं हूंगी, मेरा दिल बहुत ख़फ़ा है, जब मां ने इंकार कर दिया तो नबी सल्ल0 ने अपने सहाबा से कहा कि जाओ, लकड़ियां काट के लाओ, चुनांचे वह गए लकड़ियां लेकर आए, जब ढेर लग गया तो नबी सल्ल0 ने कहाः अच्छा इसको हम आग लगाएंगे, जब खूब आग जलेगी तो हम अलक़मा को उसके अंदर डाल देंगे, बूढ़ी औरत को पता चला तो पूछने लगी कि मेरे बेटे को आग में क्यों डालेंगे? नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि जब तुम उसे मुआफ़ नहीं करोगी तो उसे जहन्नम की

आग में जाकर जलना ही है, हम उसे यहीं आग में डालते हैं, जब मां ने देखा कि मुआमला Serious (संजीदा) है, तो कहती है कि मेरे बच्चे को आग में न डालें, मैंने अपने बच्चे को मुआफ़ कर दिया, तो जैसे मां बच्चे की तकलीफ़ बर्दाश्त नहीं कर सकती, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का भी मुआमला इसी तरह है।

परेशानियां इस्लाह के लिये आती हैं

अगर किसी के दिल में यह सवाल आए कि फिर तकलीफ़ें क्यों आती हैं? परेशानियां क्यों आती हैं? तो इसकी वजह यह है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने बंदे के गुनाहों को धोते हैं, मुआफ़ करते हैं, क्या आपने नहीं देखा कि ख़ाविंद एक कमरे में बैठा है, उसे दूसरे कमरे से बच्चे के रोने की आवाज़ आती है, वह पूछता है कि बच्चे के पास कोई है, जवाब मिलता है कि उसकी मां मौजूद है, वह कहता है कि यह कैसी मां है जो पास भी है फिर भी बच्चा रो रहा है? उसे बताया गया कि मां ही तो रुला रही है, वह हैरान होगा कि मां क्यों रुला रही है, जवाब मिलेगा कि बच्चे ने नजासत कर दी थी, नजासत में लिथड़ गया था, मां एसे साफ़ कर रही है, नए कपड़े पहना रही है और बच्चा नहाने की वजह से रो रहा है, तो यह बच्चे का रोना मां की सख़्ती की वजह से, नाराज़गी की वजह से या मां की दुशमनी की वजह से नहीं, बल्कि मां की मुहब्बत की वजह से है, मां बर्दाश्त नहीं करती कि उसके बच्चे से बू आए, उसके बच्चे के कपड़े मैले हों, वक़्ती रोने को वह बर्दाश्त करती है, और बच्चे को नहला के साफ़ कपड़े पहनाती है, फिर उसको सीने से लगा लेती है। बिल्कुल यही मुआमला इंसान का है, दुनिया में रहते हुए ऐसे गुनाह कर लेता है कि उसका बातिन नजिस हो जाता है, दिल सियाह हो जाता है, गुनाहों की नजासत उसको बातिनी तौर पर नापाक कर देती

है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस बंदे की नजासत को पसंद नहीं फ़रमाते, वह ख़ुद भी पाक हैं उन्हें पाक बंदा अच्छा लगता है, लिहाज़ा कोई बीमारी, कोई मुसीबत, कोई परेशानी बंदे पर भेज देते हैं, उनका अस्ल मक़्सद बंदे की मैल कुचैल को उतारना होता है, बंदे को पाक साफ़ करना होता है, फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस बंदे को इस तरह बीमारी से पाक कर देते हैं जैसे उस दिन पाक था जब उसकी मां ने उसको जन्म दिया था, कुर्बान जाएं अल्लाह की रहमत पर कि यह बीमारियां भी रहमत की शक्ल में आ जाती हैं, बंदे को धोने के लिये, आख़िरत के अज़ाब से बचाने के लिये आती हैं, "إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ" अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने बंदों पर बड़े रहीम हैं, लिहाज़ा अगर कोई बंदा ज़िंदगी भर गुनाहों में पड़ा रहा और फिर उसे एहसास हुआ कि मैंने ख़ता की, कि मैं अपने रब को मनाऊं, तो मौत से पहल पहले अल्लाह का दरवाज़ा खुला है बंदे को चाहिये कि वह आए और अपने रब को मना ले ताकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसके गुनाहों को मुआफ़ कर दें, हत्ता कि अल्लाह इतने ख़ुश होते हैं, "أُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ" कि अल्लाह तआला उस बंदे के गुनाहो को उसी नेकियों में तबदील फ़रमा देते हैं।

चुनांचे इब्ने क़य्यिम रह0 ने एक वाक़िआ लिखा है, फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा एक गली में से गुज़र रहा था, एक दरवाज़े के क़रीब जब पहुंचा तो मैंने देखा कि दरवाज़ा खुला, एक मां अपने आठ नौ साल के बच्चे पर ख़फ़ा हो रही थी, नाराज़ हो रही थी, कह रही थी कि तू ढीट बन गया, ज़िद्दी बन गया, मेरी कोई बात नहीं मानता, कामचोर बन गया, कोई काम नहीं करता, और कह रही थी कि अगर तुम को मेरी बात नहीं माननी है तो दूर हो जाओ, मैं तुम्हारी शक्ल नहीं देखना चाहती, गुस्सा में मां ने जब बच्चे को

धक्का दिया तो वह बच्चा घर के दरवाज़े से बाहर आ गिरा, मां ने दरवाज़ा बंद कर लिया, वह फ़रमाते हैं कि मैं उस बच्चे को देखने खड़ा हो गया, थोड़ी देर वह बच्चा रोता रहा, फिर बिलआख़िर वह बच्चा उठा, आहिस्ता आहिस्ता क़दमों के साथ उसने गली के एक कोने पे जाना शुरू किया, हत्ता कि जब कोने पर पहुंचा तो वहां जाकर खड़ा हो गया, जैसे कुछ सोच रहा हो, फिर आहिस्ता क़दमों से वापस आया, अपने घर की दहलीज़ पर आकर बैठ गया, थका हुआ था सो गया, थोड़ी देर के बाद उसकी मां ने किसी काम के लिये दरवाज़ा खोला तो देखा कि बच्चा दरवाज़ा पर ही लेटा हुआ है, मां का गुस्सा ठंडा नहीं हुआ था, फिर वह कहने लगी कि जाता क्यों नहीं, अगर तूने मेरी बात नहीं माननी तो यहां से चला जा, मैं तुझे देखना भी पसंद नहीं करती, जब मां ने उसे फिर डांटा, बच्चे की आंख खुली, वह खड़ा हुआ, आंखों से फिर आंसू आ गए, कहने लगाः अम्मी! जब आप ने मुझे धक्का दिया था तो मैंने सोच लिया था कि मैं यहां से चला जाता हूं, मैंने सोचा था कि मैं किसी का नौकर बन जाऊंगा, मुझे खाना भी मिल जाएगा, मुझे रहने की जगह भी मिल जाएगी और यह सोच कर मैं गली के मोड़ तक पहुंच गया था, लेकिन वहां जाकर मुझे यह ख़्याल आया कि मुझे रोटी भी मिलेगी, खाना भी मिलेगा, ठिकाना भी मिलेगा, लेकिन अम्मी! जो मुहब्बत मुझे आप देती हैं वह मुहब्बत मुझे पूरी दुनिया में कहीं नहीं मिल सकती, यह सोच कर मैं वापस आ गया, अम्मी! आ नाराज़ हैं तो भी मैं आप का बेटा, मुआफ़ कर दें तो भी आप का बेटा, जब बच्चे ने यह बात की तो मां की मामता जोश में आई, उसने बच्चे को सीने से लगाया, और कहा मेरे बेटे! अगर तू यह समझता है कि जो मुहब्बत मैं तुझे दे सकती हूं वह मुहब्बत तुझे दुनिया में कोई और

नहीं दे सकता तो मेरा दरवाज़ा खुला है, आ जा घर में ज़िंदगी गुज़ार ले। इब्ने क़य्यिम रह0 यह वाक़िआ लिखने के बाद फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का गुनहगार बंदा अपने गुनाहों पर नादिम और शर्मिंदा हो कर अल्लाह के दरवाज़े पे हाज़िर होता है और आकर कहता है:

اِلٰهِى! عَبْدُكَ الْعَاصِى أَتَاكَا　　مُقِرًّا بِالذُّنُوبِ وَقَدْ دَعَاكَا

अल्लाह आप का गुनहगार बंदा आप के दरवाज़े पर हाज़िर है, अपने गुनाहों का इक़रार करता है और आप की ख़िदमत में यह गुज़ारिश करता है:

فَاِنْ تَغْفِرْ فَأَنْتَ لِذَاكَ أَهْلٌ　　وَاِنْ تَطْرُدْ فَمَنْ يَرْحَمْ سِوَاكَا

कि अल्लाह! अगर आप मुआफ़ कर दें तो आप को यह बात सजती है, और अल्लाह! अगर आप मुझे धक्का दे दें तो फिर मेरे लिये कौन है जो मुझ पर रहम करने वाला हो।

अजीब बात है दुनिया की रोटी का सवाल करने वाला किसी दरवाज़े से ख़ाली चला जाए तो उसको कोई हसरत नहीं, कोई अफ़सोस नहीं, दूसरे दरवाज़ा पे चला जाएगा, न मिली तो तीसरे दरवाज़े पे चला जाएगा, मगर मुआमला तो इंसान का है, अगर वह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के दरवाज़ा पर आया और यह दरवाज़ा न खुला तो अब उसके लिये दूसरा कोई दरवाज़ा नहीं, जो अल्लाह के दरवाज़े से ख़ाली जाता है वही बदबख़्त होता है, वही शक़ी होता है, हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रहमत को सोचें और अपने गुनाहों पर नज़र डाल कर आज की इस मजलिस में यह फ़ैसला करें कि ऐ करीम! आज तक हम अपनी ज़िंदगी ग़फ़लत में गुज़ारते रहे, नमाज़ों में सुस्ती होती रही, पर्दे में कोताही होती रही, ज़बान से दूसरों की ग़ीबत होती रही, बोहतान बाज़ी होती रही, ऐ अल्लाह! आज हमें

अपने गुनाहों का एहसास हुआ, हम आज के बाद एक नेक औरत बन कर ज़िंदगी गुज़ारेंगी, ऐ अल्लाह! हम कोई गुनाह नहीं करेंगी, ऐ करीम! हमारे गुनाह मुआफ़ कर दीजिये, हमने तो दुनिया में देखा है कि अगर किसी घर की औरतें चल के किसी के दरवाज़े पे आ जाएं तो लोग क़त्ल का मुक़द्दमा भी मुआफ़ कर देते हैं, कि औरत चल के आ गई है, अगर दुनियादार इंसान औरत के आने का इतना लिहाज़ करता है तो ज़रा औरतें सोचें कि आज वह अपने घरों से चल के अल्लाह के उस घर में आकर बैठ गई हैं, कि ऐ मौला! हम आप को मनाना चाहती हैं, अल्लाह! हम अपने दिल का ग़म किस को सुनाएं, आप तो सीनों के भेद जानने वाले हैं, अल्लाह! हमारे हाल पर तरस खा लीजिये, हम पर रहम फ़रमा दीजिये, अल्लाह! हमारे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देंगे, आईंदा हमें नेकूकारी और परहेज़गारी की ज़िंदगी नसीब फ़रमाएंगे।

وآخر دعوانا أنِ الحمدُ للهِ ربِّ العالمين

आइंदा सफ़्हा से आप जो ख़िताब मुलाहज़ा फ़रमाएंगे, यह ख़िताब 13 अप्रेल 2011 बरोज़ बुध, बअ़द नमाज़े इशा, मौलाना सय्यद महमूद मदनी के मकान में मुन्अक़िद होने वाली, उस मख़्सूस नशिस्त में हुआ था, जिसमें मौलाना मौसूफ़ की दावत पर दारुल उलूम देवबंद और दारुल उलूम वक़्फ़ के अरबाबे एहतिमाम, असातिज़ा और अमाइदीने शहर व मुज़ाफ़ात जमा हुए थे।

अल्लाह का हर दम इस्तिहज़ार

गुनाहों से रोकने में इस्तिहज़ारे ख़ुदावंदी की तासीर

इंसान की यह फ़ित्रत है कि वह अपनी ख़ूबियों को ज़ाहिर करता है और अपनी ख़ामियों को छिपाता है, इसलिये कि ख़ूबियों को ज़ाहिर करने से उसे तारीफ़ मिलती है, जिसे वह पसंद करता है, और ख़ामिबों के ज़ाहिर होने से उसे ज़िल्लत होती है, जिसे वह नापसंद करता है, इसी लिये जब उसको कोई उल्टा काम करना हो, ग़लत काम करना हो, तो वह सब के सामने नहीं करता, अलग करता है, छिप के करता है। दुनिया के साइंसी दौर में आजकल इंसानी फ़ित्रत को Study (मुतालआ) किया गया और इस चीज़ को अच्छी तरह समझ लिया गया कि इंसान के अंदर यह एक उसूल है कि यह अच्छी सिफ़ात को ज़ाहिर करेगा, ऐबों को छिपाएगा और अगर उसे पता हो कि कोई मुझे देखने वाल है तो यह ग़लती करने से बचेगा, घबराएगा। चुनांचे उन्होंने लोगों को क़ानून का पाबंद बनाने के लिये वीडियो कैमरे ईजाद किये मिसाल के तौर पर एक नौजवान नई गाड़ी लेकर सड़क के ऊपर सफ़र कर रहा है, उसका जी चाहता है कि मैं तेज़ चलाऊं, मगर Speed (रफ़तार) की एक Limit (हद) है, हर वक़्त तो हर जगह पुलिस वाला नहीं होता तो लोग ट्रेफ़िक क़ानून को तोड़ते थे, तो हुकूमतों ने वीडियो कैमरे लगा दिये कि अगर कोई बंदा क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करे तो उसकी तसवीर बन जाए और वह पकड़ा जाए, चुनांचे जब टिकट मिलनी शुरू हुई तो लोगों ने क़ानून की पाबंदी करनी शुरू कर दी, कैमरे हर जगह तो नहीं होते, अब जो रोज़ के सफ़र करने वाले थे वह कैमरे की जगह गाड़ी Slow (धीरे) करते थे और आगे पीछे फिर तेज़ चलते थे, तो उन्होंने राडार के

ज़रीआ चैक करना शुरू किया चुनांचे आप मक्का मुकर्रमा से मदीना तय्यबा सफ़र करें तो जगह जगह लिखा हुआ नज़र आएगा कि उस जगह राडार के ज़रीआ रफ़्तार को नापा जाता है, अब जब यह ज़हन में ख़्याल रहा कि मुझे पूरा रास्ता देखा जा रहा है तो लोग क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करते, चुनांचे हम देखते हैं कि बड़े बड़े Departmental store (एक छत के नीचे पूरा बाज़ार) होते हैं कि एक मुहल्ला ही उसमें समा जाए और उस में करोड़ों डालर की चीज़ें Open (खुली) पड़ी होती हैं, कोई बंदा उठा के जेब में नहीं डालता, इसकी वजह यह है कि हर एक को पता है कि एक सिक्यूरिटी कैमरे का इंतेज़ाम है, लोग बैठे हुए देख रहे हैं, अगर मैं कोई चीज़ उठा के जेब में डालूंगा तो मुझे गेट से निकलने से पहले पकड़ लिया जाएगा, अब ज़िल्लत और सज़ा के ख़ौफ़ की वजह से कोई चोरी नहीं करता, उस काम को करके जो हुकूमतें थीं, उन्होंने कहा कि हमने बड़ा तीर मारा कि हमने लोगों को क़ानून का पाबंद बना दिया, हमारी क़ौम इतनी क़ानून की पाबंद बन गई, मगर एक मर्तबा तीन मिनट के लिये बिजली चली गई तो उन तीन मिन्टों में लाखों डालर की चोरी हो गई, क्योंकि हर बंदे को पता था कि अब कैमरा नहीं देख रहा है, तो मालूम हुआ कि कैमरे के ज़रीआ इंसान को क़ानून का पाबंद बना के चोरी से या किसी और ग़लत बात से मना कर लेना यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है।

अगर हम देखें तो दीने इस्लाम ने आज से चौदह सौ साल पहले एक पैग़ाम दिया, नबी सल्ल० दुनिया में तशरीफ़ लाए, आप ने बतलाया कि लोगो! तुम्हारा ख़ुदा है जो ज़िंदा है, देखता है, सुनता है, अगर रात की तारीकी हो और काली चट्टान हो, उसके ऊपर कोई च्यूंटी चल रही हो तो वह परवरदिगार उसको भी देखता है, यहां तक कहा गया कि "يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ" कि यही

नहीं कि वह सिर्फ़ तुम्हारी हरकात व सकनात को देखता है, नहीं, बल्कि तुम्हारे दिल में जो ख़्यालात व जज़्बात उठते हैं अल्लाह उन जज़्बात को भी देखता है

चोरियां आंखों की और सीनों के राज़
जानता है सब को तू ऐ बेनियाज़

सहाबए किराम रज़ि0 में यक़ीन की कैफ़ियत का एक नमूना

अब यह जब तसव्वुर दिया तो सहाबा रज़ि0 का यक़ीन इतना पक्का हो गया कि क्या जवान, क्या बूढ़े, क्या मर्द और क्या औरत, सबके ज़हनों में यह बात बैठ गई कि हमें हर हाल में हुक्मे ख़ुदा के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारनी है। चुनांचे हारिस रज़ि0 एक सहाबी हैं, नबी सल्ल0 ने उनसे पूछाः "كَيْفَ أَصْبَحْتَ يَا حَارِثُ" हारिस! तुम ने कैसे सुब्ह की? उन्होंने कहाः "أَصْبَحْتُ مُؤْمِنًا حَقًّا" पक्का मोमिन होने की हालत में मैंने सुब्ह की, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि हर चीज़ की एक अलामत होती है, तुम्हारे ईमान की क्या अलामत है? उन्होंने कहाः ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! मेरी तो यह हालत है कि महसूस होता है जैसे मैं अर्श के सामने हूं और कुछ लोग हैं जो जन्नत जाते हैं और कुछ लोग हैं जो जहन्नम में जाते हैं, फ़रमायाः हारिस! तुमने हक़ीक़ते ईमान को पहचान लिया कि बंदे की हर वक़्त यह कैफ़ियत हो कि वह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामने है, उसको हदीसे मुबारक की ज़बान में मक़ामे एहसान कहते हैं, "أَنْ تَعْبُدَ اللّٰهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ" कि अल्लाह की इबादत ऐसे कर जैसे कि वह तुझे देखता है।

एक चरवाहे के दिल में अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का इस्तिहज़ार

आप ज़रा ग़ौर कीजिये कि एक नौजवान लड़का नौजवानी के अंदर बकरियां चराता है, उमूमी तौर पर जो बकरियां चराने वाले होते

हैं वह बहुत लिखे पढ़े Sophisticated (मुहज़्ज़ब) नहीं होते, ग़ैर तालीम याफ़्ता ग़रीब तबक़े के लोग होते हैं, वह नौजवान बच्चा रेवड़ लेकर जा रहा है, अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० बुला कर कहते हैं कि भाई! एक बकरी हमें बेच दो, गोश्त भूनेंगे, आप को भी खिलाएंगे, हम भी खाएंगे, उसने कहाः जनाब! यह बकरियां मेरी नहीं हैं, यह तो मालिक की हैं, उन्होंने आज़माने के लिये कह दिया कि तुम बकरी बेच दो, मालिक को कह देना कि भेड़िया खा गया, इतना कहना था कि वह नौजवान उस वीराने के अंदर अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० को देख कर कहता हैः "فَأَيْنَ اللّٰه" कि अगर मैं यह अल्फ़ाज़ कहूंगा तो फिर अल्लाह कहां है। इसका मतलब यह कि हर नौजवान, मर्द औरत, बच्चे बूढ़े के दिल में यह बात रासिख़ हो चुकी थी कि हमारे हर अमल को हमारा परवरदिगार देखता है, इसी लिये अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० इस वाक़िआ को बहुत मज़े लेके सुनाया करते थे कि देखो ईमान ने क्या दिलों को बदल के रख दिया कि वीराने के अंदर जहां बहाने बनाना बड़ा आसान था, मगर वह नौजवान कहता है कि मालिक तो मुतमइन हो जाएगा, मगर "فَأَيْنَ اللّٰه" अल्लाह कहां है।

एक नौजवान लड़की के दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा

सय्यदना उमर रज़ि० गलियों में Round (गश्त) कर रहे थे, एक घर में दो औरतों का मुकालमा हो रहा था, बकरी ने दूध दे दिया? जी दे दिया, कितना दिया? थोड़ा दिया, तो फिर मांगने वाले तो पूरा मांगेंगे, कुछ पानी मिला दो, कहा कि मैं तो नहीं मिलाऊंगी, अमीरुल मोमिनीन ने मना किया है, तो वह बुढ़िया कहती है कि कौनसा अमीरुल मोमिनीन देखता है, तो वह लड़की जवाब देती है कि अमीरुल मोमिनीन अगर नहीं देखते तो अमीरुल मोमिनीन का परवरदिगार तो देख रहा है, उमर रज़ि० यह सुन कर चले गए, अगले

दिन पता करवाया तो वह एक कुंवारी बच्ची थी, आप ने अपने बेटे के लिये उसका रिशता पसंद फ़रमाया और उसका निकाह कर दिया। तो इन बातों से मालूम हुआ कि हर नौजवान बच्ची के दिल में यह बात बैठी हुई थी, हर नौजवान बच्चे के दिल में यह बात बैठी हुई थी, यह एक इतनी अनमोल नेअ़मत है कि ईसान की ज़िंदगी से गुनाहों को निकाल के रख देता है, न वह लोगों के सामने गुनाह करता है, न वह तन्हाई में गुनाह करता है, गुनाह करने के लिये माहौल मवाफ़िक़ होता है, हालात साज़गार होते हैं, मगर गुनाह नहीं करता।

एक सहाबी रज़ि0 को खुली दावते गुनाह

इसलिये तो एक सहाबी रज़ि0 मक्का मुकर्रमा में रहते थे, ईमान से पहले किसी औरत के साथ तअल्लुक़ात हो गए थे, ईमान ले आए, एक मर्तबा मक्का मुकर्रमा जाना हुआ, इशा का वक़्त है, उस औरत ने देखा तो कहने लगी कि इतने अर्से के बाद मुलाक़ात हुई, तुम कहां थे, आज घर पे ख़ाविंद नहीं, तुम मेरे पास आना, उन्होंने कहा मैं नहीं आऊंगा, उसने कहा कि मैं वही हूं जिसके पास तुम गलियों में रोते फिरते थे, और उस वक़्त मैं तुम्हें ना करती थी, आज मैं बुलाती हूं तो तुम ना कर रहे हो, इस पर उन्होंने जवाब दिया कि अब मैंने कलिमा पढ़ लिया है, मेरे दिल में ईमान की नेअ़मत अब पैवस्त हो चुकी है, तो देखिये दावते गुनाह मिल रही है, अंधेरा है, मक्का के लोगों को पता नहीं है कि कौन आया है और कौन नहीं आया, मगर अल्लाह की शान देखिये कि वह गुनाह से बच रहे हैं।

हज़रत सुलैमान दारानी रह0 का ख़ौफ़े ख़ुदा

इस तरह के बहुत से वाक़िआत हमारे अकाबिर ने किताबों में नक़्ल फ़रमाए हैं, अबू सुलैमान दारानी रह0 के बारे में वाक़िआ है कि

तीन दोस्त थे, जो हज पर जा रहे थे, एक जगह पहुंचकर उन्होंने महसूस किया कि हमारे पास जो खाने पीने का सामान था वह कम है और आगे काफ़ी सफ़र के बाद फिर जाके कोई सामान मिलने की उम्मीद है, तो बेहतर है कि हम कहीं से सामान ले कर चलें, तो दो दोस्तों ने कहा कि आप ख़ेमे में रहो हम सामान लाते हैं, वह बैठ गए, जब ख़ेमे में बैठे तो इतने में एक औरत आ गई, जो बकरियां चराने वाली थी, उसने आके कोई बात कही, यह समझे कि शायद यह रोटी चाह रही हो, उस वक़्त औरत ने वज़ाहत की कि मुझे रोटी की तलब नहीं, जो औरत मर्द से चाहती है वह तुम से मैं चाहती हूं, उनके दिल में फ़ौरन ख़्याल आया कि ओफ़्फ़ोह! शैतान ने मुझे अकेला देखकर मुझे मेरे अल्लाह से जुदा करने के लिये अपना नुमाइंदा भेज दिया, उस बात को सोचकर इतना दिल पे ग़म तारी हुआ कि आंखों में आंसू तारी हो गए और उनको रोता देख कर उस औरत पर हया ग़ालिब आई, वह भी निकल गई, यह रोते रोते सो गए, यह कहते हैं कि उनको ख़्वाब में सय्यदना यूसुफ़ अलै0 की ज़ियारत नसीब हुई, सय्यदना यूसुफ़ अलै0 से यह ख़्वाब में गुफ़्तगू करने लगे कि ऐ अल्लाह के नबी अलै0! आपने इतना कमाल दिखाया कि जुलैख़ा की दावत को ठुकरा दिया, यूसुफ़ अलै0 ने फ़रमाया कि मैं तो गुनाह से इसलिये बचा कि मैं अल्लाह का नबी था, मेरे साथ अल्लाह की मदद थी, यह इतनी हैरानी की बात नहीं है, हैरानी की बात यह है कि तुमने वली होकर वह काम कर दिखाया जो काम वक़्ते नबी किया करता था। उन अकाबिर के दिलों में यह यक़ीन बैठ चुका था कि हम जो कर रहे हैं हमारा अल्लाह उसको देखता है।

एक सहबिया रज़ि0 की मिसाली तौबा

ज़रा ग़ौर कीजिये एक औरत से गुनाह होता है, क़बीलए

ग़ामदिया की औरत थी, नबी सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर होती है, कहती है, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0! मैं गुनाह कर बैठी, नबी सल्ल0 उसको वापस भेज देते हैं, वह फिर लौट के आती है और कहती है: ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0 मुझसे गुनाह सरज़द हो गया, नबी सल्ल0 फिर भेज देते हैं, वह फिर लौट के आती है और कहती है कि आप मुझे क्या बार बार लौटाएंगे, मैं हामिला हो चुकी हूं, कोई शक वाली बात नहीं है, नबी सल्ल0 फ़रमाते हैं: अच्छा जाओ, जब वज़ए हमल हो जाएगा तब आना। अब ज़रा ग़ौर कीजिये कि एक लम्हा के लिये उसको नदामत हुई भी थी तो नफ़्स व शैतान को बहकाने के लिये कितना वक़्त था कि नफ़्स बहका देता, शैतान बहका देता कि क्यों इक़रार करती हो, मगर नहीं, वह फिर आई, अब 9 महीने उसके पास हैं, 9 महीने में उसका ज़हन नहीं बदला, 9 महीने वह दिन रात सोचती होगी कि मेरे साथ होना क्या है, उसको अच्छी तरह पता था कि उसका अंजाम क्या है, मगर ऐसा लगता है कि उसकी तबीअत में एक बेक़रारी थी, उसके पास एक इज़्तिराब था, जो उसे चैन नहीं लेने दे रहा था, कहती थी कि मुझे पाक किया जाए, मैं इस नापाकी में अपने रब के सामने जाना नहीं चाहती, हत्ता कि वह अपने बच्चे को कपड़े में लपेटे हुए लेके आती है, और कहती है: ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! बच्चे की विलादत हो गई, आक़ा सल्ल0 फ़रमाते हैं कि जाओ इसे दूध पिलाओ, अब फिर "حولين كاملين" दो साल उमूमन बच्चे दूध पीते हैं, तो एक साल हमल को और दो साल दूध के, तो कम व बेश तीन साल के क़रीब का अर्सा है, यह कोई छोटी बात नहीं है, उसको पता है कि मेरे साथ होना क्या है, उसके अंदर एक आग लगी हुई है, उसके अंदर एक ग़म है, एक फ़िक्र है, उसे शैतान न वरग़ला सका, आज तो थोड़ी सी मोहलत मिले तो इंसानों

के ज़हन बदल जाते हैं, राए बदल जाती है, बात बदल जाती है, लेकिन तीन साल उसने इंतेज़ार किया, इसका मतलब कि यह बात नक़्श कलहज्र के मानिंद थी, दिलों में बैठ चुकी थी, उतर चुकी थी कि मुझे इस नापाक हालत में अपने अल्लाह के सामने नहीं पेश होना है, और मुझे पाक होना है, तीन साल तक़रीब गुज़र गए, बच्चे को लेके आती है, बच्चे के हाथ में रोटी का टुकड़ा था, कहती हैः ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0 बच्चे ने अब रोटी खाना शुरू कर दिया, अब इसको मेरे दूध की ज़रूरत नहीं, फिर उसको पाक किया जाता है। ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 ने कोई बात कर दी, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि इस औरत ने ऐसी तौबा कि अगर 70 बंदों में तक़्सीम की जाती तो उनके गुनाहों के लिये काफ़ी हो जाती और बअ़ज़ किताबों में लिखा है कि अगर ज़मीन के सब गुनहगारों में तक़्सीम की जाती तो सब के लिये काफ़ी हो जाती।

यक़ीन और ख़ौफ़े ख़ुदा की कमी का अंजाम

यह क्या नेअ़मत थी? इसको ईमाने कामिल कहते हैं, इसको यक़ीने मुहकम कहते हैं, आम बंदे में और एक मोमिन बंदे के दर्मियान यह फ़र्क़ कर देता है। हमारी ज़िंदगियों में और उन अकाबिर की ज़िंदगियों में एक बुन्यादी फ़र्क़ यही है कि जानते तो हम सब हैं इस्तिहज़ार नहीं है, दिल में वह ख़ौफ़ नहीं है, वह डर नहीं है, वह यक़ीन नहीं है, आंख क़ाबू में, न ज़बान क़ाबू में, न मुआमलात अच्छे, न कुछ और अच्छा, झूट बोल देना बहुत आसान सी बात नज़र आती है, धोका दे देना आसाान सी बात नज़र आती है, अगर आप देखें कि इन सब के पीछे हमारी बुन्यादी बीमारी क्या है तो वह बेयक़ीनी है, वह यक़ीने मुहकम नहीं कि क़्यामत के दिन जब हमें पेश होना है तो हमारा क्या बनेगा? ख़ौफ़े ख़ुदा की क़मी है। इसी

लिये बच्चे को तो ख़्याल कर लेते हैं कि बच्चे के सामने कोई फ़ुज़ूल हरकात नहीं करते और जब देखते हैं कि बच्चा भी नहीं तो यह ज़ह्न में नहीं आता कि अल्लाह तआला भी तो हमें देखते हैं। अता इब्ने रिबाह रह० फ़रमाते कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मुझ पर इल्हाम फ़रमाया कि अता! मेरे बंदों से कह दो कि जब तुम गुनाह करने लगते हो तो उन तमाम दरवाज़ों को बंद कर लेते हो जिस से मख़्लूक़ देखती है, और उस दरवाज़े को बंद नहीं करते जिससे मैं परवरदिगार देखता हूं, क्या अपनी तरफ़ देखने वालों में सबसे कम दर्जे का तुम मुझे समझते हो? अल्लाहु अक्बर कबीरा, मुआमला तो ऐसा ही है। यह बेयक़ीनी हमारे यक़ीन में बदल जाए, यह जो ज़बान से हमने कलिमा पढ़ा, यह दिल में उतर जाए, इसके लिये हमें कुछ मेहनत करनी पड़ेगी-

तू अरब है या अजम़ है तेरा ला इलाह इला
लुग़त ग़रीब जब तक तेरा दिल न दे गवाही

जब तक दिल गवाही नहीं देगा तब तक यह ला इलाह के अलफ़ाज़ लुग़ते ग़रीब के मानिंद हैं, यह वह कैफ़ियत थी जो हमारे अकाबिर को गुनाहों से बचाती थी।

शिकार करने को आए, शिकार होके चले

चुनांचे किताबों में लिखा है कि एक औरत गुस्ल करने के बाद बाल संवार रही थी, वह अपने आप को देखकर मुस्कुराई, ख़ाविंद क़रीब था, ख़ाविंद ने पूछाः क्यों मुस्कुरा रही हो? कहने लगी कि दुनिया में कोई मर्द नहीं जो मुझे देखे और मेरी तम्अ़ न करे, तो ख़ाविंद ने उमैर बिन उबैद रह० जो एक बुज़ुर्ग थे, जो मस्जिद में वअ़ज़ किया करते थे, उनका नाम लिया कि उनको तो कोई तेरी परवाह ही नहीं, मियां बीवी का तअल्लुक़ कुछ ऐसा होता है कि

कहने लगीः अच्छा तुम मुझे इजाज़त दो, मैं देखती हूं कि कैसे फिसलता है, उसने कहा ठीक है, यह औरत ख़ूब बन संवर के मस्जिद के दरवाज़े पे आ गई, जब उबैर बिन उबैद रह० गुज़रने लगे तो उसने कहा कि मुझे एक मस्ला पूछना है, बात करने के बहाने उसने अचानक अपना चेहरा खोल दिया, उन्होंने आंखें बंद कर लीं और कहा कि ऐ अल्लाह की बंदी! यह तुमने क्या किया? फिर उसने अपनी ख़्वाहिश का इज़हार किया कि मैं आप से मिलाप चाहती हूं, उन्होंने कहा कि अच्छा यह सोचो कि अगर हम दोनों यह काम कर लें जो तुम कह रही तो बताओ क़्यामत के दिन जब हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के हुज़ूर खड़े होंगे और हम पर इस गुनाह की फ़र्द जुर्म क़ाइम हो जाएगी तो तुम्हें उस वक़्त शर्मिंदगी होगी कि नहीं होगी? कहने लगी हां वहां तो बड़ी शर्मिंदगी होगी, कहने लगे कि वह काम करती ही क्यों हो जिससे इंसान शर्मिंदा हो, उन्होंने ऐसे इख़्लास से बात की कि उस औरत के दिल में यह बात उतर गई, लौट के घर आई और ख़ाविंद से कहने लगी कि क्या मर्द ही नेक होते हैं? औरत नेक नहीं हो सकती? फिर उसके बाद वह रोज़ा रखती थी और रात का वक़्त तहज्जुद में गुज़ारती थी, उसका ख़ाविंद कहता था कि उमैर बिन उबैद ने पता नहीं क्या किया कि मेरी बीवी को राहिबा बना दिया। अल्लाह वाले के दिल की निकली हुई एक यक़ीन वाली बात थी, जो उस औरत के दिल में बैठ गई, इसको कहते हैं "शिकार करने को आए शिकार होके चले"। आई थी गुनाह की दावत देने, अल्लाह ने ज़िंदगी बदल के उसको वापस कर दिया।

एक और बुज़ुर्ग के बारे में भी यही है कि किसी औरत ने उनके सामने ऐसी ही ख़्वाहिश का इज़्हार किया, वह उस औरत से कहने लगे कि आओ मेरे साथ, वह मस्जिद के अंदर चले गए, मस्जिद के

अंदर दाख़िल हुए तो कहने लगे कि ज़रा यहां लेटो, कहने लगी कि अरे मस्जिद में क्या कह रहे हैं? कहने लगे कि जो ख़ुदा यहां है वही ख़ुदा तो बाहर था, उस औरत को इतनी नदामत हुई कि उसने गुनाह से हमेशा के लिये तौबा कर ली। तो हमारे अकाबिरीन के दिल में यह बात अच्छी तरह रासिख़ हो चुकी थी कि हम जो कर रहे हैं हमारा परवरदिगार देखता है जानता है और हमसे क़्यामत के दिन उसके बारे में पूछेगा, इसलिये वह दिखावे के लिये नहीं छिपते थे, वह अल्लाह से डरते थे, गुनाह के मवाक़े मिलने के बावजूद गुनाह से बचते थे, और अल्लाह तआला को यह चीज़ बहुत पसंद है कि उसके ख़ौफ़ की वजह से कोई बंदा गुनाह छोड़ दे।

एक ग़रीब औरत की बात पर नौजवान की तौबा

चुनांचे हदीसे पाक में मशहूर वाक़िआ है कि बनू इस्राईल का ''अलकिफ़्ल'' एक नौजवान था, माल पैसा भी बहुत था और अय्याश भी बहुत था, जो गुनाह का मौक़ा मिलता हाथ से जाने न देता, एक ग़रीब औरत बच्चों की तरफ़ से परेशान उसके पास पहुंची कि मुझे कुछ पैसे दे दें, कुछ क़र्ज़ की ज़रूरत है, उसने कहाः आप को मैं इतने पैसे दूंगा तुम मेरी ख़्वाहिश पूरी करो, उसने इंकार किया, फिर हालात से मजबूर हो के दूसरी मर्तबा आई, हत्ता कि तीसरी मर्तबा आई और तीसरी मर्तबा वह इतनी परेशान थी कि उसने हां कर दिया, जब अलकिफ़्ल उसके क़रीब हुआ तो वह कांपने लगी, उसने पूछा कि तुम क्यों कांप रही हो? उसने कहा कि मैंने ज़िंदगी में कभी यह गुनाह नहीं किया, तुम अल्लाह की मुह्र को मत तोड़ो, सुब्हानल्लाह! बच्चों वाली है, बेवा भी है, या अगर ख़ाविंद होगा तो मजबूर तो थी कि दूसरों से मांगने के लिये आई, उस वक़्त भी उसका दिल डर रहा है कि मैं क्या कर रही हूं और इस पर उसने

ऐसी बात कही कि अलकिफ़्ल के दिल पर उसका असर हुआ कि यह इतनी मोहताज होकर अल्लाह से डर रही है और मैं इतना ग़नी हूं, उसने पैसे भी दे दिये और तौबा भी कर ली। चुनांचे उसी रात अलकिफ़्ल का इंतेक़ाल हुआ, अल्लाह ने दरवाज़े पे लिखवा दिया कि आज की इस तौबा को अल्लाह ने क़बूल करके अलकिफ़्ल के सब गुनाहों को मुआफ़ कर दिया। यहां तक तो बात अपनी जगह, आगे मज़े की बात है कि इसकी रिवायत करने वाले जो रावी हैं वह फ़रमाते हैं कि मैंने यह वाक़िआ नबी सल्ल0 से एक दफ़्आ नहीं, दो दफ़्आ नहीं, तीन दफ़्आ नहीं, कम अज़ कम मैंने 25 मर्तबा यह वाक़िआ नबी सल्ल0 की ज़बान से सुना होगा। यह बहुत अहम नुक्ता है कि 25 मर्तबा यह वाक़िआ नबी सल्ल0 की ज़बान से सुना होगा। यह बहुत अहम नुक्ता है कि 25 मर्तबा इस वाक़िआ को दोहराया, इसका मतलब कि नबी सल्ल0 ज़ह्न साज़ी फ़रमाते थे, ऐसे वाक़िआत का अक्सर तज़किरा करते थे कि अल्लाह के ख़ौफ़ की वजह से उस बंदे ने गुनाहों को कैसे छोड़ा, और यह चीज़ अल्लाह को कैसे पसंद आई, और 25 मर्तबा तो उन्होंने सुना, तो कितनी मर्तबा नहीं भी सुना होगा, इसका मतलब कि अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल0 ने यह वाक़िआ दर्जनों मर्तबा सहाबा रज़ि0 को मुख़्तलिफ़ मजालिस में सुनाया, इसको कहते हैं ज़ह्न साज़ी करना, उनके दिलों में यक़ीन बैठा देना, यही चीज़ थी कि जिस वजह से वह गुनाहों से बचते थे।

नेक बनने की नियत करने पर अल्लाह की रहमत का साया

हज़रत शैख़ुल हदीस रह0 ने वाक़िआ लिखा है कि एक क़साई नौजवान था, हमसाया की बांदी पर उसकी तबीअत मुतवज्जो हुई, मौक़ा की तलाश में था, एक दिन मौक़ा मिला, वह कहने लगा कि

मुझे तो तुम से बहुत मुहब्बत है, तुम्हारे बग़ैर तो मैं नहीं रह सकूंगा, वह लड़की बहुत नेक थी, उसने जवाब दिया कि देखो जितनी मुहब्बत तुम्हें है, उससे बढ़कर मुहब्बत मुझको तुम से है, मगर मैं अल्लाह से डरती हूं, मैं गुनाह नहीं कर सकती, उसकी इख़्लास वाली बात ऐसी दिल पर पड़ी कि उस नौजवान ने सोचा कि मैं भी अल्लाह से डरता हूं, गुनाहों को छोड़ता हूं, अब गुनाहों को छोड़ने की नियत से यह चल पड़ा कि मैं किसी अच्छी बस्ती में जाकर किसी आलिम से इल्म हासिल करता हूं, दीन सीखता हूं, एक और बुज़ुर्ग जो उसी रास्ता जा रहे थे, दोनों ने फ़ैसला किया कि हमें तीन चार दिन की मसाफ़त तय करनी है तो इकट्ठा कर लें, फ़ाइदा होगा, इस दौरान दोनों ने देखा कि एक बादल दोनों के ऊपर साया कर रहा है, नौजवान यह समझता है कि बड़े मियां की वजह से है और बड़े मियां भी यही समझतो हैं कि मेरी वजह से है, जब तीन दिन के बाद मंज़िल के क़रीब हुए और एक जगह रास्ते से जुदा हुए तो बादल उस नौजवान के सर पे था, तो बड़े मियां आए कि नौजवान! तेरा कौनसा अमल अल्लाह को पसंद आया? नौजवान की आंखों में आंसू आ गए कि मेरी ज़िंदगी में तो कोई भी नेक अमल नहीं है, हां मैंने गुनाह का इरादा किया हुआ था; तौबा करके मैं नेक बनने की नियत से चल पड़ा हूं, मेरा अल्लाह कितना करीम है कि गर्मी के मौसम में उसने मुझे बादल का साया अता फ़रमा दिया।

गुनाह पर कुदरत के बावजूद बच जाने पर जन्नत में ठिकाना

और अल्लाह तआला उस चीज़ को पसंद करते हैं कि उसका बंदा गुनाह पर क़ादिर होने के बावजूद अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की अज़्मत की वजह से, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के डर और ख़ौफ़ की वजह से गुनाह बच जाए। चुनांचे किताबों में मशहूर वाक़िआ लिखा

है कि एक हाकिमे वक़्त था, वह अपनी बीवी के साथ अच्छे मूड में था और बीवी किसी बात से उस पर ख़फ़ा थी, अब जितना यह प्यार का इज़्हार करता उतना वह ख़फ़ा होती, यह जितना मीठा बनने की कोशिश करता, उतनी ही उसे ज़हर चढ़ती, हत्ता कि वह गुस्सा होकर कहने लगी कि जहन्नमी! पीछे हट, अब जहन्नमी का लफ़्ज़ सुनके उसको भी गुस्सा आ गया और उसने कहा कि अगर मैं जहन्नमी तो तुझे तलाक़, तीन तलाक़ दे बैठा, सुब्ह जब गुस्सा ठंडा हुआ तो उस वक़्त ख़ाविंद ने भी सोचा कि मुझे ग़लती हुई, मुझे तलाक़ ही नहीं देनी चाहिये थी, जब यह इतनी खूबसूरत है कि मैं इसके बग़ैर रह नहीं सकता तो क्यों तलाक़ दी और बीवी ने भी सोचा कि मुझे यह बात तो नहीं कहनी चाहिये थी जो मैं कह गई, अब फ़ैसला क्या हो, उलमा से रुजूअ़ किया तो उलमा ने कहा कि इसका जवाब तो नहीं दिया जा सकता, इसलिये कि यह तलाक़ Conditional (मशरूत) है कि "अगर मैं जहन्नमी तो तुझे तलाक़" तो फ़ैसला कौन करे, कोई नहीं फ़ैसला कर सकता, लिहाज़ा यह बात Talk of the town बन गई, (खूब मशहूर हो गई) हर तालिबे इल्म, हर आलिम की ज़बान पे यही मस्ला, मगर जवाब कहीं से नहीं आता था, सुना है कि इमाम शाफ़ई रह० जवानुल उम्र थे, उनको यह मस्ला बताया गया, तो वह कहने लगे कि मैं इसका जवाब दे सकता हूं, यह बात हाकिम तक पहुंची, उसने बुलवा लिया, इमाम शाफ़ई रह० ने फ़रमाया कि मैं आप से तन्हाई में कोई बात पूछूंगा फिर इसका जवाब दूंगा, उसने कहा कि बहुत अच्छा, इमाम साहब ने कुछ देर उससे अलग गुफ़्तगू की, फिर फ़ैसला कर दिया कि तलाक़ वाक़ेअ़ नहीं हुई, अब जब दूसरे उलमा को पता चला तो

उन्होंने कहा कि आप कब से जन्नत की टिकटें तक़सीम करने लगे? फ़रमाया कि मैंने बादशाह से एक सवाल किया था कि मुझे ज़िंदगी का कोई ऐसा वाक़िआ सुनाएं कि जब आप गुनाह करने पे क़ादिर थे मगर अल्लाह के ख़ौफ़ की वजह से आप ने गुनाह को छोड़ दिया, वह सोचता रहा, फिर कहने लगा कि हां एक मर्तबा ऐसा वाक़िआ पेश आया कि मैं अपने दफ़्तर के काम समेट कर जल्दी अपने बैडरूम में आ गया तो महल में काम करने वाली एक जवानुल उम्र ख़ूबसूरत लड़की अभी मेरे कमरे में कुछ काम कर रही थी, मैं जैसे कमरे में दाख़िल हुआ तो उसको देख के मेरी तबीअ़त उसकी तरफ़ माइल हुई, मैंने दरवाज़ा बंद कर दिया, वह लड़की नेक थी, पाक साफ़ थी, उसने मेरी नियत को पहचान लिया और वहीं से खड़े खड़े कहाः "يـا مَلِكُ اِتَّقِ اللّٰه" ऐ बादशाह! अल्लाह से डर, कहने लगे कि उसकी बात में क्या तासीर थी कि मेरे दिल में अल्लाह का ख़ौफ़ तारी हुआ, मैंने कुंडी खोली, उसको जाने दिया, अगर मैं ज़बरदस्ती गुनाह कर लेता तो मुझे कौन पूछने वाला था, मगर अल्लाह का डर ग़ालिब आ गया, इमाम साहब ने फ़रमाया कि अगर ऐसा हुआ तो मैं फ़त्वा देता हूं कि तलाक़ वाक़ेअ़ नहीं हुई, आप जहन्नमी नहीं जन्नती हैं, तो उन्होंने कहा कि मैंने यह फ़ैसला नहीं दिया, यह फ़ैसला रब ज़ुलजलाल ने ख़ुद दिया है, पूछाः कहां दिया है? उन्होंने कहा क़ुर्आन पढ़िये, रब करीम ने इर्शाद फ़रमाया "وَاَمَّـا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّـفْسَ عَنِ الْهَوٰى فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِىَ الْمَاْوٰى" उसका ठिकाना जन्नत है।

बच्चों में अल्लाह के इस्तिहज़ार का एक नमूना

तो हमारे अकाबिर के दिलों में यह चीज़ रची बसी हुई थी कि

हर छोटा बड़ा अमल देखते हैं, अल्लाह हमारे साथ हैं, चुनांचे उनकी ज़िंदगी से मअ़सियत ख़त्म हो गई थी, यह नहीं था कि वह फ़रिशते बन गए थे, इंसान थे मगर अगर तक़ाज़ाए गुनाह था भी सही तो तबीअ़त के अंदर यक़ीन इतना था कि वह उसको क़ाबू में करते थे, इसी का नाम विलायत है कि तक़ाज़ाए गुनाह के बावजूद इंसान शरीअत का पाबंद है, यही विलायत का दर्जा है। पहले वक़्तों में छोटे बच्चो का भी य़क़ीन होता था, चुनांचे एक साहब अपने बेटे को ले के जा रहे थे, उन्होंने देखा कि एक जगह अंगूर का बाग़ लगा हुआ है, वह बहुत अच्छे अंगूर आए, बेटे को कहा कि इधर ठहरो, ज़रा नज़र रखो, अगर बाग़ का मालिक या कोई देखने वाला आए तो मुझे आवाज़ देना, मैं जाता हूं एक दो अंगूर के ख़ोशे तोड़ के लाता हूं, अब बेटा वहीं खड़ा था, जब उसके वालिद गए और अंगूरों को हाथ लगाने लगे तो बच्चे ने शोर मचायाः "يـا أبِىْ يَـاأبِىْ أحَدٌيَرانَـا" ऐ अब्बाजान, ऐ अब्बाजान! कोई हमें देखता है, वह वापस आ गए, वापस आए तो देखा कि कोई नहीं था, कहने लगे कौन देख रहा है? उसने कहाः अब्बजान! इंसानों में से तो कोई नहीं देख रहा है, इंसानों को परवरदिगार तो हमें देख रहा है, तो बच्चों को ऐसा यक़ीन था।

एक औरत का यक़ीने कामिल

लड़कियों का भी यक़ीन था जवानों का भी यक़ीन था, शैख़ुल हदीस रह0 ने एक जगह वाक़िआ लिखा है कि रात का अंधेरा है, तन्हाई है, इसमें एक मर्द ने एक औरत को हाथ लगाना चाहा तो औरत ने उस वक़्त कहाः डर उस परवरदिगार से जो अंधेरे में उसी तरह देखता है, जिस तरह उजाले में देखता है, अब देखिये अंधेरा है, हाथ नज़र नहीं आ रहा है, लेकिन हाथ और के जिस्म की तरफ़ बढ़ा तो देखो औरत का यक़ीन कितना कामिल था कि इस अंधेरे में भी

मुझे मेरा रब देखता है।

यक़ीन बनाने के लिये मशाइख़ की ख़िदमत में

हमारे मशाइख़ ख़ानक़ाहों में यह यक़ीन बनवाया करते थे और इसके लिये वह और औराद व ज़ाइफ़ सिखाते थे, चुनांचे दाऊद ताई रह0 जो इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह0 के बहुत क़रीबी शागिर्द हैं, जो उनके 40 मजलिस मुशावरत के अरकान थे, उनमें से एक रुक्न थे, मगर तक़्वा के पहाड़ थे, वह अपना वाक़िआप ख़ुद लिखते हैं, फ़रमाते हैं कि मैं अभी 4 साल का था, मेरे मांमू मेरे घर आए, मुझे कहने लगे दाऊद! अल्लाह को याद किया करो, मैंने कहा मामूं! कैसे? कहा कि जब सोने के लिये बिस्तर पर लेटो तो तीन मर्तबा यह कहा करो कि अल्लाह मेरे साथ है, अल्लाह मुझे देखता है, तीन दफ़आ कह के सो जाया करो, चुनांचे मैंने आदत बनाली, कुछ दिनों बाद मुलाक़ात हुई, तो कहने लगे कि और ज़्यादा दफ़आ कहो तो मैंने बीस इक्कीस मर्तबा कहना शुरू कर दिया---अब आम तौर पर जवान बच्चे जब रात को लेटने लगते हैं तो नफ़्स और शैतान उन पर ग़ल्बा करते हैं और उल्टे सीधे ख़्यालात उनके ज़ह्नों में आते हैं, देखो शुरूआत से ही बुराई की जड़ ही काट डाली बच्चों को यह बात समझाएं कि सोते हुए यह पढ़ के सोया करो---वह कहने लगे कि मेरी रोज़ाना की आदत बन गई कि जब मैं सोने लगता तो बिस्तर पर लेटते ही कहता कि अल्लाह मेरे साथ है, अल्लाह मुझे देखता है, कहने लगे कि यह बार बार कहने की वजह से ऐसा मेरा यक़ीन बन गया कि सात साल की उम्र मुकम्मल नहीं हुई थी कि उससे पहले मैंने क़ुर्आन मजीद का हिफ़्ज़ मुकम्मल कर लिया था, बच्चों के अंदर यह यक़ीन आ गया और इसी चीज़ को सीखने के लिये अकाबिर और मशाइख़ की ख़िदमत में वक़्त के नौजवान जाया करते थे।

और देखिये सिलसिलए आलिया चिश्तिया का सबक़ हैः अल्लाह हाज़िरी, अल्लाह नाज़िरी, अल्लाह मई, क्यों यह ज़र्बें लगवाते थे? क्यों यह अलफ़ाज़ कहलवाए जाते थे? हज़ारों नहीं लाखों मर्तबा कहलवाए जाते थे, ताकि ज़बान से निकले हुए यह लफ़्ज़ दिल में उतर जाएं, दिल का यक़ीन बन जाए, आज चूंकि हमें यह मेहनत करने का मौक़ा नहीं मिल पाता, इसलिये हमारे अंदर वह कैफ़ियत नहीं बनती और हमें अजीब सी बात लगती है।

यक़ीन बन जाने पर थोड़ी मुद्दत में निस्बत की बशारत

हमारे इलाक़े में हज़रत ज़करिया मुल्तानी रह0 एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी रह0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने चंद दिनों में ही इजाज़त व ख़िलाफ़त अता कर दी, तो जो वहां पुराने रहने वाले थे वह बड़े हैरान हुए, किसी ने हज़रत से कह दिया कि हज़रत! हम भी तो पड़े हैं राहों में, उम्र गुज़र गई, हम पर तो वह मुहब्बत की नज़र न पड़ी जो इस पर पड़ गई, तो हज़रत ने फ़ैसला किया कि इनको हक़ीक़त से आगाह करूंगा, एक दिन वहां कुछ मेहमान आए, हज़रत को कुछ मुर्ग़ियां ज़ब्ह करवानी थीं, दो चार छुरियां मंगवा लीं और उन सबको बुलवा कर एक छुरी और एक मुर्ग़ी उनके हवाले की और कहा कि जाओ किसी ऐसी जगह ज़ब्ह करके लाओ जहां कोई न देखता हो, तो कोई दीवार के पीछे, कोई दरख़्त की ओट में, कोई फ़लां जगह, सब ज़ब्ह करके ले आए और ज़करिया मुल्तानी रह0 ज़िंदा मुर्ग़ी और छुरी इसी तरह वापस लेके आ गए, शैख़ ने पूछा कि ज़ब्ह नहीं की? तो आंखों में आंसू आ गए, और कहाः हज़रत! आपका हुक्म पूरा नहीं कर सका, पूछा क्यों नहीं किया? कहा हज़रत! आपने फ़रमाया था कि ऐसी जगह ज़ब्ह करो जहां कोई न देखता हो, मैं जहां गया मेरा परवरदिगार मुझे देखता

था, हज़रत ने कहा कि कोई बात नहीं उनको रुख़्सत करके फिर बाक़ियों को कहा कि देखो! उसके दिल का यह यक़ीन था, जिसकी वजह से मैंने इस नेअ़मत की बशारत अता फ़रमाई।

अगर यक़ीन दुरुस्त हो जाए तो ज़िंदगी का रुख़ सही हो जाए

यह जो अल्लाह के सामने पेशी का ख़ौफ़ है, अगर यह इंसान को नसीब हो जाए तो ज़िंदगी के सारे मुआमलात सही हो जाएं। एक आध वाक़िआ मज़ीद सुना के बात को मुकम्मल करता हूं, अमीर शाह एक इलाक़े का बादशाह है, और वह जंगल में हिरन के शिकार के लिये निकलता है, उसके ख़ादिम यअ़नी पुलिस वाले भी साथ थे, वहां उन्हें कोई गाए नज़र आई तो उन्होंने उसको ज़ब्ह करके उसका गोश्त भून के खा लिया, एक बूढ़ी औरत मालिका थी, उसने आकर कहा कि इस जंगल में मेरा तो गुज़रान इसी के साथ था, इसी से मुझे दूध मिलता था, मक्खन मिलता था, इसके गोबर में आग जलाती थी, रोटियां पकाती थी, तुमने इसे ज़ब्ह कर लिया, अब मुझे पैसे दो मैं दूसरी गाए ले लूं, तो उन्होंने कहा कि हम पैसे नहीं देंगे, उसने कहा कि फिर मुझे बादशाह से बात करने दो, उन्होंने कहा कि बादशाह से बात भी नहीं कर सकती, वह बड़ी परेशान हुई, किसी और बंदे को बात सुनाई, उसने कहा कि देखो बादशाह तो अच्छा आदमी है, और उसको एक दिन के बाद वापस जाना है और वापसी पर रास्ते में एक दरिया है और दरिया के ऊपर पुल है, वापस जाने का एक ही रास्ता है, वहां आप चली जाएं और पुल के क़रीब बैठ जाएं, जब बादशाह गुज़रने लगे तो आप बादशाह की सवारी रोक के उनको बताना, वह आप को पैसे देंगे, बुढ़िया वहां पहुंची, अमीर शाह जब वहां से गुज़रने लगा तो बुढ़िया ने उसकी सवारी को रोका, अमीर शाह ने पूछा कि अम्मां! क्यों मेरी सवारी रोकी? तो बुढ़िया ने

उस वक़्त कहा कि अमीर शाह! मेरा और तेरा एक मुआमला है, यह पूछना चाहती हूं कि इस पुल पे फ़ैसला करना चाहता है या क़्यामत के दिन पुल सिरात पे फ़ैसला करना चाहता है? कहते हैं कि जब उसने यह कहा तो अमीर शाह कांप उठा, नीचे उतरा, मुआफ़ी मांगी, बात सुन के सात जानवरों की क़ीमत दी और कहाः अम्मां! इधर मुआफ़ कर देना, मैं पुल सिरात पे हिसाब देने के क़ाबिल नहीं हूं। तो जब यह यक़ीन बैठ जाता है कि मुझे क़्यामत के दिन अल्लाह के सामने हिसाब देना है तो फिर इंसान वक़्ती लज़्ज़तों के पीछे नहीं भागता, सब मस्तियां ख़त्म हो जाती हैं, फिर अल्लाह का ख़ौफ़ ग़ालिब आ जाता है।

जब यक़ीन आ जाता है तो जहां गुनाहों से इंसान बचता है वहां उसके मुआमलात भी सीधे हो जाते हैं, एक वाक़िआ मुआमलात के बारे में ज़रा सुन लीजिये, हमने देखा है कि सौतनें अगर हों तो जितनी भी नेक हों, फिर भी दिल में कुछ न कुछ उनमें खटक होती है और एक दूसरे के बारे में कुछ न कुछ दिल में होता है और अगर आम औरतें हों तो फिर तो दो के दर्मियान एक जंग होती है, एक ऐसा ही वाक़िआ सुन लीजिये, एक शादी शुदा ताजिर अजनास का कारोबार करता था, जब अजनास ख़रीदनी होती थीं तो उसको तीन चार महीने के लिये दीहात में जाना पड़ता था और वहां से फ़सलें देख के ख़रीद के उसको गोदाम में भेजवाना होता था, और बाक़ी 8 महीने वह उसको बेचता था, जब वह दो चार महीने दूसरे शहर जाकर रहता तो वहां बच्चों के बग़ैर रहता उसको मुश्किल नज़र आता था, और यह वह ज़माना था कि लोग गुनाह से डरते थे, तो वह गुनाह नहीं करना चाहता था, उसने फ़ैसला किया कि मैं कोई निकाह कर लूं, गुनाह से भी बचूंगा, पाकीज़गी की ज़िंदगी गुज़रेगी,

उसने एक औरत को बता दिया कि साल के इतने महीने में यहां रहता हूं और मैं निकाह करूंगा और इतना वक़्त मैं वहां रहता हूं, उसके वर्सा ने कहा कि घर लेके देदें, ख़र्चा उठा लें, फिर कारोबारी ज़रूरत के पीछे आते जाते रहें तो हमें कोई एतिराज़ नहीं है, हमारी तरफ़ से इजाज़त है, उसने निकाह किया, दो तीन महीने उस बीवी के साथ रहा, लौट के वापस आया, अब औरतें तो बहुत समझदार होती हैं, उसने देखते ही पहचान लिया कि "बदले बदले मेरे सरकार नज़र आते हैं", मगर थी समझदार, उसने बात कुछ नहीं की, दो चार दिन बाद और ज़्यादा उसको महसूस हुआ मगर उसने सोचा कि जब तक मुझे तहक़ीक़ न हो जाए मुझे ख़ाविंद के साथ बात नहीं करनी है, फिर ख़ाविंद अगली मर्तबा गया, तो उसने एक बूढ़ी औरत से कहा कि मैं तुम्हें इतने पैसे दूंगी और तुम जाके ज़रा देखो कि मेरा ख़ाविंद वहां कैसे रहता है? कैसे वक़्त गुज़ारता है? वह बूढ़ी औरत वहां गई और उसने थोड़ी देर में सब मालूमात कर लीं कि उसने निकाह किया हुआ है, घर ले के दिया हुआ है, उसके साथ रहता है, फिर वापस आता है, जब बूढ़ी औरत ने आकर तसदीक़ कर दी तो उस वक़्त उस औरत के दिल पे बहुत सदमा हुआ कि मेरे ख़ाविंद ने मुझे बताया भी नहीं और दूसरी शादी कर ली, मगर उसने सोचा कि अब झगड़ा करने का क्या फ़ाइदा, है तो उसका शरई हक़, लिहाज़ा सब्र कर लेती हूं, उसने बीवी को नहीं बताया, ख़ाविंद कुछ अर्सा वहां रहता कुछ अर्सा यहां रहता, अल्लाह की शान देखें कि चंद साल के बाद उस ख़ाविंद को जवानी की की उम्र में शायद कोई हार्ट अटैक वग़ैरा हुआ और उसकी वफ़ात हो गई, जब वफ़ात हुई तो वर्सा में उसके माल की तक़सीम की गई, तो उसकी बीवी के हिस्से में दिरहम व दीनार की भरी हुई चार बोरियां आईं, उस वक़्त सिक्के होते थे,

जब चार बोरियां उस बीवी को मिलीं तो उस बीवी ने सोचा कि यह तो दुनिया को पता नहीं है कि एक बीवी है या दो, तो तसदीक़ हो चुकी है कि दो बीवियां हैं, लिहाज़ा चार बोरियां मेरा हक़ नहीं है, आप देखिये! एक औरत ज़ात है, फिर उसमें माल की कितनी मुहब्बत होती है, फिर दूसरी तरफ़ उसकी सौतन, जिससे हमदर्दी तो क्या, उल्टा ज़ी चाहता है कि उसको ज़िंदा दफ़न कर दिया जाए, यह औरत की कैफ़ियत थी, मगर उसके दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा था, वह जानती थी कि दिरहम व दीनार की यह चार बोरियां मेरा हक़ नहीं है, उसने कहा कि हम दो बीवियां हैं, और चार बोरियां आईं तो दो मेरी हुई और दो दूसरे की, उसने उसी बूढ़ी औरत को बुलाया, कि मैं तुम्हें इतने पैसे दूंगी, इसमें से दो बोरियां जाके तुम उसकी दूसरी बीवी को पहुंचा के आओ, मेरा हक़ नहीं, यह उसका हक़ है, वह बूढ़ी औरत वह दो बोरियां मज़दूर के ज़रीए लेके उस दूसरी औरत के घर गई, उसको जाके ख़ाविंद के मरने की ख़बर दी, उसको भी सदमा हुआ और वह बहुत रोई, फिर उसने यह दो बोरियां उसको पेश कीं कि देखें उसकी बीवी को हिस्सा में चार बोरियां मिली थीं और उसके इल्म में था कि तुम उसकी बीवी हो, लिहाज़ा दो बोरियां उसने रख ली हैं, और दो तुम्हें वापस भेजी हैं, इस पर वह औरत बड़ी ख़ुश हुई और रउसने पहली की बड़ी तारीफ़ें कीं और ख़ूब तारीफ़ें करने के बाद कहने लगी कि अच्छा मैं तुम्हें वापसी के पैसे देती हूं, तुम इन दोनों बोरियों को वापस ले जाओ और जाकर उसी पहली को दे देना, उसने कहा क्यों? उसने कहाः इसलिये कि मेरा ख़ाविंद जब आख़िरी मर्तबा मुझसे रुख़सत होने लगा तो जाने से एक दिन पहले उसने मुझे तलाक़ दे दी थी, यह बात या मैं जानती हूं या मेरा परवरदिगार जानता है, इस माल में मेरा हक़ नहीं है, मैं उसकी बीवी नहीं हूं।

ज़रा सोचिये कितना ख़ूबसूरत दीन है, यह कितनी ख़ूबसूरत शरीअत है कि इंसान को ईमान दे देती है और बंदे के मुआमलात को सुधार के रख देती है, जानवरों को इंसान बना देना, इंसानों को फ़रिश्तों की सिफ़तें अता कर देना, दीने इस्लाम की ख़ूबी है, और इसके पीछे यही यक़ीने कामिल होता है, आज इस यक़ीने कामिल को हमें अंदर पैदा करने की मेहनत करनी चाहिये, दुआएं मांगनी चाहियें, हमें इस यक़ीने मुहकम को दोबारा पैदा करना है।

उलमाए देवबंद की शानः "दर कफ़े जाम शरीअत दर कफ़े संदाने इश्क़"

हमारे अकाबिर उलमाए देवबंद की एक बुन्यादी सिफ़त यही थी कि जहां एक तरफ़ वह जिबालुल इल्म थे, वहां दूसरी तरफ़ उन्होंने अपने मशाइख़ की सोहबत में रह के इस यक़ीन को हासिल किया, अज़्कार करते थे औराद करते थे। चुनांचे हज़रत अक़्दस थानवी रह0 ने वाक़िआ लिखा है कि मैं जलालैन शरीफ़ पढ़ता था, तकरार का ज़िम्मादार मैं ही था, एक दिन इशकाल पेश आया, बड़ा सोचा लेकिन उसका जवाब नहीं आता था, साथियों ने कहा कि चूंकि आप ज़िम्मेदार हो, इसलिये अब कल का दर्स होने से पहले जाके उस्ताज़ साहब से पूछना, मौलाना याकूब नानूतवी रह0 से पढ़ते थे, फ़रमाते हैं कि मैंने अगले दिन जलालैन शरीफ़ उठाई और फ़ज्र की नमाज़ के बाद उस्ताज़ के पास आया, मेरे पहुंचने में थोड़ी सी देर हुई और एक कमरा था जिसमें हज़रत नमाज़ पढ़ने के बाद इशराक़ तक अज़्कार करते थे, कहते हैं कि मुझे बड़ा अफ़सोस हुआ कि ताख़ीर हो गई और मैंने अपने आप को कहा कि तेरी सज़ा यही है कि इधर ही खड़े रहो, जब हज़रत बाहर निकलेंगे तो उस वक़्त पूछना, सर्दी थी, मैं बाहर खड़ा था, हज़रत कमरे के अंदर لا الٰہ الا اللہ की ज़र्बें लगा रहे

थे, कहने लगे कि मुझे बाहर खड़े मज़ा आ रहा था, जब इशराक़ के बाद उन्होंने दरवाज़ा खोला तो मैंने देखा कि उस सर्दी के मौसम में उनकी पेशानी से पसीने टपक रहे थे, उसके शद व मद के साथ ला इलाहा की ज़र्बें लगाते थे, पूछाः अशरफ़ अली! क्यों खड़े हो? अर्ज़ किया हज़रत! यह इशकाल वारिद हुआ, बता दीजिये, हज़रत ने तक़रीर करनी शुरू कर दी, मगर अल्फ़ाज़ भी सारे ग़ैर मानूस, मआनी का तो बिल्कुल ही पता नहीं था, जब ख़त्म करके पूछा कि पता चला? तो मैंने कहा कि हज़रत! कुछ समझ में नहीं आया, दिल में मैंने कहा कि कुछ नुज़ूल फ़रमाएं तो पता चले, चुनांचे हज़रत ने दोबारा तक़रीर शुरू फ़रमाई, अब अल्फ़ाज़ तो कुछ मानूस नज़र आते थे, मआनी का पता फिर भी नहीं चल रहा था, दूसरी मर्तबा तक़रीर के बाद पूछा कि बात समझ में आई? मैंने कहा हज़रत! अभी भी नहीं समझ में आई, फ़रमायाः अशरफ़ अली! मेरी इस वक़्त की बातें शायद तुम्हारी समझ में नहीं आएंगी, फिर किसी वक़्त पूछ लेना।

इतने उलूम उन पर वारिद होते थे, जो दर्से निज़ामी की किताबें आज हैं वही उनके ज़माने में भी थीं, किताबों में तो कोई फ़र्क़ नहीं है, आज दौरए हदीस के बच्चे जो बुख़ारी शरीफ़ मुस्लिम शरीफ़ पढ़ रहे हैं यही किताबें हज़रत नानूतवी रह0 ने पढ़ीं, यही हज़रत गंगोही रह0 ने पढ़ीं, यही हज़रत शैख़ुल हिंद रह0 ने पढ़ीं, किताबों में तो फ़र्क़ नहीं है, हां किताबें पढ़ने के बाद दिल का जो यक़ीन बना उस यक़ीन में ज़मीन और आसमान का फ़र्क़ है "चा निस्बत ख़ाक राबं आलम पाक" हम गुनहगारों को इन बुज़ुर्गों की बातिनी निस्बतों के साथ क्या निस्बत? हम तो गुनाहों में डूबे हुए हैं, हमारे लिये गुनाह करना इतना आसान बन गया है ऐसे लगता है कि जैसे मक्खी बैठी थी उसको उड़ा दिया, और यह वह बुज़ुर्ग थे जिनके अंदर एक पुख़्ता

यक़ीन आ चुका था और उनकी ज़िंदगी के सारे मुआमलात शरीअ़त के मुताबिक़ बन चुके थे।

चुनांचे हज़रत अक़्दस थानवी रह0 को गन्ने का एक बंडल दिया गया कि ले जाइये, लेकिन नहीं लिया, टिकट वाला कहता रहा कि मैं साथ हूं, फ़रमाया नहीं, मुझे आगे जाना है, उसने कहा फ़लां जगह से आगे तो गाड़ी नहीं जाती, फ़रमाया हां, मेरी मंज़िल इससे भी आगे है, मुझे क़यामत के दिन अल्लाह के सामने पेश होना है। यह चीज़ बताती है कि उन लोगों के दिलों में एक यक़ीन था, आज उस यक़ीन की कमज़ोरी की वजह से हमारे अंदर न वह अहवाल हैं, न वह कैफ़ियात हैं, न वह नताइज मुरत्तब हो रहे हैं, हमारे अकाबिर इन्हें दारुल उलूमों में, इन्हें दर्सगाहों में, यही अल्फ़ाज़ पढ़ाते थे, मगर इसी यक़ीने कामिल के साथ पढ़ाते थे, नतीजा यह होता था कि तलबा के दिल पे ऐसा असर होता था कि सदर मुदर्रिस से लेके दरबान तक, सब के सब तहज्जुद गुज़ार होते थे, सब के सब विलायत के मक़ाम के हामिल हुआ करते थे, इस भूले हुए सबक़ को हमें आज फिर याद करने की ज़रूरत है, और अल्लाह से इस नेअ़मत को फिर मांगने की ज़रूरत है।

यक़ीन करें जिस हालत में आज हम हैं, हम इस हालत में अल्लाह के सामने पेश नहीं हो सकते, हमारी ज़िंदगी की पूरी वीडियो तैयार है, अगर कल क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने यह फ़रमा दिया कि मेरे बंदे! मुझे बता दे या तुम्हारी वीडियो तुम्हारे साथ वाले को देखा देते हैं, या तुम ख़ुद जहन्नम चले जाओ, तो बेटी कहेगी अल्लाह! मेरी वीडियों अब्बू को न दिखाना, बीवी कहेगी कि मेरी वीडियों ख़ाविंद को न दिखाना, मां कहेगी अल्लाह! मेरी वीडियो मेरे बच्चों को न दिखाना, मैं ख़ुद ही जहन्नम चली जाती हूं, आज

वक़्त है कि हम गुनाहों से सच्ची तौबा करके अपनी ज़िंदगी को पाक साफ़ बना सकते हैं और आइंदा नेकूकारी परहेज़गारी की ज़िंदगी गुज़ार सकते हैं, परवरदिगारे आलम हमें वही यक़ीने मुहकम और ईमाने कामिल की हलावत अता फ़रमा दे और मअ़सियत की ज़िल्लत से महफ़ूज़ फ़रमा कर अल्लाह हमें इताअत की इज़्ज़त नसीब फ़रमाए।

وآخر دعوانا أن الحمد لله رب العالمين

आइंदा सफ़हात पर आप जो ख़िताब मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, यह ख़िताब 14 अप्रेल 2011 ई० बरोज़ जुमेरात, बअ़द नमाज़े इशा, दारुल उलूम देवबंद (वक़्फ़) के वसीअ़ व अरीज़ मैदान में हुआ था, दोनों दारुल उलूमों के असातिज़ा व तलबा, देवबंद और क़ुर्ब व जवार के हज़ारों उलमा व तलबा, मुल्क के मुख़्तलिफ़ मक़ामात से आए हुए अह्ले इल्म व तलब का कसीर मज्मा था।

इल्म व उलमा का मक़ाम

और

हमारे अकाबिरे देवबंद

الحمد للّٰه و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد
اعوذ باللّٰه من الشيطان الرجيم، بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم
قُلْ هَل يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعَلَمُوْنَ والَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ.
اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُو الْالْبَاب

سبحان ربک رَبِّ العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد للّٰه رب العلمين
اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم
اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم
اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم

इस्लाम का पहला हुक्मः इल्म हासिल करना

قُلْ هَل يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعَلَمُوْنَ والَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ऐ मेरे हबीब! आप फ़रमा दीजिये कि क्या जानने वाला और न जानने वाला यअ़नी आलिम और जाहिल बराबर हो सकते हैं? "اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُو الْالْبَاب" इस बात की परख वह रखते हैं जो अक़्लमंद होते हैं, यअ़नी अक़्लमंद इंसान समझता है कि आलिम और जाहिल बराबर नहीं हो सकते, दीने इस्लाम ने इल्म की अहमियत को बहुत ज़्यादा वाज़ेह फ़रमाया, चुनांचे इस उम्मत पर जब पहली वह्य नाज़िल हुई तो नबी सल्ल0 को यह लफ़्ज़ मिलाः "اِقْرَأْ" यअ़नी पढ़िये, ज़ह्न में यह बात आती है कि तौहीद बहुत अहम होती है, इसके बग़ैर इंसान

की नजात ही नहीं, शिर्क वाला बंदा कभी जहन्नम से निकल ही नहीं सकता, तो अहम पैग़ाम तो तौहीद का है, मगर पहला Message (पैग़ाम) इसके बारे में नहीं भेजा, यह बात भी ज़हन में आती है कि रिसालत की भी बड़ी अहमियत है, उस पर ईमान लाए बग़ैर दीन मुकम्मल नहीं होता, मगर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने रिसालत के बारे में भी पैग़ाम नहीं भेजा, फिर यह बात भी समझ में आती है कि क़्यामत के दिन की भी बड़ी अहमियत है, उस दिन इंसान के नामए आमाल को देखा जाएगा, तौला जाएगा, उस दिन इंसान के मुक़द्दर के फ़ैसले होंगे, या वह ज़िंदगी की बाज़ी जीत जाएगा, या ज़िंदगी की बाज़ी हार जाएगा, उस दिन की अहमियत के पेशे नज़र क़्यामत का तसव्वुर दिया जाता, मगर ऐसा नहीं किया गया, बल्कि फ़रमायाः "اِقْرَأْ" यअ़नी पढ़, तो मालूम हुआ कि अल्लाह तआला इस उम्मत को पढ़ता हुआ देखना चाहते हैं, इसी लिये इल्म की बहुत फ़ज़ीलत है।

इल्म की वजह से इंसान को फ़रिशतों पर फ़ज़ीलत

यह वह सिफ़त है जिसकी वजह से अल्लाह ने बशर को इम्तियाज़ अता फ़रमाया, आप ग़ौर करें कि फ़रिशतों ने आदम अलै० को सज्दा किया, हालांकि वह बड़े इबादत गुज़ार थे, फ़रिशतों के बारे में फ़रमाया "لَا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ" अब एक तरफ़ फ़रिशतों की बुज़ुर्ग जमाअत है जो हज़ारों साल इबादत कर चुकी, और दूसरी तरफ़ चंद दिन पहले पैदा होने वाले आदम अलै० हैं, मगर मैदान हज़रत आदम अलै० के हाथ आया, अल्लाह तआला ने फ़रिशतों को हुक्म दियाः "اُسْجُدُوْا لِاٰدَمَ" तुम आदम अलै० की तरफ़ सज्दा करो, यह फ़ज़ीलत इसलिये कि "عَلَّمَ اٰدَمَ" "الْاَسْمَاءَ كُلَّهَا" अल्लाह तआला ने आदम अलै० को इल्मुल अस्मा

अता किया था, इल्मुल अशया अता किया था, जिस वजह से उनको फ़रिश्तों पर भी फ़ज़ीलत हासिल हो गई।

आलिम की फ़ज़ीलत

चुनांचे अबू दरदा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः "فَضْلُ الْعَالِمِ عَلَى الْعَابِدِ كَفَضْلِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ عَلَى سَائِرِ الْكَوَاكِبِ" कि जिस तरह चौदहवीं रात के चांद को तमाम सितारों पर फ़ज़ीलत होती है, उसी तरह एक आलिम को आबिद के ऊपर फ़ज़ीलत होती है। सय्यदना अनस रज़ि0 रिवायत करते हैं कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः "اِنَّ مَثَلَ الْعُلَمَاءِ فِى الْاَرْضِ كَمَثَلِ النُّجُوْمِ فِى السَّمَاءِ" कि ज़मीन पर उलमा की मिसाल ऐसी है जैसे आसमान के ऊपर रौशन सितारे होते हैं, आसमान की ज़ीनत सितारों से तो है तो ज़मीन की ज़ीनत उन परहेज़गार उलमा से है। अबू दरदा रज़ि0 फ़रमाते हैं "اِنَّهُ يَسْتَغْفِرُ لِلْعَالِمِ كُلُّ شَيْءٍ حَتَّى الْحِيْتَانُ فِى جَوْفِ الْبَحْرِ" कि आलिम के लिये हर चीज़ इस्तिग़फ़ार करती है हत्ता कि पानी के अंदर मछलियां भी उसके लिये इस्तिग़फ़ार कर रही होती हैं। उसमान रज़ि0 फ़रमाते हैं कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः "يَشْفَعُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ثَلٰثَةٌ" क़यामत के दिन तीन लोग शफ़ाअत करेंगे, सबसे पहले "اَلْاَنْبِيَاءُ" फिर "ثُمَّ الْعُلَمَاءُ" दूसरे उलमा, "ثُمَّ الشُّهَدَاءُ" और शुहदा की शफ़ाअत की बारी तीसरे नम्बर पर आएगी, तो मालूम हुआ कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को यह चीज़ बहुत पसंद है कि मेरे बंदे इल्म हासिल करें।

तालिबे इल्म की फ़ज़ीलत

सफ़वान रज़ि0 रिवायत करते हैं: "مَا مِنْ رَجُلٍ خَرَجَ مِنْ بَيْتِهٖ لِيَطْلُبَ الْعِلْمَ اِلَّا وَضَعَتْ لَهُ الْمَلٰئِكَةُ اَجْنِحَتَهَا رِضًى لِمَا يَصْنَعُ" कि जब कोई बंदा इल्म हासिल करने के लिये घर से निकलता है तो

फ़रिशते उसके पांव के नीचे अपना पर बिछाते हैं इस बात से ख़ुश होकर वह कितने अज़ीम काम के लिये अपने घर से निकलता है। अबू हुरैरा रज़ि0 फ़रमाते हैं: "مَنْ سَلَكَ طَرِيقًا يَطْلُبُ فِيهِ الْعِلْمَ سَهَّلَ اللّٰهُ لَهٗ طَرِيقًا إِلَى الْجَنَّةِ" कि जो बंदा इल्म हासिल करने के लिये निकलता है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसके लिये जन्नत के रास्ते को आसान फ़रमा देते हैं, बल्कि एक रिवायत में तो यहां तक फ़रमाया गया कि "مَنْ كَانَ فِيْ طَلَبِ الْعَلْمِ كَانَتِ الْجَنَّةُ فِي طَلَبِهٖ" जो शख़्स इल्म की तलब में होता है जन्नत उस बंदे की तलब में होती है। अनस रज़ि0 रिवायत करते हैं कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया: "مَنْ خَرَجَ فِيْ طَلَبِ الْعِلْمِ فَهُوَ فِيْ سَبِيلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَرْجِعَ" जो अपने घर से इल्म हासिल करने के लिये निकलता है, वह अल्लाह के रास्ते में होता है, यहां तक कि लौट कर घर वापस आ जाए।

चुनांचे इब्ने अब्बास रज़ि0 रिवायत करते हैं कि दो हरीस ऐसे हैं जिनकी हिर्स कभी ख़त्म नहीं होती, एक दुनिया का हरीस जब तक क़ब्र में न पहुंच जाए, और दूसरा इल्म का हरीस, उसको भी कभी सैरी नहीं होती, वह हर लम्हा मज़ीद इल्म हासिल करने के लिये फ़िक्रमंद रहता है। जबल बिन क़ैस रज़ि0 रिवायत करते हैं कि एक शख़्स मदीना से दमिश्क़ हुसूले इल्म के लिये आया, अबू दरदा रज़ि0 ने पूछा कि तुम्हारे इस सफ़र का मक़्सद क्या था? उन्होंने कहा कि फ़क़त इल्म हासिल करना, तो उन्होंने फ़रमाया कि मैंने नबी सल्ल0 से यह सुना कि जो शख़्स इल्म हासिल करने के लिये अपने घर से निकलता है फ़रिशते उसके पांव के नीचे अपने पर बिछाते हैं, मछलियां उसके लिये मग़फ़िरत की दुआ करती है, और आलिम को आबिद पर इस तरह फ़ज़ीलत है जिस तरह चौदहवीं के चांद को सितारों के ऊपर फ़ज़ीलत हासिल है।

अहादीस पढ़ने पढ़ाने वालों को हुज़ूर सल्ल0 की दुआ

एक मर्तबा नबी सल्ल0 ने दुआ मांगी: "اَللّٰهُمَّ ارْحَمْ خُلَفَائِي" अल्लाह! मेरे ख़ुलफ़ा पर रहम फ़रमाना, "قِيلَ" जो सहाबा मौजूद थे उन्होंने अर्ज़ किया: "مَنْ خُلَفَائُكَ يَا رَسُولَ اللّٰه" ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! कौन आप के ख़ुलफ़ा हैं? قَالَ الَّذِينَ يَرْوُونَ أَحَادِيثِي وَيُعَلِّمُونَ النَّاسَ" कि वह लोग जो मेरी अहादीस की रिवायत करेंगे और अहादीस लोगों को सिखाएंगे, तालीम देंगे, वह लोग मेरे ख़ुलफ़ा हैं। नबी सल्ल0 ने एक बहुत ख़ूबसूरत दुआ दी: "نَضَّرَ اللّٰهُ امْرَأً سَمِعَ مَقَالَتِي فَوَعَاهَا" अल्लाह उस शख़्स के चेहरे को तरो ताज़ा रखे जो मेरी बात को सुने, महफ़ूज़ करे और फिर उसको दूसरों तक पहुंचा दे। अब देखें चेहरा तरो ताज़ा तो तब होगा जब दुनिया का झमेला न हो, अगर इंसान दुनिया की मुसीबतों में गिरफ़तार हो तो चेहरा तो उतरा हुआ होता है, परेशानी चेहरे पे वाज़ेह होती है, एक लफ़्ज़ में इतनी ख़ूबसूरत दुआ दे दी सारे मसले ही हल हो गए, कि अल्लाह उसके चेहरे को तरोताज़ा रखे।

इस्लाम में पहला मदरसा

चुनांचे इस्लाम की तारीख़ में सबसे पहला मदरसा मस्जिदे नबवी में बना, गो वह उसका नाम तो नहीं था, लेकिन आज के ज़माने में हम अगर उसका नाम मालूम करना चाहें तो उसको जामिआ सुफ़्फ़ा कह सकते हैं, यह चंद मुहाजिरीन सहाबा थे, जो अपने घर को छोड़ कर अल्लाह के रास्ते में आ गए थे, यह मस्जिदे नबी में रहते थे और वहां पर वह नबी अलैहिस्सलाम से दीन सीखते थे।

मदरसए सुफ़्फ़ा का निसाब

चुनांचे हर जामिआ के अंदर कोई Syllabus (निसाब) होता है तो जामिआ सुफ़्फ़ा का Syllabus (निसाब) था क़ुर्आने

अज़ीमुश्शान, "الٓر كِتَابٌ اَنزَلْنَاهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْر" यह कुर्आन अल्लाह ने उतारा, ताकि आप लोगों को अंधेरों से निकाल कर रौशनी की तरफ़ ले जाएं तो उनका निसाब कुर्आन था।

फिर हर किताब की तशरीह होती है तो अगर कोई पूछे कि कुर्आन मजीद की तशरीह कैसे हुई? तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: ऐ मेरे हबीब सल्ल0 मैंने आप को भेजा "لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِم" ताकि आप इस वाज़ेह फ़रमा दीजिये जो लोगों की तरफ़ नाज़िल किया गया है, तो अहादीसे मुबारका गोया इसकी तशरीह थीं, सहाबा रज़ि0 को नबी सल्ल0 ज़बान से भी पढ़ाते थे और अमल से भी सिखाते थे।

अह्दे नबवी में औक़ाते तालीम 24 घंटे

हर मदरसा के अंदर औक़ात होते हैं, कहीं पर सुब्ह आठ बजे से लेके दो बजे तक, कहीं आठ से लेके 4 बजे तक, लेकिन यह जामिआ सुफ़्फ़ा ऐसा था कि उसके औक़ाते तालीम चौबीस घंटे थे, चुनांचे रात का वक़्त है नबी सल्ल0 मस्जिदे नबी में तशरीफ़ लाए, देखा कि अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 तहज्जुद में बहुत ही ख़फ़ी अंदाज़ के साथ कुर्आन मजीद की तिलावत कर रहे हैं, और उमर रज़ि0 तिलावत कर रहे हैं ज़रा जह्र के साथ, जब दोनों ने नफ़िल मुकम्मल कर लिये तो हाज़िरे ख़िदमत हुए, नबी सल्ल0 ने पूछाः से अबू बक्र! आप इतना आहिस्ता क्यों पढ़ रहे थे? अर्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! मैं उस ज़ात को सुना रहा था जो सीनों के भेद जानती है, ऊंचा पढ़ने की क्या ज़रूरत थी, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः उमर! तुम ऊंचा क्यों पढ़ रहे थे? ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0 मैं सोए हुओं को जगा रहा था, शैतान को भगा रहा था, तो नबी सल्ल0

ने उन दोनों को सिखाया कि उमर! ज़रा आहिस्ता आवाज़ कर लो, और अबू बक्र! तुम ज़रा सा जह्र कर लो। अब यह रात का आख़िरी पहर है, उस वक़्त भी नबी सल्ल० अपने शागिर्दों को दीन सिखा रहे हैं, तो जिस वक़्त अल्लाह के हबीब सल्ल० मस्जिद आ जाते थे, Period (दर्जा) शुरू हो जाता था, सीखने सिखाने का यह अमल शुरू हो जाता था, यह सहाबए किराम रज़ि० नबी सल्ल० से दीन सीखते थे और बाक़ी सहाबा रज़ि० आकर उनसे पूछते थे कि आज नबी सल्ल० ने कौनसी आयत सिखाई, क्या बात सिखाई, तो यह दूसरे सहाबा रज़ि० को बता देते थे।

जामिआ सुफ़्फ़ा के अंदर मतबख़ नहीं था

यह दीने इस्लाम का पहला इक़ामती मदरसा था, मगर फ़र्क़ था, हर मदरसा के अंदर मतबख़ होता है, तब्बाख़ होता है, शागिर्दों के लिये खाने का इंतेज़ाम होता है, यह वह मदरसा था जिसमें न मतबख़ था, न कोई तब्बाख़ था, अल्लाह उनका रज़्ज़ाक़ था, अल्लाह तआला उनके लिये रिज़्क़ भेज देते थे, यह खा लेते थे, वर्ना फ़ाक़ा होता था, इतना फ़ाक़ा कि उस मदरसे के एक तालिबे इल्म जिनका नाम अबू हुरैरा रज़ि० है, वह कहते हैं, कि मैं इतन भूका था कि मुझसे उठ के खड़ा नहीं हुआ जाता था, मैं मस्जिद के दरवाज़ा के क़रीब आके लेट गया, नबी सल्ल० ने इशा की नमाज़ अदा फ़रमाई, लोग चले गए, मेरे पास अबू बक्र रज़ि० आए और गुज़र गए, मैं समझ गया कि उनके घर में भी आज कोई खाना नहीं है, उमर रज़ि० आए गुज़र गए, मैं समझ गया उनके घर में भी आज खाने का इंतेज़ाम नहीं है, वर्ना यह मुझे इस हाल में देख के ज़रूर मुझे दावत देते, नबी सल्ल० तशरीफ़ लाए, पूछाः अबू हुरैरा! क्यों लेटे हुए हो? बताया कि ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल०! इतनी भूक है कि भूक की

बिना पर खड़ा नहीं हुआ जाता, नबी सल्ल0 उनको अपने घर ले गए, घर वालों से पूछा कि कोई खाने की चीज़ है? अर्ज़ किया कि दूध का एक प्याला है, तो फ़रमाया कि भिजवाओ, अबू हुरैरा रज़ि0 कहते हैं कि मुझे उम्मीद लग गई कि चलो एक प्याला दूध तो मिलेगा, लेकिन जब प्याला आया तो नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि अबू हुरैरा! जाओ और मदरसा के बाक़ी तलबा को भी बुला के लाओ—यह जो आज की मदरसी ज़बान है यह आजिज़ उसको ख़ुद इस्तेमाल कर रहा है, ताकि बच्चे जल्दी समझें---चुनांचे वह मस्जिदे नबवी गए और वहां पर जितने अस्हाबे सुफ़्फ़ा थे उनको बुला के लाए, अब वह सोचते हैं कि 70 लोग हैं तो मेरे लिये दूध क्या बचेगा और साथ यह ख़्याल भी था कि महबूब सल्ल0 की आदत मुबारका यही थी कि जो दावत देके लाता था, उसी को हुक्म होता था कि पिलाओ भी तुम ही, और पिलाने वाले का नम्बर तो आख़िर में आता है, तो पता नहीं मेरे लिये क्या बचेगा, फ़रमाते हैं कि वह सब लोग आए, मैंने दूध पिलाना शुरू किया, हर बंदे ने जी भर के पिया, सैराब होते गए, लेकिन दूध का प्याला वैसे का वैसे ही, जब सबने पी लिया तो नबी सल्ल0 ने वह प्याला मुझको दिया फिर मैंने पिया, मुस्कुरा के फ़रमाया कि अबू हुरैरा! तुम और पी लो, मैंने कहाः ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! मैंने बहुत पिया फ़रमाया और पी लो, फ़रमाते हैं कि मैंने और पिया, मेरा पेट भर गया, नबी सल्ल0 मुस्कुराए, फ़रमाया और पी लो, मैंने अर्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! "شَبِعْتُ" अब मेरा पेट भर गया, मुझसे नहीं पिया जा रहा है, तो अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने उस बचे हुए दूध को नोश फ़रमाया, तब वह ख़त्म हुआ। मालूम हुआ कि उन तलबा का राज़िक़ परवरदिगार था, वह उनके लिये रिज़्क़ भेजता था, रिज़्क़ में बरकत डाल दी जाती थी।

अब हर मदरसा में एक मुअल्लिम होता है, उस मदरसे के मुअल्लिमे आज़म मुर्शिदे आज़म मुबल्लिगे आज़म सय्यदुल अव्वलीन वलआख़िरीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमद मुज्तबा सल्ल0 थे। फिर हर क्लास का Monitor (अमीनुस्सफ़) होता है तो उस जामिआ में क्लास का मानीटर एक सहाबी थे जिनका नाम था सलमान फ़ारसी रज़ि0, वह मानीटर थे, उनके ज़िम्मा था कि तुम ज़रा इनका ख़्याल रखना।

सहाबए किराम रज़ि0 का इम्तेहान और उनकी कामियाबी

फिर जब भी पढ़ाते हैं तो साल के बाद इम्तेहान भी होता है, तो उस जामिआ में इम्तेहान भी हुआ। इम्तेहान लेने के लिये बाहर कोई न कोई मुम्तहिन आता है, तो उस जामिआ का मुम्तहिन कौन था? और उसने इम्तेहान क्या लिया? अल्लाह फ़रमाते हैं: "أُولَٰئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَىٰ" हमने उनके दिलों को देखा कि तक़्वा है या नहीं, हमने उनका इम्तेहान लिया, यह वह लोग थे जिनका मुम्तहिन अल्लाह था और पेपर का नाम तक़्वा था। फिर इस इम्तेहान के अंदर वह पास हो गए? फ़रमायाः "وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا"- यह मेरे महबूब सल्ल0 के शागिर्द थे, उस्ताज़ का अंदाज़ा लगाना हो तो शागिर्दों को देखना होता है, दरख़्त का अंदाज़ा लगाना हो तो फल को देखना होता है, तुम मेरे महबूब की अज़मतों को देखना चाहो तो मेरे महबूब सल्ल0 के शागिर्दों को देख लो, यह ऐसे लोग थे जिनके दिल तक़्वा से भरे हुए थे, अल्लाह ने इनको तक़्वे पे जमाए रखा था।

सहाबए किराम रज़ि0 को कामियाबी का इन्आम

जब कोई तालिबे इल्म इम्तेहान में कामियाब होता है तो फिर उसे इन्आम भी तो मिलता है, हर मदरसा में इन्आम देते हैं, कहीं

Certificate (सनद) देते हैं, कहीं कुछ और, तो उस मदरसे के तलबा को भी कोई Certificate (सनद) मिला? अल्लाह फ़रमाते हैं हां, मैंने उनको Certificate (सनद) दिया, फ़रमायाः "رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ" अल्लाह उनसे राज़ी, यह अल्लाह से राज़ी, सुब्हानल्लाह! यह कैसे खुश नसीब तलबा थे कि जिन्होंने नबी सल्ल0 से तालीम पाई और अल्लाह ने उनको यह शान अता फ़रमाई। हर मदरसा में कुछ इक़ामती बच्चे होते हैं, कुछ Day scholar (ग़ैर इक़ामती तलबा) होते हैं तो 70 तलबा तो इक़ामती थे और बाक़ी सहाबा Day scholar (ग़ैर इक़ामती तलबा) थे, वह दिन में अपने काम करते थे, शाम में या रात में आके उस मदरसे में पढ़ा करते थे, तो यह दीने इस्लाम का पहला मदरसा है।

हुज़ूर सल्ल0 को सहाबा रज़ि0 के साथ रहने का हुक्म

यह लोग अल्लाह को कितने प्यारे थे? सुनिये कि अल्लाह ने अपने हबीब सल्ल0 को हुक्म फ़रमाया कि मेरे महबूब सल्ल0 आप जाएं और उनके पास जाकर बैठें "وَاصْبِرْ نَفْسَكَ" अपने आप को सब्र दीजिये, अपने आप को बैठाइये, अपने आप को नथी रखिये "مَعَ الَّذِيْنَ" उन लोगों के साथ "يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهُ" जो सुब्ह शाम अल्लाह को याद करते हैं। नबी सल्ल0 तशरीफ़ लाए, सहाबा रज़ि0 से पूछा तुम क्या कर रहे थे? बताया कि ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0 सीख सिखा रहे थे, मुज़ाकरा कर रहे थे, तकरार कर रहे थे जो मदरसों में होता है, फ़रमाया तुम खुश नसीब लोग हो, अल्लाह ने मुझे हुक्म दिया कि मैं तुम्हारे दर्मियान आकर बैठूं।

सहाबए किराम रज़ि0 में तलबे सादिक़ का एक नमूना

इस मदरसा के तलबा की तलब अजीब थी, सुब्हानल्लाह, एक

तालिबे इल्म ऐसे भी थे जो आंखों से नाबीना थे, मगर मन के बीना थे, उनको कोई सवाल पूछना था, वह आए अपने उस्ताज़ के पास, मुअल्लिमे आज़म के पास कि मैं सवाल पूछूं तो आक़ा सल्ल0 के पास कुरैशे मक्का के बड़े सरदार हुए थे और महबूब सल्ल0 उनके साथ गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे, अब चूंकि उनकी ज़ाहिरी बीनाई तो थी नहीं, तो उनको पता नहीं था कि यह मजलिस कैसी है, वह आए और उन्होंने आके सीधे सवाल कर दिया, तो महबूब सल्ल0 ने उनको कोई जवाब नहीं दिया, अब यह जो अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने उनको इंतेज़ार करवाया, यह सच बात थी इसलिये कि डाक्टर के पास अगर कोई कैंसर का मरीज़ आ जाए तो वह नज़ले ज़ुकाम के मरीज़ से इंतेज़ार करवा लेता है कि तुम तो नज़ला ज़ुकाम के मरीज़ हो, कोई मस्ला नहीं, तुम्हें बाद में दवाई दूंगा, यह कैंसर का मरीज़ है, यह तो ICU का मरीज़ है, इसको जल्दी मुझे Attend (मुआइना) करना है, तो अल्लाह के हबीब सल्ल0 का मुआमला ऐसा ही था, आप उस वक़्त उन मुश्रिकों के साथ गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे, मगर उस तालिबे इल्म को इंतेज़ार करवाना अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को इतना अजीब लगा कि अल्लाह ने अपने हबीब सल्ल0 से महबूबाना ख़िताब फ़रमाया, इर्शाद फ़रमायाः "عَبَسَ وَتَوَلّٰى اَنْ جَاءَهُ الْاَعْمٰى" इन आयात के मफ़हूम को जब पढ़ते हैं तो हैरान होते हैं कि तलब वाले बंदे की अल्लाह की यहां कितनी क़द्र हुआ करती है।

सय्यदुल कुर्रा उबई बिन कअ़ब रज़ि0 की शान

फिर उसी जामिआ के एक और तालिबे इल्म इब्ने कअ़ब हैं जो सय्यदुल कुर्रा थे, बहुत अच्छा कुर्आन पाक पढ़ते थे, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया, इब्ने कअ़ब! सूरए बय्यिना सुनाओ, कहा कि ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! यह कुर्आन आप पर नाज़िल हुआ मैं आपके सामने

सुनाऊं तो नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि हां मुझे ऐसा ही हुक्म हुआ है, वह समझ गए कि ऊपर से इशारा हुआ है, चुनांचे पूछते हैं "اَللّٰهُ سَمَّانِیْ" ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल०! क्या अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मेरा नाम लेकर फ़रमाइश की है? नबी सल्ल० ने फ़रमाया: "نَعَمْ اللّٰهُ سَمَّاكَ" इब्ने कअ़ब! तेरा नाम लेकर अल्लाह ने फ़रमाया कि इब्ने कअ़ब से कहो سورة البيّنة पढ़ें, आप भी सुनेंगे, मैं परवरदिगार भी सुनूंगा। यह ऐसे तलबा थे, इन्होंने एक नह्ज क़ाइम कर दी, इन्होंने दीन सीखने के लिये कुर्बानियां दीं, दिन रात चटाइयों पे पड़े रहते थे।

तमाम दीनी दर्सगाहें जामिआ सफ़ा की शाखें

चुनांचे एक रिवायत में है कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया: ऐ अस्हाबे सुफ़्फ़ा! जिस नह्ज पर तुमने ज़िंदगी गुज़ारी, जो बंदा इस नह्ज पर ज़िंदगी गुज़ारेगा क़्यामत के दिन अल्लाह की रज़ा उसको नसीब होगी, यह मदरसे का एक सिलसिला शुरू हो गया, आज दुनिया में जितने मदारिस हैं वह इसी जामिआ सुफ़्फ़ा की शाखें हैं, इसी शम्अ़ से फूटती हुई किरनें हैं, दुनिया के किसी ख़ित्ते में हो यह जामिआ दारुल उलूम देवबंद वक़्फ़ हो या दारुल उलूम देवबंद हो, यह सब दारुल उलूम और जामिआत इसी की एक किरनें हैं जो यहां पर पड़ रही हैं और रौशनी फैल रही है, लिहाज़ा आप लोगों को अस्हाबे सुफ़्फ़ा के साथ यह निस्बत हासिल है।

तालीमी मैदान में उम्मते मुस्लिमा की कुर्बानियां

इस उम्मत के तलबा ने इल्म हासिल करने के लिये कितने मुजाहिदे किये और कितनी कुर्बानियां दीं, इनके हालात इंसान पढ़ता है तो हैरान होता है।

इमाम ज़ह्बी रह०

चुनांचे इमाम ज़ह्बी रह० बीस साल की उम्र में इल्म हासिल

करने के लिये घर से निकले, फ़रमा रहे हैं कि मैं सात साल में इल्म मुकम्मल करने के बाद घर लौटा, आप हज़रात तो जुमेरात को चले जाते हैं, जुमा घर रह के आते हैं, या दो हफ़्ते बाद या महीने बाद चक्कर लगा लेते हैं, वह फ़रमाते हैं कि मैं इल्म हासिल करने के लिये निकला, मुतवातिर सात साल में इल्म हासिल करता है, जब इल्म हासिल कर लिया! तब मैं मां बाप को मिलने के लिये वापस आया।

हाफ़िज़ बिन ताहिरुल मक़दसी रह0

हाफ़िज़ इब्ने ताहिर क़ुद्सी रह0 तलबे इल्म के लिये निकले, उस ज़माने में ऐसा नहीं कि जहां जाएंगे वहां आप को किताबें मिल जाएंगी, यह नेअ़मत आज है कि जिस मदरसे में दाख़िला लो तो पढ़ने के लिये नाज़िमे तालीमात वहां किताबें दे देते हैं, उस ज़माने में उस्ताज़ के पास किताबें खुद लेकर जानी पड़ी थीं, वह फ़रमाते हैं कि किताबें इतनी थीं कि मैं अपनी पीठ पर जब लाद कर चला तो मशक़्क़त उठाने की वजह से पेशाब में ख़ून आया करता था, मैं अपने उस्ताज़ के पास जाने के लिये इतना बोझ उठाता था।

ख़तीब तबरेज़ी रह0

ख़तीब तबरेज़ी रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैं अपनी पुश्त के ऊपर किताबें लेकर चलता था और गर्मी की वजह से इतना पसीना आता था कि मेरी किताबें पसीने से भीग जाया करती थीं।

इमाम अहमद बिन हंबल रह0

इमाम अहमद इब्ने हंबल रह0 शुरू में ग़ुर्बत के हालात में थे, फ़रमाते हैं कि मैं इल्म हासिल करता था तो फ़ाक़ा होता था, मैंने सोचा कि क्यों न मैं कोई मज़दूरी कर लूं, तो फ़रमाते हैं कि जब मैं पढ़ लेता तो शाम को मैं ऊंटों के अड्डे पे जाता, जैसे हमारे ज़माने

में बसों का अड्डा और टैक्सी का अड्डा होता है, उस ज़माने में चूंकि ऊंट ज़रीआ आमद व रफ़्त होता था तो फ़रमाते हैं कि शहर में एक जगह बनी हुई थी वहां ऊंटों का Stay (क़्याम) होता था, मैं वहां चला जाता था, और जब मुसाफ़िर उठा कर ऊंटों पर लादना चाहते थे तो मैं उनसे कहता था कि मैं इस काम के लिये हाज़िर हूं, वह मुझे थोड़ा कुछ दे देते थे, मैं उनके बोझ उठा उठा कर सभी ऊंट पर चढ़ाता था, कभी ऊंट से नीचे उतारता था—और दुनिया नहीं जानती थी कि यह दूसरों के बोझ अपने सर पे उठाने वाला बच्चा आने वाले वक़्त में इमाम अहमद बिन हंबल बनने वाला है---फ़रमाते हैं कि मेरा एक दोस्त था उसने मुझे Offer (पेशकश) किया कि भाई! आप के खाने का इंतिज़ाम मैं कर देता हूं, मुझे अच्छा न लगा, मैंने कहा कि नहीं भाई, मेहनत करूंगा फिर खाऊंगा, उन्होंने कहा कि फिर ऐसा करें कि मुझे दो किताबों की ज़रूरत है, आप लिख के दे दें, इम्ला कर दें, मैंने कहा ठीक है, फ़रमाते हैं कि मैंने सामान उठाने का काम छोड़ा, फिर मैंने किताबें लिखनी शुरू कीं, लोग मुझसे किताबें लिखवाते थे, मैं फ़ारिग़े वक़्त में लिखता था, इस पर कुछ मिल जाता था, जिस से मैं अपना पेट भर लिया करता था।

इमाम शाफ़ई रह0

इमाम शाफ़ई रह0 फ़रमाते हैं कि मेरे ऊपर ऐसा वक़्त था कि मेरे पास लिखने के लिये कोई काग़ज़ नहीं होता था, तो मैं बड़े जानवर की बड़ी हड्डियां ढूंढता था, ख़ुश्क हड्डी मुझे मिल जाती तो मैं उसके ऊपर लिख के रखता था और उनको घर के कोने में डाल देता था, यह मेरी किताब होती थी,---कोई नहीं जानता था कि यह बड़ी हड्डियों को तलाश करने वाला बच्चा आने वाले वक़्त में इमाम शाफ़ई रह0 बनने वाला है—फ़रमाते हैं कि इल्म की तलब मेरे अंदर

इतनी थी कि मैं मिना के मैदान में था, मुझे एक बूढ़ा नज़र आया, मैंने पूछा कि आप कहां से आए हैं? कहने लगा मदीने से, तो मुझे उसके साथ कुछ मुहब्बत हुई कि आक़ा सल्ल0 के दयार से आया हुआ है, मेरी कैफ़ियत को देख के उसने मुझसे कहा कि मेरी दावत कबूल कर लो, मैंने कहा बहुत अच्छा, इतना कहने के बाद उस बड़े मियां ने अपनी थैली खोली और उसके अंदर जो माहज़र था उसको दस्तरख़्वान पे लगा दिया और मैंने भी खाना शुरू कर दिया, मुझसे बात चीत करने लगा, मैंने पूछा बड़े मियां! सुना है मदीने में कोई इमाम मालिक होते हैं? उसने कहा कि तुम्हें उनसे मिलना है? मैंने कहा कि ख़्वाहिश तो बड़ी है, लेकिन सफ़र के वसाइल मेरे पास नहीं हैं, और लम्बा सफ़र था---उस ज़माने में ऊंटों से सफ़र करते तो दो हफ़्ते लगा करते और पैदल महीनों लगते---उसने कहा कि एक बंदा हमारे साथ हज पे आया था, वह फ़ौत हो गया, और अब उसका ऊंट ख़ाली है, अगर तुम इरादा करो तो यह जो भूरा ऊंट खड़ा है हम उस पे आप को ले जाएंगे, मैंने फ़ौरन इरादा कल लिया, फ़रमाते हैं कि क़ाफ़िला वालों ने मुझे अपने साथ ले लिया और मैं मक्का मुकर्रमा से मदीना तय्यबा 16 दिन में पहुंचा और उस दौरान मैंन 16 मर्तबा कुर्आन मजीद मुकम्मल पढ़ लिया---यह उस ज़माने के तालिबे इल्म होते थे, आज उम्रे वाले जाते हैं और पूरे सफ़र में एक कुर्आन भी उनके लिये पढ़ना मुश्किल बन जाता है---वह फ़रमाते हैं कि 16 दिन सफ़र किया 16 कुर्आन मुकम्मल पढ़ लिये, जब मैं मस्जिदे नबी में पहुंचा तो नमाज़ का वक़्त हो चुका था, मेरा वजू था, तो मैं भी नमाज़ में शरीक हो गया, कहने लगे कि नमाज़ पढ़ने के बाद मैंने देखा कि एक लम्बे क़द का आदमी है, एक तह्बंद बांधी हुई है, और चादर लपेटी हुई है और एक ऊंची जगह पे बैठ गया और लोग

उनके सामने बैठ गए, और वह कहने लगाः "قال قال النبی ﷺ" मैं समझ गया कि यही इमाम मालिक हैं, मैं भी बैठ गया, उन दिनों इमाम मालिक रह0 अहादीसे इम्ला करवा रहे थे, फ़रमाने लगे कि उन्होंने हदीस रिवायत करनी शुरू की और सबने काग़ज़ क़लम से लिखनी शुरू की, मैं मुसाफ़िर था, न काग़ज़ न क़लम, कोई वसाइल ही नहीं थे, मेरा दिल बड़ा चाहा कि काश मुझे भी इन तलबा से मुशाबिहत हो जाती, मैं भी हदीस की किताबत करना, कहने लगे कि मैं यही सोच रहा था कि मुझे अपने सामने एक तिन्का नज़र आया मैंने वह तिन्का उठा लिया और फिर मैंने कहा कि अच्छा इसको मैं अपने होंटों की तरी से लगाता हूं ताकि यह सियाही का काम करे और जो वह पढ़ रहे थे मैं उसको अपनी हथेली पे लिख रहा था ताकि मुझे तलबा के साथ तशब्बुह हासिल हो जाए, इमाम मालिक रह0 ने कुछ अहादीस सुनाईं, अगली नमाज़ का वक़्त हो गया, मजलिस बरख़ास्त हुई, लोग उठ के वज़ू करने चले गए, मेरा वज़ू था तो मैं वहीं बैठा रहा, तो इमाम मालिक रह0 ने मुझे बुला के पूछा कि नौजवान! कहां से आए हो? मैंने कहाः मक्का से आया हूं, पूछा कि यह तुम हथेली पे क्या कर रहे हो? मैंने कहाः जो आप अहादीस सुना रहे थे मैं लिख रहा था, फ़रमाया हथेली दिखाओ, जब मेरी हथेली देखी तो कुछ भी नहीं लिखा हुआ था, वह कहने लगे कि यह तो हदीसे पाक की शान में गुस्ताख़ी है कि तुम इस तरह अपने होंटों का लुआब लगा के हदीसे पाक लिख रहे थे, यह तो मुनासिब नहीं है, मैंने अर्ज़ किया हज़रत! मैं मुसाफ़िर हूं, न क़लम, न काग़ज़, मैं आप के शागिर्दों के साथ तशब्बुह हासिल करने के लिये ऐसा कर रहा था, हक़ीक़त में आप जो पढ़ा रहे थे मैं अपने दिल पर लिख रहा था, कहते हैं कि मेरे इस जवाब पर इमाम मालिक रह0 बड़े हैरान हो

गए, कहने लगे अच्छा अगर तुम दिल पे लिख रहे थे तो सुनाओ, फ़रमाते हैं कि उस मजलिस में इमाम मालिक रह० ने 1123 अहादीस सुनाई थीं, मैंने तमाम अहादीस मतन और रिवायत के साथ उनको सुना दी, यह उस ज़माने के तलबा होते थे, जैसे स्पंज होता है कि आप उसको पानी में डालें तो नस नस में पानी चूस लेता है, बिल्कुल यही तलबा की हालत होती थी कि इतना हुस्ने तलब होता था कि उस्ताज़ के इल्म को वह फ़ौरन जज़्ब कर लिया करते थे। जिस तरह खुश्क ज़मीन हो, अर्से से बारिश न हुई हो, तो ज़रा बूंद गिरे तो पता नहीं चलता, क्योंकि ज़मीन पी जाती है, उस ज़माने के तलबा की यही हालत थी, उनके सामने उस्ताज़ कलाम करता था, लिखने की भी ज़रूरत नहीं होती थी, उनकी कुव्वते हाफ़िज़ा ऐसी थी कि उनको Direct (सीधा) याद हो जाता था।

इमाम तबरानी रह०

इमाम तबरानी रह० फ़रमाते हैं कि मैं अपने घर से निकला तो मैंने 30 बरस Thirty years इल्म हासिल करने में लगाए, इस हाल में कि मेरे पास बिस्तर नहीं होता था और मैं सर्दी से बचने के लिये जिस मस्जिद में होता उसकी सफ़ के एक किनारे पर लेट कर पकड़ लेता और घूमना शुरू कर देता था और सफ़ में लेट जाता था, तो मेरे जिस्म को सर्दी ज़रा कम लगती थी, गो सर और पांव को लग रही होती थी, इस तरह में रात गुज़ारा करता था। अगर हम तलबे इल्म की मिसालें देखें तो दीने इस्लाम में इल्म को तलब करने के लिये नौजवान बच्चों ने जो कुर्बानियां दीं ऐसी तारीख़े दुनिया में कहीं नज़र नहीं आतीं।

इमाम इब्ने कृय्यिम रह०

इब्ने तैमिया रह० को हाकिमे वक़्त ने क़ैद कर दिया, तीसरा

दिन हुआ तो एक नौजवान हाकिमे वक़्त के दफ़्तर में आया, उसकी आंखों में आंसू थे, उसको देखकर हैरत हुई, चेहरे पे तक़्वा था, चेहरे पे नूरानियत थी, मअ़सूमियत थी, सब लोगों का यह ख़्याल था कि यह नौजवान जो फ़रयाद लेके आया है, उस फ़रयाद को पूरा कर देना चाहिये, तो हाकिमे वक़्त ने पूछा नौजवान! तुम्हारे चेहरे पर इतनी मअ़सूमियत है, तुम रो क्यों रहे हो? कहा कि मैं एक फ़रयाद लेकर आया हूं, उसने कहा बताओ तुम्हारी फ़रयाद को पूरा किया जाएगा, उसने कहा कि मैं यह फ़रयाद लेके आया हूं कि आप मुझे जेल भेज दें, हाकिम कहने लगा क्या? जेल भेज दें? कहा जी मेरे ऊपर एहसान फ़रमाएं, मुझे जेल भेज दें, हाकिमे वक़्त ने कहा क्यों? उसने कहा तीन दिन से आप ने मेरे उस्ताज़ को जेल में बंद किया हुआ है, मेरा सबक़ क़ज़ा हो रहा है, मुझे भी जेल भेज दें, मैं जेल की सुऊबतें तो बर्दाश्त कर लूंगा, अपने उस्ताज़ से वहां सबक़ तो पढ़ लिया करूंगा। यह उस ज़माने के तलबा थे जो इल्म हासिल करने के लिये जेल में जाने की भी दुआएं और तमन्नाएं किया करते थे।

इमाम मुहम्मद रह0

एक वाक़िआ तो और अजीब है, इमाम मुहम्मद रह0 एक शहर में दर्स देते हैं, एक क़रीबी शहर के लोग आए, कहने लगे कि हज़रत सारे लोग तो यहां नहीं आ सकते, हमारे यहां भी दर्स दें, फ़रमायाः भाई! मुसाफ़त इतनी है कि अगर मैं यहां से वहां जाऊं और फिर वापस आऊं तो फिर वक़्त नहीं बचेगा, उन्होंने कहा हज़रत! हम सवारी का इंतेज़ाम कर देते हैं, आप दर्स देने के बाद सवारी पे बैठें और तेज़ी से चल के वहां पहुंच जाएं, वहां दर्स देकर सवारी से वापस आ जाएं, इमाम मुहम्मद रह0 ने इस बात को क़बूल कर लिया, अब इधर दर्स ख़त्म होता, फ़ौरन सवारी पे सवार होते, घोड़ा था या ऊंट

जो भी था, सवारी तेज़ चलती, दूसरी जगह दर्स देते, फिर वापस आते।

एक तालिबे इल्म आया, इमाम मुहम्मद रह० से कहता है कि हज़रत! मुझे आप से फ़लां किताब पढ़नी है, हज़रत ने फ़रमायाः मैं पढ़ाने को तैयार हूं लेकिन मेरे पास तो वक़्त ही नहीं, मैं यहां दर्स देता हूं, फिर सवारी पे सवार होके वहां जाता हूं, वहां दर्स देके फिर वापस आता हूं, उसने कहाः हज़रत! आप जब यहां से दर्स देके सवारी से रवाना होते हैं तो रास्ता में आप सवारी पर बैठे बैठे तक़रीर फ़रमा दिया करना मैं सवारी के साथ भागता भी रहूंगा और आप से इल्म भी हासिल करता रहूंगा। तारीख़े इंसानियत में तलबे इल्म की ऐसी कोई मिसाल को दूसरी क़ौम पेश नहीं कर सकती कि इतना हुस्न कि उस्ताज़ सवारी पे सवार हो के जा रहा है और तक़रीर कर रहा है, शागिर्द भाग भी रहा है और उसका तक़रीर भी सुन रहा है, इन हज़रात ने कुर्बानियां दी थीं।

शाह अब्दुल क़ादिर राएपूरी रह०

आप कहेंगे कि यह तो पहले ज़माने के लोग थे, चलें क़रीब के ज़माने की बात सुनें, शाह अब्दुल क़ादिर रह० अपने वाक़िआत में फ़रमाते हैं कि मैं ज़मानए तालिबे इल्मी में दारुल उलूम देवबंद ऐसे वक़्त में पहुंचा जब कि दाख़िले बंद हो गए थे, नाज़िमे तालीमात के पास गया कि हज़रत! मुझे दाख़िल फ़रमा लीजिये, उन्होंने कहा दाख़िले बंद हो गए, मैंने कहाः हज़रत! आने में देर हो गई, उन्होंने कहा कि हम दाख़िला नहीं ले सकते, मैंने पूछा हज़रत! वजह क्या है? उन्होंने कहा कि देखो दारुल उलूम इब्तिदाई हालत में है, न मतबख़ है, न कोई तब्बाख़ है, जो बस्ती है, उसके लोगों ने एक तालिबे इल्म, दो तालिबे इल्म, तीन तालिबे इल्म, इस तरह मुख़्तलिफ़

तलबा का खाना अपने ज़िम्मा लिया हुआ है, वह तलबा पढ़ते यहां हैं और खाना उनका खाते हैं, अब पूरी बस्ती में एक घर भी ऐसा नहीं हो किसी और तालिबे इल्म का खाना अपने ज़िम्मे ले सके, लिहाज़ा हम आप को नहीं रख सकते, फ़रमाते हैं कि मैंने कहा हज़रत! खाना मेरी ज़िम्मेदारी पे, आप मुझे क्लास में बैठने की इजाज़त दें तो मुझे मशरूत दाख़िला मिल गया, अब दाख़िला मिलने के बाद मैं तलबा के साथ सारा दिन पढ़ता, जब रात आती तो तलबा के साथ बैठ के मैं तकरार करता, जब तलबा सो जाते, मैं असातिज़ा की इजाज़त के साथ दारुल उलूम से बाहर निकलता, देवबंद बस्ती में उस वक़्त दो सब्ज़ी फ्रूट की दुकानें थीं, मैं वहां चला जाता, कभी तरबूज़ के छिल्के, कभी ख़रबूज़े के छिल्के, कभी अमरूद के छिल्के, कभी सेब के छिल्के, मैं वह छिल्के उठा के लाता, उनको धोके पाक साफ़ कर लेता और उनको बैठ के खा लेता, यह मेरा चौबीस घंटे का खाना होता, मैंने सारा साल फलों के छिल्के खाकर गुज़ारा किया, मगर अपने सबक़ में नाग़ा नहीं होने दिया।

फ़रमाते हैं कि दौराने साल मेरे अज़ीज़ रिशतेदार मुझे ख़त लिखते थे, मैं डर के मारे पढ़ता नहीं था कि ख़ुशी कि ख़बर होगी तो जाने को दिल करेगा, ग़म की ख़बर होगी तो तबीअत पढ़ाई में नहीं लगेगी, लिहाज़ा ख़त ही मत पढ़ो, मैंने एक मटका बनाया हुआ था, सारे ख़ुतूत उस मटके में डालता जाता था, जब साल के बाद इम्तिहान दे कर फ़ारिग़ हो जाता, उस वक़्त मैं उन ख़तों को निकालता और उनको पढ़ता, उनको पढ़ने के बाद मैं फ़ेहरिस्त बनाता कि फ़लां को ख़ुशी मिली, फ़लां को ग़म मिला, फ़लां बीमार, फ़लां के बेटा हुआ, फ़लां के यह हुआ, पूरी फ़ेहरिस्त बना के मैं वापस घर आता और उन रिशतेदारों के पास जाता, ख़ुशी वालों को मुबारक

देता, ग़म वालों की तअज़ियत करता, लोग मुझ से बड़े ख़ुश होते कि उस बच्चे ने हमारे ख़त को एक साल याद रखा, हालांकि मैंने उनके ख़त को पढ़ा ही एक साल के बाद होता था, तो क़रीब के ज़माने के बुज़ुर्ग थे, यह थे तलबा जो तलबा कहलाने के मुस्तहिक़ थे।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह०

यहां पर एक सवाल पैदा होता है कि क्या सारे ही तलबा ऐसे होते थे कि पल्ले कुछ नहीं होता था, न खाना, न पीना, न बिस्तर? नहीं, पांच उंगलियां बराबर नहीं होतीं, गुर्बा में से भी थे, उमरा में से भी थे, चुनांचे उमरा की मिसालें भी सुन लीजिये। अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रह० एक तुर्की ताजिर के नवासे थे और तुर्की ताजिर की पूरी मीरास उनकी वालिदा को मिली, उनकी और कोई औलाद थी नहीं तो गोया यह अपने मुंह में सोने का चम्मच लेके पैदा हुए थे, उनके वालिद ने उनको पढ़ने के लिये भेजा तो उन्होंने तीस हज़ार दीनार सफ़र ख़र्च के लिये दिये और उन्होंने फिर चार हज़ार असातिज़ा से इल्म हासिल किया, बहुत पैसा अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते थे, उन्होंने अपनी पूरी दौलत इल्म के हासिल करने में लगा दी, फिर अल्लाह ने उनको वह मक़ाम दिया कि जब इमाम अहमद बिन हंबल रह० से मिलने के लिये आते तो इमाम अहमद बिन हंबल रह० उठकर खड़े हो जाते थे, अब्दुल्लाह बिन मुबारक को अपनी मसनद पे बिठाया करते थे, यह नवाबज़ादे थे, अल्लाह ने इनको यह मक़ाम अता किया।

बादशाह हारून रशीद का बेटा

हारून रशीद का एक बेटा था, रहता महल में था, उसको महल से कोई दिलचस्पी नहीं थी, सादा खाना खाता, सादा कपड़े पहनता, हारून रशीद ने उससे कह दिया कि तेरी वजह से लोग तअ़ना देते हैं

कि आप के बच्चा को तो कुछ हो गया Mental case (दिमाग़ी बीमार) है, इलाज करवाओ, उसने कहा अब्बाजान! अगर आप की बातें सुननी पड़ती हैं तो आप मुझे इजाज़त दें, मैं इल्म हासिल करता हूं, यहां से जाता हूं, हारून रशीद ने इजाज़त दे दी, मां ने उसको जाते हुए एक अंगूठी दे दी और कुर्आन पाक दिया कि बेटा! तुम कुर्आन पाक पढ़ना तो अम्मां को याद करना और अगर कोई ज़रूरत पड़े तो यह अंगूठी क़ीमती है, बेच के ज़रूरत पूरी कर लेना, वह नौजवान गया, मस्जिद में एतिकाफ़ की नियत से रहता था, हफ़्ता में एक दिन काम करता था, वह भी जब मदरसा में छुट्टी होती थी, छुट्टी के दिन मज़दूरी क़रता था और मज़दूरी करके इतनी मज़दूरी लेता था जिससे कि उसको 6 रोटियां मिल जाती थीं, हर रोज़ एक रोटी खाता था, 24 घंटे गुज़ारत्ता था और सातवें दिन फिर मज़दूरी कर लेता था, लोगों के घर बनाता, उस शहज़ादे को इख़्तियारी रिज़्क़ की तंगी थी, मगर उसने इस हाल में रहकर इल्म हासिल करने को पसंद किया, तफ़सील पढ़नी हो तो हज़रत शैखुल हदीस रह० ने इस वाक़िआ को तफ़सील के साथ लिखा है, उस वक़्त उमरा के बच्चे भी इल्म हासिल करते थे।

हज़रत नानूतवी की अह्लिया मुकर्रमा रह०

और यही नहीं कि मर्द ही इल्म हासिल करते थे, औरतें भी करती थीं, चलें मैं आपको यहीं घर का वाक़िआ सुनाऊं, हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तय्यब रह० पाकिस्तान तशरीफ़ लाए, हमारे हज़रत रह० से बहुत दोस्ताना था, सबसे पहले उनकी मुलाक़ात हमारे हज़रत से हरमे मक्का में हुई थी, हमारे हज़रत रह० का चेहरा बड़ा मुनव्वर था, इतने ख़ूबसूरत और पुर अनवार थे कि जो बंदा देखता था बेइख़्तियार कहता थाः "مَا هٰذَا بَشَرًا إِنْ هٰذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ"

और यही हाल हज़रत क़ारी मुहम्मद तय्यब रह0 का भी था, ऐसा पुर अनवार चेहरा था कि सुब्हानल्लाह, जब हज़रत रह0 ने देखा तो फ़रमाने लगे कि मैंने पूछाः क़ारी साहब! आपने यह चेहरा कैसे बनाया? तो हज़रत ने बताया कि उन्होंने बरजस्ता जवाब दिया किः यह चेहरा मैंने नहीं बनाया, मेरे शैख़ ने बनाया।

उन्होंने (हज़रत क़ारी साहब रह0 ने) एक महफ़िल में हज़रत नानूतवी रह0 की शादी का वाक़िआ सुनाया, उस ज़माने में दारुल उलूम देवबंद के एक ख़ाज़िन नवाब साहब थे उनको हज़रत नानूतवी रह0 से बड़ी मुहब्बत थी, अर्से से पीछे लगे हुए थे कि मैं आपको अपना बेटा बनाना चाहता हूं, उनके इसरार पर हज़रत नानूतवी रह0 ने हां कर दी, निकाह हो गया, उस ज़माने में जबकि उस्ताज़ की तन्ख़्वाह दो रूपया होती थी नवाब साहब ने अपनी बेटी के लिये एक लाख रूपये के ज़ेवरात बनाए और अपनी बेटी को रुख़्सत किया, जब रुख़्सती हो गई तो हज़रत नानूतवी रह0 पहली रात अपनी अह्लिया के पास आए, तो अह्लिया साहिबा फ़रमाती हैं कि मेरे पास चारपाई पे आकर बैठ गए, सलाम किया और फ़रमाया कि शादी का मक़्सद होता है कि ख़ाविंद बीवी के ज़रीआ गुनाह से बचे और बीवी ख़ाविंद के ज़रीआ गुनाह से बचे, और देसरी बात यह फ़रमाई कि ज़िंदगी अच्छी तब गुज़रती है जब मियां बीवी दोनों एक Level (सतह) पर हों, मैं तुम्हारे मानिंद अमीर बनना चाहूं तो सारी ज़िंदगी मेहनत करूं तब भी नहीं बन सकता और तुम मेरी तरह बनना चाहो तो अभी बन सकती हो, तो मैंने पूछा कैसे? तो फ़रमाने लगे कि यह जितने ज़ेवरात हैं यह जो तुर्की में ख़िलाफ़त का काम हो रहा है, यह सारा अल्लाह के रास्ते में भेज दो, फ़रमाती हैं कि मैंने सारे ज़ेवर निकाले, एक लाख रूपये के ज़ेवर हज़रत ने रूमाल में

बांधे और अगले दिन ज़ेवरात अल्लाह के रास्ते में पहुंचवाए, अब अगले दिन मैं घर में थी, मुहल्ले की औरतें देखने के लिये आईं, जब शादी होती है तो दुल्हन को देखने के लिये बूढ़ी औरतें भी आती हैं, ''वह दुल्हन को कम देखती हैं अपने दुल्हन के ज़माने को ज़्यादा याद करती हैं'' तो कहने लगीं कि दो तीन बूढ़ी औरतें आ गईं, और उन्होंने मुझे देखा तो मेरे जिस्म पर कोई ज़ेवर नहीं, उनमें से एक बुढ़िया, फ़ित्ने की पुड़या, वह कहने लगीः हां! यह तो बाप पे बोझ बनी हुई थी, लगता है उसने धक्के ही दे दिया, इससे जान छुड़ाई, कहने लगीं कि जब मैंने यह सुना तो मेरी तो आंखों में आंसू आ गए, रोना ही न थमे, हज़रत नानूतवी रह० तशरीफ़ लाए, मुझे रोते हुए देखा, फ़रमा क्यों? ख़ैरियत तो है? मैंने कहा, नहीं नहीं, बस आप मुझे मेरे वालिद साहब के घर छोड़ दें, हज़रत नानूतवी रह० ने मेरी ख़्वाहिश का एहतिराम किया और मुझे उसी वक़्त लेकर मेरे वालिद साहब के घर छोड़ दिया, उस ज़माने में मर्दान ख़ाना अलग हुआ करता था, ज़नान ख़ाना अलग होता था, मर्द लोग मर्दानख़ाने में रहते थे, बवक़्ते ज़रूरत घर की औरतों से मुलाक़ात करते थे, कहने लगीं कि मैं दो दिन वहां रही, तीसरे दिन मेरे वालिद साहब ज़नान ख़ाने में आए तो नज़र पड़ी, पूछाः बेटी! तुम यहां हो? पत्ता चला कि यह तो एक ही दिन रह के आ गई थी, पूछा क्यों? कहने लगी कि मैंने फिर रोना शुरू कर दिया कि मेरे साथ तो यह हुआ, गो मैंने ज़ेवरात अपनी ख़ुशी और तीबे नफ़्स से दिये थे, मगर औरतों को जो तअ़ना था उसने मेरा दिल दुखा दिया, तो नवाब साहब कहने लगे बेटी! यह कौनसी बड़ी बात है, नवाब साहब ने एक लाख रूपये के ज़ेवरात फिर बनवाए और अपनी बेटी को दिये और रुख़्सत कर दिया, कहने लगीं कि जब मैं आई, रात को हज़रत नानूतवी रह०

तशरीफ़ लाए, सलाम किया, फ़रमाने लगे देखें: मैंने तो आप को एक मशवरा दिया था कि अल्लाह के रास्ते में दे दो, तुमने अपनी चाहत और मर्ज़ी से दिया था, अगर तुम्हारी चाहत न थी तो न देती, मैंने मजबूर तो न किया था, अब तुम्हारे वालिद साहब के सामने मेरी रुसवाई हुई कि मैंने मजबूर किया और मैंने तो इसलिये कहा था कि यह सांप और बिच्छू तुम अपने गले और हाथों में कैसे पहनोगी, कहती हैं कि हज़रत नानूतवी रह0 के अल्फ़ाज़ में ऐसी तवज्जो थी, ऐसी तासीर थी कि मुझे बिल्कुल लगा कि मेरी अंगूठियां बिच्छू हैं, जो चिपके हुए हैं और यह सांप है जो मेरे गले में लाकिट है, कहने लगीं कि मैंने उसी वक़्त अपने ज़ेवरात उतारने शुरू कर दिये, हज़रत कह रहे हैं कि नहीं नहीं और मैं उतारती जा रही हूं, सब ज़ेवरात उतार दिये और मैंने कहा कि इसको फिर अल्लाह के रास्ते में देदें, मैं आज के बाद किसी को नहीं कहूंगी, हज़रत नानूतवी रह0 ने फिर एक लाख के ज़ेवरात अल्लाह के रास्ते में भेजवा दिये। और फिर इसके बाद उन्होंने हज़रत नानूतवी रह0 से पढ़ना शुरू किया, इतना इल्म पढ़ा कि हज़रत क़ारी साहब रह0 फ़रमाने लगे कि मैंने मिशकात शरीफ़ अपनी दादी अम्मां से सबक़न सबक़न पढ़ी हुई है। तो मालूम हुआ कि यह नहीं होता था कि सारे ही ग़रीब गुर्बा ही इल्म हासिल करते थे, उमरा के बेटे बेटियां भी हासिल करती थीं, यह इल्म तो एक नेअ़मत है, हां फ़क़ीर तलबा भी होते थे और इतनी क़ुर्बानियों से पढ़ते थे कि उनकी क़ुर्बानियां देखकर इंसान हैरान होता है, उन्होंने दीन के इल्म को हासिल करने के लियें मुजाहिदात करके मिसालें क़ाइम कर दीं।

मीर मुबारक बिल गिरामी रह0

मीर मुबारक बिलगिरामी रह0 मुहद्दिस थे, पढ़ाने का वज़ीफ़ा

नहीं लेते थे, चुनांचे कई कई दिन का फ़ाक़ा होता था, एक मर्तबा वजू करके उठे तो चक्कर आया और गिर गए, उनका शागिर्द जिसका नाम मीर तुफ़ैल था, उसने हज़रत को उठाया, पूछा उस्ताज़ जी! ख़ैरियत है? बताया कि आज फ़ाक़े का पांचवां दिन है, उसने आके हज़रत को बैठाया और वह चला गया, अब हज़रत के दिल में खटक पैदा हो गई कि इसको तो मैं बता बैठा हूं कि फ़ाक़ा है और फिर वही हुआ कि थोड़ी देर के बाद वह खाना लेके आ गया, कहने लगा हज़रत! खाना खा लीजिये, फ़रमाया नहीं, मख़्लूक़ से तम्अ़ रखने को शरीअ़त में अशराफ़ कहते हैं और यह हराम है, मैं नहीं खाऊंगा, हमारे जैसा होता तो कहता कि अल्लाह की मदद आ गई, मगर उन हज़रात के अंदर तक़्वा था, उसने कहा कि आप खा लीजिये, फ़रमाया नहीं, क्योंकि मेरे दिल में एक उम्मीद लग गई थी कि यह ले आएगा, अब मैं यह खाना नहीं खा सकता, मगर वह शागिर्द भी मुत्तक़ी परहेज़गार समझदार होते थे, उसने इसरार नहीं किया, उसने खाना लिया और खाना लेके वापस चला गया, नज़रों से ओझल होने के बाद कोई 5 मिनट के बाद वापस आया, और कहा हज़रत! जब मैं नज़रों से ओझल हो गया था तो उम्मीद तो कट गई थी कि वह लेकर गया, फ़रमाया हां, कहा कि अब खा लीजिये तो हज़रत ने खाना नोश फ़रमाया।

इमाम तबरानी रह0

तीन तलबा थे, एक का नाम था इब्नुल मक़री, एक का नाम था अबू शैख़, और एक का नाम था तबरानी, वह (तबरानी) कहते हैं कि हम मस्जिदे नबीवी में उस्ताज़ से अहादीसे मुबारका पढ़ा करते थे, लेकिन खाना अपना होता था, हम तीनों के पास खाना ख़त्म हो गया, एक दिन रोज़ा, दूसरे दिन रोज़ा, अब तीसरे दिन उठा नहीं

जाता था, मेरे दो साथियों ने फ़ैसला किया कि हम घर जाते हैं, भूक नहीं बर्दाश्त होती, मैंने हिम्मत कर ली, मैंने कहा मुझको रहना यहीं है, मैं हदीस पढ़ना नहीं छोडूंगा, कहने लगे कि चौथे दिन मेरे लिये उठ के बैठना मुश्किल हो गया, इतनी भूक थी, अचानक मेरे ज़ह्न में ख़्याल आया कि तबरानी! तुम जिनके मेहमान हो तुम मेज़बान को जाके क्यों नहीं बताते? मैं उसी वक़्त उठा और मुवाजा शरीफ़ पर हाज़िर हुआ और मैंने नबी सल्ल0 पर दरूद शरीफ़ पढ़ा, सलात व सलाम पेश किया और मैंने कहाः "يَا رَسُولَ اللّٰهِ ﷺ! الجوع" ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! भूक लगी है, कहते हैं कि दुआ मांग के में वहां से बाहर निकला, तो दरवाज़े के ऊपर एक अल्वी नसब शख़्स था, उसके सर के ऊपर हंडिया थी, उसके हाथ में फलो की एक टोकरी सी थी और मेरा नाम लेकर पुकार रहा है, मैंने नाम सुना, मैं हैरान हुआ, मैंने कहा तुम्हें मेरा नाम किसने बताया, कहने लगा कि मैं मस्जिदे नबवी का पड़ोसी हूं, दीवार एक है, दोपहर के वक़्त कैलूला कर रहा था, कैलूला में मुझे महबूब सल्ल0 की ज़ियारत नसीब हुई, फ़रमाया अल्वी! मेरा एक मेहमान भूका है, जाओ उसको खाना खिलाओ, मेरी आंख खुली मैंने बीवी को देखा कि हंडिया उतार रही थी, मैंने कहा अपने लिये और हंडिया बना लेना, मुझे हंडिया और रोटी दे दो, हंडिया सर पे रखी, रोटी उठाई और दो चार क़दम मैं दरवाज़े से चल के दरवाज़े पर आया और मैंने तुम्हारा नाम पुकारना शुरू किया, तुम अल्लाह के हबीब सल्ल0 के मेहमान हो। अल्लाह के हबीब सल्ल0 को तलबा उलमा के साथ क्या मुहब्बत थी।

इमाम अबू अली बल्ख़ी रह0

इमाम अबू अली बल्ख़ी रह0 फ़रमाते हैं कि मुझे कई दिन फ़ाक़ा

उठाना पड़ा और खाने के लिये कुछ नहीं होता था, तो मुहल्ले में एक नान बाई था, तन्नूर की दूकान थी, वहां रोटियां पकती थीं, तो मैं किताब लेकर वहां तन्नूर के पास जाकर बैठ जाता कि रोटी पकने की जो महक आएगी उससे कुछ मेरे लिये भूक को बर्दाश्त करना आसान हो जाएगा। अल्लाहु अक्बर कबीरा, उन अकाबिर ने अल्लाह के दीन का इल्म हासिल करने के लिये इतनी भूक बर्दाश्त की।

बक़ीउद्दीन बिन मुख़्लिद रह0

बीस इक्कीस साल की उम्र जवानी मस्तानी की उम्र होती है, नौजवान तलबा के लिये वसाविसे नफ़सानी व शह्वानी से बचना बड़ा मुश्किल होता है, इस उम्र के अंदर दीन की तलब का होना अजीब नेअ़मत है। चुनांचे उंदुलुस के इलाक़े के बक़ीउद्दीन इब्ने मुख़्लिद रह0 एक नौजवान हैं, 201 ई0 में पैदा हुए, 75 साल की उम्र पा के 276 हि0 में वफ़ात हुई, 21 साल उनकी उम्र थी, इस वाक़िआ को इमाम ज़हबी रह0 ने सियर अअ़लामिन्नुबला के अंदर नक़्ल किया है, वह कहते हैं कि मैंने इमाम अहमद बिन हंबल रह0 का नाम सुन रखा था, दिल में बड़ी ख़्वाहिश हुई कि मैं उनके पास जाऊं और हदीस का इल्म पढ़ूं, लेकिन रास्ते में समंदर पड़ता था, एक जहाज़ था, बड़ी कशती थी, उसके कैप्टन से बात की, और सफ़र पे निकल पड़ा, अल्लाह की शान कई महीने सफ़र कर कना पड़ा और दर्मियान में कशती रास्ता भी भूल गई तो सफ़र और ज़्यादा लम्बा हो गया, फिर उस सफ़र के अंदर ऐसा वक़्त भी आ गया जब समंदर के अंदर तूफ़ान होता है, High tied होती है, उस वक़्त कशती लंगर अंदाज़ हो जाती है, क्यों कि अगर चलती रहेगी तो उलट जाएगी, बंदे डूब जाएंगे, तो लंगर डाल देते थे, एक एक हफ़्ता तूफ़ान रहता, कशती एह ही जगह पर पड़ी रहती और सिर्फ़ झटके

लगते, उससे बीमारी हो जाती थी, उबकाईयां आती थीं, पेट की बीमारियां हो जाती थीं, कहते हैं कि मैं इतना बीमार हो गया कि मेरी Dehydration (जिस्म में पानी की कमी) होने के क़रीब हो गई, क़िस्मत से तूफ़ान कम हुआ, हम आगे चले और बिलआख़िर ज़मीन पर आए, वहां से मैंने पैदल सफ़र करना शुरू किया और मेरा सफ़र भी सैकड़ों मील का सफ़र था, मेरे कपड़े गंदे, खाने पीने का सामान कुछ न बचा और मैं अपने सामान को कमर पर रखे चल रहा था, नक़ाहत की वजह से मैं गिरने लगता था, ख़ुदा ख़ुदा करके वह वक़्त आया कि मैं बग़दाद के क़रीब पहुंचा, जब सामने बग़दाद का शहर नज़र आया तो इतना थका हुआ था कि मैं एक दरख़्त के नीचे लेट गया, नींद आ गई, जब आंख खुली तो उस वक़्त मैंने बग़दाद शहर की तरफ़ चलना शुरू किया, मुझे रास्ते में एक आदमी आता हुआ, मिला सलाम दुआ हुई, मैंने पूछा सुनाएं इमाम अहमद बिन हंबल का क्या हाल है? उसने कहा क्यों पूछ रहे हो? मैंने कहा कि मैं एक तालिबे इल्म हूं, उनसे इल्म पढ़ने के लिये हज़ारों मील का सफ़र करके आया हूं, धक्के खाए हैं, उसने मेरा चेहरा देखा, कहने लगा ऐ तालिबे इल्म! अफ़सोस है कि तेरी यह हसरत पूरी नहीं हो सकती, कहने लगे मेरे लिये यह Shocking news (अचानक सदमा वाली ख़बर) थी, मेरी हसरत पूरी नहीं हो सकती, उसने कहा हां, हाकिमे वक़्त किसी बात पे इमाम अहमद बिन हंबल से नाराज़ हो गया, उसने जामा मस्जिद में उनका दर्स भी मौक़ूफ़ कर दिया और घर में नज़र बंद कर दिया, न वह लोगों से मिल सकते हैं, न लोग उनसे मिल सकते हैं तुम इल्म हासिल नहीं कर सकते, कहने लगे कि मेरे लिये यह ख़बर अजीब थी, लेकिन हिम्मत नहीं हारी, शहर में गया, एक सराए के अंदर कमरा किराये पर ले लिया और मैंने वहां

रात गुज़ारी, थकावट की वजह से नींद गहरी आई, दूसरे दिन मेरे ज़ह्न में ख़्याल आया कि किसी का तो दर्स होता होगा, मैंने सराए वाले से पूछा कि शहर में किसी का दर्स होता है? उन्होंने कहा कि यहया बिन मुईन का, जो जिरह और तअ़दील के इमाम थे, उनका मस्जिद में अस्र के बाद दर्स होता है, मैं अस्र के बाद वहां पहुंच गया, यहया बिन मुईन रह0 ने थोड़ी देर हदीसे पाक का दर्स दिया, फिर इसके बाद सवाल व जवाब का सिलसिला था, लोगों ने सवाल पूछने शुरू कर दिये, एक ने सवाल पूछा, दूसरे ने पूछा तो इतने में मैं भी खड़ा हुआ और मैंने कहा कि मुझे हिशाम बिन अम्मार रह0 के बारे में बताएं, उन्होंने कहा कि वह इतने सिक़ह हैं कि उनकी चादर के नीचे अजब भी आ जाए तो सक़ाहत में फ़र्क़ नहीं पड़ता, मैंने कहा कि मुझे दूसरा सवाल पूछना है, तो साथ वाले लोगों ने मेरे कपड़े खींचने शुरू कर दिये, उन्होंने कहा कि नौ वारिद नज़र आता है, इस मजलिस का दस्तूर है कि हर बंदा एक सवाल पूछ सकता है, एक बंदा सारे सवाल पूछे तो बाक़ी कैसे पूछेंगे? तू एक सवाल पूछ चुका लिहाज़ा बैठ जा, मैंने कहा मैं मुसाफ़िर हूं और ग़रीबुद्दयार हूं और मेरा हाल तो देख ही रहे हैं, अस्ल सवाल तो मुझे और पूछना था, यह तो मैं ऐसे ही पूछ बैठा, पता होता तो मैं वही सवाल पूछ लेता, मैंने थोड़ी मन्नत समाजत की लोगों को मुझ पे तरस आया, कहने लगे कि पूछो कहते हैं कि मैंने यहया बिन मुईन रह0 से सवाल पूछा कि आप इमाम अहमद बिन हंबल रह0 के बारे में क्या कहते हैं? कहने लगे कि मेरे सवाल पे सन्नाटा छा गया, मक़ामी लोग हैरान थे कि बादशाह उनका इतना ख़िलाफ़ और यह इस मज्मा में उसने सवाल पूछा, यहया बिन मुईन रह0 ने थोड़ी देर सर झुकाया, फिर सर उठाके कहने लगे कि इमाम अहमद बिन हंबल तो इमामुल मुस्लिमीन

हैं, यह अल्फ़ाज़ कहे, कहने लगे कि मेरे दिल में यह बात रच गई, अब जो मर्ज़ी हो, जो कुर्बानी देनी पड़े, मैं इमाम अहमद बिन हंबल से इल्म हासिल करके रहूंगा, कहने लगे मैं घर आया, रास्ते में मैंने एक बंदे से कहा कि मुझे इमाम अहमद बिन हंबल का घर दिखा सकते हो, उसने कहाः भाई! वह पुलिस वाले देखेंगे तो मुझे भी सज़ा देंगे तुझे भी, मैंने कहा कि तुम सामने से गुज़र जाना और आंख के इशारे से कह देना कि यह उनका दरवाज़ा है फिर तुम आगे चले जाना, मैं जानूं मेरा काम जाने, वह इस बात पे आमादा हो गया, उसने मुझे घर दिखा दिया, कहते हैं कि मैं सराए में वापस आया, अब मैं सारी रात सोच रहा हूं कि मैं इमाम अहमद बिन हंबल से कैसे इल्म हासिल करूं, कहते हैं कि सारी रात सोचते सोचते मेरे ज़ह्न में एक ख़्याल आया, अगले दिन मैं उठा तो मैंने एक क़शकूल बना लिया और मैंने अपने घुटने को एक कपड़े से बांध लिया और एक कपड़ा अपने सर पे भी लपेट लिया और जैसे कोई लंगड़ा के चलता है उस तरह में सराए से बाहर निकला और मैंने हाथ आगे करके फ़क़ीर की तरह भीग मांगनी शुरू कर दी---उस ज़माने में जो मांगने वाले साइल होते थे, वह पता नहीं मांगते थे, सिर्फ़ इतना कहते थेः "أَجْرُكُمْ عَلَى اللّٰهِ" और उनकी इस बात को सुन के देने वाले उनको दे दिया करते थे---कहते हैं जब मैंने यह कहना शुरू किया तो कि कुछ लोग मुझे ग़ौर से देखते कि नौजवान है क्यों नहीं मेहनत मज़दूरी कर लेता, मैंने उनकी तुर्श निगाहें भी बर्दाश्त कर लीं और मैं हर एक के सामने अपने आप को पामाल करता, मैं सारा दिन बग़दाद के मुख़्तलिफ़ रास्तों पर भीक मांगता रहा और मुझे अंदाज़ा था कि ज़ुह्र के बाद का जो वक़्त होता है तो क़ैलूला के लिये लोग घरों में आ जाते हैं, आमद व रफ़्त कम होती है, वह वक़्त

नोट करके मैं इमाम अहमद बिन हंबल रह० के दरवाज़े पर पहुंचा, बड़ी ज़ोर से आवाज़ लगाई: "أجركم على الله، أجركم على الله" इतनी दर्द वाली आवाज़ थी कि इमाम अहमद बिन हंबल ने दरवाज़ा खोल दिया, उनके हाथ में एक सिक्का था जो वह मुझे मोहताज समझ के देना चाहते थे, जब उन्होंने दरवाज़ा खोला तो मैंने कहा हज़रत मैं माल का साइल नहीं हूं, मैं महबूब सल्ल० की सुन्नतों को जमा करने वाला बंदा हूं, मैं आप से हदीस का इल्म हासिल करने आया हूं, इमाम साहब ने कहा कि पुलिस तुम्हें भी सज़ा देगी, मुझे भी देगी, मैंने कहा: हज़रत! यह सिक्का अपने पास रख लें, मैं सारा दिन साइल बन के मांगता फिरूंगा और उस वक़्त मैं आपके घर के सामने आके सदाएं लगाऊंगा, आप दरवाज़ा खोलना, कोई न हो, तो मुझे दो चार हदीसें सुना दीजियेगा, कोई आ जाए तो आप यह सिक्का डाल दीजियेगा, मैं चला जाऊंगा, इमाम साहब तैयार हो गए, मैं एक साल तक बग़दाद शहर में भीक मांगता रहा और फिर मैं जुह्र के बाद इमाम साहब के दरवाज़े पर जाता था, दरवाज़ा खुलता था, कभी मुझे दो चार हदीसें सुना देते थे, कभी किसी के आने की वजह से सिक्का डाल देते थे, मैं चला जाता था, मैंने पूरा साल इमाम अहमद बिन हंबल से इस तरह इल्म हासिल किया था, अल्लाह की शान कि हाकिमे वक़्त की वफ़ात हुई, जो नया हाकिम बना उसको इमाम अहमद बिन हंबल रह० से अक़ीदत थी, उसने उनकी नज़रबंदी भी ख़त्म कर दी और उसने उनका जो मस्जिद का दर्स था वह भी शुरू करवा दिया, फ़रमाते हैं कि जब इमाम अहमद बिन हंबल रह० को दर्स देना था तो बग़दाद के लोगों पर ईद का समां था, अस्र का वक़्त हुआ, मस्जिद खचाखच भरी हुई थी, मैंने बड़ी कोशिश की कि मैं जाऊं और मैं उस्ताज़ के क़रीब जाकर बैठूं, लेकिन भीड़ की वजह

से मैं क़रीब न पहुंच सका, ज़रा दूर खड़ा था, इमाम साहब आए, उनकी नज़र मुझ पर पड़ी, इमाम साहब कहने लगे लोगो! इस तालिबे इल्म को आगे आने दो, तुम में से इल्म का हक़ीक़ी तलबगार यह शख़्स है। अल्लाहु अक्बर कबीरा

अज़ीज़ तलबा ज़रा तक़ाबुल तो कीजिये, आज दो वक़्त का खाना आराम से मिलता है, पंखे कमरों में लगे होते हैं, उस्ताज़ पढ़ाने के लिये मौजूद होते हैं, फिर भी उनको फ़ज्र के लिये जगाना पड़ता है और उनको अपने दर्स के अंदर भेजना पड़ता है और तलबा दर्स के अंदर बैठे होते हैं, उनकी तवज्जो कहीं और पहुंची होती है, एक वह भी तालिबे इल्म थे कि उस्ताज़ घर के अंदर मुक़य्यद है और शागिर्द सोच रहा है कि मैं कैसे उस्ताज़ से पढ़ूं।

अबू जअ़फ़र मंसूर रह० की तमन्ना

"قِيلَ لِأَبِى جَعْفَر مَنْصُور: هَلْ بَقِيَ مِنَ اللَّذَاتِ شَيْئًا لَمْ تَنَلْهُ"

अबू जअ़फ़र मंसूर हदीस का आलिम था, एक मर्तबा वुज़रा ने कह दिया कि आप को अल्लाह ने दुनिया की इतनी नेअ़मतें दीं कोई ऐसी भी ख़्वाहिश है जो पूरी न हुई हो? "قَالَ شَيْءٌ وَاحِدٌ" एक बात मेरी पूरी न हुई "قَالُوا: وماهو" कहने लगे कौनसी? "قال" कहने लगा "قَوْلُ الْمُحَدِّثِ لِلشَّيْخِ حَدِّثْنَا" कि वह जो शागिर्द अपने शैख़ को कहते हैं ऐ उस्ताज़! हमें हदीस सुनाएं, मुझे इल्म था, मेरा जी चाहता है कि कोई मुझ से भी यह इल्म हासिल करता। "قَالَ فَغَدَا عَلَيْهِ الْوُزَرَاءُ وَالنُّدَمَاءُ بِالْمَحَابِرِ وَالدَّفَاتِرِ" दूसरा दिन हुआ तो जो काम करने वाले वुज़रा थे वह अपने काग़ज़ क़लम और दवातें लेकर आ गए और वह सामने बैठ गए "فَقَالُوا" कहने लगे कि आप हमें हदीस सुनाएं, "فقال" उस वक़्त अबू जअ़फ़र मंसूर ने उन वुज़रा को कहा "لَسْتُمْ بِهِم" तुम तालिबे इल्म नहीं हो "إِنَّمَا هُمُ الدَّنِسَةُ"-

"ٱلْمُغْبَرَّةُ ثِيَابُهُمْ" तालिबे इल्म तो वह थे जिन के कपड़े मैले होते थे "ٱلْمُشَقَّقَةُ أَرْجُلُهُمْ" उनके चेहरे गर्द आलूद होते थे "وُجُوهُهُمْ" उनके पांव, ऐड़ियों के गोश्त फटे हुए होते थे "ٱلطَّوِيلَةُ شُعُورُهُمْ" उनके बाल बड़े होते थे, "رَوَّادُ الآفَاق" इल्मे हदीस हासिल करने के लिये दुनिया की ख़ाक छानते थे "قَطَّاعُ المسافات" मसाफ़तों को पैदल तय करने वाले होते थे, "تَارَةً بِالعراق وتارةً بِالحِجاز" हदीस लेने के लिये कभी वह हिजाज़ जाते थे, कभी इराक़ जाते थे "وتارةً بالشَّام وتارةً باليَمن" कभी शाम जाते थे, कभी यमन जाते थे, "فَهٰؤُلاءِ نَقَلَةُ الحَدِيث" हदीस को नक़्ल करने वाले यह लोग हुआ करते थे जिन्होंने दुनिया की मशक़्क़तें तो उठाईं मगर नबी सल्ल० की अहादीस को उन्होंने जमा किया, सीने से लगाया। मुबारकबाद के लाइक़ हैं वह नौजवान।

तालिबाने उलूमे दीनया का मक़ाम

नौजवान तालिबे इल्मो! अपनी क़िस्मत पे अल्लाह का शुक्र अदा करो, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने आप को इस दीन के लिये चुना है, आप अल्लाह के चुने हुए बंदे हैं और इसकी दलील क़ुर्आने अज़ीमुश्शान में है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाते हैं "ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ" फिर हमने अपनी किताब वारिस अपने बंदों में से उनको बनाया "الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا" जो मेरे चुने हुए बंदे थे, किताब के वारिस वही बनते हैं जिनका अल्लाह के यहां चुनाव होता है, यह खुश नसीब नौजवान हैं, अगर्चे ज़ाहिर में मामूली कपड़े हैं, यह मशक़्क़तें उठाते हैं, मगर इनका मक़ाम अल्लाह के सामने बड़ा बुलंद है, ज़रा ग़ौर कीजिये! आज मुख़्तलिफ़ लोग सुब्ह करते हैं, किसी के सामने अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने कपड़ा रख दिया, कपड़े काटता है, जोड़ता है, हम उसको दर्ज़ी कहते हैं, किसी के सामने अल्लाह ने

लकड़ी को रख दिया, वह लकड़ी काटता है और जोड़ता है, फ़र्नीचर बनाता है, हम उसको कारपैंटर कह देते हैं, किसी के सामने अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ईंट को रख दिया, वह ईंट को दूसरी ईंट से जोड़ता है, वह मकान तामीर करता है, हम उसे मिस्त्री कहते हैं, किसी के सामने अल्लाह ने लोहे को रख दिया, वह लोहे के पुर्ज़ों को खोलता है, फिर लोहे को जोड़ता है, उससे उसका गुज़रान होता है, आज किसी के सामने कुछ रखा, किसी के सामने कुछ रखा, अज़ीज़ तलबा! मैं सलाम करता हूं आपकी अज़मत को, कि आप सुब्ह उठते हैं, अल्लाह आप की झोली में अपना कुर्आन रख देता है, आपकी झोली में अपने महबूब सल्ल0 का फ़रमान रख देता है, आप अल्लाह के चुने हुए बंदे हैं, अल्लाह ने आपको इस काम के लिये चुन लिया, क़्यामत का दिन होगा, उस वक़्त अस्हाबे सफ़ा खड़े होंगे, अल्लाह तआला पूछेंगेः मेरे बंदो! बताओ, क्या लेकर आए? उस वक़्त यह तलबा भी खड़े होंगे, कहेंगेः अल्लाह! हम इल्म व अमल में इनके पीछे तो न चल सके जैसे चलना चाहिये था, मगर मेरे मौला इनके नक़्शे क़दम पर चलने की कोशिश तो हम ने की थीं-

अमल की अपने असास क्या है   बजुज़ नदामत के पास क्या है
रहे सलाम तुम्हारी निस्बत   मेरा तो बस आसरा यही है

हमारा क़्यामत के दिन यही आसरा है, अल्लाह हमें तालिबे इल्मों में शुमार कर ले।

हज़रत मौलाना यूसुफ़ बनौरी रह0 अपने तलबा के सामने एक हदीसे मुबारक बयान करते थे, क़्यामत का दिन होगा अल्लाह के सामने उलमा व तलबा खड़े होंगे, अल्लाह फ़रमाएंगेः "يـامـعـشـر العلماء" ऐ उलमा की जमाअत! "لـم اعـطِ علمي فيكم لِاُعـذِّبـكـم" मैंने तुम्हारे सीनों को इल्म के नूर से इसलिये नहीं भरा

था कि आज मैं दूसरों के सामने तुम्हें रुसवा करूं, आज मैं दूसरों के सामने तुम्हारा मुआख़िज़ा करूं "فَانطَلِقُوا" जाओ "قَدْ بَدَّلْتُ سَيِّئَاتِكُمْ حَسَنَاتٍ" मैंने तुम्हारे गुनाहों को तुम्हारी नेकियों में तबदील कर दिया, उस दिन तलबा को पता चलेगा कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की क्या नज़रे करम हुई और यह निस्बत कितनी काम आ गई, हमारे पल्ले कुछ नहीं है, मगर इतना तो ज़रूर है कि अल्लाह तआला क़्यामत के दिन पूछेंगेः मेरे बंदो! क्या करते थे? अर्ज़ करेंगेः अल्लाह! चटाइयों पर बैठते थे, घुटनों को देख लीजिये, टख़्नों को देख लीजिये, जैसे जानवरों के निशान पड़े होते हैं, नीचे बैठ बैठ के हमारे निशान पड़ गए, मेरे मौला! बस इसी को क़बूल कर लीजिये, हमारे अमलों को न देखियेगा, हमारे अमल ख़ालिस नहीं हैं, मगर मौला कोशिश तो किया करते थे, मेरे मौला! यह वक़्त था जब लोग अंग्रज़ी तालीमों के लिये भागते थे, कालिज और यूनीवर्सिटियों के पीछे भागते थे, हमारे लिये मदरसों में जाना भी तअ़ना बनता जा रहा था, अपने पराए सब समझाते थे कि किन कामों में लगे हुए हो, अल्लाह! यह वह वक़्त था मगर अल्लाह! उस वक़्त में

तेरे कअ़बे को जबीनों से बसाया हमने तेरे क़ुर्आन को सीनों से लगा हमने

अल्लाह! हम क़ुर्आन को सीनों से लगा के तफ़सीर का दर्स पढ़ने के लिये जाया करते थे, मौला! बस इसी निस्बत की लाज रख लीजिये और हमें अपने मक़्बूल बंदों में शामिल फ़रमा लीजिये, अल्लाह तआला सब तलबा को इल्मे नाफ़ेअ़ अता फ़रमाए और हमें क़्यामत के दिन अपने अकाबिर के क़दमों में जगह नसीब फ़रमाए।

وآخرُ دعوانا أنِ الحمدُ لله ربِّ العالمين

दिले मफ़हूम को मसरूर कर दे
दिले बेनूर को पुर नूर कर दे

फ़िरोज़ां दिल में शम्ए तूर कर दे
यह गोशा नूर से मअ़मूर कर दे

मेरा ज़ाहिर सनूर जाए इलाही!
मेरे बातिन की जुल्मत दूर कर दे

मए वह्दत पिला मख़्मूर कर दे
मुहब्बत के नशे में चूर कर दे

है मेरी घात में खुद नफ़्स मेरा
खुदाया इसको बे मक़्दूर कर दे

☆☆☆